वार्षिक रिपोर्ट
1988-89

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) अपने अध्यक्ष, केंद्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सरकार के प्रति उनके मार्गदर्शन हेतु ऋणी है। परिषद् के कार्यों में गहन रुचि और सहायता प्रदान करते हेतु परिषद् अपने शासी निकाय के अन्य विशिष्ट सदस्यों के प्रति आभारी है। परिषद् उन विशेषज्ञों को धन्यवाद देती है जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर इसकी विभिन्न समितियों में कार्य किया तथा कई तरीकों से अपनी सहायता प्रदान की। राज्य शिक्षा विभागों व राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषदों/संस्थानों/राज्य शिक्षा संस्थानों सहित वे सभी संगठन व संस्थाएँ धन्यवाद की पात्र हैं जिन्होंने रा.शै.अ.प्र.प. के साथ सहयोग किया तथा उसकी गतिविधियों को कार्यान्वित करने में अपनी पूरी सहायता दी। प्रायोजित कार्यक्रमों के कार्यान्वियन में यू.एन.डी.पी., यूनेस्को, यूनीसेफ, यू.एन.एफ.पी.ए., जी.टी.जैड, और ब्रिटिश काउंसिल द्वारा प्राप्त सहयोग के प्रति परिषद् अपना आभार व्यक्त करना चाहती है।परिषद् अपने स्टाफ के सभी स्तरों के सदस्यों द्वारा किये गए कार्य की भी प्रशंसा करती है, जिनके सहयोग और निष्ठा के बिना इसके कार्यक्रम सफलता पूर्वक कार्यान्वित नहीं हो सकते थे । परिषद् उन हज़ारों अध्यापकों, विद्यार्थियों, अभिभावकों और जनता के सदस्यों के प्रति सधन्यवाद अपना आभार ज्ञापित करती है जिन्होंने परिषद् के 1988-89 के प्रकाशनों व कार्यक्रमों के बारे में अपने विचार देते हुए परिषद् के विभिन्न घटकों को अनेक पत्र भेजे जो कि बेहतर कार्य निष्पादन के लिए निरंतर प्रेरणा स्रोत सिद्ध हुए।

विषय-सूची

1988-89

एक

रा.शै.अ.प्र.प. भूमिका और संरचना

1 सितम्बर 1961 को स्थापित राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) संस्था पंजीकरण अधिनियम (1860) के अंतर्गत एक स्वायत्त संगठन है।

भूमिका और कार्य

रा.शै.अ.प्र.प. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के एक अकादमिक सलाहकार के रूप में कार्य करती है। रा.शै.अ.प्र.प. के मुख्य उद्देश्य शिक्षा, विशेषतः विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में नीतियों और मुख्य कार्यक्रमों को कार्यान्वित करने में मानव संसाधन विकास मंत्रालय को सहायता तथा परामर्श देना है। विद्यालयी शिक्षा तथा अध्यापक शिक्षा की नीतियों और कार्यक्रमों के प्रतिपादन तथा कार्यान्वयन के लिए यह मंत्रालय अधिकतर रा.शै.अ.प्र.प. की विशेषज्ञता का उपयोग करता है। परिषद् का सारा वित्तीय भार भारत सरकार वहन करती है।

रा.शै.अ.प्र.प. का प्रमुख कार्य विद्यालयी शिक्षा और अध्यापक शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाना है। शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु परिषद् निम्नलिखित प्रयास करती है :

* विद्यालयी शिक्षा की सभी शाखाओं में अनुसंधान करना, उसमें सहायता पहुँचाना, प्रोत्साहित करना और समन्वित करना।
* मुख्यतः उच्च स्तर पर अध्यापकों के सेवा पूर्व और सेवाकालीन प्रशिक्षण आयोजित करना।
* शैक्षिक पुनर्निर्माण में संलग्न संस्थाओं, संगठनों और अभिकरणों के लिए विस्तार सेवाएँ आयोजित करना।
* परिष्कृत शैक्षिक तकनीकों, पद्धतियों एवं नवाचारों के विकास एवं प्रयोग कार्य करना।
* शैक्षिक जानकारी एकत्रित, समाकलन संसाधित एवं प्रसारित करना।
* विद्यालयी शिक्षा में गुणात्मक सुधार हेतु राज्यों, राज्य स्तर की संस्थाओं, संगठनों एवं अभिकरणों को कार्यक्रम तैयार एवं कार्यान्वित करने में सहायता देना।
* यूनेस्को, यूनिसेफ जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों एवं अन्य देशों की राष्ट्रीय स्तर की शैक्षिक संस्थाओं के साथ सहयोग स्थापित करना।
* अन्य राष्ट्रों के शैक्षिक कार्मिकों को प्रशिक्षण एवं

अध्ययन की सुविधाएँ प्रदान करना।

* राष्ट्रीय अध्यापक परिषद् विकास हेतु शैक्षिक नवाचार के (एपीड) यूनेस्को, बैंकाक के अकादमिक सचिवालय के रूप में कार्य करना।

कार्यक्रम और कार्यकलाप

उपर्युक्त लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु परिषद् ने निम्नलिखित कार्यक्रमों और कार्यकलापों को हाथ में लिया है :

अनुसंधान

विद्यालय शिक्षा में अनुसंधान की शीर्ष राष्ट्रीय संस्था होने के नाते रा.शै.अ.प्र.प. अनेक महत्वपूर्ण कार्य करती है, जैसे : अनुसंधान को आयोजित करना और बल प्रदान करना, शैक्षिक अनुसंधान में कार्मिकों को प्रशिक्षण देना इत्यादि।

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.) के विभिन्न विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय और केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) कई क्षेत्रों में अनुसंधान की जिम्मेदारी लेते हैं, जैसे : पाठ्यचर्या नियोजन एवं विकास, अनुदेशी सामग्री का विकास, बाल विकास, शैक्षिक मनोविज्ञान और मार्गदर्शन, शैक्षिक प्रौद्योगिकी, शिक्षण सहायक साधन, अध्यापक शिक्षा, शैक्षिक मूल्यांकन आदि।

अनुसंधान के अतिरिक्त, रा.शै.अ.प्र.प. व्यक्तियों तथा संगठनों को वित्तीय सहायता प्रदान करके एवं अकादमिक पारस्परिक विचार- विमर्श द्वारा अन्य अनुसंधान कार्यक्रमों को बल प्रदान करती है। पीएच.डी शोध प्रबंधों के प्रकाशन हेतु रा.शै.अ.प्र.प. विद्वानों की सहायता करती है। परिषद् कनिष्ठ और वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता वृत्तियाँ भी प्रदान करती है ताकि शैक्षिक समस्याओं की जाँच पड़ताल की जा सके और योग्य अनुसंधानकर्त्ताओं का एक दल सृजित किया जा सके। देश में शिक्षा के अनेक पहलुओं पर आंकड़े उपलब्ध कराने के लिए यह समय-समय पर शैक्षिक सर्वेक्षण करती है। आंकड़ों की प्रक्रिया तथा उन्हें पुनः प्राप्त करने के लिए परिषद् के पास कम्प्यूटर टर्मिनल है। अंतर्देशीय अनुसंधान परियोजनाओं में परिषद् अंतर्राष्ट्रीय अभिकरणों से भी सहयोग स्थापित करती है।

विकास

विद्यालयी शिक्षा में विकासात्मक कार्यकलापों का परिषद् के कार्यों में एक महत्वपूर्ण स्थान है। अब राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के कार्यान्वयन की जिम्मेदारी भी परिषद् पर ही है जिससे परिषद् के विकासात्मक कार्य और भी अधिक बढ़ गए हैं। परिषद् के मुख्य विकास संबंधी कार्य विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों हेतु पाठ्यचर्या एवं अनुदेशी सामग्री के विकास एवं उन्हें नवीन रूप देना तथा बच्चों एवं समाज की बदलती हुई आकांक्षाओं के अनुरूप बनाना है। परिषद् के नवाचार संबंधी विकासात्मक कार्यकलापों में शिक्षा व्यवसायीकरण, अध्यापक शिक्षा तथा अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में पाठ्यचर्या एवं अनुदेशी सामग्री का विकास भी समाविष्ट है। परिषद् शैक्षिक प्रौद्योगिकी, जनसंख्या शिक्षा एवं विकलांगों की शिक्षा के क्षेत्र में भी विकासात्मक कार्य करती है।

प्रशिक्षण

विभिन्न स्तरों, जैसे पूर्व प्राथमिक, प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तरों पर तथा व्यावसायिक शिक्षा एवं मार्गदर्शन, और परामर्श तथा विशेष शिक्षा में भी सेवा-पूर्व और सेवाकालीन प्रशिक्षण प्रदान करना परिषद् के महत्वपूर्ण कार्यकलाप हैं। क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों के सेवापूर्व प्रशिक्षण कार्यक्रमों में कुछ नवीन विशेषताएँ सम्मिलित की गई हैं जैसे विषयवस्तु और शिक्षण विधि का एकीकरण, कक्षा में अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों की दीर्घ कालिक उद्यम वृत्ति तथा छात्रों की प्रतिभागिता एवं राज्यों और राज्य स्तरीय संस्थाओं के प्रमुख कार्मिकों तथा अध्यापक शिक्षकों एवं सेवारत शिक्षकों का प्रशिक्षण।

1988-89

विस्तार

रा.शै.अ.प्र.प. के शिक्षा के वृहत विस्तार-कार्यक्रम हैं जिनमें रा.शि.सं. के विभाग, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय और राज्यों के क्षेत्र सलाहकारों के कार्यालय कई प्रकार से कार्यरत हैं। परिषद् राज्यों के विभिन्न अभिकरणों तथा संस्थाओं के साथ निकट सहयोग स्थापित कर कार्य करती है और विभिन्न श्रेणियों के कर्मचारी वर्ग, जैसे : अध्यापकों निरीक्षकों, प्रशासकों, प्राश्निकों, पाठ्यपुस्तक लेखकों आदि को सहायता प्रदान करने के लिए अध्यापक प्रशिक्षण कालेज के विस्तार सेवा विभागों और केन्द्रों के साथ विस्तार से कार्य करती है। नियमित रूप से चलने वाले कार्यक्रम के अंग के रूप में सम्मेलन, संगोष्ठियाँ, कार्यशालाएँ और प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं। ग्रामीण और पिछड़े हुए क्षेत्रों में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं ताकि ये कार्यक्रम संबद्ध कार्यकर्त्ताओं तक पहुँच सकें जहाँ पर विशिष्ट समस्याएँ हैं और विशेष प्रयासों की आवश्यकता है। परिषद् विकलांग बच्चों एवं समाज के सुविधा वंचित वर्गों की शिक्षा के लिए अलग से कार्यक्रम आयोजित करती है। परिषद् के विस्तार कार्यक्रम में सभी राज्य एवं संघशासित क्षेत्र सम्मिलित हैं।

प्रकाशन और प्रसार

रा.शै.अ.प्र.प. कक्षा 1 से 12 तक के विभिन्न विद्यालयी विषयों की पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित करती है। परिषद् अभ्यासपुस्तिकाएँ, अध्यापक संदर्शिकाएँ, सहायक पाठमालाएँ, अनुसंधान रिपोर्ट आदि भी निकालती है। इसके अलावा, रा.शै.अ.प्र.प. अध्यापक शिक्षक, अध्यापक प्रशिक्षणार्थी एवं सेवारत अध्यापकों के उपयोग हेतु अनुदेशी सामग्री भी प्रकाशित करती है। शोध और विकास के पश्चात् तैयार की गई यह अनुदेशी सामग्री राज्यों एवं संघ शासित क्षेत्रों के विभिन्न अभिकरणों के लिए आदर्श सामग्री होती है। ये उन्हें ग्रहण एवं/या रूपांतरण हेतु उपलब्ध कराई जाती है। ये पाठ्यपुस्तकें अंग्रेजी, हिन्दी और उर्दू में प्रकाशित की जाती है।

रा.शै.अ.प्र.प. शैक्षिक जानकारी के प्रसार हेतु पाँच पत्रिकाएँ प्रकाशित करती है– (1) *प्राइमरी टीचर* (अंग्रेजी और हिन्दी) का लक्ष्य सीधे कक्षा में उपयोग के लिए प्राथमिक स्कूल अध्यापकों को सार्थक एवं सुसंगत सामग्री प्रदान करना है, (2) *स्कूल साइंस*-विज्ञान शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा हेतु खुला मंच प्रदान करती है, (3) *जनरल ऑफ इंडियन एजुकेशन*–समसामयिक शैक्षिक विषयों पर चर्चा के माध्यम से शिक्षा में मौलिक और आलोचनात्मक विचार शक्ति को प्रोत्साहित करता है। (4) *इंडियन एजुकेशनल रिव्यू*–इसमें अनुसंधान लेख होते हैं और यह शिक्षा में अनुसंधानकर्त्ताओं को मंच प्रदान करती है। (5) *भारतीय आधुनिक शिक्षा* -यह हिन्दी में प्रकाशित की जाती है तथा समकालीन विषयों पर शिक्षा में आलोचनात्मक विचार शक्ति को प्रोत्साहित करती है तथा शैक्षिक समस्याओं और अभ्यासों के लिए विचारों को प्रसारित करती है। इसके अलावा, **एन.सी.ई.आर.टी. न्यूज लैटर** पत्रिका हर मास प्रकाशित की जाती है। क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय अपनी पत्रिकाएँ अलग से निकालते हैं।

अनुदेशी सामग्री का मूल्यांकन

राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से पाठ्यपुस्तकों और अन्य अनुदेशी सामग्री का निरन्तर मूल्यांकन होता रहता है। इस प्रयोजन के लिए आधार क्रियाविधि, उपकरण एवं तकनीकें विकसित की गई हैं। विद्यालयी पाठ्यपुस्तकों के शैक्षिक और भौतिक पहलुओं के मूल्यांकन हेतु मार्गदर्शिका और पद्धतियाँ निर्धारित की गई हैं। पाठ्यपुस्तकों के संशोधन में उपयोग करने वाले स्कूलों से प्राप्त फीडबैक भी सहायक होती है।

विनिमय कार्यक्रम

विशिष्ट शैक्षिक समस्याओं के अध्ययन तथा विकासशील राष्ट्रों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों की व्यवस्था करने के लिए रा.शै.अ.प्र.प. यूनेस्को, यूनिसेफ, यू.एन.डी.पी. और यू.एन.एफ.पी.ए. जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ मिलकर कार्य

करती है। यह यूनेस्को क्षेत्रीय कार्यालय बैंकांक के तत्वावधान में सीड के अंतर्गत एसोसिएटिड केन्द्रों में से एक है। यह शैक्षिक नवाचार एवं विकास हेतु एशियाई केन्द्र (एपीड) के राष्ट्रीय विकास समूह के सचिवालय रूप में कार्य करती है। रा.शै.अ.प्र.प. विकासशील देशों के शैक्षिक कार्यकर्त्ताओं के लिए अटैचमेंट एवं कार्यशालाओं में प्रतिभागिता के माध्यम से प्रशिक्षण सुविधाएँ प्रदान करती है।

रा.शै.अ.प्र.प. भारत सरकार द्वारा अन्य राष्ट्रों के साथ हस्ताक्षरित किए जाने वाले द्विपक्षीय सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों का जहाँ तक स्कूली शिक्षा, अध्यापक शिक्षा के प्रावधानों का संबंध है, उन्हें कार्यान्वित करने के लिए एक मुख्य अभिकरण के रूप में कार्य करती है। इस संबंध में, विशिष्ट शैक्षिक समस्याओं का भारतीय अपेक्षाओं के अनुरूप अध्ययन करने के लिए शिष्ट मंडल भेजती है तथा अन्य देशों के विद्वानों के लिए प्रशिक्षण एवं अध्ययन यात्रा की व्यवस्था करती है। परिषद् अन्य देशों के साथ शैक्षिक सामग्री का आदान-प्रदान भी करती है। अनुरोध किए जाने पर परिषद् अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, सेमिनारों, कार्यशालाओं, बैठकों, विचारगोष्ठी आदि में भाग लेने के लिए अपने संकाय सदस्यों को नामित करती है।

संरचना और प्रशासन

केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री रा.शै.अ.प्र.प. की ''साधारण सभा'' के अध्यक्ष हैं। सभी राज्यों एवं संघ शासित क्षेत्रों के शिक्षा मंत्री इस सभा के सदस्य हैं। इसके अतिरिक्त विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष, भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के शिक्षा विभाग के सचिव, विश्वविद्यालयों के चार उपकुलपति (प्रत्येक क्षेत्र में से एक) केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष, केन्द्रीय विद्यालय संगठन के आयुक्त, परिषद् की कार्यकारी समिति के सभी सदस्य (जो ऊपर सम्मिलित नहीं हैं) इस सभा के सदस्य हैं। अध्यक्ष समय-समय पर अधिकतम अन्य 12 व्यक्ति नामित कर सकता है। इनमें कम से कम 4 सदस्य विद्यालय के अध्यापक होने चाहिए।

कार्यकारिणी समिति रा.शै.अ.प्र.प. का मुख्य शासी निकाय है। केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री इसके अध्यक्ष (पदेन) हैं और मानव संसाधन विकास मंत्रालय में राज्य शिक्षा एवं संस्कृति मंत्री (पदेन) उपाध्यक्ष हैं। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के शिक्षा विभाग के सचिव, परिषद् के निदेशक, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अध्यक्ष, विद्यालयी शिक्षा में रुचि रखने वाले चार शिक्षाविद (इनमें कम से कम दो विद्यालय के शिक्षक होंगे) परिषद् के संयुक्त निदेशक, परिषद् संकाय के तीन सदस्य (इनमें कम से कम दो प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्ष होने चाहिएँ) मानव संसाधन विकास मंत्रालय का एक प्रतिनिधि तथा वित्त मंत्रालय का एक प्रतिनिधि भी सम्मिलित है जो परिषद् का वित्तीय सलाहकार होता है।

निम्नलिखित स्थायी समितियाँ इस कार्यकारिणी समिति की सहायता करती हैं :

1. वित्त समिति
2. स्थापना समिति
3. भवन एवं निर्माण समिति
4. क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय की प्रबंध समिति
5. कार्यक्रम सलाहकार समिति
6. शैक्षिक अनुसंधान तथा नवाचार समिति

परिषद् मुख्यालय में निम्नलिखित मुख्य अनुभाग सम्मिलित हैं:

1. परिषद् सचिवालय
2. लेखा शाखा

भारत सरकार द्वारा रा.शै.अ.प्र.प. के चार वरिष्ठ पदाधिकारी नियुक्त किये जाते हैं – निदेशक, संयुक्त निदेशक, संयुक्त निदेशक (के.शै.प्रौ.सं.) और सचिव। इस वर्ष निम्नलिखित अधिकारियों ने ये पद संभाले :

डा.पी.एल. मल्होत्रा – निदेशक
डा.ए.के.जलालुद्दीन – संयुक्त निदेशक
डा.एम.एम.चौधरी – संयुक्त निदेशक (के.शै.प्रौ.सं.)

1988-89

श्री ओ.पी.केलकर आई.ए.एस. – सचिव

शैक्षिक कार्यों में निदेशक की सहायतार्थ तीन डीन हैं।

डीन (अकादमिक) : प्रोफेसर एच.एस. श्रीवास्तव
डीन (अनुसंधान) : प्रोफेसर बाकर मेंहदी
डीन (समन्वय) : प्रोफेसर ए.के.शर्मा

डीन (अकादमिक) एन.आई.ई.के विभागों के शैक्षिक कार्य को समन्वित करते हैं। डीन (अनुसंधान) अनुसंधान कार्यक्रम समन्वित करते हैं और शैक्षिक अनुसंधान तथा नवाचार समिति के कार्य की देखभाल करते हैं। डीन (समन्वय) सेवा उत्पादन विभागों, क्षेत्रीय सलाहकार कार्यालयों और क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों के कार्यकलापों को समन्वित करते हैं। 1988–89 के दौरान परिषद् के निम्नलिखित घटक हैं :

1. राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.)
2. केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.)
3. चार क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय (आर.सी.ई.)
4. 17 क्षेत्रीय सलाहकार कार्यालय (एफ.ए.)

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान

1988–89 के दौरान राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, नई दिल्ली के निम्नलिखित विभाग/एकक थे, इनका संबंध अपने-अपने क्षेत्रों के अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण, विस्तार, मूल्यांकन और प्रसार कार्य से था :

1. सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.एच.)
2. विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.)
3. विद्यालय पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.पी.एस.ई.ई.)
4. शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग (डी.वी.ई.)
5. अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा एवं विस्तार सेवा विभाग (डी.टी.ई.एस.ई.ई.एस.)
6. मापन, मूल्यांकन, सर्वेक्षण एवं प्रदत्त सामग्री विभाग (डी.एम.ई.एस.डी.पी.)
7. शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन विभाग (डी.ई.पी.सी.जी.)
8. क्षेत्रीय सेवाएँ और विस्तार समन्वयन विभाग (डी.एफ.एस.सी.)
9. नीति अनुसंधान, नियोजन और कार्यक्रम विभाग (डी.पी.आर.पी.पी.)
10. पुस्तकालय प्रलेखन और सूचना विभाग (डी.एल.डी.आई.)
11. अनौपचारिक शिक्षा एवं अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन जाति शिक्षा विभाग (डी.एन.एफ.ई.ई.एस.सी.एस.टी.)
12. प्रकाशन विभाग (पी.डी.)
13. कर्मशाला विभाग (डब्ल्यू.डी.)
14. नवोदय विद्यालय प्रकोष्ठ (एन.वी.सी.)
15. पत्रिका प्रकोष्ठ (जे.सी.)
16. अंतर्राष्ट्रीय संबंध एकक (आई.आर.यू.)
17. महिला अध्ययन एकक (डब्ल्यू.एस.यू.)

केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान

के.शै.प्रौ.सं. संयुक्त निदेशक की अध्यक्षता में रा.शै.अ.प्र.प. के अंगरूप में स्वायत्ता के साथ कार्य करता है। कार्यक्रमों और कार्यकलापों के मार्गदर्शन हेतु संस्थान की सलाहकार समिति है। के.शै.प्रौ.सं. के निम्नलिखित प्रमुख प्रभाग है।

1. दूरस्थ शिक्षा तथा योजना, समन्वय, अनुसंधान और मूल्यांकन प्रभाग
2. शैक्षिक दूरदर्शन, फोटो एवं फिल्म प्रभाग
3. शैक्षिक रेडियो प्रभाग
4. शैक्षिक आलेख, प्रशिक्षण और राज्य समन्वय प्रभाग
5. आलेखिकी, प्रदर्शनी और मुद्रण प्रभाग
6. सूचना, प्रलेखन और केन्द्रीय फिल्म लाएब्रेरी प्रभाग
7. तकनीकी योजना, प्रचालन और अनुरक्षण प्रभाग
8. प्रशासन और लेखा प्रभाग

1988-89

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूर में स्थित हैं। रा.शै.अ.प्र.प. के नियमों/विनियमों के अंतर्गत हर महाविद्यालय के सामान्य पर्यवेक्षण और कार्यों के लिए प्रबंध समिति जिम्मेदार है। महाविद्यालय की प्रबंध समिति उस विश्वविद्यालय के उपकुलपति की अध्यक्षता में कार्य करती है जिससे वह संबद्ध है। महाविद्यालय के प्रधानाचार्य प्रबंध समिति के उपाध्यक्ष के रूप में कार्य करते हैं। यह समिति वर्ष में दो बार मिलती है। आवश्यकता पड़ने पर समिति की विशेष बैठक किसी भी समय बुला सकते हैं। डीन (शिक्षण) महाविद्यालय के प्रधानाचार्य की सहायता करता है।

ये महाविद्यालय आवासीय संस्थाएँ हैं, जिनमें प्रयोगशाला, पुस्तकालय और अन्य सुविधाएँ पर्याप्त रूप से उपलब्ध हैं। हर महाविद्यालय का एक प्रदर्शनात्मक बहुउद्देशीय विद्यालय है जहां विकसित अध्यापन विधियों को वास्तविक कक्षा स्थिति में परखा जाता है।

क्षेत्रीय सलाहकार कार्यालय

निम्नलिखित स्थानों पर 17 क्षेत्रीय सलाहकार कार्यालय स्थापित किए हैं। ये राज्य शिक्षाधिकारियों, एवं राज्य स्तरीय संस्थानों जो विद्यालयी शिक्षा प्रणाली को शैक्षिक और प्रशिक्षण निवेश प्रदान करने के लिए स्थापित किए गए हैं, संपर्क सूत्र के रूप में कार्य करते है :

1. अहमदाबाद
2. इलाहाबाद
3. बंगलौर
4. भोपाल
5. भुवनेश्वर
6. कलकत्ता
7. चंडीगढ़
8. गुवाहाटी
9. हैदराबाद
10. जयपुर
11. मद्रास
12. पटना
13. शिलांग
14. पटना
15. शिमला
16. श्रीनगर
17. त्रिवेन्द्रम

दो

1988-89 के दौरान हुए कार्यकलापों पर एक विहंगम दृष्टि

इस अवधि में, परिषद् ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के कार्यान्वयन हेतु निर्दिष्ट कार्यों में प्रमुख भूमिका निभाई एवं देश में विद्यालयी शिक्षा और अध्यापक शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने के लिए परिषद् लगातार प्रयास करती रही। वर्ष 1988-89 के दौरान परिषद् द्वारा किए गए कार्यों के महत्वपूर्ण पहलू इस प्रकार से थे – शैशवकालीन देखभाल और शिक्षा से संबंधित कार्यक्रमों और परियोजनाओं का प्रतिपादन एवं कार्यान्वयन, प्राथमिक शिक्षा का व्यापकीकरण, बालिकाओं और महिलाओं, अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों, शैक्षिक रूप से पिछड़े अल्पसंख्यकों और विकलांग बच्चों, जैसे वर्गों की शिक्षा, विद्यालय स्तर पर शिक्षा की विषयवस्तु और प्रक्रियाओं का पुनरभिविन्यास, विज्ञान शिक्षा में सुधार, उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिक्षा का व्यावसायीकरण, अध्यापक शिक्षा का पुनर्गठन एवं पुनः संरचना, शिक्षा में सुधार एवं प्रसार तथा शिक्षा में वैकल्पिक प्रणाली के विकास हेतु शैक्षिक प्रौद्योगिकी को प्रोत्साहन, कम्प्यूटर साक्षरता और विद्यालयी अध्ययन, नवोदय विद्यालय में प्रवेश हेतु चयन, शैक्षिक एवं व्यावसायिक मार्गदर्शन, शैक्षिक सर्वेक्षण और राष्ट्रीय प्रतिभा खोज, शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार को प्रोत्साहन और प्रकाशन तथा प्रचार एवं प्रसार। परिषद् ने शिक्षा के क्षेत्र में यूनिसेफ सहायता प्राप्त परियोजनाओं राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना, कम्प्यूटर साक्षरता और विद्यालय अध्ययन (कलास) परियोजना, विभिन्न राज्यों और संघ शासित क्षेत्रों में कार्यान्वित किए जाने वाले विज्ञान उपकरण के निर्माण हेतु भारतीय – जर्मन परियोजना से संबंधित कार्यकलापों का समन्वयन किया। परिषद् ने व्यापक रूप से फैले क्षेत्र सलाहकार कार्यालयों और क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों के माध्यम से राज्य एवं संघ शासित क्षेत्रों से निकटवर्ती संपर्क बनाए रखा। इसने शिक्षा निदेशालयों/राज्य शिक्षा संस्थान/राज्यों में शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् एवं राज्यों तथा संघीय क्षेत्रों की समतुल्य एजेंसियों द्वारा आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों को सक्रिय रूप से सहयोग दिया।

शैशवकालीन देखभाल एवं शिक्षा (ई.सी.सी.ई.)

परिषद् ने शैशवकालीन देखभाल और शिक्षा के कार्यक्रमों को अधिक प्रभावी बनाने के लिए अनेक कार्यकलाप किए।

बाल माध्यम प्रयोगशाला (सी.एम.एल) परियोजना के अंतर्गत 3 से 8 वर्ष तक की आयु के बच्चों के लिए शैक्षिक एवं मनोरंजन संबंधी सामग्री के विकास से संबंधित कार्यकलाप इस वर्ष चलते रहे। शैशवकालीन शिक्षा (ई.सी.ई) परियोजना के अंतर्गत शैशवकालीन शिक्षा एककों को मजबूत बनाने, विद्यालय पूर्व शिक्षकों तथा शिक्षक प्रशिक्षकों को प्रशिक्षण देने और शैशवकालीन शिक्षा हेतु सीखने और खेलने की सामग्री का विकास करने के लिए 10 राज्यों को सहायता प्रदान की गई।

ई.सी.ई परियोजना के अंतर्गत ई.सी.ई एवं समेकित बाल विकास सेवाओं (आई.सी.डी.एस.) के अंतर्गत कार्यक्रमों के बीच संपर्क स्थपित करने को प्रमुख बल दिया गया। आईसीडी एस के पदादिकारियों के लिए अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए। कर्नाटक में ई.सी.ई. और आई.सी.डी.एस. की समाभिरूपता के विशेष संदर्भ में ई.सी.ई. द्वारा राज्य स्तरीय संगोष्ठी आयोजित की गई। राजस्थान ने आई सी डी एस के लिए कुछ अमुद्रित सामग्री तैयार की। ई.सी.ई. परियोजना के अंतर्गत तैयार चित्र पुस्तकें और खेल सामग्री लगभग 8 000 आँगनवाड़ियों को उड़ीसा में दी गई।

ई.सी.ई. परियोजना के अंतर्गत, संदर्भ व्यक्तियों के लिए एक अभिविन्यास पाठ्यक्रम तथा परियोजना में भाग लेने वाले विभिन्न राज्यों के ई.सी.ई. परियोजना समन्वयकों के लिए दो बैठकें आयोजित कीं। शिक्षकों, शिक्षक प्रशिक्षकों तथा माता-पिता के लिए अनुदेशी सामग्री के अंतर्गत 3 प्रकाशन निकाले गए। इसके अतिरिक्त ई.सी.ई. परियोजना में भाग लेने वाले 10 राज्यों में विद्यालय पूर्व अनुभवों के बारे में नामांकन एवं अवरोधन पर अगस्त मास में एक अध्ययन शुरू किया। इस संबंध में, आंकड़ों को एकत्रित कर लिया है तथा इन्हें तालिकाबद्ध करने का कार्य एवं उसका विश्लेषण भी आरंभ कर दिया है।

शैशवकालीन उद्दीपन के लिए वैकल्पिक उपागम बनाने के प्रयास के रूप में, उड़ीसा में आदिवासियों तथा शहरी गंदी बस्तियों में गृह आधारित कार्यक्रमों को परखा गया। यह अध्ययन पूरा हो चुका है और इस अध्ययन की रिपोर्ट तैयार की जा रही है। बाल से बाल कार्यक्रम के अंतर्गत जिसमें बड़े बच्चों को स्वस्थ जीवन जीने संबंधी उपयुक्त जानकारी देना और उनके द्वारा परिवार एवं समुदाय में छोटे बच्चों को स्वस्थ जीवन जीने संबंधी शिक्षा देने में शिक्षकों की भूमिका निभाना सम्मिलित है, कक्षा 4 और 5 के बच्चों की स्वास्थ्य और पोषण शिक्षा संबंधी नियमित कार्यकलापों के साथ-साथ अध्यापकों के प्रशिक्षण तथा समुदाय को सम्मिलित करते हुए विद्यालयों में बाल मेलों का आयोजन संबंधी कार्यकलाप आयोजित किए गए। शैशवकालीन शिक्षा परियोजना के अंतर्गत दिल्ली नगर निगम के विद्यालयों में कार्यान्वित किए जाने के लिए खेल तथा कार्यकलाप पर आधारित शिक्षण विधि पर अभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। इस परियोजना के अंतर्गत आयोजित अन्य कार्यक्रमों में नर्सरी तथा कक्षा 1 और 2 के अध्यापकों हेतु सर्जनात्मक प्रवृत्ति और नाटक के तीन पुनश्चर्या पाठ्यक्रम भी सम्मिलित है।

आंगनवाड़ी और प्राथमिक स्कूलों के कक्षा 1 और 2 के बच्चों के सीखने के अनुभवों को रेडियो के माध्यम से समृद्ध करने के लिए रा.शै.अ.प्र.प. ने आकाशवाणी, कोटा के साथ अक्तूबर, 1988 को रेडियो की संभाव्यता संबंधी अध्ययन शुरू किया। इस परियोजना में प्रतिदिन 15 मिनट के प्रसारण का 52 सप्ताहों की अवधि तक प्रावधान है। इस परियोजना के अंतर्गत आए सी.डी.एस. सुपरवाइजर और सी.डी.पी.ओ. जो आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को बच्चों के लिए आडियो कार्यक्रम के प्रयोग हेतु प्रशिक्षण देते हैं, उन का एक प्रशिक्षण कार्यक्रम और बच्चों के साथ की जाने वाली प्रसारणोपरान्त कार्यकलापों के आयोजन संबंधी विभिन्न पहलुओं पर आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के 3 प्रसारण कार्यक्रम शामिल हैं।

अध्यापकों में विद्यालय पूर्व और प्रारंभिक प्राथमिक स्तरों पर शैक्षिक खिलौने तथा खेल विधि द्वारा शिक्षण विधि के प्रति जागरुकता उत्पन्न करने के लिए रा.शै.अ.प्र.प. ने क्षेत्र सलाहकार कार्यालयों के माध्यम से 31 राज्यों और संघ शासित क्षेत्रों में खिलौने बनाने की प्रतियोगिताएँ आयोजित कीं। राज्य स्तर पर खिलौना बनाने की प्रतियोगिता के प्रथम पुरस्कार विजेताओं ने रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा 19 से 23 दिसंबर, 1988 तक आयोजित राष्ट्रीय खिलौना निर्माण कार्यशाला सह प्रतियोगिता में भाग लिया। इसके अलावा, विद्यालयपूर्व नेत्रहीन बच्चों के लिए शैक्षिक खिलौनों की पहचान पर एक कार्यशाला आयोजित की गई। अन्य गतिविधियों में अरुणाचल प्रदेश के शीर्ष व्यक्तियों हेतु शैशवकालीन शिक्षा में चार सप्ताह का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम एवं जिज्ञासु ट्राइबल अनुसंधान केन्द्र, मध्य प्रदेश के शीर्ष कार्यकर्ताओं हेतु 12 दिन का अन्य प्रशिक्षण पाठ्यक्रम सम्मिलित है।

1988-89

प्राथमिक शिक्षा का व्यापकीकरण

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अनुरोध पर रा.शै.अ.प्र.प. ने आपरेशन ब्लैक बोर्ड योजना के अंतर्गत प्राथमिक विद्यालयों को दी जाने वाली अनिवार्य वस्तुओं के मानदंड एवं विनिर्देशन तैयार करने का दायित्व हाथ में लिया था। रा.शै.अ.प्र.प. ने भारतीय मानव ब्यूरो के सहयोग से विभिन्न वस्तुओं के मानदंडों एवं विनिर्देशों को अंतिम रूप दे दिया है। इस संबंध में *आपरेशन ब्लैक बोर्ड : प्राथमिक स्तर पर अनिवार्य सुविधाएं – मानंदड और विनिर्देश* नामक दस्तावेज तैयार किया गया और *आपरेशन ब्लैक बोर्ड* योजना के अंतर्गत निधि प्राप्त करने तथा परियोजना के प्रस्तावों के प्रतिपादन हेतु राज्य/संघीय क्षेत्रों में व्यापक प्रसार के लिए इसे प्रकाशित किया गया।

प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या पुनर्नवीकरण (पी.ई.सी.आर.) परियोजना के अंतर्गत *नामांकन, अवरोधन, प्रगतिरोध एवं छात्र उपलब्धि अध्ययन* पर किए गए कार्य के अंग रूप में राज्यों से एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण किया गया और प्राथमिक स्तर पर छात्र उपलब्धि नामक रिपोर्ट निकाली गई। *पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा और पर्यावरणीय स्वच्छता (एन.एच.ई.ई.एस.)* परियोजना के अतंर्गत दो अध्ययनों अर्थात् *छात्र उपलब्धि अध्ययन और सामुदायिक संपर्क कार्यक्रम का प्रभाव* के संबंध में आंकड़े एकत्रित करने तथा उनके समेकन का कार्य भी पूरा हो चुका है। मानव संसाधन विकास की गहन शिक्षा परियोजना (आई.ई.पी.) के अंतर्गत रा.शै.अ.प्र.प. ने परियोजना की संकल्पना और नीतियों पर राज्य स्तर के शीर्ष व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित किया। इस आलोच्य वर्ष में 6 राज्यों और एक संघशासित क्षेत्र में यह परियोजना कार्यान्वित की गई (महाराष्ट्र, मिजोरम, उड़ीसा, राजस्थान, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश और दादर तथा नगर हवेली)। इस परियोजना का उद्देश्य प्राथमिक शिक्षा के व्यापकीकरण का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए समुदाय में विद्यालय पूर्व, प्राथमिक, अनौपचारिक और प्रौढ़ शिक्षा संबंधी कार्यकलापों के एकीकरण को प्रोत्साहन देना है। परियोजना के कार्यान्वयन के प्रमुख तत्वों में क्षेत्रवार गहन संपर्क, कार्यकलापों और संसाधन निवेशों की समाभिरुपता, विकेन्द्रित नियोजन तथा प्रबंध व्यवस्था में सामुदायिक प्रतिभागिता, इसके कार्यान्वयन के सभी पहलुओं में लचीलापन एवं शैक्षिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों और जनसंख्या क्षेत्रों को प्राथमिकता देना सम्मिलित हैं।

अनौपचारिक शिक्षा के कार्यक्रम से संबंधित अनुसंधान तथा विकास के कार्यकलाप तथा अनौपचारिक शिक्षा के कार्यान्वयन में कार्यरत कार्मिकों का प्रशिक्षण/अभिनवीकरण से संबंधित कार्य परिषद् का महत्वपूर्ण कार्य क्षेत्र रहा है। प्राथमिक शिक्षा की व्यापक पहुँच परियोजना (सी.ए.पी.ई.) के अंतर्गत सीखने की सामग्री के विकास और विद्यालयेतर बच्चों की शिक्षा हेतु शिक्षा केन्द्रों की स्थापना और प्रबंध व्यवस्था संबंधी कार्यकलाप जारी हैं। 1988-89 में यह परियोजना 15 राज्यों में कार्यान्वित की गई। पर्यावरणीय अध्ययन के चार्ट सैट सहित 7 माड्यूल मुद्रित किए और बिहार, मध्य प्रदेश राजस्थान और उत्तर प्रदेश हिन्दी भाषी राज्यों में परियोजना के अंतर्गत 302 शिक्षा केन्द्रों को भेजे गए। इस परियोजना के अतंर्गत विकसित सीखने की सामग्री सात मुख्य स्वयंसेवी संगठनों को भी भेजी ताकि इनके द्वारा चलाए जा रहे अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में इस सामग्री का उपयोग हो सके। परिषद् ने परियोजना के प्रतिभागी राज्यों को सीखने की सामग्री विकसित करने, शिक्षा केन्द्रों को आगे बढ़ाने वालों/कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण और प्रश्न बैंक तैयार करने के लिए तकनीकी सहायता प्रदान की।

रा.शै.अ.प्र.प ने केन्द्र प्रायोजित अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम की सहायता हेतु अनेक कार्यकलाप किए। इन कार्यकलापों में अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों के अनुकूल अनुदेशी सामग्री व सीखने और सिखाने की मूल्यांकन परक उपयुक्त कार्य नीतियों के विकास को अधिक बल दिया गया। इस परियोजना में अनुसंधान कार्यकलापों में प्रवेश बिन्दु तथा 1 और 2 स्तर के बच्चों की उपलब्धि के मूल्यांकन हेतु साधन और तकनीकों का विकास, प्राथमिक स्तर पर चुने गये अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों की सफलता का अध्ययन तथा विभिन्न राज्यों/संघीय क्षेत्रों में अनौपचारिक शिक्षा के कार्यक्रमों हेतु विकसित पाठ्यचर्या और

अनुदेशी सामग्री का विश्लेषण सम्मिलित है। नई विकसित अनुदेशी सामग्री में मिडिल स्तर पर अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में उपयोग हेतु कक्षा 1 और 2 की गणित की पुस्तकें, 8 कार्मिक पुस्तकें तथा केन्द्रों में मिडिल स्तर पर कार्य कर रहे अनुदेशकों के उपयोग हेतु अध्यापक संदर्शिका और गणित की अभ्यास पुस्तिका समाविष्ट है। रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा अपनाए गए अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के अनुदेशकों और पर्यवेक्षकों के लिए परिषद् ने प्रशिक्षण मैनुअल भी तैयार किए हैं। अन्य कार्यकलापों में निम्नलिखित कार्य समाविष्ट है :– अनौपचारिक शिक्षा पर्यवेक्षकों के लिए प्रशिक्षण सामग्री का विकास, अनौपचारिक शिक्षा से संबंधित सीखने, सिखाने और प्रशिक्षण विधियों पर फिल्म निर्माण, अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम से संबंधित संदर्भ व्यक्तियों का अभिविन्यास कार्यक्रम, राज्यों/संघ क्षेत्रों में अनौपचारिक शिक्षा एककों के स्वैच्छिक संगठनों के अनौपचारिक शिक्षा कार्यकर्ताओं का अभिविन्यास कार्यक्रम तथा अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों के कार्यान्वयन की प्रगति की समीक्षा हेतु अनौपचारिक शिक्षा के वार्षिक सम्मेलन का आयोजन ।

विद्यालय स्तर पर शिक्षा की विषयवस्तु और प्रक्रियाओं का पुनरभिविन्यास

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुरूप रा.शै.अ.प्र.प. ने विद्यालय शिक्षा में विषयवस्तु और प्रक्रियाओं के पुनरभिविन्यास हेतु समन्वित उपाय किए। इन उपायों का मुख्य दबाव इन बिन्दुओं पर था–विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर न्यूनतम स्तरों पर अधिगम संबंधी मानदंडों को लागू करना, संशोधित पाठ्य विवरणों पर आधारित अनुदेशी पैकेज का विकास, बाल केन्द्रित सीखने की कार्य नीतियों और गतिविधियों पर आधारित अध्यापन विधियों का विकास तथा व्यावसायिक सक्षमता के उन्नयन हेतु अध्यापकों और अन्य शैक्षिक कार्मिकों का प्रशिक्षण, अध्यापन और अधिगम की प्रक्रियाओं में सुधार लाने के लिए परीक्षा में सुधार तथा अविरल एवं व्यापक मूल्यांकन का प्रारंभ। विद्यालयी अवस्था पर शिक्षा की विषयवस्तु और प्रक्रियाओं के पुनरभिविन्यास हेतु रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा किए गए मुख्य प्रयास निम्नलिखित हैं :

(i) परिषद् द्वारा 1986 में तैयार किये गए *प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या – एक ढाँचा* नामक दस्तावेज को राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 1986 के संदर्भ में संशोधित किया गया। अप्रैल, 1988 में रा.शै.अ.प्र.प. ने *प्रारंभिक एवं माध्यमिक शिक्षा हेतु राष्ट्रीय पाठ्यचर्या एक ढाँचा* – नामक संशोधित दस्तावेज प्रकाशित किया।

(ii) 1986-87 में परिषद् द्वारा तैयार प्राथमिक स्तर पर पाठ्यचर्या के विकास हेतु प्रारूप के मार्गदर्शी सिद्धान्तों को देश के विभिन्न अभिकरणों से प्राप्त सुझावों के अनुसार संशोधित किया गया। यह संशोधित प्रलेख "प्राथमिक अवस्था पर न्यूनतम अधिगम स्तर – सामान्य कोर अवयवों सहित पाठ्य-विवरण" शीर्षक से प्रकाशित किया गया और इसे राज्यों/संघीय क्षेत्रों में पाठ्यचर्या तथा अनुदेशी सामग्री के विकास में लगे हुए अभिकरणों में व्यापक स्तर पर वितरित किया गया।

(iii) रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा तैयार किए गए संशोधित अनुदेशी पैकेज, जिसमें कक्षा 1,3 और 6 की पाठ्यपुस्तकें भी सम्मिलित हैं, वर्ष 1987 में प्रकाशित किए गए और वर्ष 1987-88 के शैक्षिक स्तर में केन्द्रीय विद्यालयों तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से सबद्ध कुछ अन्य विद्यालयों में लागू किए गये। वर्ष 1988 में कक्षा 2,4 और 7 के लिए रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा तैयार की गई पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित की गईं और 1988-89 के शैक्षिक सत्र में केन्द्रीय विद्यालयों तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से संबद्ध विद्यालयों में ये पुस्तकें लगाई गईं। 1988 में परिषद् द्वारा प्रकाशित कक्षा 9 और 11 के लिए विज्ञान तथा गणित की नई पाठ्यपुस्तकें भी

1988-89 के शैक्षिक सत्र में केन्द्रीय विद्‌यालयों में लगाई गई।

(iv) 1988-89 में, परिषद् ने कक्षा 5 और 8 की नई पाठ्यपुस्तकें तैयार करने से संबंधित अनेक कार्यकलाप किए। इस अवधि में परिषद् ने कक्षा 9 और 10 के लिए भाषा तथा सामाजिक विज्ञान, कक्षा 10 और 12 के लिए विज्ञान और गणित की नई पाठ्यपुस्तकें तैयार कीं। आशा है कि शैक्षिक सत्र वर्ष 1989-90 में केन्द्रीय विद्‌यालयों में पाँचवीं और आठवीं की नई पाठ्य पुस्तकें, कक्षा नवीं और ग्यारहवीं कक्षाओं के लिए भाषा और सामाजिक विज्ञान तथा कक्षा 10 और 12 में विज्ञान और गणित की नई पाठ्यपुस्तकें लगा दी जाएँगी। रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा कक्षा 9 और 11 की तैयार की गई भाषा, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान और गणित की नई पाठ्यपुस्तकों के संबंध में आशा की जाती है कि वर्ष 1989-90 के शैक्षिक सत्र के दौरान केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से संबद्ध विद्‌यालयों में ये पुस्तकें लगा दी जाएँगी। इन नई पाठ्यपुस्तकों के विन्यास, डिजाइन, चित्रांकन एवं जिल्दसाजी में पर्याप्त रूप से सुधार किए गए हैं ताकि छोटे बच्चे इन पुस्तकों की ओर आकर्षित हो सकें। उच्चतर प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक अवस्थाओं की विज्ञान और गणित की पाठ्यपुस्तकें एक टीम, जिसमें विश्वविद्‌यालयों, रा.शै.अ.प्र.प तथा अन्य राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर की संस्थाओं के प्रख्यात वैज्ञानिक और गणितज्ञ सम्मिलित थे, द्वारा तैयार की गईं। सभी नई पाठ्यपुस्तकों की पांडुलिपियों का प्रकाशन से पूर्व प्रसिद्ध विद्वानों, कार्यरत अध्यापकों, अध्यापक शिक्षकों तथा पाठ्यचर्या विशेषज्ञों द्वारा बड़ी बारीकी से पुनरीक्षण किया गया।

(v) राष्ट्रीय एकता की भावना को प्रोत्साहन देने और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के अध्ययन हेतु परिषद् ने राष्ट्रीय एकता और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अध्ययन से संबंधित विषयवस्तु की पर्याप्तता और उपयुक्तता को दृष्टि में रखते हुए इतिहास की नई पाठ्यपुस्तकों के मूल्यांकन पर दो कार्यशालाएँ आयोजित कीं। 1988-89 के दौरान, आंध्र प्रदेश, बिहार, गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान और उत्तर प्रदेश की इतिहास की नवीन पाठ्य पुस्तकों का राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से मूल्यांकन किया गया। परिषद् ने राष्ट्रीय जीवनियों का शब्दकोश तैयार करने का कार्य भी आरंभ कर दिया है। इस शब्दकोश की संरचना की सामान्य रूपरेखा तैयार कर ली है और शब्दकोश में सम्मिलित किए जाने वाले व्यक्तियों की पहचान कर ली है।

(vi) विद्‌यालयों में संशोधित कार्यानुभव के कार्यक्रम को विद्‌यालयों में प्रभावी कार्यान्वयन को सरल करने के लिए परिषद् ने कृषि, वाणिज्य, गृह विज्ञान और प्रौद्योगिकी से संबंधित कार्यानुभव की अनुदेशी सामग्री विकसित करने तथा शीर्ष व्यक्तियों और अध्यापकों के अभिविन्यास, प्रशिक्षण को जारी रखा। 1988-89 के दौरान परिषद् ने आंध्र प्रदेश, कर्नाटक और मध्य प्रदेश के शीर्ष व्यक्तियों के लिए कार्यानुभव संबंधी तीन अभिविन्यास कार्यक्रम और नवोदय विद्‌यालयों के अध्यापकों हेतु भी दो अभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित किए। राज्यों के 119 शीर्ष व्यक्तियों और नवोदय विद्‌यालयों के 90 अध्यापकों को संशोधित कार्यानुभव कार्यक्रम के कार्यान्वयन के विभिन्न पहलुओं से अभिनवीकृत किया। इसके अतिरिक्त स्वैच्छिक संगठनों द्वारा चलाए जा रहे विद्‌यालयों में कार्यरत 48 अध्यापकों के लिए कार्यानुभव पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा कार्यानुभव संबंधी गतिविधियों पर अनुदेशी सामग्री के विकास हेतु अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया।

(vii) विद्यालयी अध्यापकों के सामूहिक अभिविन्यास कार्यक्रम (पी.एम.ओ.एस.टी.) के अतंर्गत वर्ष 1986 से रा.शै.अ.प्र.प. लगभग 5 लाख विद्यालयी अध्यापकों के लिए राज्य सरकारों के माध्यम से अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित कर रही है ताकि अध्यापकों की अभिप्रेरणा और व्यावसायिक क्षमता को बढ़ावा मिले जिससे वे विद्यालयी स्तर पर शिक्षा की विषयवस्तु और प्रक्रियाओं के पुनरभिविन्यास की प्रक्रिया में प्रमुख भूमिका निभाने के लिए बेतहर ढंग से तैयार हों। 1988 में प्राथमिक और माध्यमिक अध्यापकों को प्रशिक्षित करने के लिए 9113 शिविर लगाए गए। इन शिविरों में 4,39,261 अध्यापक प्रशिक्षित किए, जिनमें 2,97,977 प्राथमिक एवं 1,41,284 उच्च प्राथमिक और माध्यमिक अध्यापक थे। अध्यापकों के प्रशिक्षण हेतु शिविरों के संगठन में 10,300 संदर्भ व्यक्तियों ने भाग लिया। 1986 और 87 में प्राप्त अनुभवों को ध्यान में रखते हुए अभिविन्यास कार्यक्रम की विषयवस्तु की समीक्षा की गई। पीएमओएसटी के कार्यान्यिवय की समीक्षा हेतु 26 से 28 अक्टूबर, 1988 तक एक राष्ट्रीय समीक्षा बैठक बुलाई गई। प्राप्त ''फीडबैक'' के आधार पर 1988 में आयोजित अभिविन्यास कार्यक्रम की विषयवस्तु की पुनः रुपरेखा बनाई गई ताकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में दिए गए मुख्य बलों के बारे में चेतना जागृत करने वाले तथा पाठ्यचर्या के क्षेत्रों से संबंधित व्यावसायिक क्षमताओं को सुदृढ़ करने वाले घटकों को भी सम्मिलित किया जा सके। इस प्रयोजनार्था, एक संशोधित प्रशिक्षण पैकेज तैयार किया जिसमें प्राथमिक विद्यालयी अध्यापकों और माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के लिए अलग-अलग खंड (वाल्यूम) बनाए गए।

अभिविन्यास/प्रशिक्षण शिविरों के संकाय/संसाधन व्यक्तियों के लिए भी मार्गदर्शिका तैयार की गई। उपरोक्त कार्यक्रम के संवर्धन में उभरते पाठ्यक्रम से संबंधित कुछ नए कार्यक्रमों को भी टेलीविजन द्वारा समर्थन देने के लिए सम्मिलित किया गया है 1988 में आयोजित अभिविन्यास कार्यक्रम का मूल्यांकन कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, पटना विश्वविद्यालय और पाण्डीचेरी विश्वविद्यालय ने किया। मूल्यांकन रिपोर्टों में दिए गए सुझावों के आधार पर 1989 में आयोजित किये जाने वाले प्रस्ताविक अभिविन्यास कार्यक्रम की विषयवस्तु में परिवर्तन किए गए ताकि इसे अध्यापकों की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाया जा सके।

(viii) विद्यालय स्तर पर शिक्षा की विषयवस्तु, और प्रक्रियाओं के पुनरभिविन्यास के भाग के रूप में विद्यालयों में मूल्यांकन पद्धतियों को सुधारने के प्रयास किए गए। राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् और राज्य/संघीय क्षेत्रों में शिक्षा विभागों तथा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के बीच प्रसारण हेतु व्यापक तथा अविरल मूल्यांकन विकसित करने की योजना तैयार की गई। संदर्भ व्यक्तियों हेतु 22 जून से 5 जुलाई, 1988 तक आयोजित दो सप्ताह के अखिल भारतीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में इस पर चर्चा की गई। शैक्षिक एवं गैर शैक्षिक क्षेत्रों में छात्र उपलब्धि के रिकार्ड रखने की पद्धतियों के साथ-साथ संचयी कार्ड का नमूना भी तैयार किया गया। रा.शै.अ.प्र.प. ने विभिन्न माध्यमिक बोर्डों एवं उच्चतर माध्यमिक शिक्षा बोर्डों द्वारा संचालित परीक्षाओं के श्रेणी निर्धारण (ग्रेडिंग) और अनुमापन विधि (स्केलिंग) के प्रारम्भ हेतु मार्गदर्शिका तैयार की और माध्यमिक शिक्षा बोर्डों के अध्यक्षों/सचिवों की चार क्षेत्रीय बैठकें आयोजित कीं। इन बैठकों में माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शिक्षा बोर्डों द्वारा आयेजित परीक्षाओं में अनुमापन और श्रेणी निर्धारण के प्रारम्भ हेतु विभिन्न पहलुओं पर विचार विमर्श

हुआ। रा.शै.अ.प्र.प. ने मौखिक परीक्षा, विवृत्त पुस्तक समीक्षा तथा परियोजना कार्य जैसी वैकल्पिक मूल्यांकन पद्धतियों के लिए शीर्ष व्यक्तियों के प्रशिक्षण हेतु 8 दिवसीय एक कार्यशाला आयोजित की। इसके अलावा, परिषद् ने विभिन्न क्षेत्र वार गहन शिक्षा में शैक्षिक मूल्यांकन, मानक मापदंड, संदर्भ परीक्षण तैयार करने तथा प्रश्न लिखने वालों से संबंधित संकल्पनात्मक सामग्री के विकास के कार्य जारी रखे। परिषद् ने इतिहास विषय में मूल्यांकन पर 8 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा विभिन्न उच्चतर माध्यमिक शिक्षा बोर्डों द्वारा संचालित बाह्य परीक्षाओं के मूल्यांकन में सुधार लाने के लिए पाँच प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। 302 व्यक्तियों ने इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया।

(ix) विद्यालयी स्तर पर शिक्षा की विषयवस्तु और प्रक्रियाओं के अभिविन्यास से संबंधित कार्यों के कार्यान्वयन को सरल बनाने के लिए रा.शै.अ.प्र.प. ने एक योजना प्रतिपादित की जिसके अंतर्गत पाठ्यचर्या के विभिन्न क्षेत्रों में पाठ्यपुस्तकों सहित पाठ्यचर्या के नवीकरण और अनुदेशी सामग्री के विकास से संबंधित कार्यकलापों के लिए राज्यों/संघीय क्षेत्रों को वित्तीय सहायता प्रदान की गई। इस योजना के अंतर्गत आंध्र प्रदेश, बिहार, गोवा, हरियाणा, कर्नाटक, केरल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, मणिपुर, मिजोरम, उड़ीसा, पंजाब, तमिलनाडु, पश्चिमी बंगाल, उत्तर प्रदेश राज्यों तथा दिल्ली संघीय क्षेत्र और केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड को वित्तीय सहायता दी गई। योजना के उन ''नोडल'' अधिकारियों की 21 से 22 नवंबर, 1988 तक बैठक हुई, जो इस योजना के प्रभारी हैं। इस बैठक में योजना के कार्यान्वयन की प्रगति की समीक्षा की गई। इसके अतिरिक्त परिषद् ने 2 से 4 जून, 1988 तक शिक्षा निदेशालयों, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषदों और माध्यमिक शिक्षा बोर्डों के प्रतिनिधियों की राष्ट्रीय स्तर की विद्यालयी स्तर पर शिक्षा की विषयवस्तु और प्रक्रियाओं के अभिविन्यास से संबंधित कार्यान्वयन के कार्यों की प्रगति की समीक्षा की गई। इस संबंध में बैठक भी आयोजित की गई जिसमें 19 राज्यों/संघीय क्षेत्रों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। बैठक में विद्यालय स्तर पर शिक्षा की विषयवस्तु और प्रक्रियाओं के अभिविन्यास से संबंधित कार्यान्वयन के कार्यों और कठिनाइयों तथा उन्हें दूर करने के संबंध में विचार-विमर्श किया गया। 1988-89 में इंटरमीटिएड शिक्षा बोर्ड, आंध्र प्रदेश, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नागालैंड, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, जम्मू और काश्मीर, विद्यालय पाठ्यपुस्तक बोर्ड, गुजरात तथा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, मेघालय को वित्तीय सहायता दी गई ताकि ये बोर्ड राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा के आधार पर पाठ्यचर्या का नवीकरण एवं अनुदेशी सामग्री का विकास कर सके।

विद्यालयों में विज्ञान शिक्षा का सुधार

विद्यालयों में विज्ञान शिक्षा के सुधार की केन्द्रीय प्रायोजित योजना तैयार की गई थी। इस योजना के कार्यान्वयन हेतु रा.शै.अ.प्र.प. ने कुछ राज्यों के वरिष्ठ/उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाए। इन प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण सामग्री तैयार की जिसे योजना के अंतर्गत चलाए जाने वाले परवर्ती प्रशिक्षण कार्यक्रमों में उपयोग किया जा सकता है। रा.शै.अ.प्र.प. ने इस योजना में आयोजित किये जाने वाले विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के मैनुअल विकसित किए और उत्तर प्रदेश के उच्चतर माध्यमिक अध्यापकों के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में उपयोग हेतु अनुदेशी सामग्री के विकास पर एक सप्ताह की कार्यशाला आयोजित की। इसी संदर्भ में परिषद् ने उत्तर प्रदेश के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों हेतु तीन दिन

का अभिविन्यास कार्यक्रम, इसी राज्य के उच्च प्राथमिक विद्यालयों के विज्ञान अध्यापकों के प्रशिक्षण हेतु शीर्ष व्यक्तियों तथा संदर्भ व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम, बिहार राज्य के संदर्भ व्यक्तियों के लिए 3 दिवस का अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया। परिषद ने बिहार के शीर्ष व्यक्तियों तथा संदर्भ व्यक्तियों के लिए एक अन्य तीन दिन का अभिनवीकरण कार्यक्रम, जम्मू और काश्मीर के वरिष्ठ उच्चतर माध्यमिक अध्यापकों के प्रशिक्षण हेतु संसाधन व्यक्तियों का 3 दिन और मिजोरम के शीर्ष संदर्भ व्यक्तियों के लिए 3 दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए। अन्य गतिविधियाँ जो परिषद् ने संपन्न कीं उनमें ये शामिल थीं – विज्ञान एवं गणित में रुचि बढ़ाने तथा प्रतिभा विकसित करने हेतु इन विषयों संबंधी विद्यालयेतर कार्य कलाप आयोजित करना और विद्यालय में विज्ञान-प्रयोगशालाओं के प्रभावी उपयोग का अध्ययन जिससे विद्यालयों में प्रयोगशालाओं की कार्यप्रणाली को बेहतर बनाया जा सके। परिषद् ने राज्य/संघ शासित क्षेत्रों के स्तर पर योजना के कार्यान्यवन में रत ''नोडल'' अभिकरणों के प्रतिनिधियों की 31 अक्तूबर और 1 नवंबर, 1988 को बैठक आयोजित की तथा इस योजना के अंतर्गत कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए राज्य/संघ शासित क्षेत्रों को तकनीकी सहायता प्रदान की।

परिषद् ने प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों के लिए विज्ञान किट के विकास संबंधी कार्यों को जारी रखा। प्राथमिक विज्ञान किट और उच्च प्राथमिक विद्यालयों के समेकित विज्ञान किट के मैनुअल मुद्रित किए । अन्य गतिविधियाँ जो हाथ में ली गईं उनमें भारतीय – जर्मन परियोजना ''मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों में विज्ञान शिक्षण के सुधार'' के अंतर्गत मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के विद्यालयों में विज्ञान पढ़ाने वाले शिक्षकों का सर्वेक्षण और मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के प्राथमिक विद्यालयों और प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में विज्ञान किट और उपकरण की स्थिति का सर्वेक्षण, विज्ञान किट की मदों के निर्माण, विशेष विवरण और ड्राइंग पर विस्तृत आलेख एवं अध्यापक हैंडबुक का निर्माण सम्मिलित है ।

विद्यालयों में विज्ञान – शिक्षण को अधिक क्षमतापूर्ण बनाने के लिए रा.शै.अ.प्र.प. ने अध्यापक संदर्शिका, प्रयोगशाला मैनुअल, सहायक पाठ्यसामग्री, और लोकप्रिय विज्ञान सामग्री तैयार की। जम्मू एवं काश्मीर सरकार के सहयोग से रा.शै.अ.प्र.प. ने जम्मू में बालकों के लिए 17 वीं राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी आयोजित की।

विद्यालयों में कम्प्यूटर साक्षरता और अध्ययन (सी.एल.ए.एस.एस. क्लास)

विद्यालयों में कम्प्यूटर साक्षरता और अध्ययन (क्लास) परियोजना के अंतर्गत रा.शै.अ.प्र.प. तथा अन्य संसाधन केन्द्रों ने विद्यालयी अध्यापकों के लिए अनेक उच्च स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। 1988 में क्लास परियोजना के अंतर्गत विद्यालयों की कुल संख्या 2322 हो गई थी। 88–89 के दौरान, इस परियोजना में 380 और विद्यालय शामिल हुए। परियोजना में भाग लेने वाले नए विद्यालयों के अध्यापकों के लिए संसाधन केन्द्रों में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। 1988 में इस परियोजना में लगभग 1325 अध्यापकों को प्रशिक्षित किया गया। परिषद् ने कम्प्यूटर से परिचित कराने के लिए सहकारिता के मुख्य प्रशासकों तथा प्रधानों के लिए 3 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किया। साफ्ट वेयर डिजाइन में दो प्रारंभिक पाठ्यक्रम और साफ्ट वेयर मूल्यांकन के लिए मापदंड के विकास हेतु एक कार्यशाला आयोजित की गई। इस परियोजना में 53 संसाधन केन्द्र खोले गए। परियोजना में भाग लेने वाले विद्यालयों को तकनीकी सहयोग दिया गया। इन विद्यालयों हेतु साफ्टवेयर पैकेज उपलब्ध कराने तथा प्रतिभागी विद्यालयों में उपयोग हेतु देशीय साफ्टवेयर पैकेज के चुनाव के लिए आवश्यक कदम उठाए गए। नए विद्यालयों में आपूर्ति के लिए कुल मिलाकर लगभग 22 देशीय साफ्टवेयर पैकेज चुने गए।

शिक्षा का व्यावसायीकरण

परिषद् ने उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिक्षा के

व्यावसायीकरण से संबंधित विभिन्न कार्यक्रमों के नियोजन और कार्यान्वयन के लिए राज्यों को आवश्यक तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए अनेक गतिविधियाँ हाथ में लीं। +2 स्तर पर व्यावसायिक शिक्षा दे रहे राज्यों के शीर्ष कार्मिकों तथा उन राज्यों के लिए 8 अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए, जो उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिक्षा के व्यावसायीकरण संबंधी कार्यक्रम प्रारम्भ करने की योजना बना रहे हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से दिल्ली संघ शासित क्षेत्र एवं हिमाचल प्रदेश, केरल, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और उ. पूर्वी क्षेत्रों के राज्यों के लगभग 440 शीर्ष व्यक्तियों को उच्चतर माध्यमिक स्तर पर शिक्षा व्यावसायीकरण के कार्यान्वयन के विभिन्न पहलुओं से अभिविन्यासित किया गया। परिषद् ने विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों की अनुदेशी सामग्री के विकास पर दो अभिनवीकरण कार्यक्रम, जिला व्यावसायिक सर्वेक्षण के दो कार्यक्रमों और व्यावसायिक शिक्षकों के प्रशिक्षण समन्वयकों तथा संदर्भ व्यक्तियों के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए । लगभग 160 प्रतिभागियों ने इन कार्यक्रमों में भाग लिया। परिषद् ने न्यूनतम व्यावसायिक क्षमता पर आधारित पाठ्यचर्या तैयार करने तथा व्यवसायिक पाठ्यक्रमों और शिक्षा व्यवसायीकरण के कार्यक्रमों के विभिन्न पहलुओं के कार्यान्यिवन हेतु विशद मार्गदर्शिका तैयार करने की गतिविधियों को जारी रखा। परिषद् ने व्यापार अध्ययन उद्यम वृत्ति की आदर्श पाठ्यचर्या, न्यूनतम क्षमताओं पर आधारित मुद्रण टेक्नालोजी और जिल्दसाजी की पाठ्यचर्या, विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में अनुदेशी सामग्री, व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के प्रचार हेतु पुस्तिकाएँ (फोल्डर्स) और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों संबंधी 10 वीडियो कार्यक्रमों के लिए आलेख तैयार किए।

अध्यापक शिक्षा

अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में रा.शै.अ.प्र.प. ने आलोच्य वर्ष में इन तीन अनुसंधान परियोजनाओं को पूरा किया (i) भारत में अध्यापकों की स्थिति का अध्ययन (ii) विभिन्न प्रशिक्षण कार्य नीतियों के सापेक्ष प्रभाव का अध्ययन तथा (iii) अ.जा./अ.जन. जाति और गैर अ.जा./अनु.जन.जा. के छात्राध्यापको की उपलब्धि के साथ-साथ स्वतः धारण, अभिरुचि एवं समायोजन के संबंध का अध्ययन। अध्यापक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं में अनुसंधान के संवर्धन हेतु परिषद् ने 29 अगस्त से 30 सितम्बर, 1988 तक अनुसंधान परियोजनाओं के नियोजन और अभिकल्पना पर एक कार्यशाला आयोजित की। इसमें 34 अध्यापक शिक्षक प्रशिक्षकों ने भाग लिया। परिषद् ने उन प्रभावशाली अध्यापन कार्य नीतियों को प्रसारित करने के लिए 21 से 26 नवंबर, 1988 तक विस्तार कार्यक्रम आयोजित किया, जिनको प्रशिक्षण की विभिन्न कार्यनीतियों के सापेक्ष प्रभाव को जानने के लिए किए गए अनुसंधान अध्ययन द्वारा पता लगाया था। इस कार्यक्रम में 31 अध्यापक प्रशिक्षक आए।

परिषद् राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.) के सचिवालय के रूप में कार्य करती रही तथा इसने एन.सी.टी.ई. के विभिन्न कार्यकलापों को समन्वित किया। इस दौरान *अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या – एक संरचना* नामक दस्तावेज को संशोधित किया गया। अध्यापक शिक्षा के लिए संशोधित पाठ्यचर्या संरचना का प्रारूप बनाने के लिए एक समिति गठित की गई। 14 से 15 नवंबर 1988 तक हुए अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या पर हुए सम्मेलन में इस समिति द्वारा तैयार किए गए प्रारूप रूपरेखा पर विचार-विमर्श किया गया। इस सम्मेलन में दिए गए सुझावों के आधार पर रूपरेखा में परिवर्तन किए गए और इसे अंतिम रूप दिया गया।

चार वर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम तथा + 2 स्तर पर अध्यापकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम का डिजाइन तैयार करने के लिए भी कार्य आरंभ किए गए। चार वर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम पर 11 से 13 मई, 1988 तक समिति की बैठक हुई। इस समिति द्वारा विकसित 4 वर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम का डिजाइन क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों के शिक्षा संकायों के अध्यक्षों को उनकी राय के लिए भेजा गया। इसके अलावा, उच्चतर माध्यमिक अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम की पाठ्यचर्या रूपरेखा तैयार करने के लिए 18 से 20 जुलाई, 1988 तक एक बैठक हुई और अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं में

प्रवेश बिन्दु पर 1 से 4 नवंबर 1988 तक तथा 17 दिसंबर, 1988 को समिति की दो बैठकें हुईं। अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं के संदर्भ में चयन मापदंड और प्रवेश पद्धतियों को अंतिम रूप दिया गया।

परिषद् ने जिला शिक्षा संस्थान की स्थापना के लिए राज्यों/संघीय क्षेत्रों को तकनीकी सहायता प्रदान की। डी.आई.ई.टी./ और सी.टी.ई./टी.ए.एस.ई. के परियोजना दस्तावेज को संशोधित करने और राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् को सशक्त बनाने के लिए प्रस्ताव तैयार करने की जिम्मेदारी ली।

रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा चलाए जा रहे चार क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों में चार वर्षीय बी.ए.एड. /बी.ए.बी.एड. का समेकित अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम और बी.एस/सी.एड. या बी.एस/सी. (आनर्स/पास) बी.एड.उपाधि एक वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम और एक वर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। भुवनेश्वर और मैसूर के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों में दो वर्ष के एम.एस/सी.एड. पाठ्यक्रम भी चलाए जाते हैं। क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों में विद्यालयी शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर अनेक विस्तार कार्यक्रम/कार्यशालाएं/बैठकें/गोष्ठियां आयोजित की गईं। इसके अतिरिक्त, प्रत्येक क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय ने विद्यालयी शिक्षा और अध्यापक शिक्षा से संबंधित अनुसंधान अध्ययन किए। पी/एच.डी. की उपाधि के लिए अनुसंधान कार्य हेतु क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों ने विद्वानों को मार्गदर्शन प्रदान किया।

महिला समानता संबंधी शिक्षा

रा.शै.अ.प्र.प. ने महिला समानता की शिक्षा बढ़ाने के लिए अनेक कार्यक्रम तथा परियोजनाओं को हाथ में लिया। महिला शिक्षा तथा विकास की विधि हेतु कार्य परक अनुसंधान परियोजना आरंभ की गई। इसी प्रकार से स्त्री-पुरुष की समानता को बढ़ावा देने के लिए विद्यालय पर आधारित कार्यक्रम बनाने की एक अन्य कार्य शोध परियोजना भी आरंभ की गई। महिला शिक्षा और विकास के कार्यों हेतु डेटा बैंक बनाने के लिए बालिकाओं की शिक्षा का स्थितिजनक विश्लेषण किया गया जिसमें बालिकाओं के सामाजिक-आर्थिक, शैक्षिक स्तर के विशद आंकड़े दिए गए।

महिला समानता की शिक्षा के संवर्धन हेतु अनुदेशी/प्रशिक्षण सामग्री के विकास के लिए अनेक कार्यकलाप किए गए। अनुदेशी/प्रशिक्षण सामग्री के अतंर्गत अंग्रेजी में उदाहरणात्मक स्रोत सामग्री तथा जागरूकता उत्पन्न करने के लिए क्षेत्रीय भाषाओं, असमिया, बंगला, गुजराती, हिन्दी, उड़िया और तेलुगु में सामग्री भी तैयार की गई। इसके अतिरिक्त परिषद् ने अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या में महिला समानता की शिक्षा से संबंधित विचारों को सम्मिलित करने का कार्य आरंभ किया और महिला समानता की शिक्षा के संवर्धन के कार्यक्रमों को मोनीटर करने और पाठ्यपुस्तकों में से लिंग भेद के निवारण के लिए मार्गदर्शिकाएँ तैयार करने के लिए मोनीटरिंग और मूल्यांकन पर प्रपत्र बनाया।

महिला समानता शिक्षा के प्रभावी कार्यान्वयन की प्रक्रिया के निर्धारण और शिक्षा द्वारा महिलाओं को समर्थ बनाने के लिए 'कार्ययोजना' तैयार करने हेतु 1988-89 में तीन क्षेत्रीय व एक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया। परिषद् ने उ.प्र. में विद्यालयों के लिए महिला समानता के बारे में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए विद्यालयों/महाविद्यालयों के प्रधानाचार्यों की एक क्षेत्रीय कार्यशाला, महिला समानता हेतु जिला स्तर के शैक्षिक प्रशासकों की दो कार्यशालाएँ तथा मणिपुर और दमन में शीर्ष व्यक्तियों हेतु एक-एक कार्यशाला आयोजित की। इन कार्यशालाओं में महाविद्यालयों ओर विद्यायलों के प्रधानाचार्यों, शैक्षिक प्रशासकों तथा महिला संबंधी अध्ययन क्षेत्र के विशेषज्ञों ने भाग लिया।

1988-89 में परिषद् ने अनुदेशी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करने और राज्य/संघशासित क्षेत्रों के प्रमुख कार्यकर्ताओं के महिला समानता की शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर अभिविन्यास हेतु कुल 21 कार्यशाला/अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए। कुल 794 शीर्ष कार्यकर्त्ताओं और अध्यापकों, शिक्षक प्रशिक्षकों तथा प्रधानाचार्यों का महिला समानता शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर

अभिविन्यासकरण किया गया। परिषद् ने महिला अध्ययन केन्द्र एकक स्थापित करने के लिए राज्यों/संघीय क्षेत्रों को तकनीकी सहायता प्रदान की।

अनुसूचित जातियों/अनुसूचित जन जातियों की शिक्षा

रा.शै.अ.प्र.प. ने अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जन जातियों की शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए अनुसंधान और विकासात्मक कार्यकलाप जारी रखे। इस वर्ष उ.प्र. में कक्षा–10 के अनुसूचित जातियों और गैर-अनुसूचित जाति के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन पूरा किया। अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जन जातियों के छात्रों हेतु मैट्रिक पूर्व छात्रवृत्तियों का मूल्यांकन परक अध्ययन जारी रहा। इस वर्ष 11 राज्यों की रिपोर्ट (अनुसूचित जनजाति, क्लस्टर-1) तैयार कर ली गई है। क्लस्टर 1 (अनुसूचित जाति) की प्रारुप रिपोर्ट भी तैयार की गई है। क्लस्टर- 2 (अ.जा./अ.जन.जा.) के संबंध में आंकड़ों को एकत्रित किया जा रहा है।

परिषद् ने आदिवासी क्षेत्रों की बोलियों में प्रवेशिका/पाठ्यपुस्तक तैयार करना जारी रखा। क्षेत्रीय भाषा की लिपि का उपयोग करते हुए सात आदिवासी बोलियों में प्रवेशिका तैयार करने के लिए दो कार्यकारी दलों की बैठकें तथा दो कार्यशालाएँ आयोजित की गईं। इस संबंध में निम्नलिखित प्रवेशिकाएँ तैयार की गईं (i) तमिलनाडु के इरूला जनजाति के बच्चों के लिए तमिल लिपि में इरूला आदिवासी बोली में कक्षा 1 की प्रवेशिका (ii) आंध्र प्रदेश के गोंडी जन जाति के बच्चों के उपयोग हेतु तेलुगु लिपि में गोंडी बोली की कक्षा-2 हेतु प्रवेशिका (iii)बिहार की पाँच जन जातियों अर्थात्, संथाल, हो/मुंडारी, खड़िया और कुरूख के उपयोग के लिए देवनागरी लिपि में इन पांच बोलियों की कक्षा-1 और –2 की प्रवेशिकाएँ। संथाल, हो/मुंडारी, खड़िया और कुरूख जनजातियों के लिए केन्दीय भातीय भाषा संस्थान (सी.आई.एल.एल.) मैसूर के सहयोग से प्रवेशिकाएँ तैयार की जा रही है।

परिषद् ने अनुसूचित जातियों के लिए शैक्षिक विकास संबंधी ग्रंथ सूची बनाने की परियोजना शुरू की है। इस अवधि में संदर्भ शीर्षकों के संकलन का कार्य पूरा हो गया है।

शैक्षिक रूप से पिछड़े अल्पसंख्यकों की शिक्षा

परिषद् ने शैक्षिक रूप से पिछड़े अल्प संख्यक वर्गों, विशेषतः मुस्लिम वर्ग द्वारा चलाए जा रहे विद्यालयों के अध्यापकों और प्रधानाचार्यों के प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए तकनीकी व वित्तीय सहायता प्रदान करना जारी रखा ताकि इन विद्यालयों का शैक्षिक स्तर ऊँचा उठाया जा सके। इस वर्ष परिषद ने शैक्षिक रूप से पिछड़े अल्पसंख्यकों द्वारा संचालित विद्यालयों के प्रबंधकों और प्रधानाचार्यों के लिए 3-3 दिवसीय संगोष्ठी सह-कार्यशाला आयोजित की इनमें 58 प्रबंधकों और प्रधानाचार्यों ने भाग लिया। इसके अलावा, परिषद् ने इन विद्यालयों के कैरियर अध्यापकों के लिए 25 दिन का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाया। व्यावसायिक मार्ग दर्शन संबंधी अध्यापकों के लिए पुनश्चर्या पाठ्यक्रम और विज्ञान तथा गणित अध्यापकों के लिए 10 दिन के दो अटैचमेंट कार्यक्रम चलाए। परिषद् ने अल्पसंख्यक शैक्षिक संस्थाओं के अध्यापकों के प्रशिक्षण हेतु स्थापित क्षेत्रीय स्रोत केन्द्रों को तकनीकी एवं वित्तीय सहायता देना जारी रखा।

विकलांग बच्चों की शिक्षा

रा.शै.अ.प्र.प. ने विकलांग बच्चों की शिक्षा हेतु अनेक कार्य किए। यूनिसेफ सहायता प्राप्त विकलांग बच्चों की समेकित शिक्षा परियोजना के अंतर्गत विकलांग बच्चों की शिक्षा के लिए संदर्भ विशिष्ट कार्यनीतियों के विकास हेतु अनेक कार्य किए गए। 1988 में पी.आई.ई.डी. का कार्यान्वयन इन राज्यों में किया गया – हरियाणा, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, मिजोरम, नागालैंड, उड़ीसा, राजस्थान और तमिलनाडु। पी.आई.ई.डी. के अंतर्गत की गई मुख्य गतिविधियाँ इस प्रकार हैं : विकलांग बच्चों की पहचान और निर्धारण, पाठ्यचर्या समायोजन और अनुदेशी विधियों तथा सामग्री का अनुकूलन, विकलांग बच्चों के लिए अनुदेशी सामग्री का विकास, क्षीण दृष्टि वाले बच्चों की शिक्षा के संबंध में मार्गदर्शिका का विकास तथा शैक्षिक प्रशासकों और अध्यापकों

का प्रशिक्षण।

विकलांग बच्चों की शिक्षा हेतु वीडियो कार्यक्रम का संक्षिप्त ब्यौरा (ब्रीफ) तैयार करने के लिए 12 और 13 मई, 1988 को एक कार्यशाला आयोजित की गई। सीखने संबंधी असमर्थता, अधिगम विकृति, देखने और सुनने की कभी मानसिक विकलांगता संबंधी विषयों पर वीडियो कार्यक्रमों के संक्षिप्त ब्यौरे इस कार्यशाला के दौरान बनाए गए। परिषद् ने कम गतिविषयक नियंत्रण वाले बच्चों के लिए कम्प्यूटर द्वारा देवनागरी लिपि में पढ़ाने के लिए कम्प्यूटर कार्यक्रम तैयार करने की रूपरेखा बनाई। अन्य गतिविधियों में अधिगम विकलांगता की पहचान की विधियाँ तैयार करना तथा सामान्य अध्यापकों के लिए विशेष शिक्षा पाठ्यचर्या का विकास था। इनके अतिरिक्त, विकलांग बच्चों की शिक्षा संबंधी तीन अनुसंधान अध्ययन/सर्वेक्षण किए गए। इन सर्वेक्षणों/अनुसंधान अध्ययनों में विकलांग बच्चों की शिक्षा योजना के कार्यान्वयन की प्रगति की समीक्षा, विभिन्न एजेंसियों द्वारा विकसित अनुदेशी सामग्री का सर्वेक्षण तथा आई.ई.डी. तथा विशेष विद्यालयों में पढ़ रहे श्रवण दोष वाले बच्चों की भाषिक सक्षमता का पता लगाने के लिए अध्ययन सम्मिलित थे। विकलांग बच्चों की शिक्षा से संबंधित जानकारी का आदान-प्रदान तथा इसके प्रसार के लिए त्रैमासिक समाचार पत्र ''कम्यूनिकेशनः इक्वल एजुकेशनल अपरच्युनिटी'' के चार अंक प्रकाशित किए गए तथा उन अभिकरणों/विद्यालयों को भेजे गए है, जो इन बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु कार्यक्रमों में रत हैं।

परिषद् ने पी.आई.ई.डी. परियोजना दल के सदस्यों तथा शैक्षिक प्रशासकों के लिए चार अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए। 61 व्यक्ति इस कार्यक्रम में आए इसके अलावा पी.आई.ई.डी. के अंतर्गत आने वाले खंडों के अध्यापकों हेतु 8 प्रथम स्तर तथा दो द्वितीय स्तर के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए।इन विकलांग बच्चों को पहचानने तथा शिक्षा की प्रबंध की विधि के लिए प्रशिक्षण के इन कार्यक्रमों के माध्यम से 1,545 अध्यापकों को प्रशिक्षित किया गया।

शैक्षिक प्रौद्योगिकी का उपयोग

शैक्षिक प्रौद्योगिकी के उपयोग हेतु अनेक कार्यकलाप किए गए। राज्य शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थानों के सहयोग से केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान ने शैक्षिक प्रौद्योगिकी की उपयोगिता संबंधी अनेक कार्यकलाप किए, जिनमें शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने में रेडियो और दूरदर्शन के उपयोग और शिक्षा की व्यापक पहुँच शामिल है, हाथ में लिए गए। सी.आई.ई.टी. और एस.आई.ई.टी. इन्सैट - 1 बी द्वारा वर्ष में 210 कार्यकारी दिवसों पर 3 घंटे तक प्रातः 45 मिनट के कार्यक्रम बनाती हैं। ये कार्यक्रम 5 क्षेत्रीय भाषाओं-हिन्दी, गुजराती, मराठी उड़िया और तेलुगु में समय विभाजन के आधार पर (प्रत्येक 45 मिनट) संचारण हेतु दिए गए तथा हर भाषा का कार्यक्रम 45 मिनट का था। के. शै. प्रौ.सं. ने हिन्दी में 90 शैक्षिक दूरदर्शन कार्यक्रम बनाए। उनमें से 65 का उड़िया भाषा में रूपांतरण किया। इनमें 36 कार्यक्रम 5 से 8 वर्ष, 34 कार्यक्रम 9 से 11 वर्ष के आयुवर्ग के बच्चों तथा 16 कार्यक्रम अध्यापकों के लिए और 4 सामान्य कार्यक्रम बनाए गए। संध्या को दिल्ली दूरदर्शन केन्द्र सप्ताह में दो बार केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान के चुने हुए कार्यक्रमों को प्रसारित करता है। समस्त देश में 150 से भी अधिक ट्रांसमीटरों से इन कार्यक्रमों को रिले किया जाता है। 1986-87 और 1987–88 में के.शै.प्रौ.सं. ने जिस प्रकार विद्यालयी शिक्षकों के बहुल अभिविन्यास कार्यक्रम (पी.एम.ओ.एस.टी.) के शैक्षिक टी.वी. का भाग प्रस्तुत किया था उसी प्रकार 1988 में भी उसे जारी रखा।

के.शै.प्रौ.सं. ने देश के दूरदर्शन कार्यक्रमों के निर्माण की सक्षमता उत्पन्न करने के लिए सात प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। इस वर्ष वीडियो संपादन, शैक्षिक टी.वी. कार्यक्रम निर्माण एवं तकनीकी प्रचालन, कैमरा और ध्वनि रिकार्डिंग, स्टुडियो में कार्यक्रम निर्माण तथा बी.सी.एन. 51 अनुरक्षण पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। सी.आई.ई.टी. ने यूनेस्को पैरिस द्वारा प्रायोजित परियोजना के अंतर्गत एशियाई देशों में संचार माध्यमों का दूरस्थ शिक्षा में उपयोग और विकास के विश्लेषण के भाग

1988-89

रूप में ''इन्सैट फॉर एजुकेशन'' योजना के विस्तृत केस स्टडी को अंतिम रूप दिया।

के.शै.प्रौ.सं. ने 76 नए श्रव्य कार्यक्रम भी निर्मित किए। इनमें 34 भारतीय समान सांस्कृतिक परंपरा पर, 4 स्वतंत्रता आंदोलन पर, 3 पंडित जवाहर लाल नेहरू के अपनी पुत्री को लिखे गए पत्रों पर आधारित तथा 21 बालगीत, 9 पाठ्यचर्या आधारित कार्यक्रम और 5 राष्ट्रीय पहचान के कार्यक्रम थे। क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर ने भी कुछ श्रव्य कार्यक्रम बनाए। के.शै.प्रौ.सं. ने म.प्र. के होशंगाबाद जिले के 450 विद्यालयों में श्रव्य टेपों का उपयोग करते हुए प्राथमिक स्तर पर प्रथम भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण परियोजना के विस्तार कार्य को समर्थन दिया।

के.शै. प्रौ.सं. द्वारा किए गए अन्य कार्य इस प्रकार हैं-भूगोल की ''भूमि और जन जीवन'' (लैंड एंड पीपल) नामक शृंखला में पश्चिमी तटों पर 16 मिमी की तीन फिल्मों और अनौपचारिक शिक्षा पर फिल्म निर्माण, आइजोल (मिजोरम) में 21 से 24 सितम्बर, 1988 तक शैक्षिक फिल्म उत्सव का आयोजन, नवीं एवं दसवीं कक्षा की पाठ्यचर्या के अनुरूप शृंखला 2 के अंतर्गत जीव विज्ञान के 18 चार्ट तैयार करना। शृंखला-1 के अंतर्गत 22 जीव विज्ञान के चार्ट मुद्रित कर लिए हैं और उन्हें राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों को अनुकूलन/स्वीकरण हेतु भेज दिया है। के.शै.प्रौ.सं. ने इससे अहमदाबाद में जनवरी, 1988 में आयोजित प्रथम शैक्षिक वीडियो उत्सव की रिपोर्ट भी निकाली है।

इसके अलावा के.शै.प्रौ.सं. ने सात अनुसंधान/मूल्यांकन अध्ययन किए। इनमें शैक्षिक दूरदर्शन कार्यक्रमों के बारे में बच्चों से प्राप्त फीडबैक का अध्ययन करना, विभिन्न श्रेणियों के दर्शकों की अभिरुचि ओर उनके मत जानने के लिए उनसे प्राप्त पत्रों की विषयवस्तु का विश्लेषण करना, उ.प्र. के इन्सैट जिलों में शैक्षिक दूरदर्शन कार्यक्रम के अपयोग के लिए नमूने के तौर पर सर्वेक्षण करना। गुजरात और महाराष्ट्र के चुने हुए इन्सैट जिलों में दूरदर्शन के उपयोग का केस अध्ययन करना। पी.एम.ओ.एस.टी. शिविरों में शैक्षिक दूरदर्शन के उपयोग का अध्ययन करना। तमिलनाडु में खुले विद्यालयों का गहराई से केस अध्ययन करना और श्रव्य कार्यक्रमों का क्षेत्र परीक्षण सम्मिलित है।

नवोदय विद्यालयों को तकनीकी सहायता

रा.शै.अ.प्र.प. ने 1988-89 के शैक्षिक सत्र के लिए नवोदय विद्यालयों में प्रवेश परीक्षा ली। 1988-89 में कुल 256 नवोदय विद्यालय थे। देश के 256 जिलों में फैले 2,980 समुदायिक विकास खंडों के 3,241 केन्द्रों में 18 भाषाओं में ये परीक्षाएँ ली गईं। 18 भाषाओं में परीक्षा पुस्तिकाएँ मुद्रित की गईं और रा.शै.अ.प्र.प. के क्षेत्र सलाहकारों के कार्यालयों के माध्यम से विभिन्न केन्द्रों को वितरित की गईं। इन परीक्षाओं में 4,63,960 अभ्यर्थियों के नाम पंजीकृत किए गए जिनमें से 3,70,379 अभ्यर्थी परीक्षा में बैठे। कुल 14,769 अभ्यर्थियों को नवोदय विद्यालयों में प्रवेश दिया गया। इनमें से 11059 (75%) ग्रामीण क्षेत्र से आए जबकि 3,710 (25%) अभ्यर्थी शहरी क्षेत्र के थे। चुने गए छात्रों में 10,001 (68%) लड़के और 4768 (32%) लड़कियाँ थीं। नवोदय विद्यालयों में चुने गए अभ्यर्थियों में से 1,775 (19%) अनुसूचित जाति तथा 1,638 (11%) अनुसूचित जन जाति से संबंधित थे। 655 अनुसूचित जाति तथा 551 अनुसूचित जनजाति के अभ्यर्थी सामान्य योग्यता के आधार पर चुने गए। चयन परीक्षा के अलावा, परिषद् ने छात्रों के सामाजिक-आर्थिक स्तर तथा 1986 तक स्थापित नवोदय विद्यायलों में उपलब्ध भौतिक सुविधाओं का अध्ययन भी किया।

शैक्षिक सर्वेक्षण

परिषद् ने पाँचवें अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण की प्रारंभिक रिपोर्ट प्रकाशित की। इस सर्वेक्षण की संदर्भ तिथि - 30 सितंबर, 1986 थी। सर्वेक्षण में तीन प्रश्नावलियाँ थीं:

(1) गाँव की सूचना का फार्म (2) शहरी सूचना का फार्म (3) विद्यालयी सूचना का फार्म । पहली दो प्रश्नावलियों के माध्यम से सभी गांवों और शहरी क्षेत्रों में उपलब्ध विद्यालय तथा प्राथमिक पूर्व शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा की सुविधाओं संबंधी आंकड़े एकत्रित किए गए। विद्यालय की सूचना (के) फार्म के माध्यम से सभी विद्यालयों के छात्रों, अध्यापकों, भवनों और उनमें उपलब्ध सुविधाओं, अपकरणों आदि के आँकड़े एकत्रित किए गए। सबसे पहले खंड/तहसील स्तर पर आंकड़ों का समाकलन किया तत्पश्चात् खंड तालिकाओं से जिला स्तर की तालिकाएँ तैयार की गईं/ जिला स्तर की तालिकाएँ बनाई गईं और अंत में रा.शै.अ.प्र.प. में विभिन्न राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों से प्राप्त राज्य तालिकाओं से राष्ट्रीय स्तर की तालिकाएँ बनाई गईं।

आशा है कि शैक्षिक विकास के लिए शैक्षिक नियोजन में, विशेषतः आठवीं पंचवर्षीय योजना के प्रतिपादन में इस सर्वेक्षण के आंकड़ों का उपयोग किया जाएगा। ये आँकड़े खंड स्तर पर सूक्ष्म नियोजन के निष्पादन तथा जिला स्तर पर शैक्षिक नियोजन के लिए प्रयुक्त किए जा सकते हैं। यह भी आशा है कि पांचवे अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के कार्यान्वयन के संदर्भ में आरंभ की गई विभिन्न योजनाओं जैसे – आपरेशन ब्लैक बोर्ड और उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के व्यावसायीकरण के प्रभावी कार्यान्वयन में सहायता मिलेगी।

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज

रा.शै.अ.प्र.प. ने 8 मई, 1988 को राष्ट्रीय प्रतिभा खोज छात्रवृत्ति प्रदान करने के लिए द्वितीय-स्तर की परीक्षा ली। प्रथम स्तर पर परीक्षा राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों द्वारा ली गई थी। द्वितीय स्तर की परीक्षा में 3,104 छात्र बैठे जिनमें से 750 छात्र छात्रवृत्ति के लिए चुने गए। इनमें 70 अनु. जाति/अनु.जन जाति के थे।

शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और निर्देशन

रा.शै.अ.प्र.प. ने शैक्षिक और व्यावसायिक निर्देशन के क्षेत्रों में अनेक कार्यकलाप किए। इस क्षेत्र में शैक्षिक और व्यावसायिक नियोजन संबंधी और शिलांग के आसपास आदिवासी क्षेत्र के हाई स्कूल छात्रों की चुनी हुई अकादमिक मनोवैज्ञानिक और गृह परिपेक्ष्य अस्थितरताओं का अध्ययन किया। इस वर्ष 2 स्तर के छात्रों का व्यवसाय संबंधी व्यवहार और शैक्षिक और व्यवसायिक धाराओं में सामंजस्य तथा दिल्ली के व्यावसायिक वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में स्वरोजगार को प्रोत्साहित करने के लिए निर्देशन कार्यक्रम का विकास नामक अनुसंधान परियोजना जारी रही। परिषद् में शैक्षिक और व्यावसायिक मार्ग दर्शन में डिप्लोमा पाठ्यक्रम जारी रखा। 1 अगस्त, 1988 को यह पाठ्यक्रम आरंभ किया गया। इस पाठ्यक्रम में 37 प्रशिक्षणार्थियों को प्रवेश दिया गया। इसके अलावा, कुछ अल्पकालिक संवर्धन/प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चलाए गए। इनमें दो संवर्धन पाठ्यक्रम अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए अधिगम और विकास से संबंधित थे। प्रारंभिक विद्यालयों में बच्चों में सर्जनात्मक क्षमता की पहचान एवं उसे प्रोत्साहित करने के लिए अध्यापक शिक्षाविदों का एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। कक्षा व्यवस्था में व्यवहारात्मक परिवर्तनों हेतु दो प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा उ.प्र. में इंटर मीडिएट कालेजों के मनोविज्ञान-अध्यापकों के दो संवर्धन पाठ्यक्रम आयोजित किए गए।

रा.शै.अ.प्र.प. ने 10 से 12 दिसंबर, 1988 तक बाल केन्द्रित शिक्षा पर राष्ट्रीय विचारगोष्ठी आयोजित की। इस गोष्ठी में 160 प्रख्यात शिक्षाविद्, मनोवैज्ञानिक, शैक्षिक प्रशासकों आदि ने भाग लिया। परिषद् ने बंगलौर में 8 फरवरी, 1989 तक मार्गदर्शन संबंधी राज्य ब्यूरो के अध्यक्षों का अखिल भारतीय सम्मेलन भी आयोजित किया। इस संदर्भ में किए गए अन्य कार्यकलाप इस प्रकार से थे – कक्षा सैटिंग में व्यवहार परिवर्तन की तकनीकों पर प्राथमिक अध्यापकों तथा अध्यापक शिक्षकों हेतु शिक्षण मैनुअल का विकास, प्राथमिक अध्यापक शिक्षकों के लिए अधिगम और विकास पर मैनुअल तैयार करना तथा प्राथमिक विद्यालयी बच्चों की सर्जनात्मक क्षमता के पोषण की हैंडबुक बनाना।

1988-89

शैक्षिक अनुसंधान को प्रोत्साहन

रा.शै.अ.प्र.प. की शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (एरिक) ने विद्यालयी शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर अनुसंधान परियोजनाओं को जारी रखा। 1988-89 के दौरान एरिक द्वारा समर्थित 49 अनुसंधान परियोजनाएं पूरी की गईं। इसमें रा.शै.अ.प्र.प. के विभिन्न घटकों की 31 परियोजनाएँ और बाहरी अनुसंधान संस्थाओं की 18 परियोजनाएँ सम्मिलित हैं। 1988-89 के दौरान रा.शै.अ.प्र.प. के घटकों की 6 अनुसंधान परियोजनाएँ और बाहरी अनुसंधान संस्थाओं की चार अनुसंधान परियोजनाएँ जारी रहीं।

चतुर्थ शैक्षिक अनुसंधान सर्वेक्षण की पांडुलिपि को अंतिम रूप दिया गया और प्रकाशन हेतु भेजा गया।

शैक्षिक शोध की कोटि में सुधार हेतु परिषद् ने दो क्षेत्रीय संगोष्ठी आयोजित की। कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर में उत्तरी क्षेत्र की पहली क्षेत्रीय संगोष्ठी 11 से 15 जुलाई, 1988 तक आयोजित की। इसमें 22 अनुसंधान कर्त्ताओं ने भाग लिया और विश्वविद्यालयों, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषदों तथा अन्य अनुसंधान संस्थाओं में किये जाने वाले अनुसंधान कार्य के लिए अनेक समस्याओं और मापदंड का निर्धारण किया गया। दूसरी क्षेत्रीय संगोष्ठी कोयम्बटूर में दक्षिण क्षेत्र के लिए 27 सितंबर से 3 अक्तूबर, 1988 तक आयोजित की। इस संगोष्ठी में 25 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त अनुसंधान विधि के संशोधित पाठ्यक्रम विकसित करने के लिए 8 से 12 दिसंबर, 1988 तक कार्यशाला आयोजित की। इसमें 17 विशेषज्ञों ने भाग लिया और विभिन्न पाठ्यक्रमों हेतु अनुसंधान विधि के लिए पाठ्यक्रम के तीन विभिन्न स्तरों के लिए रूप रेखा तैयार की।

1988-89 के दौरान, 17 पी/एच.डी. शोध निबंध एरिक की वित्तीय सहायता से प्रकाशित किए गए। 19 पी.एच.डी. शोध निबन्धों के प्रकाशन हेतु वित्तीय सहायता अनुमोदित की गई।

जनसंख्या शिक्षा

रा.शै.अ.प्र.प. ने राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना के कार्यान्वयन को और अधिक गति देने के लिए अनेक कार्य आरम्भ किए। 1988-89 के दौरान, इस परियोजना के अंतर्गत विभिन्न विकासात्मक तथा प्रशिक्षण कार्यकलाप किए गए। 26 सितंबर से 1 अक्टूबर, 1988 तक जनसंख्या शिक्षा पर पाठों का सार संग्रह तैयार करने के लिए कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें 29 प्रतिभागियों ने भाग लिया। बंगलौर में 10 से 14 अक्टूबर, 1988 तक राष्ट्रीय कार्यशाला (प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता) की गई। 40 प्रतिभागियों ने कार्यशाला में भाग लिया और इस कार्यशाला में राज्य स्तर की प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता तैयार की गई। इसके अतिरिक्त, मैसूर में 2 से 6 नवंबर, 1988 तक जनसंख्या शिक्षा परियोजना के अंतर्गत पी.पी.आर की बैठक हुई। 9 राज्यों के कार्मिकों ने इस बैठक में भाग लिया। विभिन्न राज्यों में परियोजना की प्रगति की समीक्षा की गई तथा 1989 के लिए कार्यवाही की योजना बनाई गई।

अनुदेशी सामग्री और पत्रिकाओं का प्रकाशन

पाठ्यपुस्तकों, सहायक पाठमालाओं, अभ्यास पुस्तिकाओं, अध्यापक संदर्शिकाओं, अनुसंधान मोनोग्राफ, पत्रिकाओं आदि का प्रकाशन रा.शै.अ.प्र.प. का एक महत्वपूर्ण कार्यकलाप है। अप्रैल से दिसंबर, 1988 तक की अवधि में विभिन्न श्रेणियों के 236 प्रकाशन निकाले गए। इनमें 61 नई पाठ्यपुस्तकें/अभ्यास पुस्तकें/निर्धारित सहायक पाठमालाएँ, 108 पाठ्य पुस्तकें/अभ्यास पुस्तिकाएँ/निर्धारित पाठमालाओं के पुनर्मुद्रण, अन्य सरकारी अभिकरणों के लिए 16 पाठ्यपुस्तकें/अभ्यास पुस्तिकाएँ/ 37 अनुसंधान मोनोग्राफ/रिपोर्ट और अन्य प्रकाशन तथा शैक्षिक पत्र पत्रिकाओं के 14 अंक सम्मिलित हैं। परिषद् ने विद्यालय शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर छात्रों के उपयोग हेतु अंग्रेजी और हिन्दी की पुस्तकों की कुछ नई श्रृंखलाएँ निकाली हैं। इनमें रीडिंग टू लर्न, लोटस सीरिज तथा पढ़ें और सीखें योजना सम्मिलित हैं। परिषद् 6 पत्र पत्रिकाएँ प्रकाशित करती रही – इंडियन एजुकेशनल रिव्यू (त्रैमासिक) प्राइमरी टीचर (त्रैमासिक), जरनल

ऑफ इंडियन एजुकेशन (द्वैमासिक), स्कूल साइंस (त्रैमासिक), प्राइमरी शिक्षक (हिन्दी में त्रैमासिक) और भारतीय आधुनिक शिक्षा (हिन्दी में त्रैमासिक)। रा.शै.अ.प्र.प. के पत्रिका प्रकोष्ठ ने शैक्षिक पत्रकारिता पर स्रोत पुस्तक विकास के लिए 3 कार्यशालाएँ आयोजित कीं। बाल साहित्य पर भारतीय आधुनिक शिक्षा के विशेष अंक की पांडुलिपि तैयार करने के लिए एक कार्यशाला आयोजित की।

प्रलेखन और सूचना सेवाएँ

रा.शै.अ.प्र.प. के पुस्तकालय, प्रलेखन और सूचना विभाग ने रा.शै.अ.प्र.प. के विभिन्न विभागों और एककों के अनुसंधान और विकास के कार्यकलापों को सहायता देना जारी रखा। यह विभाग मात्र रा.शै.अ.प्र.प. के संकाय सदस्यों की ही नहीं अपितु सारे देश के शोध विद्यार्थियों और शिक्षाविदों की भी सूचना संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। यहां शिक्षा और मनोविज्ञान संबंधी अनेक पुस्तकों और पत्रिकाओं तथा विद्यालय के सभी विषयों से संबंधित पाठ्यचर्या और संदर्भ सामग्री का संग्रह है। यह विभाग विद्यालय पुस्तकालयाध्यक्षों, विद्यालय के पुस्तकालयों में प्रभारी अध्यापक और अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के पुस्तकालयाध्यक्षों के सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता रहा। प्राथमिक स्तर के अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के पुस्तकालयों के विकास पर त्रिवेन्द्रम में 12 से 16 दिसंबर, 1988 तक कार्यशाला आयोजित की। इस कार्यशाला में 38 प्रतिभागियों ने भाग लिया। परिषद् ने विद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्षों/विद्यालय पुस्तकालयों के प्रभारी अध्यापकों के लिए 9 से 18 दिसंबर, 1988 तक सेवा कालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, उड़ीसा को शैक्षिक सहायता प्रदान की।

राष्ट्रीय एकता प्रोत्साहन कार्यक्रम

रा.शै.अ.प्र.प. ने समूह गान की कला और तकनीक में अध्यापकों को प्रशिक्षित करने हेतु समूह गान शिविर लगाए। 1988-89 में विद्यालयी अध्यापकों को प्रशिक्षित करने के लिए 22 राज्य/क्षेत्रीय/राष्ट्रीय स्तर के समूह गान शिविर लगाए गए। इसके अतिरिक्त समूह गान कार्यक्रम को प्रोत्साहित करने के लिए क्षेत्रीय समितियाँ बनाई गईं।

विविध संस्कृतियों की समझ को प्रोत्साहन देने के लिए छात्रों में परस्पर आदान प्रदान कार्यक्रम के आयोजन की संभाव्यता जाँचने के लिए मार्गदर्शी अध्ययन किया गया। यह अध्ययन, एस.सी.ई.आर.टी. मिजोरम तथा एम.एस. विश्वविद्यालय, बड़ौदा के शिक्षा और मनोविज्ञान संकाय के साथ मिल कर किया गया। इस अध्ययन में 12 से 14 वर्ष की आयु वर्ग के एजल स्थित विद्यालयों के 20 मिजो छात्र तथा बड़ौदा में स्थित विद्यालयों में गुजराती छात्र लिए गए। दीपावली की 10 दिनों की छुट्टियों में मिजो छात्र गुजराती छात्रों के परिवारों के साथ रहे तथा क्रिसमस त्यौहार पर 10 दिनों की छुट्टियों में गुजराती छात्र मिजो छात्रों के परिवारों के साथ रहे।

अंतर्राष्ट्रीय संबंध

विद्यालयी शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में द्विपक्षीय सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के कार्यान्वियन हेतु रा.शै.अ.प्र.प. एक मुख्य अभिकरण के रूप में कार्य करती रही। इस वर्ष, 13 देशों के शिष्टमंडल और विशेषज्ञ रा.शै.अ.प्र.प. में आए। परिषद् ने राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान महरगामा, श्रीलंका के संकाय सदस्यों के लिए 6 सप्ताह के दो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। परिषद् ने आई.टी.ई.सी. कार्यक्रम के अंतर्गत अनौपचारिक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर सोमालिया के 4 महिला शिक्षाधिकारियों के लिए 6 मास का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। परिषद् ने बंगला देश के उन 12 व्यक्तियों (फैलो) के लिए 10 दिनों का फैलोशिप प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जो अधिगम के न्यूनतम स्तरों पर आधारित प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या नवीकरण की प्रक्रिया के अध्ययन हेतु भारत आए थे। परिषद् ने यूनेस्को द्वारा प्रायोजित पाँच परियोजनाओं/अध्ययनों/कार्यक्रमों को हाथ में लिया तथा एपीड के सहायक केन्द्र और शैक्षिक नवाचार में

1988-89

राष्ट्रीय विकास समूह के सचिवालय की भूमिका निभाई। इस वर्ष यूनेस्को के तत्वावधान की निम्नलिखित परियोजनाओं/अध्ययनों/कार्यक्रमों को हाथ में लिया – विकासशील देशों में बायो टैक्नालॉजी अध्यापन परियोजना, प्राथमिक विद्यालयों में बहु श्रेणी शिक्षण पर राष्ट्रीय कार्यशाला प्राथमिक शिक्षा में बहुश्रेणी अध्यापन पर राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला पद्धतियों, तकनीकी और व्यवसायिक शिक्षा की प्रकृति एवं संरचनाओं में सुधार हेतु राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला, माध्यमिक विद्यालय (कक्षा 7 से 12 तक) की पाठ्यचर्या में पर्यावरण शिक्षा के आयाम का अध्ययन, माध्यमिक विद्यालय शिक्षकों के सेवापूर्व प्रशिक्षण की पाठ्यचर्या में पर्यावरण शिक्षा का अध्ययन। परिषद् ने 29 जून, 1988 को राष्ट्रीय विकास समूह की साधारण सभा गठित की। इस दौरान निम्नलिखित अन्य कार्य किए गए – शैक्षिक नवाचारों के लिए राज्य विकास समूहों की बैठक का आयोजन, राष्ट्रीय विकास समूह समाचार पत्र (न्यूज लैटर) का प्रकाशन तथा इंडिया एंड एपीड नामक विवरणिका का विकास। इस वर्ष रा.शै.अ.प्र.प. के 15 संकाय सदस्यों ने यूनेस्को तथा अन्य अंतर्राष्ट्रीय अभिकरणों जैसे – राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान संस्थान (एन.आई.ई. आर.) जापान द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में भाग लिया।

क्षेत्रीय सेवाएँ

रा.शै.अ.प्र.प. के 17 क्षेत्रीय सलाहकार कार्यालय राज्य/संघ शासित क्षेत्रों में अपने अधिकार क्षेत्र में संपर्क सूत्र का कार्य करते रहे। रा.शै.अ.प्र.प. के क्षेत्र सलाहकार कार्यालयों ने नवोदय विद्यालयों की स्थापना तथा इनमें प्रवेश हेतु चयन परीक्षा आयोजित करने में प्रमुख भूमिका निभाई। विद्यालयी अध्यापकों के बहुल अभिविन्यास में इन्होंने निर्णायक भूमिका अदा की। प्रत्येक क्षेत्रीय सलाहकार कार्यालय ने विद्यालयी शिक्षा तथा अध्यापक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर अध्यापकों तथा अध्यापक शिक्षकों के कई अभिविन्यास/प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए तथा राज्य स्तर पर खिलौना निर्माण प्रतियोगिता का आयोजन किया।

1988-89 के दौरान, राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों तथा रा.शै.अ.प्र.प. के अन्य संघटकों द्वारा किए कार्यकलापों/कार्यक्रमों के विस्तृत ब्यौरे परवर्ती अध्यायों में दिए गए हैं।

तीन शैशवकालीन देखभाल और शिक्षा

बच्चे के विकास, विद्यालय के लिए तैयारी तथा शैक्षिक अवसरों की समानता के संवर्धन में शैशवकालीन शिक्षा और देखभाल का व्यापक महत्व माना गया है। इसलिए, रा.शै.अ.प्र.प. ने राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों में शैशवकालीन देखभाल और शिक्षा की उन्नति के लिए अनेक कार्यकलाप/परियोजनाएँ कार्यक्रम आयोजित किए हैं। वर्ष 1988-89 में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विद्यालय पूर्व और प्रारम्भिक शिक्षा विभाग द्वारा किए गए कार्यकलाप इस प्रकार हैं : शैशवकालीन शिक्षा की अनुदेशी सामग्री का विकास, विद्यालय-पूर्व अध्यापकों और अध्यापक शिक्षकों के उपयोग हेतु अनुदेशी सामग्री का विकास, विद्यालय-पूर्व अध्यापक, अध्यापक शिक्षकों तथा शैशवकालीन देखभाल और शिक्षा कार्यक्रमों के क्रियान्वयन तथा शोध कार्यकलापों में लगे हुए निरीक्षक स्तर में कार्मिकों का प्रशिक्षण।

परिषद् ने शैशवकालीन शिक्षा और देखभाल को मजबूत बनाने के लिए निम्नलिखित मुख्य परियोजनाओं/कार्यक्रमों को कार्यान्वित किया।

बाल माध्यम प्रयोगशाला (सी.एम.एल.)

यूनिसेफ सहायता प्राप्त बाल माध्यम प्रयोगशाला परियोजना के अंतर्गत शैक्षिक सामग्री के विकास तथा 3 से 8 वर्ष तक की आयु-वर्ग के बच्चों के शैक्षिक मूल्यों और मनोरंजन की सामग्री और शैक्षिक साधनों का विकास, विचारों के प्रसार हेतु राष्ट्रीय स्तर के स्रोत केन्द्र का विकास, प्रशिक्षण और अधिगम सामग्री, शैशवकालीन शिक्षा पर अनुसंधान के परिणामों एवं प्रशिक्षण विधि – से जुड़े कार्य जारी रहे। सी.एम.एल. के अंतर्गत विकसित सामग्री को समेकित बाल विकास सेवाएं जैसी उन परियोजनाओं/कार्यक्रमों जो विद्यालय पूर्व और प्रारंभिक प्राथमिक विद्यालय की आयु वर्ग के बच्चों की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं, को भेजा गया।

तमिल भाषा में श्रव्य कार्यक्रमों के आलेख तैयार करने पर 18 से 27 अप्रैल, 1988 तक मद्रास में एक कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें 10 प्रतिभागी आए। बच्चों के लिए हिन्दी भाषा में तैयार श्रव्य कार्यक्रमों के 30 आलेखों की समीक्षा और संपादन पर 15 से 17 जुलाई, 1988 तक नई दिल्ली में एक अन्य कार्यशाला आयोजित की गई।

शैशवकालीन शिक्षा (ई.सी.ई.) परियोजना

यूनिसेफ द्वारा सहायता प्राप्त परियोजना ''शैशवकालीन

1988-89

शिक्षा'' के अंतर्गत 10 राज्यों को (बिहार, उड़ीसा, गोवा, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, नागालैंड, राजस्थान, तमिलनाडु और उ.प्र. शैशवकालीन शिक्षा के एककों को मजबूत बनाने, विद्यालय पूर्व अध्यापकों तथा अध्यापक शिक्षकों के प्रशिक्षण, तथा सीखने और खेलने की सामग्री तैयार करने के लिए सहायता दी गई। ई.सी.ई. परियोजना के अंतर्गत ई.सी.ई. तथा आई.सी.डी.एस. के कार्यक्रमों के बीच संबंध स्थापित करने के लिए मुख्य बल दिया गया। आई.सी.डी.एस. पदाधिकारियों के लिए अनेक कार्यक्रम आयोजित किए। विशेष रूप से ई.सी.ई. और आई.सी.डी.एस. की समाभिरुपता के लिए कर्नाटक में राज्य स्तर पर ई.सी.ई. की संगोष्ठी आयोजित की गई। राजस्थान में आई.सी.डी.एस केन्द्रों के लिए अमुद्रित सामग्री तैयार की गई। उड़ीसा में लगभग 8,000 आंगनवाड़ियों को रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा तैयार की गई चित्र पुस्तकें तथा अन्य खेल सामग्री दी गई। ई.सी.ई. परियोजना में भाग लेने वाले संदर्भ व्यक्तियों के लिए नई दिल्ली में 4 से 8 अप्रैल, 1988 तक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। 30 व्यक्तियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। परियोजना में भाग लेने वाले राज्यों के समन्वयकों की दो बैठकें हुई, जिसमें परियोजना के कार्यान्वयन के विभिन्न पहलुओं की समीक्षा की गई तथा अध्यापकों, अध्यापक शिक्षकों व अभिभावकों के लिए शिक्षण सामग्री की श्रृंखला के अंतर्गत चिल्ड्रन्स गार्डन, ईद तथा भारी कौन नामक 3 प्रकाशन निकाले गए।

इसके अतिरिक्त ई.सी.ई. परियोजना में भाग लेने वाले 9 राज्यों में विद्यालय पूर्व स्तर पर नामांकन तथा अवरोधन पर अगस्त, 1988 में एक अध्ययन आरंभ किया गया। प्रत्येक प्रतिभागी राज्य में ई.सी.ई. केन्द्रों से जुड़े प्राथमिक विद्यालयों के मुख्याध्यापकों की दो दिन की बैठक हुई। इस संबंध में आंकड़े इकट्ठे कर लिए हैं, और आंकड़ों के विश्लेषण एवं रिपोर्ट तैयार करने का कार्य शुरू कर दिया है।

बाल विकास हेतु गृह आधारित कार्यक्रम

शैशवकालीन प्रेरणा हेतु वैकल्पिक कार्यनीति विकसित करने के प्रयास के भाग के रूप में उड़ीसा के आदिवासी तथा शहरी गंदी बस्तियों के बच्च के विकास हेतु गृह आधारित कार्यक्रमों को परखा गया, बच्चों यह कार्यक्रम बाल अधिगम को बढ़ाने के लिए परिवार के सदस्यों तथा बड़े बूढ़ों जैसे दादी माँ, माता, पिता, आदि में अपेक्षित विश्वास जगाने का प्रयत्न करता है ताकि वे शिक्षक की भूमिका निभा सकें। इस अध्ययन में भागवती पुर आदिवासी क्षेत्र के 65 गृह तथा उड़ीसा में भुवनेश्वर के शहरी गंदी बस्तियों के 100 गृह सम्मिलित किए गए। अभिभावकों में उनकी सशक्त शिक्षक की भूमिका के बारे में चेतना को बढ़ावा देने तथा उनमें आवश्यक कौशल के विकास हेतु गृह आधारित अनुदेशी पैकेज बनाया गया। इस पैकेज में बच्चों के स्वास्थ्य, पोषण और शिक्षा सम्मिलित है। 1988-89 में इस कार्यक्रम के अंतर्गत किए गए अभिभावकों के साथ हस्तक्षेप कार्यक्रम/कार्यकलाप तथा कार्यक्रम का मूल्यांकन सम्मिलित हैं।

बाल से बाल (चाइल्ड टू चाइल्ड) कार्यक्रम

इस कार्यक्रम के अंतर्गत दिल्ली नगर निगम के प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 4–5 में स्वास्थ्य और पोषण शिक्षा से संबंधित कार्य किये जाते रहे। चाइल्ड टू चाइल्ड कार्यक्रम कार्य परख अनुसंधान अध्ययन है जो स्वास्थ्य और पोषण शिक्षा से संबंधित है तथा कक्षा 4 और 5 के बच्चों और अध्यापकों के लिए है जो फिर कक्षा 1 और 2 के बच्चों के साथ काम करते हैं। 1988-89 में इस कार्यक्रम के अंतर्गत किये गये मुख्य कार्यकलाप अध्यापकों को प्रशिक्षण देना तथा समुदाय को शामिल करते हुए विद्यालयों में बाल मेले आयोजित करना था।

दिल्ली नगर निगम के नर्सरी विद्यालयों में शैशवकालीन शिक्षा परियोजना

दिल्ली नगर निगम द्वारा चलाए जा रहे कुछ विद्यालयों के नर्सरी वर्ग में रा.शै.अ.प्र.प., शैशवकालीन शिक्षा के कार्यक्रम कार्यान्वित करती रही है। इस परियोजना के अंतर्गत, खेल विधि तथा क्रियाकलाप पर आधारित शिक्षण पर 19 से 30 सितंबर, 1988 तक अभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित किया। इसमें कक्षा

3 के छात्रों को पढ़ाने वाले 20 शिक्षकों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त 16 जनवरी, 1989 को नर्सरी अध्यापकों के लिए सर्जनात्मक गतिविधियों तथा नाटक का पुनश्चर्या पाठ्यक्रम चलाया गया। 19 जनवरी, 1989 को कक्षा 1 के अध्यापकों के लिए यही पुनश्चर्या पाठ्यक्रम आयोजित किया। 20 जनवरी, 1989 को कक्षा 2 के अध्यापकों के लिए इसी पर पुनश्चर्या पाठ्यक्रम आयोजित किया। नर्सरी अध्यापकों के इस पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में 19 अध्यापकों ने भाग लिया, कक्षा 1 के पाठ्यक्रम में 23 अध्यापक आए तथा कक्षा 2 के अध्यापकों के लिए आयोजित पाठ्यक्रम में 27 अध्यापक उपस्थित हुए। 28 फरवरी, 1 मार्च और 6 मार्च, 1989 को कक्षा 1,2 और 3 के अध्यापकों की कक्षावार बैठकें हुई जिनमें बच्चों का मूल्यांकन करते समय कार्यकलापों को दिये जाने वाले महत्व पर विचार किया गया। कक्षा 1 के अध्यापकों की बैठक में 19 अध्यापक आए, जबकि कक्षा 2 के अध्यापकों की बैठक में 20 अध्यापक उपस्थित हुए और कला 3 के अध्यापकों की बैठक में 22 अध्यापकों ने भाग लिया।

रेडियो संभाव्यता अध्ययन

रेडियो के माध्यम से आंगनवाड़ी और प्राथमिक विद्यालयों के कक्षा 1 तथा 2 के बच्चों के सीखने के अनुभवों को समृद्ध करने के लिए रा.शै.अ.प्र.प. ने आकाशवाणी केन्द्र कोटा के साथ मिल कर रेडियो की संभाव्यता का अध्ययन प्रारंभ किया। 2 अक्तूबर, 1988 को आकाशवाणी केन्द्र, कोटा से बच्चों के कार्यक्रम का प्रसारण आरंभ किया। कार्यक्रम की अवधि 15 मिनट है तथा सप्ताह में 6 दिन यह कार्यक्रम प्रसारित किया जाता है। 1988-89 में की गई मुख्य गतिविधियों में प्रसारण हेतु श्रव्य कार्यक्रमों तथा अध्यापकों और आँगनवाड़ी कार्यकर्त्ताओं के लिए मार्गदर्शिका तैयार करना और अध्यापकों एवं आँगनवाड़ी कार्यकर्त्ताओं का प्रशिक्षण सम्मिलित है। रेडियो-संभाव्यता अध्ययन के अंतर्गत बच्चों के कार्यक्रम प्रसारित करने के लिए 60 श्रव्य टेप बनाई गईं तथा अध्यापक और आंगनवाड़ी कार्यकर्त्ताओं के लिए 6 मार्गदर्शिकाएं तैयार की गईं। इस परियोजना के अंतर्गत आई.सी.डी.एस. के निरीक्षकों और आंगनवाड़ी कार्यकर्त्ताओं को प्रशिक्षण देने वाले सी.डी.पी.ओ. का कोटा में 18 से 20 अगस्त, 1988 तक अभिविन्यास कार्यक्रम, 29 अगस्त से 10 सितंबर 1988 तक कोटा में एक अन्य कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें प्रसारण से पूर्व तथा प्रसारणोपरांत कार्यकलापों के आयोजन हेतु आंगनवाड़ी कार्यकर्त्ताओं और 1 और 2 कक्षा के अध्यापकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम, तथा कक्षा 1 और 2 पाठ्यक्रम के अध्यापकों व आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और विद्यालयों के मुख्याध्यापकों और सी.डी.पी.ओ. के निरीक्षकों को 5 पुनश्चर्या पाठ्यक्रम (प्रत्येक के लिए दो दिन की अवधि का – 5 से 7 मार्च कोटा में) आयोजित किए। आई.सी.डी.एस. निरीक्षकों तथा सी.डी.पी.ओ. के अभिविन्यास पाठ्यक्रम में 15 प्रतिभागी आए, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं तथा अध्यापकों के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में 50 प्रतिभागी उपस्थित हुए तथा पुनश्चर्या पाठ्यक्रमों में 185 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसके अलावा, 25 से 26 नवंबर, 1988 तक दिल्ली, नागपुर और पुणे के आकाशवाणी केन्द्रों के कार्यक्रम निर्माताओं (प्रोड्यूसरों) की बैठक हुई। 11 से 12 मार्च, 1989 को कुछ आकाशवाणी केन्द्रों के बच्चों के कार्यक्रम बनाने वाले कार्यक्रम निर्माताओं (प्रोड्यूसर) के साथ अन्य बैठक हुई जिसमें बच्चों के कार्यक्रमों के निर्माण तथा प्रसारण के विभिन्न पक्षों पर चर्चा की गई।

खिलौने बनाने की राष्ट्रीय कार्यशाला

अध्यापकों में खिलौनों और शैक्षिक खेल की महत्ता तथा विद्यालय पूर्व और पूर्व प्राथमिक स्तर पर खेल विधि द्वारा शिक्षण के प्रति जागरुकता उत्पन्न करने के लिए रा.शै.अ.प्र.प. क्षेत्र सलाहकार कार्यालयों के माध्यम से राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों में खिलौनों की प्रतियोगिता आयोजित करती रही है। राज्य स्तर पर प्रथम पुरस्कार विजेताओं के लिए 19-23 दिसंबर तक नई दिल्ली में परिषद् द्वारा खिलौना बनाने पर राष्ट्रीय स्तर पर खिलौना कार्यशाला सह-प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें 10 राज्य स्तर के पुरस्कार विजेता आए। इसके अलावा परिषद्

ने 24 नवंबर, 1988 को दिल्ली में राज्य स्तर की भी खिलौना बनाने की प्रतियोगिता आयोजित की जिसमें 25 अध्यापकों ने भाग लिया। नई दिल्ली में ही 28 से 30 नवंबर, 1988 तक विद्यालय पूर्व नेत्रहीन बच्चों के शैक्षिक खिलौनों की पहचान के लिए एक कार्यशाला आयोजित की। इसमें 5 प्रतिभागी आए।

नर्सरी अध्यापक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

परिषद ने दो वर्षीय नर्सरी अध्यापक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की समीक्षा हेतु 5 दिवसीय कार्यशाला आयोजित की। 31 अक्टूबर से 4 नवंबर, 1988 तक दिल्ली में आयोजित इस कार्यशाला में 8 प्रतिभागी आए। कार्यशाला के दौरान वर्तमान दो वर्षीय नर्सरी अध्यापक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम की समीक्षा की गई और संशोधित पाठ्यक्रम की संरचना के लिए रूप रेखा तैयार की।

ई.सी.ई. के शीर्ष व्यक्तियों का प्रशिक्षण

अरूणाचल प्रदेश के शीर्ष व्यक्तियों का 1 से 5 फरवरी 1989 तक दिल्ली में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। अरूणाचल प्रदेश से 31 शीर्ष व्यक्तियों ने इस पाठ्यक्रम में भाग लिया। इसी प्रकार से परिषद् ने जिज्ञासु आदिवासी अनुसंधान केन्द्र मध्य प्रदेश जो शैशवकालीन देखभाल और शिक्षा के क्षेत्र में एक स्वैच्छिक संगठन है() उसके शीर्ष कार्यकर्ताओं के लिए 13 से 24 फरवरी 1989 तक एक अन्य प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया । इस पाठ्यक्रम में इस संस्थान के 10 पदाधिकारी आए।

1988-89

चार प्राथमिक शिक्षा का व्यापकीकरण

भारतीय संविधान के नीति निर्देशक सिद्धांत में 14 वर्ष की आयु तक सभी बच्चों को निःशुल्क तथा अनिवार्य रूप से शिक्षा देने की व्यवस्था है, अतः भारत में प्राथमिक शिक्षा का व्यापकीकरण शैक्षिक विकास का प्रमुख लक्ष्य रहा है। इसीलिए,. रा.शै.अ.प्र.प. ने प्राथमिक शिक्षा के व्यापकीकरण को बढ़ावा देने के लिए कार्यक्रमों/परियोजनाओं और कार्यकलापों को उच्च प्राथमिकता दी है। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान का विद्यालय पूर्व और प्रारम्भिक शिक्षा विभाग 1988-89 में पाठ्यचर्या के नवीकरण, प्राथमिक स्तर पर संशोधित अनुदेशी सामग्री के विकास, आपरेशन ब्लैक बोर्ड योजना के कार्यान्वयन, क्षेत्रवार गहन शिक्षा कार्यक्रमों के विकास तथा अनौपचारिक शिक्षा के कार्यक्रमों के कार्यान्वयन हेतु अनेक कार्यकलापों में रत रहा । विभिन्न राज्यों और संघशासित क्षेत्रों में प्राथमिक शिक्षा के व्यापकीकरण कार्यक्रम को कार्यान्वित करने हेतु विद्यालय पूर्व और प्रारम्भिक शिक्षा विभाग शिक्षा के क्षेत्र में यूनिसेफ सहायता प्राप्त परियोजनाओं के लिए केन्द्रीय, तकनीकी एवं समन्वयक अभिकरण के रूप में कार्य करता रहा है। रा.शै.अ.प्र.प. ने स्कूल न जाने वाले बच्चों के लिए अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों से संबंधित अनेक कार्यकलाप भी प्रारम्भ किए । केन्द्र :- समर्थित अनौपचारिक शिक्षा परियोजना को पुष्ट करने के लिए, अनुसंधान विकास और प्रशिक्षण कार्यकलाप, राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के अनौपचारिक शिक्षा और अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन जाति शिक्षा विभाग के कार्यक्रमों का महत्वपूर्ण अंग बन गए।

पाठ्यचर्या का नवीनीकरण एवं अनुदेशी सामग्री का विकास

राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 1986 में प्रतिपादित शिक्षा की विषयवस्तु और प्रक्रिया के पुनरअभिविन्यास के प्रयास के भाग रूप में कक्षा–5 के लिए एक अनुदेशी पैकेज, जिसमें पाठ्यपुस्तकें भी सम्मिलित हैं तैयार करना परिषद् का मुख्य कार्य कलाप रहा। यूनिसेफ सहायता प्राप्त प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या नवीकरण (पी.ई.सी.आर.) परियोजना के अंतर्गत औपचारिक विद्यालयी शिक्षा की प्रासंगिकता और गुणवत्ता में सुधार के लिए प्राथमिक पाठ्यचर्या के नवीकरण एवं अनुदेशी सामग्री के संशोधन संबंधी कार्य जारी रहे। इसके अलावा, यूनिसेफ सहायता प्राप्त परियोजना ''पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा एवं पर्यावरणात्मक स्वच्छता'' के अंतर्गत पोषण तथा स्वास्थ्य शिक्षा संबंधी सहायक कार्यकलाप किए गए।

1988-89

कक्षा 5 के लिए अनुदेशी सामग्री का विकास

परिषद् ने विद्यालयी अवस्था पर शिक्षा की विषय वस्तु और प्रक्रियाओं के पुनरअभिविन्यास के प्रयास के अंग के रूप में प्राथमिक स्तर के संशोधित पाठ्यविवरण पर आधारित कक्षा 5 के लिए पाठ्यपुस्तकों सहित अनुदेशी सामग्री के विकास के कार्यकलाप किए। कक्षा पाँच की पाठ्यपुस्तकों की पांडुलिपि तैयार करने एवं उनकी समीक्षा करने तथा अध्यापक मैनुअल तैयार करने और उनकी समीक्षा के लिए बैठकें/ कार्यशालाएँ आयोजित कीं। शिक्षा की विषयवस्तु और प्रक्रियाओं के पुनरभिविन्यास भाग में इन कार्यों के विस्तृत ब्यौरे दिए गये हैं।

1986-87 में परिषद् ने प्राथमिक स्तर पर पाठ्यचर्या के विकास हेतु मार्गदर्शिका प्रारूप तैयार किया। देश के विभिन्न अभिकरणों और संस्थाओं से प्राप्त सुझावों के अनुसार इन मार्गदर्शिकाओं को संशोधित किया गया। ''प्राथमिक स्तर पर अधिगम के न्यूनतम स्तर-सामान्य कोर अवयवों सहित पाठ्यविवरण'' – संशोधित प्रलेख प्रकाशित किया और इसे राज्य/संघ शासित क्षेत्रों में विद्यालयी शिक्षा पाठ्यचर्या में कार्यरत विभिन्न अभिकरणों/संस्थाओं को वितरित किया गया।

प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या नवीकरण (पी.ई.सी.आर.)

यूनिसेफ द्वारा सहायता प्राप्त इस परियोजना पाठ्यचर्यानवीकरण (पी.ई.सी.आर.) के अंतर्गत विभिन्न वर्गों के बच्चों की आवश्यकताओं और पर्यावरणीय संदर्भों के अनुकूल पाठ्यचर्या नवीकरण, अनुदेशी सामग्री का विकास एवं शैक्षिक प्रशासकों तथा अध्यापकों को अभिविन्यासित किया गया। 1988-89 के दौरान, इन 10 राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में परियोजना कार्यान्वित की गई – आंध्र प्रदेश, असम, जम्मू और कश्मीर, कर्नाटक, मणिपुर, मेघालय, नागालैण्ड, उड़ीसा, राजस्थान, सिक्किम और पांडिचेरी। अन्य प्रतिभागी राज्यों और संघशासित क्षेत्रों ने 1987-88 के अंत तक पाठ्यचर्या को नवीकृत कर लिया था और इस अवधि में समस्त प्राथमिक विद्यालय अवस्था पर कार्यान्वयन कार्य पूरा कर लिया है। रा.शै.अ.प्र.प. ने प्राथमिक पाठ्यचर्या में कार्यरत राज्य/संघीय क्षेत्र स्तर पर पाठ्यचर्या नवीकरण शैक्षिक सामग्री के विकास हेतु एवं शैक्षिक प्रशासकों और अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए तकनीकी सहायता प्रदान की।

पी.ई.सी.आर. के अंतर्गत ''नामांकन अवरोधन गतिरोध और छात्र उपलब्धि अध्ययन'' के बारे में राज्यों से आंकड़े इकट्ठे किए गए तथा उनका विश्लेषण किया गया है और ''प्राथमिक स्तर पर छात्र-उपलब्धि'' नामक अंतरिम रिपोर्ट प्रकाशित हो चुकी है। इस वर्ष ''पी.ई.सी.आर. के अंतर्गत तैयार हिन्दी पाठ्यपुस्तकों में प्रयुक्त शब्द संग्रह का अध्ययन'' के लिए कार्यकारी दल की 4 बैठकें हुई। इसके अतिरिक्त 13 से 14 दिसंबर, 1988 तक राज्य/संघ शासित क्षेत्र में पी.ई.सी.आर. परियोजना के समन्वयकों की बैठक की गई जिसमें परियोजना के कार्यान्यवन की प्रगति एवं कार्य योजना पर समीक्षा की गई।

पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा और पर्यावरणीय स्वच्छता

यूनिसेफ द्वारा सहायता प्राप्त इस परियोजना के अंतर्गत वर्ष 1988-89 में ''छात्र अपलब्धियों का अध्ययन'' तथा ''समुदाय संपर्क कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन'' – ये दो अनुसंधान अध्ययन जारी रहे। इन अध्ययनों के संबंध में आंकड़े एकत्रित कर लिए हैं और उनके समालकन का कार्य भी पूरा हो चुका है। अध्ययनों में भाग लेने वाले सभी राज्यों ने तालिका बनाने वालों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए तथा ये तालिका बद्ध आंकड़े विश्लेषण के लिए रा.शै.अ.प्र.प. को भेज दिए। इस परियोजना के प्रतिभागी राज्यों ने राज्य शिक्षा प्रणाली में विस्तार हेतु समुदाय संपर्क कार्यक्रम के लिए अपनाई गई कार्य नीतियों की समीक्षा के लिए बैठकें आयोजित कीं। 6 राज्यों में, प्राथमिक स्तर पर पाठ्यचर्या में इस परियोजना के प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के लिए विकसित पोषण, स्वास्थ्य शिक्षा और पर्यावरणीय स्वच्छता के अनुदेशी पैकेज समाकलित किए गए।

मानव संसाधन विकास के लिए क्षेत्रवार गहन शिक्षा परियोजना

यूनिसेफ सहायता प्राप्त परियोजना के मानव संसाधन

विकास के लिए क्षेत्रवार गहन शिक्षा के अंतर्गत राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों के अभिकरणों द्वारा कार्यान्वित विभिन्न शैक्षिक परियोजनाओं के समेकन तथा समन्वयन के लिए प्रयास किये गये। यह परियोजना किसी भी क्षेत्र की कुल जनसंख्या की सामाजिक-आर्थिक तथा विकासात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए व्यापक शैक्षिक दृष्टिकोण प्रस्तावित करती है। इस ए.आई.ई.पी. परियोजना का लक्ष्य समुदाय में विद्यालय -- पूर्व, प्राथमिक, अनौपचारिक और प्रौढ़ शिक्षा के कार्यकलापों के समेकन को प्रोत्साहन तथा प्राथमिक शिक्षा का व्यापकीकरण है । इस परियोजना में केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों के सामाजिक-आर्थिक और विकासात्मक निवेशों की समाभिरूपता, समुदाय की प्रतिभागिता के संघटन की विधियों के विकास और परीक्षण तथा दीर्घकालीन सार्वभौमिक शैक्षिक कार्य नीतियों में परियोजना के अनुभवों को सम्मिलित करने पर भी बल दिया जाता है। इस परियोजना में औपचारिक एवं अनौपचारिक माध्यम से 9 से 14 वर्ष तक की आयु तक की बालिकाओं की शिक्षा तथा उनकी शैक्षिक आवश्यकताओं पर भी ध्यान दिया गया।

ए.आई.ई.पी. को वर्ष 1987 में आरंभ किया गया। 1988–89 में महाराष्ट्र, मिजोरम, उड़ीसा, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश राज्यों तथा दादर व नगर हवेली संघ शासित क्षेत्र में इसे कार्यान्वित किया गया। सभी प्रतिभागी राज्यों ने यथास्थिति का (बैंचमार्क सर्वेक्षण) सर्वेक्षण किया। विभिन्न स्तरों पर समन्वयन समितियाँ बनाईं तथा परियोजना के कार्यान्वयन के विभिन्न पहलुओं पर राज्य स्तरीय शीर्ष व्यक्तियों का अभिविन्यास पाठ्यक्रम आयोजित किया। परिषद् ने सर्वेक्षण के लिए कार्मिकों के प्रशिक्षण तथा राज्यों/संघशासित क्षेत्रों में विभिन्न स्तरों पर कार्य कर रहे परियोजना समूहों के अभिविन्यास हेतु राज्यों की तकनीकी सहायता की।

आपरेशन ब्लैक बोर्ड स्कीम के कार्यान्वयन हेतु तकनीकी सहायता

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अनुरोध पर रा.शै.अ.प्र.प. ने केन्द्रीय प्रायोजित आपरेशन ब्लैक **बोर्ड योजना** के अंतर्गत प्राथमिक विद्यालयों को दी जाने वाली आवश्यक वस्तुओं के मापदंड तथा विनिर्देश तैयार करने की जिम्मेदारी ली। रा.शै.अ.प्र.प. ने भारतीय मानक ब्यूरो के सहयोग से इन मापदंडों और विनिर्देशों को अंतिम रूप दिया। इस बारे में "आपरेशन ब्लैक बोर्ड : प्राथमिक स्तर पर अनिवार्य सुविधाएं मापदंड और विनिर्देशन" नामक दस्तावेज को अंतिम रूप दिया तथा राज्यों और संघशासित क्षेत्रों में व्यापक प्रसार के लिए प्रकाशित किया गया।

आपरेशन ब्लैक बोर्ड योजना के कार्यान्वयन के लिए गठित राज्य स्तरीय सर्वाधिकार सम्पन्न समितियों की बैठकों में परिषद् के संकाय सदस्यों ने भाग लिया था। परिषद ने आपरेशन ब्लैक बोर्ड योजना के अंतर्गत प्राथमिक विद्यालयों को दी जाने वाली अनिवार्य वस्तुओं के प्रभावी उपयोग हेतु अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रयोग होने वाले सात वीडियो कार्यक्रम के लिए सारांश तैयार किये।

अनौपचारिक शिक्षा

अनौपचारिक शिक्षा के अनुसंधान और विकासात्मक कार्यकलाप तथा इस क्षेत्र में कार्यरत कार्मिकों का प्रशिक्षण/अभिविन्यास – यह रा.शै.अ.प्र.प. का महत्वपूर्ण कार्य रहा है।परिषद् ने राज्यों में कार्यान्वित केन्द्रीय प्रायोजित अनौपचारिक शिक्षा योजना को सहायता देने के लिए अनेक कार्यकलाप हाथ में लिए। इन कार्यकलापों का प्रमुख बल बाल अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के लिए अनुदेशी सामग्री के विकास तथा शिक्षण -- अधिगम मूल्यांकन की कार्य-नीतियों पर था। 1988-89 में रा.शै.अ.प्र.प. ने अनौपचारिक शिक्षा से संबंधित निम्नलिखित मुख्य कार्यक्रम/परियोजनाएँ/कार्यकलाप किए।

अनुसंधान

अगस्त, 1988 में अनौपचारिक शिक्षा, पाठ्यचर्या तथा अनुदेशी सामग्री एवं उनमें अंतर्निहित तात्पर्यों के कार्यान्वयन का अध्ययन प्रारंभ किया गया। इस अध्ययन के मुख्य

लक्ष्य इस प्रकार है : अनौपचारिक शिक्षा की विद्यमान पाठ्यचर्या तथा अनुदेशी सामग्रियों का विश्लेषण एवं मूल्यांकन करना और अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के अनुरूप पाठ्यचर्या तथा अनुदेशी सामग्री को और प्रासंगिक बनाने के लिए उपागम—कार्य नीतियाँ बनाना है। अध्ययन के साधनों को अंतिम रूप देने के लिए 17 से 20 जनवरी, 1989 तक नई दिल्ली में कार्यशाला आयोजित की गई। राज्यों/संघशासित क्षेत्रों के अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों हेतु पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्री के तर्कसंगत विश्लेषण के लिए 20 से 27 फरवरी, 1989 तक लखनऊ में एक अन्य कार्यशाला आयोजित की गई।

अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रमों की अनुदेशी सामग्री और पाठ्यचर्या के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि अनुदेशी सामग्री को चार समूहों में बाँटा जा सकता है — सीखने वाले के लिए पाठ्यसामग्री, सीखने वाले के लिए सहायक पाठ्यसामग्री, अध्यापक सामग्री, जैसे — सामान्य संदर्शिकाएँ और प्रवेशिका/पाठमालाओं से संबंधित संदर्शिकाएँ तथा संसाधन व्यक्तियों की सामग्री। इस विश्लेषण से यह तथ्य भी उभर कर सामने आया कि राज्य मोटे तौर पर चार प्रकार की पाठ्यचर्या अपनाते हैं — औपचारिक विद्यालयों की सघन पाठ्यचर्या, पृथक अनौपचारिक शिक्षा पाठ्यचर्या, अंशतः समेकित पाठ्यचर्या और औपचारिक विद्यालयी पाठ्यचर्या।

अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में नामांकित बच्चों के मूल्यांकन हेतु उपकरण और तकनीकों के विकास की चालू परियोजना के अंतर्गत प्रवेश स्तर पर तथा कक्षा 1 और 2 स्तर के बच्चों की उपलब्धि के मूल्यांकन के लिए उपकरण और तकनीकों को अंतिम रूप देने पर दो कार्यशालाएं आयोजित की गईं। पहली कार्यशाला नई दिल्ली में 22 से 26 अगस्त, 1988 तक तथा दूसरी 31 मार्च से 4 अप्रैल, 1989 तक आयोजित की गई।

अप्रैल, 1988 में चुने हुए अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में अध्ययन शुरू किया गया। इसका लक्ष्य देश के कुछ सफल अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों एवं इन केन्द्रों की सफलता के लिए उत्तरदायी कार्यनीतियों, सामग्री और संगठनात्मक पहलुओं को पहचानना था।

अनुदेशी प्रशिक्षण सामग्री का विकास

रा.शै.अ.प्र.प. विभिन्न राज्यों में केन्द्रीय अनौपचारिक शिक्षा योजना के अंतर्गत स्थापित केन्द्रों में नामांकित बच्चों के उपयोग हेतु शिक्षण के लिए उपयुक्त सामग्री के विकास संबंधी कार्य करती रही है। प्राथमिक स्तर के अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में उपयोग के लिए विकसित अनुदेशी सामग्री में कक्षा 3 के विषयों से संबंधित 22 स्वतः सीखने के लिए चार्ट और 8 कामिक्स की पुस्तकें हैं। मिडिल स्तर पर प्रयुक्त होने वाली अनुदेशी सामग्री में गणित की पुस्तकें भाग 2 और 3 बनाई गई। इन पुस्तकों को तैयार करने के लिए नई दिल्ली में तीन कार्यशालाएं आयोजित की गई। पहली कार्यशाला 29 अगस्त से 2 सितंबर, 1988 तक, दूसरी 14 से 20 फरवरी, 1989 तक तथा तीसरी 27 से 31 मार्च, 1989 तक आयोजित की गई। पहली कार्यशाला में अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र में मिडिल स्तर की गणित की पाठ्यचर्या को संशोधित किया गया और उसे अंतिम रूप दिया गया। दूसरी कार्यशाला में गणित की पुस्तक भाग 2 की पांडुलिपि संपादित की तथा प्रकाशन हेतु इसे अंतिम रूप दिया गया। तीसरी कार्यशाला में गणित की पुस्तक 3 को अंतिम रूप दिया गया।

परिषद् ने अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम में मिडिल स्तर की पाठ्यचर्या को विकसित करने की भी जिम्मेदारी ली। नई दिल्ली में 21 से 25 नवंबर 1988 तक कार्यकारी दल की बैठक हुई जिसमें विभिन्न राज्यों द्वारा अपनाई गई पाठ्यचर्याओं की जांच की गई तथा अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम के मिडिल स्तर हेतु पाठ्यचर्या की संरचना विकसित की गई। इसके अलावा परिषद् ने "नान फारमल एजुकेशन इन एक्शन" नामक फिल्म तैयार की जो अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के विविध संगठनात्मक पहलुओं को दर्शाती है। इस फिल्म की शूटिंग पूरी हो चुकी है तथा फिल्म का संपादन कार्य आरंभ कर दिया है। परिषद् ने अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के अनुदेशकों तथा पर्यवेक्षकों के लिए प्रशिक्षण मैनुअल बनाए हैं। इन मैनुअलों को अंतिम रूप देने के लिए 15 से 18 दिसंबर 1988 तक विशेषज्ञ दल की बैठक हुई।

परिषद् ने आदर्श केन्द्रों के रूप में विकसित करके कुछ चुने हुए अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र अपनाने का कार्यक्रम आरंभ किया है। बिहार, म.प्र., राजस्थान और उ.प्र. में दो-दो प्राथमिक स्तर तथा एक मिडिल स्तर पर केन्द्र अपनाए हैं। इन केन्द्रों को रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा निर्मित अनुदेशी सामग्री दी गई है तथा केन्द्रों के अनुदेशकों, पर्यवेक्षकों तथा परियोजना अधिकारियों को प्रशिक्षित किया गया है।

अनौपचारिक शिक्षा के कार्यकर्त्ताओं का प्रशिक्षण

केन्द्रीय प्रायोजित अनौपचारिक शिक्षा योजना के कार्यान्वयन में कार्यरत अधिकारियों के लिए आगरा में 13 से 17 मार्च, 1989 तक अभिविन्यास कार्यक्रम हुआ। इस कार्यक्रम के मुख्य लक्ष्य अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के अनुभवों का आदान प्रदान करना, कठिनाइयों की पहचान कराना तथा उनके समाधान ढूंढ़ना था। इस अभिविन्यास कार्यक्रम में 28 प्रतिभागियों ने भाग लिया। बोध गया (बिहार) में 28 से 30 मार्च, 1989 तक स्वैच्छिक संगठनों में काम कर रहे संदर्भ व्यक्तियों के लिए एक अन्य अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया, इसमें 25 प्रतिभागी आए। इसके अतिरिक्त रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा अपनाए गए अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के अनुदेशकों, पर्यवेक्षकों तथा परियोजना अधिकारियों के लिए नई दिल्ली में 19 से 23 दिसंबर, 1988 तक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें 23 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

अनौपचारिक शिक्षा का वार्षिक सम्मेलन

अनौपचारिक शिक्षा का वार्षिक सम्मेलन 2 और 3 मार्च, 1989 को नई दिल्ली में हुआ जिसमें केन्द्र प्रायोजित अनौपचारिक शिक्षा योजना के कार्यान्यवन के विभिन्न पक्षों की समीक्षा की गई तथा कार्यान्वियन के समय अभिकरणों के सामने आने वाली कठिनाइयों को दूर करने के उपाय सुझाए गए। दो दिवसीय वार्षिक सम्मेलन में अनौपचारिक शिक्षा योजना को कार्यान्वित करने वाले राज्यों से 20 प्रतिनिधि आए।

देश में अनौपचारिक शिक्षा के कार्यक्रमों के प्रतिपादन एवं कार्यान्वियन संबंधी प्रसार के लिए परिषद् के प्रयास के अंग रूप में इस वर्ष अनौपचारिक शिक्षा पर न्यूज लैटर के 4 अंक निकाले।

प्राथमिक शिक्षा की व्यापक पहुँच (केप)

यूनिसेफ द्वारा सहायता प्राप्त ''सी.ए.पी.ई.'' परियोजना में विद्यालयेतर बच्चों की शिक्षा के लिए अधिगम सामग्री (लर्निंग एपीसोड) का विकास तथा अधिगम केन्द्रों की व्यवस्था से संबंधित कार्य जारी रहे। 1988-89 में यह परियोजना आंध्र प्रदेश, बिहार, हरियाणा, जम्मू और कश्मीर, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, मेघालय, मिजोरम, उड़ीसा, पंजाब, राजस्थान, सिक्किम, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश में कार्यान्वित की गई। परिषद् ने हिन्दी, पर्यावरणीय अध्ययन तथा गणित के 7 माड्यूल प्रकाशित किए और उर्दू के माड्यूल भी तैयार किए तथा राज्य शिक्षा संस्थान, जम्मू और श्रीनगर ने इसे प्रकाशन हेतु अंतिम रूप दिया। स्तर 2 के हिन्दी माड्यूलों को अंतिम रूप देने के लिए 9 से 16 मई, 1988 तक कार्यकारी दल की बैठक आयोजित की। स्तर 2 के पर्यावरण अध्ययन के अधिगम माड्यूलों को विकसित करने तथा अंतिम रूप देने के लिए विशेषज्ञ-दल की तीन बैठकें हुईं। राज्य शिक्षा संस्थान, जम्मू और श्रीनगर द्वारा तैयार उर्दू के माड्यूल की समीक्षा और अंतिम रूप देने हेतु 13 से 17 जून, 1988 तक पहली तथा 14 से 20 सितंबर, 1988 तक दूसरी कार्यकारी दल की बैठक आयोजित की गई। उर्दू के माड्यूलों की कैलीग्राफी तैयार करने के लिए 27 जून से 1 जुलाई, 1988 तक एक बैठक हुई। 3 से 7 अक्तूबर, 1988 तक स्तर 2 के गणित माड्यूल को अंतिम रूप देने के लिए कार्यकारी दल की बैठक आयोजित की गई। 2 से 15 जुलाई, 1988 तक राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों के परियोजना टीम सदस्यों की बैठक हुई इसमें शिक्षा केन्द्रों की कार्यप्रणाली की समीक्षा की गई। 8 से 10 दिसंबर, 1988 तक परियोजना समन्वयकों की वार्षिक बैठक हुई जिसमें 1989 की ''कार्य योजना'' तथा बजट अनुभाग को अंतिम रूप दिया गया।

1988-89

सी.ए.पी.ई. (केप) के अंतर्गत विकसित अनुदेशी सामग्रियों को इस योजना में स्थापित हिन्दी भाषी राज्यों–बिहार, म.प्र., राजस्थान और उ.प्र. के 302 अधिगम केन्द्रों में वितरित किया गया। यह सामग्री उन सात परियोजना के अंतर्गत प्रमुख स्वैच्छिक संगठनों को भी भेजी गई जो अनौपचारिक शिक्षा केन्द्र चलाते हैं। अहिन्दी भाषी राज्यों के 117 नवोदय विद्यालयों को हिन्दी माड्यूल दिए गए। इसके अलावा, परिषद् ने ''केप'' के प्रतिभागी राज्यों को तकनीकी सहायता प्रदान की ताकि वे अधिगम सामग्री का विकास कर सकें, अधिगम केन्द्रों को आगे बढ़ाने वालों को प्रशिक्षित कर सकें तथा केप परियोजना के अंतर्गत स्थापित शिक्षा केन्द्रों में नामांकित बच्चों की उपलब्धि के मूल्यांकन हेतु प्रश्न बैंक तैयार कर सकें।

1988-89 के दौरान, केप परियोजना में सात प्रकाशन निकाले गए। इनमें एक अभ्यास पुस्तिका तथा छः अधिगम माड्यूल हैं : आओ सीखें – 100 तक की संख्याएँ, गणितीय क्रियाएँ और संख्याओं का गुण, दशमलव में गणितीय संक्रियाएँ और मापन सीखें, आओ परिवेश को समझें, जीवन को खुशहाल बनाएँ, पृथ्वी की कहानी अपनी जुबानी और ''डिटैक्शन एंड प्रीवेन्शन ऑफ मैंटल हैंडीकेप'' निकाले गए।

सामुदायिक शिक्षा और प्रतिभागिता की विकासात्मक गतिविधियाँ (डी.ए.सी.ई.पी.)

यूनिसेफ सहायता प्राप्त सामुदायिक शिक्षा और प्रतिभागिता की विकासात्मक गतिविधियाँ (डी.ए.सी.ई.पी.) परियोजना के अंतर्गत रा.शै.अ.प्र.प. ने उन शिक्षा वर्गों की शैक्षिक आवश्यताओं की पूर्ति के अनुरूप शैक्षिक कार्यक्रम विकास से संबंधित कार्य जारी रखें, जो शिक्षा के अवसरों से पूर्णतः या अंशतः वंचित हैं। परिषद् ने परियोजना के अंतर्गत राज्य सरकारों द्वारा स्थापित एवं चलाए जा रहे सामुदायिक शिक्षा केन्द्रों को 1988-89 में मार्ग दर्शन प्रदान किया। कुछ राज्यों में सामुदायिक शिक्षा कार्यक्रमों के संवर्धन हेतु कुछ समर्थन कार्यक्रम प्रारंभ किए गए।

1988-89

पाँच

विशेष वर्गों की शिक्षा

जिन वर्गों को अभी तक विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में समान अवसर नहीं मिले हैं, उन विशेष वर्गों की विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शैक्षिक विषमताओं को दूर करना और समान शैक्षिक अवसर देना विद्यालयी शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग रहा है। समाज के सभी वर्गों में शैक्षिक उपलब्धियों में समानता लाने के अंग रूप में रा.शै.अ.प्र.प. ने परियोजनाएं/कार्यक्रम कार्यान्वित किए हैं, जिनमें विशेषतः लड़कियों और महिलाओं, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति, शैक्षिक रूप से पिछड़े अल्पसंख्यकों तथा विकलांग बच्चों की शिक्षा है। इन कार्यक्रमों में मुख्य बल निम्नलिखित कार्यों पर दिया गया – शैक्षिक अवसर की समानता लाने के लिए उपयुक्त कार्य नीतियों पर शोध गतिविधियाँ, अनुदेशी/प्रशिक्षण सामग्री का विकास तथा महिला समानता की शिक्षा के कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की शिक्षा को प्रोत्साहन, शैक्षिक रूप से पिछड़े अल्पसंख्यकों द्वारा चलाए जा रहे विद्यालयों में शिक्षा का गुणात्मक उन्नयन, तथा विकलांगों की शिक्षा को प्रोत्साहित करना।

महिला समानता की शिक्षा

रा.शै.अ.प्र.प. ने लड़कियों और महिलाओं के शैक्षिक विकास के लिए अनेक कार्यक्रम और परियोजनाएँ प्रारंभ कीं। इस वर्ष में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के महिला अध्ययन एकक ने महिला समानता की शिक्षा के संवर्धन हेतु अनुसंधान विकास, प्रशिक्षण और विस्तार संबंधी अनेक कार्यकलाप किए।

कार्यपरक अनुसंधान परियोजना

महिला समानता की शिक्षा के संवर्धन हेतु उपयुक्त नीतियों/उपायों को विकसित करने के प्रयास के अंग के रूप में रा.शै.अ.प्र.प. ने महिला शिक्षा एवं पद्धति तथा विकास के लिए कार्यपरक अनुसंधान परियोजना आरंभ की है। इस परियोजना के मुख्य लक्ष्य इस प्रकार हैं – महिला समानता के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना, लड़कियों और महिलाओं की शिक्षा, शिक्षा के समेकित दृष्टिकोण का विकास, अन्य विभागों एवं अभिकरणों से संबंध स्थापित करके बालिकाओं और महिलाओं का विकास, बालिकाओं और महिलाओं की शिक्षा एवं विकास के संवर्धन हेतु अनुसंधान तथा प्रशिक्षण की क्रिया विधि का विकास, महिला शिक्षा की क्रिया विधि पर 6 सप्ताह के प्रशिक्षण कार्यक्रम के व्यापक ब्यौरे तैयार करना। नई दिल्ली में 1 और 2 नवंबर, 1988 को महिला शिक्षा विधि और विकास पर कार्यशाला

आयोजित की गई ताकि इस संबंध में उपयुक्त कार्य नीतियाँ बनाई जा सकें एवं महिला शिक्षा विधि एवं विकास पर 6 सप्ताह के लिए महिला शिक्षा और विकास की क्रियादिधि के प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की जा सके। महिला शिक्षा से संबंधित क्षेत्र के 10 विशेषज्ञों ने इस कार्यशाला में भाग लिया। परिषद् ने सैक्स समानता को प्रोत्साहन देने हेतु विद्यालय पर आधारित कार्यक्रम के लिए क्रिया परक अनुसंधान परियोजना का भी सूत्रपात किया। इस परियोजना के अंतर्गत 27 से 28 नवंबर, 1988 तक एक कार्यशाला महिला समानता शिक्षा के संवर्धन के लिए विद्यालय पर आधारित कार्यक्रम हेतु क्रिया परक अनुसंधान परियोजना की रूपरेखा तैयार करने के लिए आयोजित की गई। इसमें 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

परिषद् की अन्य परियोजना महिला शिक्षा विकास पर आंकड़ों का 'डेटा बैंक'' है। इस संबंध में बालिकाओं की शिक्षा का स्थितिजनक विश्लेषण किया गया जिसमें लड़कियों की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक स्थिति संबंधी परिलक्षित विशद आंकड़ों को इंगित किया गया। राष्ट्रीय स्तर पर परिस्थितिजनक विश्लेषण तैयार करने के लिए पांचवें अखिल भारतीय सर्वेक्षण का विश्लेषण किया जा रहा है।

अनुदेशी/प्रशिक्षण सामग्री का विकास

परिषद् ने महिला समानता की शिक्षा के संवर्धन तथा इस संबंध में कार्यक्रम परियोजनाओं के अनुश्रवण और मूल्यांकन के प्रारूप और मार्गदर्शिका तैयार करने के लिए अनुदेशी/प्रशिक्षण सामग्री के विकास संबंधी अनेक कार्य किए हैं। महिला समानता शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अंग्रेजी में आदर्श स्रोत सामग्री को अंतिम रूप देने के लिए एक कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें 12 प्रतिभागियों ने भाग लिया। 30 जनवरी से 3 फरवरी, 1989 तक नई दिल्ली में क्षेत्रीय भाषाओं में (असमिया, बंगला, गुजराती, हिन्दी, उड़िया और तेलुगु) जागरूकता के विकास संबंधी सामग्री के विकास पर राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की। इसमें 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

परिषद् ने प्रारंभिक तथा माध्यमिक अध्यापक शिक्षा और एम.एड. पाठ्यचर्या में महिला समानता की शिक्षा सम्मिलित करने के लिए अनेक कार्यकलाप शुरू किए। इस प्रयोजन हेतु नई दिल्ली में एक कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें अध्यापक, प्रशिक्षण महाविद्यालयों के 30 अध्यापक शिक्षक और विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग के संकाय सदस्य तथा महिला अध्ययनों के विशेषज्ञों ने भाग लिया। परिषद् ने लड़कियों और महिलाओं के लिए व्यावसायिक तथा तकनीकी पाठ्यक्रम के विकास पर भी एक कार्यशाला आयोजित की। यह कार्यशाला 30 नवंबर, 1988 को उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में हुई जिसमें 30 प्रतिभागी आए।

परिषद् ने महिला समानता की शिक्षा के संवर्धन हेतु कार्यक्रमों के मानिटरिंग और मूल्यांकन के प्रारूप की अभिकल्पना पर एक तीन दिन की कार्यशाला आयोजित की। 23 से 25 नवंबर, 1988 तक यह कार्यशाला चली जिसमें 20 विशेषज्ञों ने भाग लिया।

सैक्स पक्षपात के निवारण के दृष्टिकोण से परिषद् ने विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर विहित पाठ्यपुस्तकों व सहायक पाठमालाओं के मूल्यांकन संबंधी गतिविधियों को जारी रखा। इस संबंध में मार्गदर्शिका तैयार करने के लिए एक कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों के शीर्ष व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम

वर्ष 1988-89 में परिषद् ने महिला समानता की शिक्षा पर तीन क्षेत्रीय कार्यशालाएं तथा एक राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की ताकि शिक्षा के माध्यम से प्रभावी कार्यान्वयन हेतु माडेलिटीज तथा महिला को अधिकार शक्ति से संपन्न बनाने के लिए कार्य योजना बनाई जा सके। राज्यों एवं संघ शासित क्षेत्रों के वे शीर्ष व्यक्ति इन कार्यशालाओं में आए जो महिला समानता की शिक्षा के प्रोत्साहन के कार्यक्रमों में कार्य कर रहे हैं या करेंगे। पहली क्षेत्रीय कार्यशाला कानपुर में 26 से 28 अप्रैल, 1988 तक हुई जिसमें 25 प्रतिभागी आए, दूसरी भुवनेश्वर में 11 से 13 मई,

1988 तक आयोजित की गई जिसमें 97 प्रतिभागियों ने भाग लिया और तीसरी कार्यशाला बंबई में 18 से 20 मई, 1988 तक आयोजित की गई जिसमें 37 प्रतिभागी उपस्थित थे। इन क्षेत्रीय कार्यशालाओं में राज्य शिक्षा विभागों, एस.सी.ई.आर.टी./एस.आई.ई., राज्य शासक कल्याण बोर्ड, विश्वविद्यालयों में महिला अध्ययन केन्द्र के अधिकारी तथा स्वैच्छिक संगठनों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। राष्ट्रीय स्तर की कार्यशाला 8 और 9 जून 1988 को नई दिल्ली में आयोजित की गई। इसमें 34 प्रतिभागी आए। इस कार्यशाला में शिक्षा के माध्यम से महिलाओं के अधिकार शक्ति के लिए कार्ययोजना बनाई गई।

परिषद् ने महिला समानता के प्रति जागरूकता के लिए करनूल, आंध्र प्रदेश में 4 से 7 अक्टूबर 1988 तक एक क्षेत्रीय कार्यशाला आयोजित की। इसमें राजकीय प्रशिक्षण संस्थान/राजकीय शिक्षा महाविद्यालय तथा एस.सी.ई.आर.टी. आंध्र प्रदेश से 35 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला के मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों में महिला समानता की शिक्षा संबंधी विषयों से प्रतिभागियों को अवगत कराना तथा महिला समानता की शिक्षा को प्रोत्साहित करना और समुदाय पर आधारित क्रियात्मक कार्यक्रम बनाना था। परिषद् ने प्रियदर्शिनी महिला अध्ययन केन्द्र, ए.एंड.डी. महिला महाविद्यालय, कानपुर के सहयोग से महिला समानता की शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर विद्यालयों/महाविद्यालयों के प्रधानाचार्यों के पुनरभिविन्यास हेतु तीन कार्यशालाएं आयोजित कीं। 22 से 24 अक्तूबर, 1988 तक आयोजित पहली कार्यशाला में 40 प्रतिभागी आए, दूसरी कार्यशाला 22 से 24 दिसंबर 1988 तक आयोजित की इसमें 44 प्रतिभागियों ने भाग लिया तथा तीसरी कार्यशाला 26 से 28 दिसंबर, 1988 तक आयोजित की जिसमें 55 प्रतिभागी थे। इनके अलावा, परिषद् ने इम्फाल में महिला समानता की शिक्षा पर 14 से 16 दिसंबर, 1988 तक कार्यशाला आयोजित की, 4 से 6 जनवरी, 1989 तक उदयपुर में जिला स्तर के शैक्षिक कार्यकर्ताओं की कार्यशाला आयोजित की गई और कानपुर में 23 से 25 जनवरी, 1989 तक उत्तर प्रदेश के जिला शिक्षा अधिकारियों की कार्यशाला आयोजित की। इम्फाल में हुई कार्यशाला में 32 प्रतिभागी आए, जबकि उदयपुर में आयोजित कार्यशाला में 82 प्रतिभागी आए तथा कानपुर में आयोजित कार्यशाला में 46 प्रतिभागी उपस्थित हुए। 1988–89 में परिषद् ने जिला शिक्षा अधिकारियों और प्राथमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं के प्रधानाचार्यों के लिए 14 से 16 नवंबर, 1988 तक धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश में अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया तथा दमन में महिला समानता शिक्षा के कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में लगे हुए शीर्ष व्यक्तियों के लिए 5 से 9 दिसंबर, 1988 तक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया। धर्मशाला में आयोजित कार्यक्रम में 21 प्रतिभागियों ने तथा दमन में आयोजित कार्यक्रम में 96 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

अनुसूचित जातियों/अनुसूचित जनजातियों की शिक्षा

रा.शै.अ.प्र.प. ने अनु.जाति/अनु.जनजाति वर्ग की शिक्षा के संवर्धन हेतु अनुसंधान और विकास संबंधी कार्य जारी रखे। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के अनौपचारिक शिक्षा और अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन जाति शिक्षा विभाग ने अनुसूचित जाति/जन जाति की शिक्षा के संवर्धन हेतु अनुसंधान तथा विकास संबंधी महत्वपूर्ण कार्यकलाप किए। इस वर्ष उ.प्र. के विद्यालयों में कक्षा 10 के अनुसूचित जाति और गैर अनुसूचित छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन पूरा किया गया। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के छात्रों हेतु मैट्रिक पूर्व छात्रवृत्ति योजना का मूल्यांकन कारी अध्ययन जारी रहा। इस वर्ष 11 राज्यों के संबंध में रिपोर्ट तैयार कर ली थी (अनुसूचित जाति क्लस्टर – 1)/ क्लस्टर – 1 की प्रारुप रिपोर्ट (अनुसूचित जाति) भी तैयार कर ली है तथा क्लस्टर –2 (अ.जा./जन.जा.) संबंधी आंकड़ों का संकलन आरंभ कर दिया है।

परिषद् ने आदिवासी बोलियों में प्रवेशिका/पाठ्यपुस्तकों की तैयारी के कार्य जारी रखे। क्षेत्रीय भाषा की लिपि का उपयोग करते हुए सात आदिवासी बोलियों में प्रवेशिकाएं तैयार करने के लिए कार्यकारी दल की दो बैठकें और दो कार्यशालाएं आयोजित

की गईं। कार्यकारी दल की इन बैठकों तथा कार्यशालाओं में प्राथमिक विद्यालय के अध्यापक आए जो संबंधित आदिवासी बोलियों से परिचित थे, आदिवासी अनुसंधान संस्थान तथा विश्वविद्यालय विभागों के आदिवासी भाषाओं के विशेषज्ञ भी आए। तमिलनाडु में इरूला जनजाति के बच्चों हेतु प्रवेशिकाएं तैयार करने के लिए 18 से 27 अगस्त, 1988 तक उटगमंडलम् में कार्यकारी दल की बैठक आयोजित की गई। इसमें 10 प्रतिभागी आए तथा तमिल लिपि में इरूला आदिवासी बोलीमें कक्षा – 1 के लिए प्रवेशिका तैयार की। अन्य कार्य दल की 6 से 15 सितम्बर, 1988 तक हैदराबाद में बैठक हुई जिसका लक्ष्य आंध्र प्रदेश की गोंडी जनजाति बोली में कक्षा–II के लिए प्रवेशिका तैयार करना था। तेलुगु लिपि में गोंडी जनजाति की बोली की प्रवेशिका तैयार की। इसके अतिरिक्त बिहार की पांच आदिवासी बोलियों – संथाल, हो,मुंडारी, खरिया, औरकुरुख बोली में देवनागरी लिपि में कक्षा – I और II के लिए प्रवेशिकाएं तैयार की। पहली कार्यशाला 10 से 30 नवंबर, 1988 तक रांची में आयोजित की गई। इसमें 30 प्रतिभागी आए। दूसरी कार्यशाला 1 से 3 मार्च, 1988 तक रांची में ही आयोजित की जिसमें 31 प्रतिभागियों ने भाग लिया। बिहार के संथाल, हो, मुंडारी, खरिया और कुरुख जनजातियों के लिए प्रवेशिकाएं केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान (सी.आई.आई.एल) मैसूर के साथ मिल कर तैयार की गई।

परिषद् ने अनुसूचित जातियों के शैक्षिक विकास पर संदर्भ पुस्तक तैयार करने का उत्तरदायित्व लिया है। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य अनुसूचित जातियों के शैक्षिक विकास पर संदर्भ साहित्य तैयार करना है। इस वर्ष संदर्भ – शीर्षक संकलित कर लिए हैं।

शैक्षिक रूप से पिछड़े अल्पसंख्यकों की शिक्षा

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने शैक्षिक रूप से पिछड़े अल्पसंख्यकों विशेषतः मुसलमान वर्ग द्वारा प्रबंधित विद्यालयों में शैक्षिक स्तरों को सुधारने के लिए अनेक कार्यक्रम हाथ में लिए। मुख्य तौर पर परिषद् ने 1988-89 में मार्गदर्शन सेवाओं पर संगोष्ठी सह कार्यशाला आयोजित की, कैरियर अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम तथा पुनश्चर्या पाठ्यक्रम एवं सेवाकालीन अध्यापकों के लिए अटैचमैंट कार्यक्रम आयोजित किए । इन कार्यक्रमों को राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के शैक्षिक मानेविज्ञान, परामर्श और मार्ग निर्देशन विभाग एवं भोपाल तथा मैसूर स्थित क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों ने आयोजित किया तथा संस्थान के क्षेत्रीय सेवाएं और विस्तार समन्वयन विभाग ने अनका समन्वयन किया। परिषद् ने शैक्षिक रूप से पिछड़े अल्पसंख्यकों द्वारा प्रबंधित विद्यालयों के अध्यापकों, प्रधानाचार्यों तथा प्रबंधकों के प्रशिक्षण के लिए स्थापित क्षेत्रीय स्रोत केन्द्रों को वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान की।

संगोष्ठी-सह-कार्यशालाएं

परिषद् ने शैक्षिक रूप से पिछड़े अल्पसंख्यकों द्वारा प्रबंधित विद्यालयों के प्रधानाचार्यो तथा प्रबंधकों के मार्गदर्शन हेतु तीन संगोष्ठी सह–कार्यशालाएं आयोजित की ताकि उन्हें विद्यालय में मार्गदर्शन सेवाओं हेतु अध्यापकों को प्रशिक्षण देने के लिए अभिप्रेरित किया जा सके। नई दिल्ली में आयोजित इस तीन दिवसीय संगोष्ठी-सह-कार्यशाला में 58 प्रबंधक और प्रधानाचार्य आए।

कैरियर-अध्यापकों का प्रशिक्षण

परिषद् ने शैक्षिक रूप से पिछड़े अल्पसंख्यकों द्वारा प्रबंधित स्कूलों के शिक्षकों के लिए कैरियर मार्गदर्शन सेवाओं पर 4 सप्ताह का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया। यह पाठ्यक्रम 27 मार्च से 21 अप्रैल, 1989 तक नई दिल्ली में हुआ, जिसमें 30 कैरियर अध्यापक आए।

कैरियर मार्गदर्शन अध्यापकों के लिए पुनश्चर्या पाठ्यक्रम

परिषद् ने कैरियर मार्गदर्शन के अध्यापकों हेतु पुनश्चर्या पाठ्यक्रम आयोजित किया। इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य अध्यापकों को उन संघटनात्मक कौशलों से अभिविन्यासित करना है जो

विद्यालयी छात्रों की कैरियर मार्गदर्शन सेवा बढ़ाते हैं। 26 से 28 दिसंबर, 1988 तक नई दिल्ली में आयोजित इस पाठ्यक्रम में विभिन्न राज्यों के वे 31 कैरियर अध्यापक आए जो राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा आयोजित कैरियर अध्यापकों हेतु 4 सप्ताह के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में प्रशिक्षण पा चुके थे। इन प्रतिभागी अध्यापकों के विद्यालयों को कैरियर मार्गदर्शन सेवाएं आरंभ करने के लिए सैंट्रल बोर्ड द्वारा निधि प्रदान की गई।

सेवाकालीन अध्यापकों का अटैचमैंट कार्यक्रम

शैक्षिक रूप से पिछड़े अल्पसंख्यकों द्वारा स्थापित विद्यालयों के अध्यापकों की क्षमता बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने विज्ञान, गणित, अंग्रेजी जैसे विद्यालयी विषयों में एक सप्ताह से लेकर 10 दिन की अवधि तक के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किए। वर्ष 1988-89 में, 16 से 25 जनवरी, 1989 तक तथा 10 से 19 फरवरी, 1989 तक क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर और भोपाल में 10 दिवसीय दो अटैचमैंट कार्यक्रम आयोजित हुए। इन अटैचमैंट कार्यक्रमों का मुख्य प्रयोजन अध्यापकों को विज्ञान और गणित शिक्षण की आधुनिक तथा नवाचार पद्धतियों से अभिविन्यासित करना था। इन कार्यक्रमों में 58 अध्यापकों ने भाग लिया। केन्द्रीय वक्फ बोर्ड के सहयोग से ये कार्यक्रम आयोजित किए गए। शैक्षिक रूप से पिछड़े अल्पसंख्यकों हेतु संस्थाओं के अध्यापकों, प्रधानाचार्यों और प्रबंधकों के प्रशिक्षण के लिए परिषद् ने 1986 में क्षेत्रीय संसाधन केन्द्रों को स्थापित करने की योजना बनाई। इस योजना के अंतर्गत, परिषद् के सहयोग से अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद, मराठवाड़ा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद तथा काश्मीर विश्वविद्यालय श्री नगर में क्षेत्रीय संसाधन केन्द्रों की स्थापना की गई ताकि अल्पसंख्यक संस्थाओं के अध्यापकों, प्रधानाचार्यों तथा प्रबंधकों को प्रशिक्षित किया जा सके। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में स्थापित क्षेत्रीय संसाधन केन्द्र में अभी तक 20 कार्यशालाएं और प्रशिक्षण पाठ्यक्रम गणित, भौतिकी, रसायन, जीव विज्ञान, भूगोल, सामाजिक अध्ययन, उर्दू, अंग्रेजी तथा शैक्षिक मूल्यांकन विषयों में अध्यापकों को प्रशिक्षित कराने के लिए 10-10 दिनों के लिए आयोजित किए गए हैं, इन कार्यशालाओं, प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों में बिहार, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल और उत्तर पूर्वी क्षेत्र के राज्य एवं अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह के संघीय क्षेत्रों की संबंधित संस्थाओं से 329 अध्यापकों ने भाग लिया।

विकलांगों की शिक्षा

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की प्रमुख गतिविधियों में विकलांग बच्चों की शिक्षा के प्रोत्साहन हेतु अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण और विस्तार संबंधी मुख्य कार्यकलाप हैं। वर्ष 1988-89 में विकलांग बच्चों की शिक्षा के कार्यक्रमों का मुख्य केन्द्र बिंदु इन बच्चों के लिए शैक्षिक सेवाओं के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु सभी को शिक्षा प्रदान करने के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए राज्यों और संघ शासित क्षेत्रों में आवश्यक सक्षमता का विकास करना है। यूनिसेफ सहायता प्राप्त विकलांग बच्चों की समेकित शिक्षा (पी.आई.ई.डी.) परियोजना के अंतर्गत, वर्ष 1988-89 में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा और विस्तार सेवा विभाग ने निम्नलिखित कार्य किए – विकलांग बालकों की शिक्षा हेतु संदर्भ विशिष्ट कार्य नीतियों का विकास, इन बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु शैक्षिक प्रौद्योगिकी के उपयोग के लिए साफ्टवेयर का विकास, अध्यापकों के लिए अनुदेशी सामग्री का विकास, केन्द्र प्रायोजित आई.ई.डी.सी. योजना के नियोजन तथा प्रबंध हेतु राज्य एवं अनुस्तरीय शैक्षिक प्रशासकों का प्रशिक्षण, अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय और विश्वविद्यालय के विशेष शिक्षा एककों के अध्यापकों का प्रशिक्षण और आई.ई.सी.डी. योजना के कार्यान्वयन हेतु सर्वेक्षण और अनुसंधान।

विकलांगों की समेकित शिक्षा परियोजना (पी.आई.ई.डी.)

यूनिसेफ द्वारा सहायता प्राप्त इस परियोजना के अंतर्गत विकलांगों की शिक्षा हेतु संदर्भ विशिष्ट कार्य नीतियाँ विकसित

1988-89

करने के लिए अनेक कार्य किए। पी.आई.ई.डी. का प्रमुख लक्ष्य है – सामान्य विद्यालयों में विकलांग बच्चों के नामांकन को बढ़ाना जिससे वे अन्य सामान्य बच्चों के साथ शिक्षित हो सकें, उनकीआवश्यकताओं के अनुसार पाठ्यचर्या में समायोजन और शिक्षण विधियों तथा सामग्री के रूपांतरण द्वारा उन्नत शैक्षिक सुविधाओं के माध्यम से आम स्कूलों में विकलांग बच्चों को बनाए रखा जा सके तथा इन बच्चों की शिक्षा के लिए संदर्भ – विशिष्ट माडेलिटिज शैली रूपात्मकता विकसित की जा सके। पी.आई.ई.डी. को 1988-89 में हरियाणा, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, मिजोरम, नागालैंड, उड़ीसा, राजस्थान और तमिलनाडु में कार्यान्वित किया गया। इस परियोजना के अंतर्गत निम्नलिखित कार्यकलाप किए गए :

विकलांग बच्चों की पहचान और निर्धारण

इस परियोजना के अंतर्गत सामान्य विद्यालयों में विकलांग बच्चों की पहचान और उनका निर्धारण किया गया। वर्ष 1988-89 में पी.आई.ई.डी. के अंतर्गत आने वाले खंडों (ब्लॉक) के सामान्य विद्यालयों में लगभग 3,750 विकलांग बच्चे पहचाने गए। इनमें मध्य प्रदेश में 1,044 बच्चे, महाराष्ट्र में 993 बच्चे, नागालैंड में 75 बच्चे, उड़ीसा में 345 बच्चे, राजस्थान में 883 और तमिलनाडु में 410 बच्चे थे। पी.आई.ई.डी. परियोजना के अंतर्गत आने वाले हरियाणा तथा मिजोरम के खंडों में भी विकलांग बच्चों की पहचान व निर्धारण का कार्य किया गया। सामान्य विद्यालयों में विकलांग बच्चों की पहचान एवं निर्धारण के अलावा मध्य प्रदेश, मिजोरम, नागालैंड, उड़ीसा, राजस्थान और तमिलनाडु में समुदाय संपर्क कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों में लगभग 3000 समुदायिक सदस्यों ने भाग लिया।

पाठ्यचर्या समायोजन और शिक्षण पद्धति तथा सामग्री का रूपांतरण

पी.आई.ई.डी. के अंतर्गत विकलांग बच्चों की आवश्यकता के अनुरूप पाठ्यचर्या समायोजन तथा शिक्षण पद्धति और अनुदेशी सामग्री में रूपातंरण किया गया। 4 से 13 अक्टूबर, 1988 तक एस.सी.ई.आर.टी, हरियाणा में एक कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें श्रवण – विकृति वाले बच्चों के सामने आने वाली अधिगम संबंधी कठिनाइयाँ जानने के लिए प्राथमिक स्तर पर विज्ञान पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण किया गया। इस कार्यशाला में 25 प्रतिभागी आए जिनमें बधिर-अध्यापक सामान्य अध्यापक, अध्यापक शिक्षक और विज्ञान शिक्षा के विशेषज्ञ थे। कार्यशाला में हुई परिचर्चा के आधार पर विज्ञान पाठ्यचर्या के रूपातंरण तथा आम कक्षाओं में प्राथमिक स्तर पर श्रवण विकृत बच्चों के शिक्षण हेतु हैंडबुक निकाली गई तथा हिन्दी पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तकों के विश्लेषण हेतु हिन्दी सीखते समय श्रवण विकृत बच्चों के समक्ष आने वाली कठिनाइयों का पता लगाने हेतु एक अन्य कार्यशाला आयोजित की गई।

अनुदेशी सामग्री का विकास

परिषद् विकलांग बच्चों के लिए अनुदेशी सामग्री तैयार करती रही। इन बच्चों के लिए सर्जनात्मक कलाओं पर टेपस्लाइड कार्यक्रम तैयार करने के लिए 21 से 22 दिसंबर, 1988 तक नई दिल्ली में कार्यशाला हुई। इसमें 15 प्रतिभागी उपस्थित हुए। प्राथमिक विद्यालयों में विकलांग बच्चों के उपयोग हेतु अनुदेशी सामग्री विकसित करने के लिए 19 से 21 दिसंबर, 1988 तक एक अन्य कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में 15 प्रतिभागी उपस्थित हुए। परिषद् में विकलांग बच्चों की शिक्षा के वीडियो कार्यक्रम हेतु मूल विषयों का पता लगाने तथा सार तैयार करने के लिए भी 12 और 13 मई, 1988 को कार्यशाला आयोजित की। इस कार्यशाला में अधिगम-कठिनाई, श्रवण दोष, बौद्धिक अवरोधन एवं दृष्टि दोष से संबंधित मुख्य विषयों पर वीडियो कार्यक्रम के "सार" तैयार किये गये। इसमें 16 प्रतिभागी आए। इसके अलावा 8 फरवरी, 1989 को एक कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें परियोजना क्षेत्र में केन्द्र स्थापित करने के लिए मार्गदर्शिका तैयार की गई। इस कार्यशाला

में 10 प्रतिभागी थे।

क्षीण दृष्टि वाले बच्चों की शिक्षा हेतु मार्गदर्शी रेखाएँ तैयार करना

क्षीण दृष्टि वाले बच्चों की शिक्षा हेतु मार्गदर्शी रेखाएं बनाने के लिए 27 फरवरी से 3 मार्च, 1989 तक नई दिल्ली में एक राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें 10 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त बड़े अक्षरों में मुद्रण टेक्नालोज़ी हेतु कार्यकारी दल की 31 जनवरी, 1989 को बैठक आयोजित की गई जिसमें क्षीण दृष्टि वाले बच्चों के लिए बिना प्रोजेक्शन सुविधाओं के बड़े अक्षरों में मुद्रण टैक्नालोजी में पाठ्यसामग्री उपलब्ध कराने हेतु मार्गदर्शी रेखाएं तैयार की गईं। इस के आधार पर पी.आई.ई.डी. के अंतर्गत 1989-90 में क्षीण दृष्टि वाले बच्चों की शिक्षा में एक प्रयोग प्रारंभ किया जाना है।

शैक्षिक प्रशासकों और अध्यापकों का प्रशिक्षण

1988-89 में राज्य एवं अनु-राज्य स्तर पर शैक्षिक प्रशासकों के लिए अभिविन्यास/प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा पी.आई.ई.डी. के कार्यान्वियन की टीम के लिए दो प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। राज्य एवं अनुस्तर पर शैक्षिक प्रशासकों तथा पी.आई.ई.डी. के टीम सदस्यों के लिए आयोजित अभिविन्यास/प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य राज्यों में ऐसी क्षमताएं विकसित करना है जिससे विकलांग बच्चों हेतु समेकित शिक्षा योजना कार्यान्वित की जा सके। परिषद् ने विकलांग बच्चों की पहचान पद्धति पर अध्यापकों हेतु कुछ प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए, अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम दो स्तर पर आयोजित किए। प्रथम स्तर पर प्रशिक्षण पी.आई.ई.डी. योजना के विशेष खंड के सभी अध्यापकों के लिए था जब कि दूसरे स्तर पर 6 सप्ताह की अवधि का प्रशिक्षण कार्यक्रम उन अध्यापकों में से 10% शिक्षकों के लिए था जो प्रथम स्तर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम में आए थे। इन अध्यापकों के चयन का आधार पहले प्रशिक्षण के दौरान विकलांग बच्चों की शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने के प्रति उत्साह, प्रशिक्षण के दौरान उनका कार्य निष्पादन तथा स्थान था जहां से वे कुछ प्राथमिक विद्यालयों में सुगमता से जा सकें। 1988-89 में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों के ब्यौरे तालिका 5.1 में दिए गए हैं।

कम गति विषयक नियंत्रण वाले छात्रों के लिए कम्प्यूटर द्वारा देवनागरी लिपि का शिक्षण

कम गति विषयक नियंत्रण वाले छात्रों के लिए कम्प्यूटर द्वारा देवनागरी के लिपि शिक्षण हेतु साफ्टवेयर विकसित करने पर दो कार्यशालाएं आयोजित कीगईं। इन कार्यशालाओं में कम्प्यूटर विशेषज्ञ, शिक्षाविद्, विशेष शिक्षक तथा हिन्दी के विशेषज्ञ आए। पहली कार्यशाला 28 और 29 मई, 1988 को पुणे में हुई। इसमें 10 प्रतिभागी उपस्थित हुए। इस कार्यशाला में कम गति विषयक नियंत्रण वाले छात्रों को देवनागरी लिपि सिखाने के लिए कम्प्यूटर कार्यक्रम के लिए रूप रेखा तैयार की गई। दूसरी कार्यशाला 27 फरवरी से 3 मार्च, 1989 तक नई दिल्ली में आयोजित की गई। जिसमें 9 प्रतिभागी आए। इस कार्यशाला में प्रायोगिक स्तर पर परीक्षण हेतु कम्प्यूटर कार्यक्रम के आलेख तैयार किए। नमूने के तौर पर तीन कार्यक्रम विकसित किए।

अधिगम संबंधी अक्षमताओं की पहचान हेतु साधनों का विकास

बोधात्मक तथा निर्माण क्षेत्र में अधिगम विकलांगता की पहचान हेतु साधन विकसित करने के लिए परिषद् ने कार्यकारी दल की दो बैठकें आयोजित कीं। पहली कार्यकारी दल की बैठक 18 से 22 जुलाई 1988 तक नई दिल्ली में हुई जिसमें 10 विशेषज्ञ आए। इस कार्यशाला में अधिगम विकलांगता की पहचान हेतु साधन विकसित किए। इन क्षेत्रों में दृश्य अवबोधन, अक्षर अवबोधन, अंक और चिह्न अवबोधन, सचित्र शब्दावली, श्रवण बोध, वस्तु निष्ठ शब्द भण्डार, क्रियात्मक परिभाषा संबंधी शब्द भण्डार, संबंध वाचक शब्दावली का अर्थगत परीक्षण, समय संबंधी परिकल्पना/संकल्पना की रचना, स्थान संबंधी संकल्पना की रचना, संख्याओं और वाक्य विन्यास परीक्षण, लिंग का व्याकरण सम्मत परीक्षण, क्रम-परीक्षण की समझ तथा वाक्य

1988-89

तालिका 5.1
वर्ष 1988–89 में आयोजित प्रशिक्षण/अभिविन्यास कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	तारीख	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या
1.	दक्षिणी क्षेत्र में शैक्षिक प्रशासकों हेतु पी.आई.ई.डी. का अभिविन्यास कार्यक्रम	21 से 24 सितंबर 1988	हैदराबाद	22
2.	मिजोरम के प्रशिक्षणार्थियों हेतु शैक्षिक कार्यात्मक निर्धारण पर प्रशिक्षण कार्यक्रम (एटैचमेंट कार्यक्रम)	6 से 20 नवंबर 1988	रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली	1
3.	मिजोरम तथा तमिलनाडु से पी.आई.ईडी. के टीम सदस्यों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम	21 नवंबर से 2 दिसंबर 1988	वही	8
4.	पश्चिमी क्षेत्र के शैक्षिक प्रशासकों हेतु पी.आई.ई.डी. पर अभिविन्यास कार्यक्रम	4 से 16 फरवरी1989	रा.शै.अ.प्र.प. पुणे	30
5.	विकलांग बच्चों की पहचान और उनकी शिक्षा व्यवस्था पर म.प्र. के मस्तूरीखंड के अध्यापकों हेतु प्रथम स्तर का प्रशिक्षण कार्यक्रम	1. 30 मई से 4 जून 1988 2. 6 से 11 जून 1988 3. 20 से 25 जून 1988 4. 27 जून से 2 जुलाई 1988 5. 11 से 16 जुलाई 1988	मस्तूरी खंड पुणे	586
6.	विकलांग बच्चों की पहचान और उनकी शिक्षा व्यवस्था पर राजस्थान के छाबड़ा खंड के अध्यापकों का प्रथम स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम	1. 22 से 27 जून 1988 2. 25 से 31 जुलाई 1988 3. 1 से 5 अगस्त 1988 4. 6 से 10 अगस्त 1988	छाबड़ा खंड राजस्थान	400
7.	विकलांग बच्चों की पहचान हेतु मिजोरम के अध्यापकों का प्रथम स्तर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	25 से 30 सितंबर 1988	आइजोल	300
8.	विकलांग बच्चों की पहचान हेतु हरियाणा के भिवानी खंड के अध्यापकों का प्रथम स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम	24 से 28 फरवरी 1989 तक	भिवानी खंड हरियाणा	91
9.	विकलांग बच्चों की शिक्षा हेतु मिजोरम के चुने गए अध्यापकों का द्वितीय स्तर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	26 फरवरी से 23 मार्च 1989	आइजोल	60
10.	विकलांग बच्चों की शिक्षा हेतु म.प्र. के चुने गए अध्यापकों का द्वितीय स्तर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	10 फरवरी से 25 मार्च 1989	भोपाल	47

क्रिया का क्रम आते हैं।

कार्यकारी दल की दूसरी बैठक में भाषा तथा गणित की त्रुटियों के विश्लेषण के आधार पर अधिगम विकलांगता के निर्धारण हेतु कार्यात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया। त्रुटियों के विश्लेषण का दृष्टिकोण अपनाने में बोलने, पढ़ने, लिखने, गणित और मूलभूत संख्यात्मक क्रियाओं के ज्ञान संबंधी की जाने वाली त्रुटियाँ सम्मिलित थीं। मनोवैज्ञानिक परीक्षण और त्रुटि विश्लेषण दृष्टिकोण के आधार पर पहचान और निर्धारण के बीच असंगतियों का अध्ययन भी आरंभ किया गया।

सामान्य अध्यापकों के लिए विशेष शिक्षा पाठ्यचर्या

सभी सामान्य अध्यापकों को सेवा पूर्व प्रशिक्षण में विशेष शिक्षा के निवेश प्रदान के लिए सेवा पूर्व अध्यापक शिक्षा में विशेष शिक्षा की पाठ्यचर्या और मार्गदर्शिका तैयार की गई। इन निवेशों पर तीन स्तरों पर विचार-विमर्श किया गया। स्तर एक पर विभिन्न अध्यापक शिक्षा के पाठ्यक्रमों में विकलांग बच्चों की पहचान का मूल कार्यक्रम, कार्यात्मक निर्धारण और कक्षा व्यवस्था को सम्मिलित किया जाना था। इस संबंध में मुख्य बिंदुओं की पहचान कर ली गई है। स्तर दो पर विशेष शिक्षा में अधिक निवेशों के इच्छुक अध्यापकों के लिए ऐच्छिक पाठ्यक्रम की रूप रेखा तैयार की गई। विशेष शिक्षा के दोनों स्तर एन.सी.टी.ई. की पाठ्यचर्या संरचना पर आधारित सेवा पूर्व अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के तत्व हैं। स्तर तीन पर एक शैक्षिक वर्ष की अवधि का बहुवर्गीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम बनाया है। इस पाठ्यक्रम में संज्ञानात्मक और संवेदात्मक अक्षमता के लिए ज्ञान और क्षमता प्रदान की जाती है। स्तर तीन के पाठ्यक्रम के अध्यापकों से अपेक्षा की जाती है कि वे सामान्य स्कूलों में सामान्य बच्चों के साथ पढ़ने वाले विकलांग बच्चों के शिक्षण में सामान्य अध्यापकों की सहायता करेंगे। इसके अलावा 8 से 10 मार्च, 1989 तक नई दिल्ली में हुई कार्यकारी दल की बैठक में विशेष शिक्षा पर कुछ प्रशिक्षण माड्यूल्स तैयार किये गए।

सर्वेक्षण/अनुसंधान

आलोच्य वर्ष में विकलांग बच्चों की शिक्षा हेतु तीन अनुसंधान और सर्वेक्षण पूरे किए गए। प्रश्नावलियों के माध्यम से आई.ई.डी.सी. योजना के कार्यान्वियन की प्रगति का सर्वेक्षण किया गया। 12 राज्यों से आंकड़े प्राप्त हुए तथा रिपोर्ट तैयार की गई। इसके अतिरिक्त सरकारी तथा गैर-सरकारी संस्थाओं में विभिन्न अभिकरणों द्वारा तैयार इस सर्वेक्षण के अंतर्गत अनुदेशी सामग्री संबंधी निम्नलिखित जानकारी दी गई:
विषय, भाषा, जिसमें प्रकाशित हुई, जिस वर्ग के लिए तैयार की गई, प्रकार (मुद्रित-अमुद्रित), पता और मूल्य। इस जानकारी की निर्देशिका प्रकाशन हेतु तैयार है।

आई.ई.डी. तथा विशेष विद्यालयों में पढ़ने वाले श्रवण-दोष ग्रस्त बच्चों की भाषायी क्षमता के अन्वेषण का अध्ययन नामक एक अन्य अध्ययन पूरा किया गया । इसमें केस अध्ययन पद्धति के माध्यम से दिल्ली और हरियाणा के आई.ई.डी. और विशेष विद्यालयों में पढ़ रहे श्रवण-दोष ग्रस्त 50 बच्चों की भाषायी क्षमता का पता लगाया गया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य आई.ई.डी. में पढ़ने वाले श्रवण दोष ग्रस्त बालकों की भाषा क्षमता की विशेष विद्यालयों में पढ़ने वाले श्रवण दोष ग्रस्त बालकों की भाषा क्षमता से तुलना करना था।

भाषायी विभिन्नताओं के मूल्यांकन के लिए केस अध्ययन उपागम अपनाया गया। आई.ई.डी. सैटिंग तथा विशेष विद्यालयों में कक्षा 4 और कक्षा 5 में पढ़ने वाले श्रवण विकृत 50 बच्चे इस अध्ययन में नमूने के तौर पर लिए गए।

इस अध्ययन के मुख्य परिणामों से स्पष्ट हो जाता है कि आई.ई.डी. सैटिंग में अध्ययनरत श्रवण विकृत बच्चे विशेष विद्यालयों में अध्ययनरत श्रवण विकृत बच्चों से भाषायी कुशलताओं तथा गैर-शाब्दिक बुद्धि की दृष्टि से अच्छे होते हैं। श्रवण विकृत बच्चों की प्रगति का कार्य निष्पादन सामान्य बच्चों की तुलना में कम पाया गया।

प्रसार/प्रकाशन

जानकारी के आदान प्रदान हेतु "कम्यूनिकेशन : ईक्वल

1988-89

एजुकेशनल अपारच्युनिटी'' नामक त्रैमासिक पत्र के चार अंक निकाले गए हैं तथा ये पी.आई.ई.डी. के खंडों के स्कूलों, राज्य स्तर पर आई.ई.डी. प्रकोष्ठों, एन.जी.ओ.एवंआई.ई.डी. कार्यक्रम वाले विद्यालयों में वितरित किये गये।

1988-89 में निम्नलिखित प्रकाशनों को अंतिम रूप दिया गया :

(1) एक वर्षीय बहु श्रेणी प्रशिक्षण कार्यक्रम

(2) 6 सप्ताह का प्रशिक्षण कार्यक्रम-पी.आई.ई.डी.

(3) विकलांग बच्चों के लिए शैक्षिक खिलौनों का उपयोग (मराठी, मिजो और तमिल में प्रकाशन हेतु)

(4) विकलांग बच्चों का कार्यात्मक मूल्यांकन (प्रैस में)

(5) विकलांग बच्चों के अधिगम हेतु अनुदेशी सामग्री

(6) खेल तथा विकलांग बच्चे

(7) विज्ञान पाठ्यचर्या में अनुकूलन पर अध्यापक हैंडबुक।

1988-89

छ : शिक्षा की विषयवस्तु और प्रक्रिया का पुनरभिविन्यास

राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 1986 में निर्दिष्ट विद्यालय स्तर पर शिक्षा की विषयवस्तु और प्रक्रियाओं का पुनरभिविन्यास राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रतिपादन से ही रा.शै.अ.प्र.प. का एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण विषय बना हुआ है। परिषद् ने विद्यालय स्तर पर शिक्षा की विषयवस्तु और प्रक्रिया के पुनरभिविन्यास हेतु अनेक समन्वित कार्य प्रारंभ किए हैं जिससे शिक्षा की उभरती हुई राष्ट्रीय व्यवस्था को ठोस रूप दिया जा सके। इस दिशा में किये गए कार्यों का मुख्य बल इन बिन्दुओं पर था – राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप राष्ट्रीय पाठ्यचर्या संरचना का संशोधन, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या संरचना पर आधारित पाठ्यचर्या मार्गदर्शिका और पाठ्यविवरणों का विकास, प्राथमिक स्तर पर विभिन्न पाठ्यचर्या क्षेत्रों में अनुदेशी सामग्री का विकास, विद्यालय शिक्षा के विभिन्न स्तरों हेतु भाषा, सामाजिक विज्ञान और व्यापार अध्ययनों में अनुदेशी सामग्रियों का विकास, उच्च प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर संशोधित कार्यानुभव कार्यक्रमों का कार्यान्वयन, विद्यालय स्तर पर विज्ञान और गणित शिक्षा का उन्नयन, विज्ञान उपकरणों का विकास, तथा अध्यापन अधिगम प्रक्रियाओं के उन्नयन के लिए अविरल और व्यापक मूल्यांकन की शुरूआत सहित परीक्षा में सुधार। रा.शै.अ.प्र.प. ने विद्यालय स्तर पर शिक्षा की विषयवस्तु और प्रक्रिया के पुनरभिविन्यास हेतु वर्ष 1988-89 में निम्नलिखित मुख्य कार्य किए :

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या संरचना का विकास

परिषद् द्वारा विभागों/शिक्षा निदेशालयों, एस.सी.ई.आर.टी./राज्य शिक्षा संस्थानों के माध्यमिक/उच्चतर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा राज्य स्तर के अन्य अभिकरणों की सहायता से तैयार किया तथा 1986 में प्रकाशित "प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या एक रूपरेखा" नामक दस्तावेज को राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 1986 में निर्दिष्ट बल के परिप्रेक्ष्य में संशोधित किया गया। यह संशोधित दस्तावेज अप्रैल, 1988 में "प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा पाठ्यचर्या – एक ढाँचा" नाम से प्रकाशित किया गया तथा उच्चतर माध्यमिक शिक्षा की पाठ्यचर्या के ढांचे का प्रारूप भी तैयार किया गया।

पाठ्यचर्या मार्गदर्शिकाओं और पाठ्यविवरणों का विकास

परिषद् द्वारा 1986-87 में प्राथमिक स्तर पर शिक्षा की

1988-89

पाठ्यचर्या के विकास हेतु तैयार मार्गदर्शिका का प्रारूप देश के विभिन्न अभिकरणों से प्राप्त सुझावों के अनुसार संशोधित किया गया। इस संशोधित दस्तावेज ''प्राथमिक स्तर पर अधिगम के न्यूनतम स्तर – सामान्य कोर अवयवों सहित पाठ्यविवरण'' में प्राथमिक स्तर पर सभी शाखाओं के लिए पाठ्यचर्या क्षेत्रों के संबंध में सीखने वालों के न्यूनतम स्तर दिए गए हैं। यह दस्तावेज उन राज्यों/संघ शासित क्षेत्र के अभिकरणों को भेजा गया, जो पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्री के नवीकरण के लिए जिम्मेदार हैं। विभिन्न पाठ्यचर्या क्षेत्रों में पाठ्यपुस्तकों सहित अनुदेशी सामग्री के विकास हेतु राज्य के अभिकरणों को उच्च प्राथमिक और माध्यमिक स्तर की पाठ्यचर्या की मार्गदर्शिका और पाठ्य विवरण भेजे गए।

कक्षा 5 की अनुदेशी सामग्री

परिषद् द्वारा 1986-87 में तैयार की गई कक्षा 1 और 3 की पाठ्यपुस्तकों सहित संशोधित अनुदेशी सामग्री केन्द्रीय विद्यालयों के 1987-88 के शैक्षिक सत्र में लागू की गई। परिषद् द्वारा 1987-88 में कक्षा 2 और 4 की तैयार की गई पाठ्य पुस्तकों को 1988-89 के शैक्षिक सत्र में केन्द्रीय विद्यालयों में लागू किया गया। 1988-89 में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विद्यालय पूर्व और प्राथमिक शिक्षा विभाग ने कक्षा 5 के लिए भाषा (हिन्दी) गणित, पर्यावरणीय अध्ययन भाग 1 (सामाजिक अध्ययन), 2 (विज्ञान) की नई पाठ्यपुस्तकों के विकास तथा कक्षा 5 में कला शिक्षा के अध्यापन हेतु शिक्षकों के लिए कला शिक्षा का अध्यापक मैनुअल तैयार करने की जिम्मेदारी ली। इन पुस्तकों तथा अध्यापक मैनुअल की पांडुलिपि तैयार करने एवं समीक्षा के लिए विद्यालय पूर्व एवं प्राथमिक शिक्षा विभाग द्वारा अनेक बैठकें/कार्यशालाएँ आयोजित की गई। इन बैठकों/कार्यशालाओं के पूर्ण ब्यौरे तालिका 6.1 में दिए गए हैं।

तालिका 6.1

कक्षा 5 की पाठ्यपुस्तकें और मैनुअल तैयार करने हेतु आयोजित बैठकें/कार्यशालाएँ

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	तारीख	स्थान
1.	कक्षा 5 की पर्यावरण अध्ययन (विज्ञान) हेतु पाठ्य पुस्तक के फारमेट को अंतिम रूप देने के लिए सलाहकार समिति की बैठक	19 से 25 जुलाई 1988 तक	रा.शि.सं. परिसर नई दिल्ली
2.	कक्षा 5 के लिए हिन्दी पाठ्यपुस्तक की सलाहकार समिति की बैठक	16 से 23 अगस्त, 1988 तक	रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली
3.	कक्षा 5 हेतु पर्यावरण अध्ययन (सामाजिक विज्ञान) पाठ्यपुस्तक की (हिन्दी) पांडुलिपि की समीक्षा करने के लिए सलाहकार समिति की बैठक	19 से 25 सितंबर, 1988 तक	रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली
4.	कक्षा 5 की पर्यावरण अध्ययन (सामाजिक अध्ययन) पाठ्यपुस्तक की समीक्षा हेतु सलाहकार समिति की बैठक	26 से 30 सितंबर, 1988 तक	एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली
5.	कक्षा 5 की पर्यावरण अध्ययन (विज्ञान) पाठ्य पुस्तक की पांडुलिपि को अंतिम रूप देने के लिए कार्यकारी दल की बैठक	26 से 30 सितंबर 1988 तक	एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली

1988-89

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	तारीख	स्थान
6.	कक्षा 5 के लिए पर्यावरण अध्ययन (हिन्दी) पाठ्य पुस्तक की पांडुलिपि की समीक्षा और संपादन हेतु लेखकों/विशेषज्ञों की बैठक	8 से 16 अक्तूबर 1988 तक	एन.सी.ई.आर.टी.नई दिल्ली
7.	कक्षा 5 हेतु गणित पाठ्य पुस्तक की पांडुलिपि की समीक्षा पर कार्यशाला	11 से 17 अक्तूबर 1988 तक	एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली
8.	कक्षा 5 हेतु हिन्दी पाठ्यपुस्तक के लिए पुनरीक्षण समिति की बैठक	23 से 28 नवंबर, 1988 तक	एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली
9.	कक्षा 5 के लिए कला शिक्षा में अध्यापक मैनुअल की पांडुलिपि की समीक्षा हेतु बैठक	19 से 23 दिसंबर 1988 तक	एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली

सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा

विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों हेतु सामाजिक विज्ञान और मानविकी की अनुदेशी सामग्रियों का विकास रा.शै.अ.प्र.प. का महत्वपूर्ण कार्य रहा है। 1986-87 में परिषद् द्वारा विकसित नागरिक शास्त्र, इतिहास और भूगोल की नई पाठ्यपुस्तकें 1987–88 के शैक्षिक सत्र में केन्द्रीय विद्यालयों में आरंभ की गईं। इन विषयों में कक्षा 7 की नई पाठ्यपुस्तकें केन्द्रीय विद्यालयों में 1988-89 में लागू की गई है। इसी प्रकार से 1986-87 में रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा संशोधित एवं तैयार की गई, 1,3, और 6 की हिन्दी की पाठ्य पुस्तकें केन्द्रीय विद्यालयों में 1987-88 के शैक्षिक सत्र में लागू की गई तथा कक्षा 2,4 और 7 की 1987-88 में संशोधित हिन्दी पाठ्यपुस्तकें केन्द्रीय विद्यालयों में 1988-89 के शैक्षिक सत्र में लगाई गई।

रा.शै.अ.प्र.प. के सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग में विद्यालयी-शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर सामाजिक विज्ञान और मानविकी विषयों की पाठ्यचर्या और अनुदेशी सामग्री के विकास से संबंधित कार्यकलापों को समन्वित किया जाता है। 1998–89 में डी.ई.एस.एस.एच. ने कक्षा 8 और 9 की नागरिक शास्त्र, भूगोल और इतिहास तथा कक्षा 11 की भूगोल, इतिहास और राजनीति शास्त्र की पाठ्यपुस्तकों को तैयार करने का कार्य पूरा किया। सामाजिक विज्ञान, मानविकी शिक्षा विभाग ने भाषा की अनुदेशी सामग्री (हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत), की अनुदेशी के विकास, व्यापार अध्ययन तथा लेखा विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों को तैयार करने और कला शिक्षा की अनुदेशी सामग्री एवं विद्यालयों में योग शिक्षण के विकास संबंधी अनेक कार्यकलाप किए। डी.ई.एस.एस.एच. ने ''रीडिंग टू लर्न'' परियोजना से संबंधित कुछ कार्यकलाप किए और राष्ट्रीय एकता के विचार से पाठ्य पुस्तकों का मूल्यांकन किया, राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना के कार्यान्वयन हेतु केन्द्रीय, तकनीकी, समन्वयन और मोनिटरिंग अभिकरण के रूप में कार्य जारी रखा।

इतिहास/नागरिक शास्त्र/राजनीति शास्त्र और भूगोल की अनुदेशी सामग्री का विकास

वर्ष 1988-89 में कक्षा 8 की नागारिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तक, कक्षा 11 और 12 की राजनीति शास्त्र, कक्षा 8 की भूगोल एवं कक्षा 11 और 12 की भूगोल पाठ्य पुस्तक की पांडुलिपियों को तैयार करने व उनकी समीक्षा हेतु 1988-89 में कार्यशाला/बैठकों की शृंखला आयोजित की गई है। इन कार्यशालाओं/बैठकों के ब्यौरे 6.2 तालिका में दिए गए हैं।

1988-89

तालिका 6.2

कक्षा 8 की नागरिक शास्त्र, कक्षा 8, 11,12 की भूगोल एवं कक्षा 11 और 12 की राजनीति शास्त्र की पाठ्यपुस्तकों के विकास हेतु 1988-89 में आयोजित कार्यशालाएँ/बैठकें

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	तारीख	स्थान
1.	कक्षा 8 की नागरिक शास्त्र की पाठ्यपुस्तक की पांडुलिपि के संशोधन और अंतिम रूप देने हेतु कार्यशाला	1 से 5 अगस्त 1988 तक	रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली
2.	कक्षा 11 और 12 की राजनीति शास्त्र की पाठ्यपुस्तक की पांडुलिपि समीक्षा एवं अंतिम रूप देने हेतु कार्यशाला	18 से 22 जुलाई, 1988 तक	रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली
3.	कक्षा 8 की भूगोल पाठ्यपुस्तक तैयार करने के लिए कार्यशाला	8 से 12 अगस्त, 1988 तक	रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली
4.	कक्षा 11 और 12 की राजनीति शास्त्र की पाठ्यपुस्तक के हिन्दी रूपांतर की पांडुलिपि की समीक्षा एवं अंतिम रूप देने हेतु बैठक	14 से 18 नवंबर 1988	रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली
5.	कक्षा 11 और 12 की भूगोल पाठ्यपुस्तक के हिन्दी रूपांतर की पांडुलिपि के समीक्षा एवं अंतिम रूप देने हेतु बैठक	30 जनवरी से 3 फरवरी, 1989	वही
6.	कक्षा 11 और 12 की राजनीति शास्त्र की पाठ्य पुस्तक के हिन्दी रूपांतर की पांडुलिपि की समीक्षा और अंतिम रूप देने हेतु बैठक	वही	
7.	कक्षा 11 और 12 की राजनीतिशास्त्र की पाठ्य पुस्तक की पांडुलिपि की समीक्षा और उसे अंतिम रूप देने हेतु बैठक	13 से 17 फरवरी 1989	वही

तालिका 6.3

वर्ष 1988-89 के दौरान हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत की अनुदेशी सामग्री के विकास के लिए आयोजित कार्यशालाएँ/बैठकें

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	तारीख	स्थान
	हिन्दी भाषा की अनुदेशी सामग्री		
1.	नवोदय विद्यालयों के लिए हमारी हिन्दी भाग–3 पाठ्यपुस्तक तैयार करने की कार्यशाला	11 से 12 अप्रैल, 1988 तक	एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली
2.	हिन्दी व्याकरण और रचना का एक सैट तैयार करने के लिए कार्यशाला	16 से 25 अगस्त, 1988 तक	वृंदाबन, उत्तर प्रदेश
3.	नवोदय विद्यालय के लिए हमारी हिन्दी भाग–3 पाठ्यपुस्तक तैयार करने हेतु कार्यशाला	19 से 25 सितंबर 1988 तक	मैसूर

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	तारीख	स्थान
4.	कक्षा 10 के लिए हिन्दी पाठ्य पुस्तकें तैयार करने हेतु कार्यशाला (ए और बी पाठ्यक्रम)	26 सितंबर से 30 अक्तूबर, 1988 तक	एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली
5.	कक्षा 10 की हिन्दी पाठ्य पुस्तकें (ए और बी पाठ्यक्रम) तैयार करने के लिए कार्यशाला	22 से 28 दिसंबर, 1988 तक	वही
6.	कक्षा 5 के लिए अरूण भारती भाग–5, पाठ्यपुस्तक तैयार करने हेतु कार्यशाला (अरूणाचल प्रदेश के लिए)	23 से 30 जनवरी 1989 तक	वही
7.	कक्षा 5 की अरूण भारती भाग–5, अभ्यास पुस्तकें तैयार करने हेतु कार्यशाला (अरूणाचल प्रदेश के लिए)	23 से 30 मार्च, 1989 तक	वही
8.	उच्च प्राथमिक स्तर पर हिन्दी के अध्यापन हेतु किशोर भारती 1,2, 3 पर आधारित कार्यकलाप संबंधी पुस्तक तैयार करना	1 से 8 मार्च 1989 तक	पटना
9.	हमारी हिन्दी भाग–1 पाठ्यपुस्तक पर आधारित ओडियो कैसेटों के आलेख तैयार करने पर कार्यशाला	23 से 30 मई 1988 तक	रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली
10.	कक्षा 8 की हिन्दी पाठ्यपुस्तकों का एक सैट तैयार करने के लिए कार्यशाला	23 से 30 मई 1988 तक	वही
11.	वही	15 से 20 जून 1988 तक	वही
12.	वही	16 से 21 अगस्त, 1988 तक	वही
13.	कक्षा 5 की हिन्दी पाठ्यपुस्तक के आधार पर अभ्यास पुस्तिका तैयार करने पर कार्यशाला	12 से 16 सितंबर, 1988 तक	वही
14.	उच्च प्राथमिक स्तर पर छात्रों के लिए हिन्दी शब्दकोष तैयार करने पर कार्यशाला	12 से 16 सितंबर, 1988 तक	वाराणसी
15.	कक्षा 12 की हिन्दी पाठ्यपुस्तक का एक सैट तैयार करने पर कार्यशाला	13 से 20 जनवरी, 1988 तक	मद्रास
16.	कक्षा 10 और 12 की हिन्दी पाठ्यपुस्तकों का एक सैट तैयार करने पर कार्यशाला	20 से 24 फरवरी, 1989 तक	रा.शै.अ.प्र.प.
	अंग्रेजी भाषा के लिए अनुदेशी सामग्री		
1.	माध्यमिक विद्यालयों में अंग्रेजी शिक्षण में सुधार लाने के लिए कार्यकारी दल की बैठक	18 से 21 जुलाई, 1988	रा.शै.अ.प्र.प.
2.	नवोदय विद्यालय की कक्षा 7 में अंग्रेजी शिक्षण की ओडियो टेप तैयार करने के लिए कार्यशाला	नवंबर, 1988	बंगलूर

1988-89

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	तारीख	स्थान
3.	कक्षा 10 हेतु अंग्रेजी की पाठ्य पुस्तक को अंतिम रूप देने के लिए (पाठ्यक्रम बी) कार्यशाला	11 से 12 अक्तूबर, 1988	रा.शै.अ.प्र.प.
4.	अंग्रेजी भाषा में सहायक सामग्री एवं ''लैट्स लर्न इंग्लिश'' पुस्तक के विकास हेतु कार्यशाला	30 जनवरी से 3 फरवरी, 1989	बेंगलूर
5.	अंग्रेजी पठन हेतु सहायक सामग्री की कार्यशाला	31 मार्च से 5 अप्रैल 1989 तक	रा.शै.अ.प्र.प.
	संस्कृत भाषा के लिए अनुदेशी सामग्री		
1.	कक्षा 6 की संस्कृत पाठ्य पुस्तकें तैयार करने पर कार्यशाला (हिन्दी के ''ए'' पाठ्यक्रम का भाग)	28 से 31 दिसंबर, 1988 तक	नई दिल्ली
2.	कक्षा 9 की संस्कृत पाठ्य पुस्तक तैयार करने पर कार्यशाला (हिन्दी के ''ए'' पाठ्यक्रम का भाग)	7 से 11 फरवरी, 1988 तक	पुरी
3.	संस्कृत साहित्य से राष्ट्रीय एकता के मूल्यों को उजागर करने वाली कथा पुस्तकें तैयार करने की कार्यशाला	11 से 15 जुलाई, 1988 तक	रा.शै.अ.प्र.प.
4.	कक्षा 8 की संस्कृत पाठ्य पुस्तक के संशोधन पर कार्यकारी दल की बैठक	25 अगस्त से 1 सितंबर, 1988 तक	दिल्ली
5.	कक्षा 11 की संस्कृत पाठ्यपुस्तक के संशोधन हेतु कार्यशाला	28 नवंबर से 2 दिसंबर, 1988 तक	रा.शै.अ.प्र.प.
6.	कक्षा 6 से 10 तक संस्कृत के पाठ्यविवरण तैयार करने पर कार्यशाला	6 से 8 दिसंबर, 1988 तक	वही
7.	संस्कृत साहित्य से राष्ट्रीय एकता के मूल्यों को उभारने वाली कहानी की पुस्तकें तैयार करने पर कार्यशाला	27 से 30 मार्च, 1988 तक	दिल्ली

भाषा में अनुदेशी सामग्री का विकास

आलोच्य वर्ष में, परिषद् ने हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत भाषा में पाठ्यपुस्तकों सहित अनुदेशी सामग्रियों के विकास हेतु अनेक कार्यशालाएँ/बैठकें आयोजित कीं। उनके ब्यौरे तालिका 6.3 में दिए हैं। इसके अतिरिक्त परिषद् ने प्राथमिक स्तर के हिन्दी अध्यापन के शीर्ष व्यक्तियों के लिए 6 से 10 मार्च, 1989, अभिविन्यास पाठ्यक्रम तथा द्वितीय और तृतीय भाषा के रूप में हिन्दी पढ़ाने वाले शिक्षकों के लिए 24 फरवरी 1989 को अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया।

वाणिज्य अध्ययन और लेखा विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों का विकास

परिषद् ने कक्षा 11 और 12 के लिए लेखा विज्ञान और

व्यापार अध्ययन पाठ्यपुस्तकों के विकास का कार्य हाथ में लिया 1988-89 के दौरान कार्यकलापों का मुख्य केन्द्र बिन्दु कक्षा 11 की पाठ्यपुस्तकों का विकास था। इस प्रयोजन के लिए पांच कार्यशालाएँ/बैठकें आयोजित की गई। इनके व्यापक ब्यौरे तालिका 6.4 में दिए गए है।

कला शिक्षा में अनुदेशी सामग्री का विकास

परिषद् विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर कला शिक्षा की पाठ्यचर्या के प्रभावी कार्यान्वयन को सुगम बनाने के लिए अनुदेशी सामग्री और अन्य अध्यापन स्रोतों के विकास कार्यों में रत रही है। कला शिक्षा से संबंधित अनुदेशी सामग्री तैयार करने तथा अन्य अध्ययन स्रोत संबंधी कला शिक्षा के विभिन्न कार्यकलापों पर नई दिल्ली में 27 फरवरी से, 1 मार्च 1989 तक कार्यशाला आयोजित की। इसके अतिरिक्त, विद्यालयों में कला शिक्षा कार्यकलापों के प्रोत्साहन हेतु परिषद् ने प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय के कला अध्यापकों, महाराष्ट्र के शिक्षक प्रशिक्षकों के लिए 22 से 30 अक्तूबर 1988 तक पुणे में शिविर आयोजित किया गया तथा नई दिल्ली में 13 से 3० मार्च, 1989 तक बच्चों, अभिभावकों तथा अध्यापकों के लिए सर्जनात्मक कला क्लब बनाया गया एवं नई दिल्ली में 23 मार्च से 1 अप्रैल, 1989 तक विकलांगों के लिए रचनात्मक कला के अध्यापक प्रशिक्षक एवं अध्यापकों का अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया।

योग पर अनुदेशी सामग्री का विकास

इस वर्ष परिषद् ने योग पर अनुदेशी सामग्री के विकास हेतु दो कार्यशालाएँ आयोजित कीं। पहली कार्यशाला 21 से 23 दिसंबर 1988 तक तथा दूसरी 8 से 11 मार्च 1989 त आयोजित की गई।

अर्थशास्त्र के अध्यापकों के लिए हैंडबुक का विकास

परिषद् ने विद्यालयों के अर्थशास्त्र अध्यापकों हेतु हैंडबुक तैयार करने का कार्य प्रारंभ किया है। इस संबंध में नई दिल्ली में 16 से 20 जनवरी, 1989 तक विशेषज्ञों और अध्यापकों की कार्यशाला आयोजित की गई।

सामान्य अध्ययन के पाठ्यविवरण का विकास

परिषद् ने सामान्य अध्ययन के पाठ्यविवरण के विकास पर अनेक कार्य आरंभ किए हैं जो + 2 स्तर की पाठ्यचर्या के अभिन्न भाग के रूप में लागू किये जा रहे हैं। परिषद् ने +2 स्तर पर सामान्य अध्ययन के पाठ्यविवरण के विकास हेतु 23 से 27 जनवरी, 1989 तक कलकत्ता में कार्यशाला आयोजित की।

'पढ़ें और सीखें माला'

रा.शै.अ.प्र.प. ने ''पढ़ें और सीखें माला'' के अंतर्गत बच्चों की अंग्रेजी और हिन्दी की पुस्तकों की नई शृंखलाएँ शुरू की हैं। इन शृंखलाओं के अंतर्गत आने वाली पुस्तकों का उद्देश्य शिक्षा पाने वाले बच्चों में पढ़ने की आदत डालना, उनमें पुस्तकों के प्रति प्रेम उत्पन्न करना तथा उन्हें अपने चारों ओर विद्यमान सौंदर्य तथा विश्व के आश्चर्य के प्रति सजग करना था। इस शृंखला में 1988–89 में हिन्दी में पाँच पुस्तकें निकाली गईं। पढ़ें और सीखें शृंखला में निकाली जाने वाली पुस्तकों की पांडुलिपियाँ तैयार करने के लिए अनेक बैठकें/कार्यशालाएँ आयोजित की गईं। तालिका में इन बैठकों/कार्यशालाओं के पूर्ण विवरण दिए गए हैं।

1988-89

तालिका 6.4

व्यापार अध्ययन और लेखा विज्ञान की पाठ्य पुस्तकों के विकास हेतु आयोजित बैठकें/कार्यशालाएँ

क्र.सं.	कार्यक्रम का नाम	तारीख	स्थान
1.	वाणिज्य सलाहकार समिति की बैठक	1 से 3 अगस्त, 1988 तक	मैसूर
2.	उच्चतर माध्यमिक स्तर पर व्यापार अध्ययन एवं लेखा विज्ञान पाठ्य पुस्तक विकसित करने के लिए सलाहकार समिति की बैठक	27 से 28 मार्च, 1989 तक	रा.शै.अ.प्र.प.
3.	कक्षा 11 के लिए लेखा विज्ञान और व्यापार अध्ययन की पाठ्य पुस्तकें विकसित करने पर विशेषज्ञों की बैठक	10 से 15 अक्तूबर 1988 तक	वही
4.	तथैव	5 से 7 नवंबर, 1988 तक	वही
5.	कक्षा 11 की लेखा विज्ञान पाठ्य पुस्तक तैयार करने के लिए बैठक	23,24,26 से 28 दिसंबर, 1988 तक	वही

तालिका 6.5

पढ़ें और सीखें श्रृंखला के अंतर्गत सामग्री के विकास हेतु आयोजित कार्यशालाएँ/बैठकें

क्र.सं.	शीर्षक	तारीख	स्थान
1.	अंग्रेजी सामग्री के विकास हेतु विशेषज्ञों की बैठक	11 से 12 अप्रैल, 1988 तक	रा.शै.अ.प्र.प.
2.	हिन्दी सामग्री के विकास हेतु विशेषज्ञों की बैठक	9 से 13 मई, 1988 तक	वही
3.	हिन्दी सामग्री के विकास हेतु विशेषज्ञों की बैठक	23 से 24 मई, 1988 तक	वही
4.	हिन्दी सामग्री के विकास हेतु विशेषज्ञों की बैठक	10 जून, 1988	वही
5.	हिन्दी सामग्री के विकास हेतु विशेषज्ञों की बैठक	19 से 23 अगस्त, 1988 तक	श्रीनगर
6.	हिन्दी सामग्री के विकास हेतु विशेषज्ञों की बैठक	16 नवंबर, 1988	रा.शै.अ.प्र.प.
7.	अंग्रेजी परियोजना के संपादन मंडल की बैठक	24 से 26 अक्तुबर, 1988 तक	रा.शै.अ.प्र.प.
8.	हिन्दी सामग्री के विकास हेतु विशेषज्ञों की बैठक	29 नवंबर से 3 दिसंबर, 1988 तक	त्रिवेन्द्रम
9.	हिन्दी सामग्री के विकास हेतु विशेषज्ञों की बैठक	6 से 10 मार्च, 1988 तक	रा.शै.अ.प्र.प.

राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से पाठ्यपुस्तकों का मूल्यांकन

राष्ट्रीय एकता के प्रोत्साहन तथा भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के अध्ययन के कार्यक्रमों के भाग के रूप में परिषद् ने राष्ट्रीय एकता और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के अध्ययन से संबंधित विषय वस्तु की उपयुक्तता की दृष्टि से इतिहास की नई पाठ्य पुस्तकों के मूल्यांकन हेतु दो कार्यशालाएँ आयोजित कीं। 1988–89 में, आंध्र प्रदेश, बिहार, गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्यों में विकसित इतिहास की नई पाठ्यपुस्तकों का राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से मूल्यांकन किया गया। इस प्रयोजन हेतु दो कार्यशालाएँ आयोजित की गईं। पहली कार्यशाला 18 से 20 अगस्त, 1988 तक गांधी नगर तथा दूसरी कार्यशाला त्रिवेन्द्रम में 30 मार्च से 3 अप्रैल, 1989 तक हुई।

विशेष परियोजनाएँ

सामाजिक विज्ञान और मानविकी के क्षेत्रों में पाठ्यक्रम और अनुदेशी सामग्री के विकास से संबंधित कुछ विशेष कार्यक्रमों/परियोजनाओं को लागू करने में भी परिषद् लगी हुई है। सा.वि.एव.मा.शि.वि. द्वारा 1988–89 के दौरान इस कार्य के अंतर्गत कई कार्यकलाप किए गए जिसमें निम्नलिखित शामिल हैं–

(i) विद्यालयी बच्चों के लिए राष्ट्रीय जीवनी कोश का निर्माण। इस परियोजना के अंतर्गत गोआ में 21 से 23 सितंबर 1988 तक एक बैठक हुई जिसमें कोश की सामान्य रूपरेखा बनाई गई और कोश में शामिल किए जाने वाले पात्रों की पहचान की गई।

(ii) एशिया और पैसिफिक में शैक्षिक विकास के लिए यूनेस्को – एन.आई.ई.आर. क्षेत्रीय कार्यक्रम के तत्वावधान में की गई शोध परियोजना ''एशिया और पैसिफिक के देशों में माध्यमिक शिक्षा के कुछ महत्वपूर्ण पहलू'' पर कंट्री रिपोर्ट का निर्माण। परियोजना की रिपोर्ट जापान के राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान संस्थान द्वारा दिसंबर 1988 में प्रकाशित की गई।

(iii) एक अखिल भारतीय बाल साहित्य प्रतियोगता का आयोजन। चुनी गई पांडुलिपियों के लेखकों को पुरस्कार और प्रमाण पत्र दिए गए।

(iv) स्कूल अध्यापकों के लिए सेमिनार रीडिंग्स कार्यक्रम का आयोजन। चुने गए अध्यापकों को नगद पुरस्कार और योग्यता प्रमाण पत्र दिए गए।

(v) चंडीगढ़ के क्षेत्रीय संसाधन केन्द्र के सहयोग से हिमाचल प्रदेश के नव साक्षरों के लिए शिक्षण–अधिगम सामग्री का निर्माण। ग्रामीण/आदिवासी केन्द्रों में परीक्षण के बाद तीन पांडुलिपियाँ बनाई गईं।

राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना

वर्ष 1988–89 में, राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना के अंतर्गत किए गए कार्यों का मुख्य लक्ष्य विद्यालय शिक्षा की विषयवस्तु और प्रक्रिया में जनसंख्या शिक्षा के तत्वों का प्रभावी एकीकरण करना था। इस संबंध में, जनसंख्या शिक्षा की न्यूनतम अनिवार्य विषयवस्तु को अंतिम रूप दिया गया। पाठों का सार संग्रह तैयार किया गया, राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा की स्रोत पुस्तक तैयार की गई, कोर मूल विषयवस्तु पर वीडियो कार्यक्रम का निर्माण किया गया, राज्यों में विकसित अनुदेशी और प्रशिक्षण सामग्री की समीक्षा की गई, सहायक पाठ सामग्री की समीक्षा कीगई, अध्यापक–शिक्षकों और परियोजना के कार्मिकों को प्रशिक्षण दिया गया, +2 स्तर के छात्रों के मूल्यांकन साधनों का विकास किया गया, एवं प्रश्नोत्तरी योजना तैयार की गई।

तालिका 6.6 में इस परियोजना के अंतर्गत की गई मुख्य गतिविधियाँ दी गई हैं :–

तालिका 6.6

वर्ष 1988—89 में राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा के अंतर्गत आयोजित बैठक/कार्यशालाएँ

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	तारीख	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या
1.	जनसंख्या शिक्षा की न्यूनतम अनिवार्य विषयवस्तु को अंतिम रूप देने के लिए राष्ट्रीय कार्यशालाएँ	30 मार्च से 3 अप्रैल, 1988 तक	पटना	40
2.	जनसंख्या शिक्षा की राष्ट्रीय स्रोत पुस्तक की रूपरेखा तैयार करने पर कार्यशाला	7 से 11 अप्रैल 1988 तक	मैसूर	20
3.	माध्यमिक स्तर पर सहायक पाठ सामग्री की समीक्षा हेतु कार्यशाला	25 से 29 मई, 1988 तक	शिमला	20
4.	पाठों का सार संग्रह तैयार करने हेतु कार्यशाला	20 सितंबर से 10 अक्तुबर 1988 तक	नई दिल्ली	30
5.	हिन्दी भाषा में अनुदेशी और प्रशिक्षण सामग्री की समीक्षा	7 से 11 मार्च 1989	नई दिल्ली	30
6.	जनसंख्या शिक्षा पर राष्ट्रीय स्रोत पुस्तक के अध्यायों की समीक्षा हेतु कार्यशाला	13 से 17 मार्च 1989 तक	नई दिल्ली	30
7.	+2 स्तर के छात्रों के मूल्यांकन साधन के विकास हेतु योजना बनाने पर कार्यशाला	23 से 25 जनवरी 1989 तक	नई दिल्ली	10
8.	अभिवृत्ति मापन (स्केल) तैयार करने पर कार्यशाला	27 फरवरी से 3 मार्च, 1989 तक	नई दिल्ली	20
9.	परियोजना प्रगति समीक्षा की पहली बैठक	2 नवंबर से 6 नवंबर, 1988 तक	मैसूर	
10.	वही	14 से 18 नवंबर 1988 तक	नई दिल्ली	
11.	त्रिपक्षीय परियोजना समीक्षा बैठक	14 नवंबर, 1988	नई दिल्ली	
12.	प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता की योजना के विकास पर कार्यशाला	10 से 14 अक्तुबर 1988 तक	बंगलूर	25

कार्यानुभव अध्यापकों का प्रशिक्षण

परिषद् शिक्षा की विषयवस्तु और प्रक्रिया के पुनः अभिविन्यास से संबंधित कार्यों के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु राज्य/संघ शासित क्षेत्रों के शीर्ष व्यक्तियों को प्रशिक्षित करती रही है। विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर संशोधित कार्यानुभव के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग ने राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों के प्रमुख व्यक्तियों के लिए

कार्यानुभव पर अभिविन्यास/प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। वर्ष 1988–89 में आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, मध्य प्रदेश राज्यों के 119 शीर्ष व्यक्तियों के लिए कार्यानुभव के 5 अभिविन्यास कार्यक्रम तथा नवोदय विद्यालयों के 90 कार्यानुभव अध्यापकों के लिए दो अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए। इसके अतिरिक्त स्वैच्छिक संगठनों के सहयोग से 48 कार्यानुभव अध्यापकों के लिए 10 दिन का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया और कार्यानुभव पर शिक्षण सामग्री के विकास पर 6 दिन का अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया। 1988–89 में आयोजित शिक्षा व्यावसायीकरण विभाग द्वारा अभिविन्यास/प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों के ब्यौरे 6.7 तालिका में दिए गए हैं।

तालिका 6.7

1988–89 में कार्यानुभव पर आयोजित अभिविन्यास/प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र. सं.	कार्यक्रम का नाम	तारीख	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या
	कार्यानुभव पर अभिविन्यास कार्यक्रम			
1.	आंध्र प्रदेश के शीर्ष व्यक्तियों हेतु कार्यानुभव में अभिविन्यास कार्यक्रम	9 से 12 मई 1988	एस.सी.ई.आर.टी. हैदराबाद	56
2.	मध्य प्रदेश के शीर्ष व्यक्तियों हेतु कार्यानुभव में अभिविन्यास पाठ्यक्रम	3 से 6 अक्तूबर 1988	बी.टी.आई. बिजलपुर, इंदौर	33
3.	नवोदय विद्यालयों के अध्यापकों हेतु कार्यानुभव में अभिविन्यास पाठ्यक्रम	24 से 28 अक्तूबर 1988	रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली	45
4.	नवोदय विद्यालय के अध्यापकों का कार्यानुभव में अभिविन्यास पाठ्यक्रम	19 से 23 दिसंबर, 1988	वही	45
5.	कर्नाटक राज्य के शीर्ष व्यक्तियों का कार्यानुभव पर अभिविन्यास कार्यक्रम	18 से 21 जनवरी 1989	बेंगलूर	30,
	कार्यानुभव पर प्रशिक्षण कार्यक्रम			
1.	स्वैच्छिक संगठनों में कार्य कर रहे कार्यानुभव अध्यापकों का प्रशिक्षण	15 से 24 नवंबर, 1988	गांधी विद्या नगर, खिड़ौदा जिला, जलगांव (महाराष्ट्र)	48
	कार्यानुभव की शिक्षण सामग्री के विकास पर अभिविन्यास कार्यक्रम			
1.	मां और शिशु के स्वास्थ्य की देखभाल हेतु उदाहरणात्मक कार्यानुभव अनुदेशी सामग्री के विकास हेतु अभिविन्यास कार्यक्रम	12 से 17 सितंबर, 1988	रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली	9

1988-89

विज्ञान और गणित शिक्षा में सुधार

विद्यालय स्तर पर विज्ञान और गणित शिक्षा में सुधार लाना परिषद् का मुख्य कार्यक्षेत्र रहा है। विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग, विज्ञान और गणित में अनुदेशी सामग्री के विकास और विद्यालय स्तर पर विज्ञान तथा गणित शिक्षा में सुधार हेतु प्रशिक्षण, विस्तार, अनुसंधान और विकास संबंधी कार्यकलापों में रहा है। यह केन्द्र प्रायोजित ''विद्यालयों में विज्ञान शिक्षा में सुधार योजना'' तथा ''विद्यालयों में कम्प्यूटर साक्षरता और अध्ययन (क्लास) योजना'' के कार्यान्वयन हेतु राष्ट्रीय स्तर पर ''नोडल'' मुख्य अभिकरण के रूप में भी कार्य करता है।

वर्ष 1988-89 में इस क्षेत्र में परिषद् ने निम्नलिखित मुख्य कार्यकलाप किए :

— कक्षा सातवीं से बारहवीं तक की गणित और विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों सहित अनुदेशी पैकेज।

— अध्यापक संदर्शिकाओं, प्रयोगशाला मैनुअल, सहायक पाठ सामग्री, शिक्षण सहायक साधन आदि का विकास ताकि नई पाठ्यपुस्तकों का कक्षा में प्रभावी अंतरण सुगम हो सके।

— विज्ञान में रुचि बढ़ाने तथा मन में वैज्ञानिक प्रवृत्ति बढ़ाने के लिए लोकप्रिय विज्ञान सामग्री का विकास।

— उन प्रतिभाशाली छात्रों के लिए गणित की सहायक पुस्तकों का विकास जो अखिल भारतीय प्रतियोगी परीक्षाओं, विशेषतः इंजीनियरिंग महाविद्यालयों की प्रवेश परीक्षा में बैठना चाहते हैं।

— विज्ञान और गणित शिक्षा में सुधार कार्यक्रमों का प्रभावी कार्यान्वयन सुगम बनाने के लिए राज्यों के विभिन्न स्तरों के कार्यकर्ताओं के लिए मार्ग दर्शिकाओं का विकास।

— बच्चों में वैज्ञानिक रचनात्मकता के प्रोत्साहन हेतु बच्चों की 17 वीं राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन।

— विज्ञान और गणित में रुचि तथा प्रतिभा के पोषण हेतु विज्ञान और गणित के विद्यालेतर कार्यकलापों का आयोजन।

— विद्यालयों में विज्ञान प्रयोगशालाओं के प्रभावी उपयोग का अध्ययन जिससे विद्यालयों में प्रयोग शालाओं की कार्यप्रणाली को बेहतर बनाने के कदम उठाये जा सकें।

— क्लास परियोजना के अन्तर्गत कम्प्यूटर साफ्टवेयर पैकेज का विकास तथा कम्प्यूटर के उपयोगहेतु अध्यापकों का प्रशिक्षण

विज्ञान और गणित की अनुदेशी सामग्री का विकास

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में निर्दिष्ट प्राथमिक स्तर पर शिक्षा की विषयवस्तु और प्रक्रिया के अभिविन्यास हेतु कक्षा 7 से 12 तक की गणित तथा विज्ञान पाठ्यपुस्तकों सहित अनुदेशी सामग्री तैयार करना परिषद् का मुख्य कार्य संशोधित विज्ञान सामग्री तैयार करने के लिए समिति गठित की गई, जिसके अध्यक्ष प्रोफेसर सी.एन.आर. राव हैं जो प्रधानमंत्री की विज्ञान सलाहकार समिति के अध्यक्ष तथा इंडियन इंस्टीच्युट ऑफ साइंस बेंगलूर के निदेशक हैं। तदांतर, निम्नलिखित विषयों हेतु पाँच उपसमितियाँ बनाई गईं। समेकित विज्ञान (कक्षा 7 से 10 तक) गणित (कक्षा 6 से 12), भौतिक शास्त्र (कक्षा 11 और 12) रसायन विज्ञान (कक्षा 11 और 12) तथा जीव विज्ञान (कक्षा 11 और 12)। इन उपसमितियों का कार्य गणित और विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों सहित अनुदेशी सामग्री तैयार करना था। 1988–89 में विज्ञान और गणित की नई पाठ्यपुस्तकों के विस्तृत ब्योरे तालिका 6.8 में दिए गए हैं। इनके अतिरिक्त परिषद् ने प्रतिभाशाली छात्रों के लिए गणित में ''ऐलीमेंटरी डायनामिक्स'' नामक पूरक पुस्तक का भी निर्माण किया।

पाठ्यपुस्तकों सहित विज्ञान और गणित की अनुदेशी सामग्री के विकास हेतु कार्यशाला और बैठक की शृंखला आयोजित की। लेखन दलों के सदस्यों के अलावा इन बैठकों/कार्यशालाओं में विश्वविद्यालय के प्रोफेसर, कक्षाध्यापक, अध्यापक शिक्षक, पाठ्यचर्या विशेषज्ञ और शैक्षिक प्रशासक भी आए। अनुदेशी सामग्री के विकास से संबंधित आयोजित कार्यशालाओं/ बैठकों के व्यापक ब्यौरे तालिका 6.9 में दिए गए हैं।

तालिका 6.8

1988–89 के दौरान तैयार की गई विज्ञान और गणित की पाठ्यपुस्तकें

क्र.सं.	पुस्तक का नाम	कक्षा	लेखन दल के अध्यक्ष
1.	गणित पाठ्यपुस्तक भाग 1	10	प्रोफेसर यू.एन.सिंह, भू.पू. उपकुलपति, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
2.	गणित पाठ्यपुस्तक भाग 2	10	प्रोफेसर यू.एन.सिंह, भू.पू. उपकुलपति, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
3.	गणित पाठ्य पुस्तक भाग 1	11	प्रोफेसर इजहार हुसैन, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़
4.	गणित पाठ्यपुस्तक भाग 2	11	प्रोफेसर इजहार हुसैन, अलीगढ़ विश्वविद्यालय, अलीगढ़
5.	गणित पाठ्यपुस्तक भाग 1	8	प्रोफेसर जे.एन.कपूर (सेवा निवृत) भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर
6.	गणित पाठयपुस्तक भाग 2	7	प्रोफेसर जे.एन.कपूर (सेवा निवृत) भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर
7.	भौतिक शास्त्र पाठ्यपुस्तक भाग 1	12	प्रोफेसर वी.जी. भिडे उपकुलपति, पूना विश्वविद्यालय, पुणे
8.	भौतिक शास्त्र पाठ्यपुस्तक भाग 1	11	प्रोफेसर वी.जी. भिडे, उकुलपति, पूना विश्वविद्यालय, पुणे
9.	भौतिक शास्त्र पाठ्यपुस्तक भाग 2	11	प्रोफेसर वी.जी. भिड़े, उपकुलपति, पूना विश्वविद्यालय पुणे।
10.	रसायन शास्त्र पाठ्यपुस्तक भाग 1	11	प्रोफेसर सी.एन.आर.राव. निदेशक, भारतीय वैज्ञानिक संस्थान, बेंगलूर
11.	रसायन शास्त्र पाठ्यपुस्तक भाग 2	11	प्रोफेसर सी.एन.आर.राव, निदेशक, भारतीय वैज्ञानिक संस्थान, बेंगलूर
12.	जीव विज्ञान पाठ्यपुस्तक भाग 1	11	प्रोफेसर एच.वाई. मोहनराम, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली
13.	जीव विज्ञान पाठ्यपुस्तक भाग 2	11	वही
14.	विज्ञान पाठ्यपुस्तक भाग 1	9	डा.डी.बालासुब्रह्मयम, सी.सी.एम.बी., हैदराबाद
15.	विज्ञान पाठ्यपुस्तक भाग 2	9	वही
16.	विज्ञान पाठ्य पुस्तक	7	वही

1988-89

तालिका 6.9

वर्ष 1988–89 के दौरान विज्ञान और गणित शिक्षा की अनुदेशी सामग्री के विकास हेतु कार्यशालाओं/बैठकों के व्यापक ब्यौरे

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	कार्यक्रम का स्थान	तारीख/अवधि	प्रतिभागियों की संख्या
1.	कक्षा 9 के लिए गणित के अनुदेशी पैकेजों के विकास पर कार्यशाला	रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली	11.4.88 से 12.4.88	12
2.	कक्षा 10 की विज्ञान पाठ्यपुस्तक के लेखकों की बैठक	सी.सी.एम.बी. हैदराबाद	16.4.88 से 18.4.88	4
3.	कक्षा 8 की विज्ञान पाठ्यपुस्तक के लेखकों की बैठक	वही	28.4.88 से 1.5.88	5
4.	कक्षा 10 के गणित शिक्षण के विकास हेतु कार्यशाला	रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली	10.5.88 से 11.5.88	3
5.	कक्षा 7 की विज्ञान पाठ्यपुस्तक हेतु अध्यापक सदर्शिका के विकास पर कार्यशाला	भारतीय विद्या भवन कोचीन	25.5.88 से 1.6.88	22
6.	कक्षा 12 की रसायन शास्त्र पाठ्यपुस्तक के विकास हेतु लेखन दल की बैठक	भारतीय वैज्ञानिक संस्थान बेंगूलर	3.6.88 से 4.6.88	5
7.	कक्षा 6 में विज्ञान अध्यापन के लिए रा.शै.अ.प्र.प. की अनुदेशी सामग्री हेतु प्रारूप मार्गदर्शिका एवं समायोजन पर कार्यशाला	रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली	7.6.88 से 10.6.88	2
8.	कक्षा 12 की जीव विज्ञान की पाठ्यपुस्तक तैयार करने के लिए लेखन दल की बैठक	भारतीय विज्ञान संस्थान बेंगलूर	10.6.88 से 11.6.88	7
9.	कक्षा 10 की विज्ञान पाठ्यपुस्तक के विकास हेतु लेखन दल की बैठक	सी.सी.एम.बी. हैदराबाद	13.6.88 से 15.6.88	6
10.	+2 स्तर पर भौतिक शास्त्र (कक्षा – 11) के अनुदेशी पैकेज का विकास	भारतीय विज्ञान संस्थान बेंगलूर	15.6.88 से 16.6.88	10
11.	कक्षा 8 की विज्ञान पाठ्यपुस्तक के विकास हेतु लेखन दल की बैठक	सी.सी.एम.बी. हैदराबाद	16.6.88 से 18.6.88	5
12.	कक्षा 8 के लिए गणित शिक्षण पैकेज के विकास पर कार्यशाला	रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली	12.6.88 से 22.6.88	5
13.	कक्षा 10 के लिए गणित के अनुदेशी पैकेज के विकास पर कार्यशाला	वही	27.6.88 से 30.6.88	5
14.	कक्षा 7 हेतु गणित के अनुदेशी पैकेज तैयार करने के लिए कार्यशाला	कलकत्ता	29.6.88 से 4.7.88	11
15.	+2 स्तर पर कक्षा 11 में भौतिक शास्त्र के अनुदेशी पैकेज तैयार करने के लिए कार्यशाला	पूना विश्वविद्यालय पुणे	1.7.88 से 15.7.88	4
16.	अनुदेशी सामग्री का विकास तथा विज्ञान में प्रक्रिया आधार पर अध्यापकों/अध्यापक शिक्षकों के प्रशिक्षण पर कार्यशाला	रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली	8.8.88 से 14.8.88	18

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	कार्यक्रम का स्थान	तारीख/अवधि	प्रतिभागियों की संख्या
17.	कक्षा 7 की विज्ञान की हिंदी में पाठ्यपुस्तक को अंतिम रूप देने पर कार्यशाला	रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली	11.7.88 से 15.7.88	11
18.	कक्षा 8 के लिए गणित अनुदेशी पैकेज तैयार करने पर कार्यशाला	वही	21.7.88 से 22.7.88	6
19.	वरिष्ठ माध्यमिक स्तर कक्षा 12 के रसायन शास्त्र की पाठ्यचर्या तैयार करने के लिए कार्यशाला	वही	28.7.88 से 1.8.88	28
20.	कक्षा 8, 10 और 12 के लिए गणित के अनुदेशी पैकेज तैयार करने पर कार्यशाला	रा.शै.अनु.प्र.प. नई दिल्ली	17.8.88 से 19.8.88	15
21.	कक्षा 10 की विज्ञान पाठ्यपुस्तक के प्रारूप की समीक्षा हेतु लेखन दल की बैठक	एन.जी.आर.आई. हैदराबाद	21.8.88 से 25.8.88	6
22.	कक्षा 11 के लिए गणित पाठ्य को अंतिम रूप देने पर कार्यशाला	रा.शै.अ.प्र.प. कलकत्ता	5.9.88 से 9.9.88	14
23.	कक्षा 9 की विज्ञान पाठ्यपुस्तक की हिन्दी पांडुलिपि की समीक्षा एवं संशोधन हेतु कार्यशाला	रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली	5.9.88 से 9.9.88	17
24.	कक्षा 7 हेतु गणित के प्रश्न तैयार करने पर कार्यशाला	वही	12.9.88 से 16.9.88	13
25.	कक्षा 12 की जीव विज्ञान पाठ्यपुस्तक तैयार करने पर लेखन दल की बैठक	भारतीय विज्ञान संस्थान बेंगलूर	17.9.88 से 20.9.88	6
26.	कक्षा 8 हेतु गणित के अनुदेशी पैकेज तैयार करने पर कार्यशाला	रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली	26.9.88 से 27.9.88	7
27.	कक्षा 10 के गणित के अनुदेशी पैकेज तैयार करने पर कार्यशाला	वही	26.9.88 से 29.9.88	5
28.	कक्षा 10 की पाठ्यपुस्तक के प्रारूप अध्याय की समीक्षा हेतु लेखन दल की बैठक	वही	3.10.88 से 5.10.88	1
29.	कक्षा 10 की विज्ञान पाठ्यपुस्तक के प्रारूप की समीक्षा हेतु लेखन दल की बैठक	एन.जी.आर.आई. हैदराबाद	4.10.88 से 8.10.88	4
30.	वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर रसायन शास्त्र की प्रयोगशाला का प्रभावी उपयोग	लखनऊ/कलकत्ता	9.10.88 से 19.10.88	24
31.	कक्षा 12 की जीव विज्ञान पाठ्यपुस्तक तैयार करने के लिए लेखन दल की बैठक	भारतीय विज्ञान संस्थान बेंगलूर	10.8.88 से 17.10.88 तक	4
32.	कक्षा 8 हेतु अनुदेशी पैकेज तैयार करने पर कार्यशाला	रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली	12.10.88 से 13.10.88	10
33.	माध्यमिक स्तर पर विज्ञान प्रयोगशाला का प्रभावी उपयोग	बम्बई/उदयपुर/कोयम्बतूर	22.10.88 से 25.10.88	18

1988-89

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	कार्यक्रम का स्थान	तारीख/अवधि	प्रतिभागियों की संख्या
34.	कक्षा 10 हेतु गणित के अनुदेशी पैकेज तैयार करने पर कार्यशाला	मौलाना आजाद शिक्षक महाविद्यालय, भोपाल	22.10.88 से 27.10.88	15
35.	कक्षा 12 के लिए गणित की पाठ्यपुस्तक/सामग्री को अंतिम रूप देने के लिए कार्यशाला	रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली	24.10.88 से 30.10.88	1
36.	कक्षा 12 की जीव विज्ञान की पाठ्यपुस्तक के विकास हेतु लेखन दल की बैठक	वही	25.10.88 से 30.10.88	13
37.	कक्षा 10 की विज्ञान पाठ्यपुस्तक प्रारूप पांडुलिपि की समीक्षा एवं संशोधन पर राष्ट्रीय कार्यशाला	वही	28.10.88 से 30.10.88	13
38.	कक्षा 8 के लिए गणित में अनुदेशी पैकेज तैयार करने पर कार्यशाला	वही	31.10.88 से 4.11.88	23
39.	कक्षा 12 के लिए रसायन शास्त्र में अनुदेशी सामग्री विकसित करने पर बैठक	भारतीय विज्ञान संस्थान बेंगलूर	5.11.88 से 6.11.88	6
40.	कक्षा 10 के लिए गणित में अनुदेशी पैकेज के विकास हेतु कार्यशाला	रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली	11.11.88 से 15.11.88	8
41.	कक्षा 12 की जीव विज्ञान पाठ्यपुस्तक भाग 1 के प्रारूप अध्यायों की समीक्षा पर राष्ट्रीय कार्यशाला	वही	14.11.88 से 17.11.88.	19
42.	कक्षा 8 हेतु विज्ञान पाठ्यपुस्तक के लेखन पर कार्यशाला	एन.सी.आर.आई. हैदराबाद	18.11.88 से 26.11.88 तक	
43.	कक्षा 12 हेतु रसायन शास्त्र में अनुदेशी सामग्री तैयार करने के लिए कार्यशाला	रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली	19.11.88 से 22.11.88	11
44.	कक्षा 10 की विज्ञान पुस्तकों की पांडुलिपियों की समीक्षा व संशोधन हेतु लेखकों की कार्यशाला	एन.जी.आर.आई. हैदराबाद	25.11.88 से 29.11.88 तक	
45.	कक्षा 12 की जीव विज्ञान पाठ्यपुस्तक भाग 1 के विकास हेतु लेखन दल की बैठक	सी.आई.एन.ए.पी. लखनऊ	1.12.88 से 4.12.88	5
46.	+2 स्तर पर कक्षा 12 के भौतिक शास्त्र के अनुदेशी पैकेज के विकास पर कार्यशाला	रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली	7.12.88 से 11.12.88	20
47.	कक्षा 10 के गणित में अनुदेशी पैकेज तैयार करने हेतु कार्यशाला	वही	12.12.88 से 14.12.88	6
48.	कक्षा 8 की विज्ञान पाठ्यपुस्तक की पांडुलिपि संबंधी अध्यापकों द्वारा समीक्षा हेतु कार्यशाला	वही	13.12.88 से 18.12.88	23
49.	सैनिक स्कूल के भौतिक शास्त्र के अध्यापकों का अभिविन्यास पाठ्यक्रम	कुंजपुरा करनाल	19.12.88 से 24.12.88	3
50.	गणित क्षेत्र में प्रतिभाशाली छात्रों की पहचान और उन्हें प्रोत्साहित करना	रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली	20.12.88 से 22.12.88	10

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	कार्यक्रम का स्थान	तारीख/अवधि	प्रतिभागियों की संख्या
51.	कक्षा 9 हेतु गणित में अनुदेशी पैकेज (हिन्दी) के विकास की कार्यशाला	रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली	20.12.88 से 22.12.88	8
52.	कक्षा 9 हेतु गणित में अनुदेशी पैकेज (हिंदी) के विकास की कार्यशाला	वही	26.12.88 से 30.12.88 तक	12
53.	कक्षा 10 के लिए विज्ञान पाठ्यपुस्तक की पांडुलिपि की समीक्षा हेतु कार्यशाला	वही	2.1.89 से 6.1.89	29
54.	कक्षा 12 की रसायन शास्त्र पाठ्यपुस्तक (हिन्दी) के लिए पाठ्यचर्या पैकेज तैयार करने हेतु कार्यशाला	वही	9.1.89 से 12.1.89	9
55.	कक्षा 11 की जीव विज्ञान पाठ्यपुस्तक भाग 1 की हिंदी पांडुलिपि की समीक्षा एवं उसे अंतिम रूप देने हेतु कार्यशाला	वही	16.1.89 से 19.1.89	5
56.	कक्षा 12 के लिए भौतिक शास्त्र में अनुदेशी पैकेज के विकास पर कार्यशाला	वही	20.1.89 से 24.1.89	22
57.	कक्षा 12 हेतु गणित की पाठ्यसामग्री के विकास पर कार्यशाला	वही	30.1.89 से 1.2.89	15
58.	कक्षा 10 हेतु गणित के अनुदेशी पैकेज तैयार करने पर कार्यशाला	वही	31.1.89 से 3.2.89	7
59.	कक्षा 12 हेतु गणित के अनुदेशी पैकेज तैयार करने पर कार्यशाला	हैदराबाद विश्वविद्यालय हैदराबाद	10.2.89 से 13.2.89	3
60.	अभिविन्यासित गणित – अनुप्रयोग भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र और जीव विज्ञान में प्रयुक्त गणितीय संकल्पनाओं का विश्लेषण	एस.सी.ई.आर.टी. कलकत्ता	13.2.89 से 17.2.89	19
61.	विज्ञान में शिक्षण संबंधी ठोस सामग्री एवं बारंबारता का विकास	रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली	20.2.89 से 24.2.89	18
62.	कक्षा 11 की गणित (हिन्दी) की पाठ्यपुस्तक भाग 2 की समीक्षा तथा उसे अंतिम रूप देने हेतु कार्यशाला	वही	20.2.89 से 24.2.89	15
63.	गणित के क्षेत्र में प्रतिभाशाली छात्रों की पहचान तथा उन्हें प्रोत्साहित करना	उदयपुर	27.3.89 से 31.3.89	19
64.	वही	रा.शै.अ.प्र.प.	27.2.89 से 28.2.89	3
65.	+2 स्तर हेतु भौतिक शास्त्र के अनुदेशी पैकेज के विकास पर कार्यशाला	पुणे विश्वविद्यालय, पुणे	27.2.89 से 10.3.89	12
66.	अभिविन्यासित गणित – अनुप्रयोग भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र और जीव विज्ञान में प्रयुक्त गणितीय संकल्पनाओं का विश्लेषण	रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली	6.3.89 से 10.3.89	19

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	कार्यक्रम का स्थान	तारीख/अवधि	प्रतिभागियों की संख्या
67	विद्यालयों में प्रक्रिया के आधार पर अधिगम हेतु अनुदेशी सामग्री के विकास और अध्यापकों के प्रशिक्षण' हेतु कार्यशाला	हैदराबाद	13.3.89 से 18.3.89	23
68.	माध्यमिक स्तर पर रसायन शास्त्र प्रयोगशालाओं का प्रभावी उपयोजन	रा.शै.अ.प्र.प. गुड़गाँव	24.3.89 से 28.3.89	18
69.	कम कीमत के त्रिआयामी मॉडल बनाने के लिए अनुदेशी सामग्री का विकास	रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली	27.3.89 से 28.3.89	15
70.	कक्षा 12 के गणित अनुदेशी पैकेज भाग–2 को अध्यापकों द्वरा अंतिम रूप देने के लिए कार्यशाला	वही	29.3.89 से 31.3.89	12
71.	माध्यमिक स्तर पर विज्ञान प्रयोगशाला का प्रभावी उपयोजन	कलकत्ता	30.3.89 से 3.4.89	19
72.	कक्षा 12 के लिए गणित के अनुदेशी पैकेज भाग–2 को अंतिम रूप देने के लिए लेखकों की कार्यशाला	रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली	31.3.89 से 2.4.89	5
73.	राज्यों के विभिन्न स्तरों पर कार्यकर्ताओं के उपयोग हेतु विज्ञान शिक्षण की मार्गदर्शिका के विकास पर कार्यशाला	एस.वी.विश्वविद्यालय तिरुपति	23.11.88 से 28.11.88 तक	29

विज्ञान और गणित अध्यापकों का प्रशिक्षण

परिषद् ने विज्ञान और गणित अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने के लिए विभिन्न राज्यों के स्तरीय अभिकरणों के साथ सहयोग किया। तालिका 6.10 में इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के ब्यौरे दिए गए हैं :

तालिका 6.10

वर्ष 1988–89 में परिषद् के सहयोग से राज्य स्तर की संस्थाओं/अभिकरणों द्वारा आयोजित विज्ञान और गणित के अध्यापकों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	तारीख	स्थान
1.	मिडिल स्तर पर विज्ञान शिक्षकों का अभिविन्यास	19 से 22 सितंबर, 1988 तक	शिवालिक पब्लिक स्कूल, चंडीगढ़

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	तारीख	स्थान
2.	माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर प्रयोगशाला डिजाइनर्स का अभिविन्यास	17 अक्तूबर 1988	हंसराज मॉडल स्कूल, अशोक विहार, नई दिल्ली
3.	हाई स्कूल अध्यापकों के अभिविन्यास कार्यक्रम के आयोजन हेतु उ.प्र. के शीर्ष व्यक्तियों का प्रशिक्षण	8 से 10 दिसंबर, 1988 तक	राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान, इलाहाबाद
4.	उच्चतर माध्यमिक स्तर पर रसायन शास्त्र में सैनिक स्कूल के अध्यापकों का अभिविन्यास	19 से 24 दिसंबर, 1988 तक	सैनिक स्कूल, रीवा
5.	रसायन शास्त्र में अनुदेशी सामग्री के विकास हेतु उ.प्र. राज्य के हाईस्कूल तथा इंटरमीडिएट अध्यापकों का अभिविन्यास	8 से 9 सितंबर, 1988 तक	राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान, इलाहाबाद
6.	गणित में प. बंगाल के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की बाह्य परीक्षा के उन्नयन हेतु पश्चिम बंगाल के अध्यापकों का प्रशिक्षण	19 से 23 अगस्त 1988 तक	राज्य शैक्षिक अनुसंधान प्रशिक्षण परिषद् कलकत्ता
7.	प्राथमिक, उच्च प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओं के गणित अध्यापकों का प्रशिक्षण	4 से 5 जुलाई, 1988 तक	डी.ए.वी. स्कूल शालीमार बाग दिल्ली
8.	+2 स्तर के सैनिक स्कूल के अध्यापकों का प्रशिक्षण	19 से 24 दिसंबर, 1988	रीवा, मध्य प्रदेश
9.	सैनिक स्कूल के अध्यापकों के लिए भौतिकी में अभिविन्यास कोर्स	19 से 24 दिसंबर 1988	कुंजापुरा, करनाल

राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी

परिषद् ने जम्मू और काश्मीर सरकार के सहयोग से जम्मू में 17 वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान प्रदर्शनी आयोजित की। यह प्रदर्शनी 5 से 11 नवंबर, 1988 तक आयोजित की गई जिसका भारत के राष्ट्रपति ने उद्घाटन किया। इस प्रदर्शनी का मूल विषय ''जल और मानव'' था। इसमें लगभग 500 छात्रों ने भाग लिया।

विद्यालयों में विज्ञान शिक्षा सुधार योजना के कार्यान्वयन हेतु तकनीकी सहायता

रा.शै.अ.प्र.प. केन्द्रीय विद्यालयों में प्रायोजित विज्ञान शिक्षा में सुधार योजना के कार्यान्यवन संबंधी अनेक कार्यकलापों में रत रही है। विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग योजना के मुख्य तत्व विज्ञान और गणित के अध्यापकों के प्रशिक्षण से संबंधित कार्यकलापों के कार्यान्वियन हेतु राष्ट्रीय स्तर वे मुख्य (नोडल) अधिकरण के रूप में कार्य करता रहा है।

रा.शै.अ.प्र.प. के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों ने 1988–89 में उच्चतर/वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों के विज्ञान और गणित के अध्यापकों को प्रशिक्षित करने के लिए 12 ग्रीष्म कालीन संस्थान आयोजित किए हैं। इनमें चार ग्रीष्म कालीन संस्थान सम्मिलित हैं :- क्षे. शि.म. अजमेर में राजस्थान के अध्यापकों हेतु एक-एक भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, जीव विज्ञान और गणित में किए। क्षे.शि.म. भोपाल में, म.प्र. के अध्यापकों हेतु एक-एक भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, जीव विज्ञान और गणित में एक-एक कर्नाटक के अध्यापकों हेतु क्षे.शि.म. मैसूर भौतिकशास्त्र, रसायन शास्त्र, जीव विज्ञान और गणित में आयोजित किए गए। इन ग्रीष्म संस्थानों में अध्यापकों के लिए कुछ प्रशिक्षण सामग्री भी विकसित की जो परवर्ती प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा योजना के अंतर्गत आयोजित ग्रीष्म संस्थानों में प्रयुक्त की जा सकती थी।

विद्यालयों में विज्ञान शिक्षा में सुधार की योजना के

1988-89

कार्यान्वियन से संबंधित कई कार्य किए जिनमें किए गए योजना के अंतर्गत विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों के आयोजन हेतु मैनुअल का विकास, उ.प्र. के उच्चतर/वरिष्ठ माध्यमिक अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम में उपयोग हेतु अनुदेशी सामग्री के विकास हेतु एक सप्ताह की कार्यशाला का आयोजन, उ.प्र. के उच्चतर माध्यमिक अध्यापकों हेतु तीन दिन का अभिविन्यास कार्यक्रम, उ.प्र. के उच्च प्राथमिक विद्यालयों के विज्ञान शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु शीर्ष एवं संदर्भ व्यक्तियों का अभिविन्यास कार्यक्रम, बिहार के शीर्ष व्यक्तियों के लिए पटना में 12 से 14 दिसंबर, 1988 तक 3 दिन का अभिविन्यास कार्यक्रम, जम्मू और काश्मीर के वरिष्ठ/उच्चतर माध्यमिक अध्यापकों के प्रशिक्षण हेतु संदर्भ व्यक्तियों का 16 से 18 जनवरी, 1989 तक आयोजित तीन दिन का अभिविन्यास कार्यक्रम, तथा मिजोरम के शीर्ष/संदर्भ व्यक्तियों के लिए 15 से 17 मार्च, 1989 तक आयोजित 3 दिन का अभिविन्यास कार्यक्रम शामिल थे।

परिषद् ने 19 और 20 सितंबर, 1988 को स्वैच्छिक अभिकरणों के प्रतिनिधियों की बैठक बुलाई।इसमें इस योजना के कार्यान्वियन में उनकी प्रतिभागिता पर विचार विमर्श हुआ। 31 अक्तूबर तथा 1 नवंबर 1988 को राज्य/संघ शासित क्षेत्र स्तर पर योजना के कार्यान्वियन में कार्यरत मुख्य (नोडल) अभिकरणों के प्रतिनिधियों की भी बैठक बुलाई गई। और इस योजना के अंतगंत किये जाने वाले विभिन्न कार्यों हेतु राज्यों/ संघ शासित क्षेत्रों को तकनीकी सहयोग दिया गया।

विद्यालयों में कम्प्यूटर साक्षरता और अध्ययन (सी.एल.ए.एस.एस. : क्लास)

विद्यालयों में कम्प्यूटर साक्षरता और अध्ययन परियोजना (क्लास) के अंतर्गत राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् तथा अन्य स्रोत केन्द्रों ने विद्यालयी अध्यापकों के लिए अनेक उच्च स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। वर्ष 1988–89 में इस ''क्लास'' परियोजना में आने वाले विद्यालयों की कुल संख्या 2,332 हो गई थी। वर्ष 1988–89 में 380 और विद्यालयों को परियोजना के अंतर्गत लिया गया। स्रोत केन्द्रों ने परियोजना में भाग लेने वाले नए विद्यालयों के अध्यापकों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। वर्ष 1988 में इस परियोजना के अंतर्गत लगभग 1,325 अध्यापक प्रशिक्षित किए गए। परिषद् ने कम्प्यूटर की जानकारी देने के लिए मुख्य कार्यकारी एवं सहकारिता के प्रधानाचार्यों के लिए तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। साफ्टवेयर मूल्यांकन हेतु मापदंड बनाने के लिए एक कार्यशाला तथा साफ्टवेयर डिजाइन में प्रारंभिक स्तर के दो परिचयात्मक पाठ्यक्रम आयोजित किए। इस परियोजना के अतंर्गत स्थापित 53 स्रोत केन्द्रों ने परियोजना में भाग लेने वाले विद्यालयों को तकनीकी सहयोग दिया। नए विद्यालयों के लिए साफ्टवेयर पैकेज उपलब्ध कराने एवं इन नए विद्यालयों में उपयोग हेतु देशज साफ्टवेयर पैकेज चुनने के लिए आवश्यक कदम उठाए गए।

क्लास परियोजना के अंतर्गत

शैक्षिक प्रयोजन हेतु कम्प्यूटर के उपयोग के लिए अध्यापकों को प्रशिक्षित करने के लिए रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस विभाग द्वारा आयोजित विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम/बैठक/कार्यशालाओं के व्यापक ब्यौरे तालिका 6.11 में दिए गए हैं।

तालिका 6.11

वर्ष 1988–89 में क्लास परियोजना के अंतर्गत आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम/बैठक/कार्यशालाएँ

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	तारीख	स्थान
1.	सूक्ष्म कम्प्यूटर के साथ घर्षण पर संकल्पना प्रतिपादन पर बैठक	30.3.88 से 5.4.88	रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
2.	कम्प्यूटर की जानकारी देने के लिए मुख्य कार्यकारी और सहकारिता के प्रधानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	4.5.88 से 6.5.88	वही
3.	क्लास परियोजना के अंतर्गत हरियाणा और दिल्ली के विद्यालयों के अध्यापकों के लिए अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम	16.5.88 स 4.6.88	दिल्ली पब्लिक सकूल रामाकृष्ण पुरम, नई दिल्ली
4.	वही	13.6.88 से 2.7.88 तक	वही
5.	साफ्टवेयर डिजाइन में परिचयात्मक पाठ्यक्रम	21.11.88 से 2.12.88	रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
6.	प्रशिक्षण कार्यक्रम बेसिक लैंग्युएज	19.12.88 से 30.12.88 तक	दिल्ली पब्लिक स्कूल, मथुरा रोड़ नई दिल्ली
7.	केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड पाठ्य विवरण पर आधारित पाठ्यचर्या संदर्शिका के विकास हेतु कार्यशाला	26.12.88 से 30.12.88	रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली
8.	साफ्टवेयर डिजाइन में परिचयात्मक पाठ्यक्रम	26.12.88 से 3.1.89	वही
9.	साफ्टवेयर मूल्यांकन हेतु मूलाधार के विकास हेतु कार्यशाला	4.1.89 से 6.1.89	वही
10.	11–13 वर्ष की आयु के लड़कों की अंग्रेजी में भाषा क्षमताओं का विकास	23.2.89 से 24.2.89	वही

विद्यालयों के लिए विज्ञान उपकरण का विकास और निर्माण

विद्यालय में विज्ञान शिक्षा के उन्नयन के प्रयास के अंग रूप में, परिषद् ने डिजाइन, विकास तथा विद्यालयों के लिए विज्ञान उपकरण के प्रोटोटाइप उत्पादन में अपना नेतृत्व प्रदान करना जारी रखा । रा.शि.सं. का कर्मशाला विभाग विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों हेतु विज्ञान किट, इलैक्ट्रानिक किट, और मिनी टूल किट के विकास में लगा रहा। अपने औपचारिक कार्यों के अतिरिक्त कर्मशाला विभाग 1986 से इंडो.एफ.आर.जी. परियोजना ''म.प्र. और उ.प्र. में प्राथमिक और मिडिल स्कूलों में उन्नत विज्ञान शिक्षा'' के कार्यान्यवन में कार्यरत रहा है। इंडो – एफ.आर.जी. परियोजना के अंतर्गत 1987 के अंत में तथा 1988–89 के दौरान प्राथमिक विज्ञान किट के प्रोटोटाईप निकाले गए। रा.शि.सं. के कर्मशाला विभाग ने ये प्रोटोटाईप बनाए तथा म.प्र. और उ.प्र. के विद्यालयों में उन्हें परखने के लिए भेजा गया। विज्ञान किटों की मदों के निर्माण के व्यापक आलेख, विनिर्देशन एवं रेखाचित्र तैयार किये गए तथा राज्य स्तर के अभिकरणों में भेजे गए। आपरेशन ब्लैक बोर्ड योजना के अंतर्गत प्राथमिक विद्यालयों को दी जाने वाली न्यूनतम अनिवार्य सुविधाओं के भाग रूप में, परिषद् द्वारा तैयार की गई प्राथमिक विज्ञान किट और मिनी टूल किट भी है। विद्यालयों में विज्ञान शिक्षा का उन्नयन केन्द्रीय प्रायोजित योजना के अंतर्गत उच्च प्राथमिक विद्यालयों को दी जाने वाली सामग्री के पैकेज का महत्वपूर्ण अंग परिषद् द्वारा विकसित समेकित विज्ञान किट है।

कर्मशाला विभाग का मुख्य कार्य 1988–89 में प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन की कक्षा 3,4 और 5 के अध्यापकों के लिए हैंडबुक और विज्ञान किट तैयार करने से संबंधित अनुसंधान और विकास संबंधी कार्य थे। हाथ में ली गई अनुसंधान

गतिविधियों में म.प्र. और उ.प्र. के विद्यालयों में विज्ञान पढ़ाने वाले अध्यापकों का सर्वेक्षण तथा इंडो – एफ.आर.जी. परियोजना ''म.प्र. और उ.प्र. के प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालयों में उन्नत विज्ञान शिक्षा'' के अंतर्गत म.प्र. और उ.प्र. में प्राथमिक विद्यालयों और प्राथमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थाओं में विज्ञान किटों की स्थिति का सर्वेक्षण सम्मिलित थे। आलोच्य वर्ष में प्राथमिक विज्ञान किट, मिनी टूल किट और समेकित विज्ञान किट के मैनुअल प्रकाशित किए। कर्मशाला विभाग ने विज्ञान किट और मिनी उपकरण किट की अभिकल्पना व विकास तथा अध्यापक पुस्तिका तैयार करने संबंधी अनुसंधान तथा विकासात्मक कार्यकलापों के भाग रूप में, अनेक बैठकें/कार्यशालाएँ आयोजित कीं। 1988–89 में आयोजित कार्यशालाओं/बैठकों के ब्यौरे तालिका 6.12 में दिए गए हैं।

तालिका 6.12

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	तारीख	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या
1.	रा.शै.अ.प्र.प. भोपाल में विज्ञान किट कार्यशाला, इलाहाबाद में विज्ञान किट निर्माणशाला के अकादमिक दल की बैठक	5 से 7 अप्रैल 1988	रा.शै.अ.प्र.प.	10
2.	प्राथमिक विज्ञान किट के परीक्षण कार्यक्रम के मूल्यांकन की बैठक	24 से 27 मई 1988	रा.शै.अ.प्र.प.	16
3.	किट के डिजाइन और विकास हेतु परीक्षण कार्यक्रम की उपलब्धियों के कार्यान्वयन तथा अध्यापक पुस्तिका एवं चार्टों को अंतिम रूप देने हेतु बैठक	10 से 24 जून 1988 तक	रा.शै.अ.प्र.प.	14
4.	रा.शै.अ.प्र.प., भोपाल में विज्ञान किट कार्यशाला, इलाहाबाद में विज्ञान किट निर्माण शाला के अकादमिक दल की बैठक	18 से 31 जुलाई 1988	रा.शै.अ.प्र.प.	16
5.	अध्यापक पुस्तिका के हिंदी और अंग्रेजी संस्करण को अंतिम रूप देने हेतु कार्यशाला	2 से 7 अगस्त 1988 तक	रा.शै.अ.प्र.प.	6
6.	हिंदी में किट मेनुअल को अंतिम रूप देने पर कार्यशाला	8 से 13 अगस्त 1988	रा.श.अ.प्र.प.	8
7.	कक्षा 3 और 5 की अध्यापक पुस्तिका को अंतिम रूप देने हेतु कार्यशाला	8 से 23 सितंबर, 1988	रा.शै.अ.प्र.प.	6
8.	कक्षा 5 की अध्यापक पुस्तिका एवं किट मैनुअल को अंतिम रूप देने हेतु कार्यशाला	26 से 30 सितंबर 1988	रा.शै.अ.प्र.प.	5
9	उ.प्र. और म.प्र. के प्राथमिक विद्यालयों और प्राथमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में विज्ञान किट और उपस्करण की अवस्थिति के सर्वेक्षण पर संगोष्ठी	21 नवंबर 1988	वही	25
10	हिन्दी में अध्यापक पुस्तिका के अंतमि संपादन पर कार्यशाला	12 से 15 दिसंबर 1988	वही	4
11	किट मैनुअल के अंग्रेजी और हिन्दी रूपांतर को अंतिम रूप देने के लिए कार्यशाला	22 सितंबर 1988 से 5 जनवरी 1989	वही	8

1988-89

कर्मशाला विभाग ने विज्ञान किट और अध्यापक पुस्तिका बनाने से संबंधित अनुसंधान और विकास कार्यकलापों के अलावा, म.प्र. और उ.प्र. के शीर्ष व्यक्तियों के प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किए। म.प. और उ.प्र. के शीर्ष संदर्भ व्यक्तियों के लिए नई दिल्ली में 22 से 25 फरवरी, 1989 तक प्रारंभिक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। इसमें 18 प्रतिभागियों ने भाग लिया। म.प्र. और उ.प्र. के शीर्ष संदर्भ व्यक्तियों के लिए नई दिल्ली में 14 से 20 मार्च, 1989 तक अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। 18 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसके अलावा, कर्मशाला विभाग ने 1988–89 में चार इंजीनियरिंग प्रशिक्षु प्रशिक्षित किए।

रा.शि.सं. के कर्मशाला विभाग ने 1988–89 में विभिन्न राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों को 1706 प्राथमिक विज्ञान किट, 225 समेकित विज्ञान किट और 6 मिनीउपकरण किट और भेजे। इसके अतिरिक्त हर राज्य/संघ शासित क्षेत्र के लिए 250 प्राथमिक विज्ञान किट, मिनी टूल किट तथा समेकित विज्ञान किट का एक नमूना तैयार किया। राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों से अनुरोध किया गया कि नमूनों के इन किटों का उपयोग वे प्रशिक्षण पाने वाले अध्यापकों में तथा स्थानीय उद्योगों से ऐसी किटें प्राप्त करने में करें। 1988–89 में रा.शि.सं. के कर्मशाला विभाग ने निम्नलिखित प्रकाशन भी निकाले :–

पर्यावरण अध्ययन पर अध्यापक पुस्तिका – (3 खंडों में)
किट मैनुअल – प्रायमिक विज्ञान किट
किट मैनुअल – समेकित विज्ञान किट
70 कार्ड चार्ट (डिस्प्लेहैंगर सहित)

परीक्षा संबंधी सुधार

परिषद् विद्यालयों में परीक्षा में सुधार लाने के लिए ऐसे अनेक कार्यों में लगी रही है, जिससे विद्यायलों में मूल्यांकन प्रक्रिया और पद्धति में सुधार हो। आलोच्य वर्ष में मापन मूल्यांकन एवं प्रदत्त सामग्री प्रक्रिया विभाग ने विद्यालयों में मूल्यांकन पद्धतियों के सुधार हेतु अनेक उपाय किए। व्यापक और अविरल मूल्यांकन की योजना तैयार की गई। अखिल भारतीय संदर्भ व्यक्तियों के लिए 22 जून से 5 जुलाई 1988 तक आयोजित दो सप्ताह की अवधि के प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में इस पर विचार किया गया। शैक्षिक एवं गैर शैक्षिक क्षेत्रों में छात्र उपलब्धि के रिकार्ड के साथ नमूने के तौर पर संचयी कार्ड भी तैयार किये गये। इस विभाग ने विभिन्न माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा ली जाने वाली परीक्षाओं में श्रेणी निर्धारण और मापन प्रारंभ करने के लिए मार्गदर्शिका भी तैयार की तथा माध्यमिक शिक्षा बोर्डों के अध्यक्षों/सचिवों की चार क्षेत्रीय बैठकें आयोजित कीं। इन बैठकों में माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक बोर्डों द्वारा ली जाने वाली परीक्षाओं में ग्रेडिंग और मापन को प्रारंभ करने संबंधी विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई। पी.पी.एम.ई.डी. विभाग ने मौखिक परीक्षा, विवृत पुस्तक परीक्षा एवं परियोजना कार्य जैसी वैकल्पिक मूल्यांकन पद्धतियों पर शीर्ष व्यक्तियों के प्रशिक्षण हेतु 8 दिन की कार्यशाला आयोजित की। इतिहास विषय में मूल्यांकन पर एक 8 दिवसीय पाठ्यक्रम तथा विभिन्न माध्यमिक/उच्चतर माध्यमिक शिक्षा बोर्डों द्वारा ली जाने वाली बाह्य परीक्षाओं को सुधारने के लिए 5 प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किए । इन पाठ्यक्रमों में 302 व्यक्तियों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त परिषद् ने शैक्षिक मूल्यांकन संबंधी संकल्पनात्मक सामग्री का विकास करने, संदर्भ परीक्षणों के आधार तैयार करने और विनिमय विषय क्षेत्रों में प्रश्नपत्र लिखने वालों के लिए प्रशिक्षण कार्य जारी रखे। विद्यालयों में मूल्यांकन पद्धतियों में सुधार के लिए किए गए कार्यकलापों के विस्तृत ब्यौरे 6.13 और 6.14 तालिका में दिए गए हैं।

1988-89

तालिका 6.13

वर्ष 1988-89 में आयोजित कार्यशालाएँ/बैठकें/सेमिनार

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	तारीख	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या
1.	बोर्ड परीक्षाओं में अंतः परीक्षक की अस्थिरता संबंधी समस्या के लिए निवारण हेतु उपायों पर कार्यशाला	8.8.88 से 13.8.88	मेरठ	60
2.	राष्ट्रीय स्केलिंग तथा ग्रेडिंग संगोष्ठी की सिफारिशों के कार्यान्वियन हेतु पहली क्षेत्रीय बैठक	7.9.88 से 9.9.88	ओबरा	14
3.	कक्षा 11 के लिए भौतिक विज्ञान के इकाई प्रश्न तैयार करने पर कार्यशाला	15.11.88 से 18.11.88	नई दिल्ली	20
4.	राष्ट्रीय स्केलिंग तथा ग्रेडिंग संगोष्ठी की सिफारिशों के कार्यान्वियन हेतु दूसरी क्षेत्रीय बैठक	24.11.88 से 25.11.88	नई दिल्ली	11
5.	अंग्रेजी में पठन तथा लेखन के संप्रेक्षण परीक्षण बनाने की कार्यशाला	21.12.88 से 28.12.88	नई दिल्ली	10
6.	राष्ट्रीय स्केलिंग तथा ग्रेडिंग सेमिनार की सिफारिशों के कार्यान्वियन हेतु तीसरी क्षेत्रीय बेठक	30.1.89 से 31.1.89	इम्फाल	12
7.	राष्ट्रीय स्केलिंग और ग्रेडिंग सेमिनार की सिफारिशों के कार्यान्वियन हेतु चौथी क्षेत्रीय बैठक	27.2.89 से 28.2.89	त्रिवेन्द्रम	12
8.	कक्षा 9 के लिए जीव विज्ञान में प्रश्न बनाने पर कार्यशाला	7.3.89 से 14.3.89	आगरा	24
9.	उच्चतर प्राथमिक कक्षाओं में विज्ञान के लिए रचनात्मक मूल्यांकन की योजना पर कार्यशाला	6.3.89 से 10.3.89	नई दिल्ली	21
10.	कक्षा 9 के लिए भौतिक विज्ञान में इकाई परीक्षण बनाने हेतु दूसरी कार्यशाला	27.3.89 से 31.3.89	नई दिल्ली	16
11.	कक्षा 9 के लिए विवृत्त परीक्षा हेतु जीव विज्ञान के प्रतिदर्श प्रश्नों की जांच पर कार्यशाला	28.3.89 से 31.3.89	नई दिल्ली	10

तालिका 6.14

1988–89 में आयोजित प्रशिक्षण/अभिविन्यास कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	तारीख/अवधि	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या
1.	व्यापक तथा अविरल मूल्यांकन पर अखिल भारतीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	22.6.88 से 5.7.88 तक (14 दिन)	मसूरी	19
2.	अर्थशास्त्र में वैकल्पिक मूल्यांकन पद्धतियों में शीर्ष व्यक्तियों का प्रशिक्षण	4.10.88 से 11.10.88 तक (8 दिन)	नई दिल्ली	22
3.	इतिहास विषय में मूल्यांकन का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	15.11.88 से 22.11.88 तक (8 दिन)	नई दिल्ली	23
4.	प. बंगाल माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की बाहरी परीक्षा में सुधार हेतु प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	17.8.88 से 23.8.88 तक (7 दिन)	कलकत्ता	45
5.	उच्च माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, तमिलनाडु में बाह्य परीक्षा में सुधार हेतु प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	5.1.89 से 11.1.89 तक (7 दिन)	मद्रास	47
6.	इंटरमीडिएट शिक्षा बोर्ड, आंध्र प्रदेश में बाहरी परीक्षा के सुधार हेतु प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	17.9.88 से 22.9.88 तक (6 दिन)	हैदराबाद	57
7.	मणिपुर माध्यमिक शिक्षा बोर्ड में बाहरी परीक्षा के सुधार हेतु प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	1.2.89 से 7.2.89 तक (7 दिन)	इम्फाल	78
8.	केरल राज्य के बाहरी परीक्षा में सुधार हेतु प्रशिक्षण पाठ्क्रम	20.2.89 से 25.2.89 तक (6 दिन)	त्रिचुर	52

परिषद् ने 1988–89 में परीक्षा सुधार संबंधी कार्यों में लगे हुए कार्मिकों के उपयोग हेतु कुछ प्रकाशन निकाले। इनमें निम्नलिखित प्रकाशन हैं :–

1. अंग्रेजी भाषा में परीक्षण मद (टैस्ट आइटम)
2. पढ़ें, समझें और उत्तर दें खंड – 1
3. अंग्रेजी में मूल्यांकन
4. कक्षा 9 हेतु भौतिक शास्त्र में इकाई परीक्षण (चक्रांकित)
5. मौखिक परीक्षा – एक सैद्धांतिक रूपरेखा (चक्रांकित)
6. माध्यमिक/उच्चतर माध्यमिक शिक्षा बोर्डों द्वारा ली जाने वाली परीक्षाओं में मापन और श्रेणी निर्धारण की मार्गदर्शिका(चक्रांकित)
7. उच्च प्राथमिक कक्षाओं में विज्ञान हेतु ''फारमेटिव'' मूल्यांकन की योजना (कक्षा 6 के लिए) (चक्रांकित)
8. परीक्षाओं में अनुचित तरीकों को रोकने के उपाय (चक्रांकित)

1988-89

शिक्षा प्रक्रिया और विषयवस्तु में अभिविन्यास के लिए राज्यों और संघ शासित क्षेत्रों को तकनीकी और वित्तीय सहायता

विद्यालयी स्तर पर शिक्षा की विषयवस्तु और प्रक्रिया के पुनरभिविन्यास के कार्यों के लिए रा.शै.अ.प्र.प. ने राज्यों/संघीय क्षेत्रों को विभिन्न पाठ्यचर्या के क्षेत्रों में पाठ्यपुस्तकों सहित अनुदेशी सामग्री के विकास और पाठ्यचर्या नवीकरण के कार्यों के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए योजना तैयार की। इस योजना के अंतर्गत, आंध्र प्रदेश, बिहार, गोवा, हरियाणा, कर्नाटक, केरल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, मणिपुर, मिजोरम, उड़ीसा, पंजाब, तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश और पं. बंगाल राज्यों तथा दिल्ली संघ शासित क्षेत्र एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड को वित्तीय सहायता दी गई। इस योजना के ''नोडल'' अधिकारियों की 21 से 22 नवंबर, 1988 तक बैठक योजना के कार्यान्वयन की प्रगति की समीक्षा हेतु आयोजित की गई। इसके अलावा परिषद् ने 2 से 4 जून, 1988 तक शिक्षा निदेशालयों, राज्य शैक्षिक अनुसंधान परिषदों तथा माध्यमिक शिक्षा बोर्डों के प्रतिनिधियों की राष्ट्रीय बैठक भी बुलाई जिसमें विद्यालय स्तर पर शिक्षा की विषयवस्तु और प्रक्रियाओं के पुनरभिविन्यास के कार्यान्वयन की समीक्षा की गई। इस बैठक में 19 राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इस बैठक में विद्यालय स्तर पर शिक्षा की विषयवस्तु और प्रक्रियाओं के पुनरभिविन्यास के कार्यों से संबंधित कठिनाइयों और समस्याओं तथा इन कठिनाइयों के निवारण हेतु अपेक्षित कार्य–नीतियों पर विचार किया गया। वर्ष 1988–89 में, इंटरमीडिएट शिक्षा बोर्ड, आंध्र प्रदेश, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नागालेंड, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, जम्मू और कश्मीर, गुजरात, विद्यालय पाठ्यपुस्तक बोर्ड, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, मेघालय को राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचे पर आधारित पाठ्यचर्या के नवीकरण एवं अनुदेशी सामग्री के विकास हेतु वित्तीय सहायता प्रदान की गई।

सात

शिक्षा का व्यवसायीकरण

रा.शै.अ.प्र.प. का एक मुख्य कार्य उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के व्यवसायीकरण में अनुकूल कार्यक्रमों का विकास और कार्यान्वियन करना है। परिषद् ने 1988–89 में केंद्रीय प्रायोजित उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के व्यवसायीकरण की योजना के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए कई कार्यक्रम बनाये थे। इन कार्यक्रमों को व्यवसायिक, निजी और स्वैच्छिक संस्थानों तथा शिक्षा व्यवसायीकरण से संबंधित कार्य करने वाले विशिष्ट अनुसंधान और विकास/प्रशिक्षण संस्थानों सहित विभिन्न अभिकरणों के सहयोग से कार्यान्वित किया गया। इस अवधि में राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के शिक्षा व्यवसायीकरण विभाग ने राज्य/संघ शासित क्षेत्र के अभिकरणों और संस्थानों के सहयोग से शिक्षा के व्यवसायीकरण के लिए पाठ्यचर्या के प्रतिपादन और कार्यान्विति संबंधी अध्ययन, पाठ्यविवरण और शिक्षण सामग्रियों का विकास, व्यवसायिक अध्यापक प्रशिक्षकों, शिक्षकों और अन्य कार्मिकों का प्रशिक्षण और जो +2 स्तर के व्यवसायिक शिक्षा कार्यक्रम में जुटे हुए हैं व्यवसायीकरण शिक्षा के विस्तार और प्रचार आदि जैसे मुख्य कार्यकलाप किये।

पाठ्यचर्याओं और अनुदेशी सामग्रियों का विकास

परिषद् ने आदर्श पाठ्यचर्याएं, व्यवसायिक पाठ्यक्रमों पर फोल्डर और उद्यमवृत्ति विकास के लिए पाठ्यपुस्तक तैयार करने पर चार कार्यशालाओं का आयोजन किया। यह कार्यशालाएँ, विशिष्ट संस्थानों के सहयोग से आयोजित की गईं जिनका विवरण तालिका 7.1 में दिया गया है ।

व्यवसायिक पाठ्यचर्या को लोकप्रिय बनाने के लिए परिषद् ने पांच शीर्षकों पर 5 वीडियो कार्यक्रम के निर्माण से संबंधित कार्य आरंभ किया है। वीडियो कार्यक्रम के शीर्षक इस प्रकार हैं :– सचिवालय पद्धति, स्कूटर और मोटर साइकिल का अनुरक्षण और सर्विसिंग, अंतर्देशीय मछली पालन, फूड प्रोसेसिंग और प्रिजीर्वेशन और मेडिकल लेबोरेट्री और टेकनीशियन। इन वीडियो कार्यक्रमों को इलेक्ट्रोनिक ट्रेड एंड टेक्नोलोजी डेवेलपमेंट कारपोरेशन, नई दिल्ली द्वारा दिये गये शीर्षकों पर परिषद् के संपूर्ण पर्यवेक्षण के अंतर्गत निर्मित किया गया है । इसके अतिरिक्त दस और वीडियो कार्यक्रमों के लिए आलेखों का निर्माण किया गया था।

शीर्ष व्यक्तियों का अभिविन्यास

रा.शै.अ.प्र.प. राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों के शीर्ष व्यक्तियों के लिए उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के व्यवसायीकरण पर

1988-89

तालिका 7.1

वर्ष 1988–89 में पाठ्यचर्याओं ओर अनुदेशी सामग्री के विकास के लिए आयोजित कार्यशालाएँ/बैठकें

क्र.	कार्यक्रम का शीर्षक	तारीख	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या
1.	उद्यमवृत्ति में मॉडल पाठ्यचर्या के विकास के लिए राष्ट्रीय कार्यशाला	6 से 8 अगस्त 1988	नीसबड, ओखला नई दिल्ली	23
2.	मुद्रण तकनीकी और पुस्तक की जिल्दसाजी में न्यूनतम क्षमता आधारित पाठ्यचर्या को अंतिम रूप देने के लिए कार्यशाला	6 से 10 सितंबर 1988	रा.शै.अ.प्र.प. मद्रास	9
3.	व्यवसायिक पाठ्यक्रम पर प्रचार पुस्तिकाओं के विकास के लिए कार्यशाला	5 से 8 अक्तूबर, 1988 और 9 से 11 अक्तूबर, 1988	शिक्षा निदेशालय पणजी, गोवा	26
4.	उद्यमवृत्ति विकास पर पाठ्यपुस्तक तैयार करने के लिए विशेषज्ञों की बैठक	24 फरवरी, 1989	नीसबड, ओखला नई दिल्ली	11

अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित करती रही है। इन कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों (राज्य अधिकारियों/प्राचार्यों/शिक्षा अधिकारियों) को शिक्षा व्यवसायीकरण के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराना है। शिक्षा व्यवसायीकरण पर कार्यक्रमों के अभिविन्यास कार्यक्रम के अतिरिक्त, अनुदेशी सामग्री के विकास, शीर्ष व्यक्तियों के लिए जिला व्यवसायिक सर्वेक्षण और अध्यापकों के लिए सेवा कालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का संचालन करने वाले सवन्यवकों और संदर्भ व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रमों का आयोजन किया। परिषद् ने शिक्षा व्यवसायीकरण पर 1988–89 में आठ अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किये, दो कार्यक्रम विभिन्न व्यवसायिक क्षेत्रों में अनुदेशी सामग्री के विकास पर, दो कार्यक्रम जिला व्यवसायिक सर्वेक्षण पर और एक अभिविन्यास कार्यक्रम व्यवसायिक अध्यापक प्रशिक्षण में रत समन्वयक और संदर्भ व्यक्तियों के लिए था। आयोजित अभिविन्यास कार्यक्रम का विवरण तालिका 7.2 में दिया गया है।

तालिका 7.2
वर्ष 1988–89 के आयोजित अभिविन्यास कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	तारीख और अवधि	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या
	शिक्षा के व्यवसायीकरण के अभिविन्यास कार्यक्रम			
1.	दिल्ली संघ शासित क्षेत्र के शीर्ष व्यक्तियों के लिए व्यवसायीकरण पर अभिविन्यास कार्यक्रम	3 दिन 11 से 13 मई, 1988	रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली	40
2.	कर्नाटक राज्य के शीर्ष व्यक्तियों के लिए शिक्षा व्यवसायीकरण पर अभिविन्यास कार्यक्रम	4 दिन 24 से 27 मई, 1988	व्यवसायिक शिक्षा निदेशालय, बंगलौर	22
3.	म.प्र. के शीर्ष व्यक्तियों के लिए शिक्षा व्यवसायीकरण पर अभिविन्यास कार्यक्रम	4 दिन 28 जून से 1 जूलाई 1988	राजकीय शिक्षा महाविद्यालय उज्जैन, म.प्र.	39
4.	हिमाचल प्रदेश के शीर्ष व्यक्तियों के लिए शिक्षा व्यवसायीकरण पर अभिविन्यास कार्यक्रम	4 दिन 3 से 6 अगस्त, 1988	शिक्षा महाविद्यालय धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश)	19
5.	राजस्थान के शीर्ष व्यक्तियों के लिए शिक्षा व्यवसायीकरण पर अभिविन्यास कार्यक्रम	4 दिन 2 से 5 अगस्त 1988	जयपुर (राजस्थान)	60
6.	केरल राज्य के शीर्ष व्यक्तियों के लिए शिक्षा व्यवसायीकरण पर अभिविन्यास	4 दिन 13 से 16 सितंबर, 1988	राजकीय तकनीकी उच्च विद्यालय, त्रिचुर	29
7.	उत्तर पूर्व राज्यों के शीर्ष व्यक्तियों के लिए शिक्षा व्यवसायीकरण पर अभिविन्यास कार्यक्रम	4 दिन 1 से 4 नवंबर, 1988	कॉटन कालेज असम गुवाहाटी	32
8.	उत्तर प्रदेश के शीर्ष व्यक्तियों के लिए शिक्षा व्यवसायीकरण पर अभिविन्यास कार्यक्रम	प्रत्येक 3 दिन प्रथम चरण 25 से 27 फरवरी, 1989 द्वितीय चरण 27 फरवरी से 1 मार्च, 1989	शिक्षा निदेशालय, 18 पार्क रोड, लखनऊ उत्तर प्रदेश	100+100 =200
	अनुदेशी सामग्री विकास में अभिविन्यास कार्यक्रम			
1.	विभिन्न व्यवसायिक क्षेत्रों में अनुदेशी सामग्री के विकास में विशेषज्ञों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	5 दिन 22 से 26 सितंबर, 1988	हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार	30
2.	विभिन्न व्यवसायिक क्षेत्रों में आदर्श अनुदेशी सामग्री के विकास के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	4 दिन 15 से 19 नवंबर, 1988	बंगलौर	35
	जिला व्यवसायिक सर्वेक्षण के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम			
1.	जिला व्यवसायिक सर्वेक्षण में शीर्ष व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	4 दिन 26 से 29 जुलाई, 1988	रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली	33

1988-89

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	तारीख और अवधि	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या
2.	जिला व्यवसायिक सर्वेक्षण के शीर्ष व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	4 दिन 17 से 20 फरवरी 1989	पणजी (गोआ)	27
	समन्वयक और संदर्भ व्यक्तियों के लिए अभिनवीकरण कार्यक्रम			
1.	शिक्षा व्यवसायीकरण पर आंध्र प्रदेश, पंजाब, हरियाणा और हिमाचल प्रदेश के संदर्भ व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	4 दिन 7 से 10 जून, 1988	राजकीय छात्र महाविद्यालय शिमला	36

प्रकाशन और प्रसार

1988–89 में परिषद् ने अपने विभिन्न विकास कार्यकलापों के द्वारा शिक्षा व्यवसायीकरण के विभिन्न पहलुओं से संबंधित चार प्रकाशन निकाले जिनके नाम इस प्रकार से हैं : (1) व्यावसायिक पाठ्यचर्या के कार्यान्वियन के मूल्यांकन के लिए मार्ग–निर्देशिका (2) मुद्रण तकनीक और पुस्तक की जल्दसाजी में न्यूनतम क्षमता पाठ्यचर्या (3) +2 व्यवसायिक पाठ्यक्रम के लिए लेखा– परीक्षा कार्य के लिए निर्देश पुस्तिका (4) सामान्य आधार पर पाठ्यक्रम की पाठ्यचर्या। ये प्रकाशन उन संस्थानों/अभिकरणों के पास उपलब्ध किये गये हैं जो उच्चतर माध्यमिक व्यवसायीकरण के कार्यक्रमों में जुटे हुए हैं।

परामर्श सेवाएँ

अन्य चलाये जा रहे कार्यों में से एक कार्य के रूप में परिषद् राज्य सरकारों और अन्य अभिकरणों व सम्मेलनों आदि में प्रतिभागिता के रूप में परामर्श सेवाएँ उपलब्ध कराती है। शिक्षा व्यवसायीकरण के क्षेत्र में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.), इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय, अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, ओपन स्कूल और केन्द्रीय विद्यालय आदि संगठनों ने परिषद् की सुविज्ञता से लाभ उठाया।

1988-89

आठ

अध्यापक शिक्षा

सेवा-पूर्व और सेवाकालीन शिक्षा का सुधार करना और विद्यालय के अध्यापकों को प्रशिक्षण देना रा.शै.अ.प्र.प. का एक मुख्य कार्य रहा है। प्रारंभिक और माध्यमिक अध्यापकों के शिक्षा कार्यक्रमों में सुधार लाने के लिए अनुसंधान एवं प्रायोगिक अध्ययन करना, अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या का पुनरीक्षण करना, अध्यापक प्रशिक्षकों, अध्यापक प्रशिक्षार्थियों और सेवा कालीन अध्यापकों के प्रयोग के लिए अनुदेशी सामग्रियाँ तैयार करना, अध्यापक शिक्षा की पुनः संरचना और पुनर्गठन की केन्द्रीय प्रायोजित योजना के कार्यान्वयन के लिए तकनीकी सहायता प्रदान करना और अध्यापक–शिक्षकों तथा सेवा कालीन अध्यापकों को प्रशिक्षित/अभिनवीकृत करना राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा और विस्तार सेवा विभाग के कुछ मुख्य कार्यकलाप हैं।

अनुसंधान

वर्ष 1988–89 में अध्यापन के शिक्षण मॉडलों में माध्यमिक अध्यापक शिक्षकों और बी.एड. के विद्यार्थी–अध्यापकों के प्रशिक्षण की विभिन्न विधियों की क्षमता से संबंधित प्रभाव को सुनिश्चित करने के लिए अनुसंधान अध्ययन की रिपोर्ट प्रकाशित की गई। यह अध्ययन शिक्षा संकाय, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर के सहयोग से किया गया। देश के 8 राज्यों के 12 अध्यापक शिक्षा महाविद्यालयों में यह अध्ययन किया गया। अध्ययन के लिए 42 अध्यापक शिक्षकों और 208 छात्र अध्यापकों के नमूने समाविष्ट किये गये ।

आलोच्य वर्ष में पूर्व प्राथमिक, प्रारंभिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक अध्यापकों के शैक्षणिक,आर्थिक, व्यवसायिक और सामाजिक स्तर का अध्ययन किया गया। इस अध्ययन से यह पता लगा है कि प्राथमिक अध्यापकों की तुलना में उच्च प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तरों पर काम करने वाले अधिकतर अध्यापकों की राज्य सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम शैक्षिक योग्यता है। उच्चतर प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों के अधिकतर अध्यापक प्रशिक्षित थे जबकि पूर्व प्राथमिक अध्यापकों में 50% अप्रशिक्षित थे। अध्ययन से आगे पता लगा है कि कम वेतन, सेवा कार्य की असंतोषजनक शर्तें, प्रोन्नति और जीवन–वृत्ति प्रगति के सीमित अवसरों आदि के कारण भारत में अध्यापकों का वर्तमान स्तर कम है।

अध्यापक शिक्षा में प्राथमिक और माध्यमिक अध्यापक शिक्षकों में अनुसंधान को प्रोत्साहिन करना एक महत्वपूर्ण क्षेत्र

है। अध्यापक शिक्षा संस्थानों में अनुसंधान को बढ़ावा देने के उद्देश्य से तीन कार्यशालाएँ आयोजित की गईं। इन कार्यशालाओं में 100 से अधिक अनुसंधान अध्ययनों को विकसित करने के लिए अनुसंधान डिजाइन बनाये । पहली कार्यशाला अनुसंधान परियोजना के नियोजन और डिजाइन पर 29 अगस्त से 3 सितंबर, 1988 को नई दिल्ली में आयोजित की गई। इस कार्यशाला में 34 अध्यापक प्रशिक्षकों ने भाग लिया। दूसरी कार्यशाला प्राथमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में अनुसंधान और प्रयोगों को प्रोत्साहन देने के लिए 23 से 28 फरवरी, 1988 तक पटना में की गई। इस कार्यशाला में 37 अध्यापक प्रशिक्षकों ने भाग लिया। तीसरी कार्यशाला अनुसंधान परियोजना के नियोजन और डिजाइन पर 6 से 10 फरवरी, 1989 को सेलम, तमिलनाडु में आयोजित की गई। इस कार्यशाला में 39 अध्यापक प्रशिक्षकों ने भाग लिया।

प्राथमिक और माध्यमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों की ओर से अध्यापक प्रशिक्षकों में नवाचार को प्रोत्साहन देने की एक कड़ी के रूप में रा.शै.अ.प्र.प. प्रति वर्ष संगोष्ठी पाठमालाएँ की अखिल भारतीय प्रतियोगिता का आयोजन करती है। इस प्रतियोगिता में राष्ट्रीय स्तर पर चयनित लेखों के लिए एक–एक हजार रुपये के 30 नकद पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं। इसमें 20 नकद पुरस्कार प्राथमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत अध्यापक प्रशिक्षकों और 10 नकद पुरस्कार माध्यमिक स्तर के अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत अध्यापक प्रशिक्षकों को प्रदान किये जाते हैं। अध्यापक प्रशिक्षकों की ''संगोष्ठी पाठमालाएँ'' की चौदहवीं और पन्द्रहवीं अखिल भारतीय प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं के लिए एक राष्ट्रीय संगोष्ठी दिनांक 31 मार्च से 1 अप्रैल, 1989 को क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर में आयोजित की गई। राष्ट्रीय संगोष्ठी में 21 पुरस्कार प्राप्त चयनित लेखों को पढ़ा गया और पुरस्कार विजेताओं द्वारा उन पर चर्चा की गई। लेखों में विज्ञान शिक्षण विधि, गणित, भाषा, सामाजिक अध्ययन और इलेक्ट्रोनिक्स, मूल्य शिक्षा, राष्ट्रीय एकता, पुस्तकालय व्यवस्था की कार्य प्रणाली आदि मुख्य विषय थे ।

अनुदेशी/प्रशिक्षण सामग्रियों का विकास

परिषद् ने अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों से संबंधित विभिन्न पाठ्यचर्या के मार्ग–निर्देशिका और पाठ्यविवरणों के विकास के लिए कार्यकलाप आरंभ किये। प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण और विद्यालय अनुभव के लिए मार्गनिर्देशिका को 27 फरवरी से 7 मार्च, 1989 तक दिल्ली में आयोजित एक कार्यशाला में तैयार किया गया। इस कार्यशाला में 17 विशेषज्ञों ने भाग लिया। प्राथमिक अध्यापक शिक्षासंस्थानों के लिए विद्यालय अनुभव कार्यक्षमता, (विद्यार्थी शिक्षण) पर मार्गनिर्देशिका को तैयार करने के लिए राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, गुड़गांव में एक अन्य कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में 20 अध्यापक शिक्षकों ने भाग लिया।

स्वतः आधारित और विद्यालय आधारित सेवा कालीन शिक्षा और प्रशिक्षण देने हेतु मार्ग निर्देशिका का विकास करने के लिए 26 जनवरी से 2 मार्च, 1989 तक अमीनी लक्षद्वीप में एक कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में लक्षद्वीप के 28 प्राथमिक अध्यापकों ने भाग लिया।

अध्यापक शिक्षा की पुनः संरचना और पुनर्गठन योजना को तकनीकी सहायता

परिषद् केंद्रीय प्रायोजित अध्यापक शिक्षा की पुनः संरचना और पुनर्गठन योजना के कार्यान्वयन में, विशेष रूप से निम्नलिखित चार घटकों के कार्यान्वयन में मानव संसाधन विकास मंत्रालय और राज्य/संघ शासित क्षेत्रों को तकनीकी सहायता देती रही है।

1. विद्यालय अध्यापकों को सामूहिक अभिविन्यास कार्यक्रम (पी.एम.ओ.एस.टी.)
2. जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थानों (डी.आई.ई.टी.) की स्थापना करना।
3. अध्यापक शिक्षा महाविद्यालयों (सी.टी.ई.) का संवर्द्धन और इनमें से कुछ को शैक्षिक उच्च अध्ययन संस्थान (आई.ए.एस.ई.) के रूप में उन्नयन करना।

4. राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एस.सी.ई.आर.टी.) का संवर्द्धन

इन चार घटकों के संबंध में किए गए अभिविन्यास कार्यकलापों का विवरण निम्नांकित हैं :

विद्यालय-अध्यापकों का सामूहिक अभिविन्यास कार्यक्रम (पी.एम.ओ.एस.टी.)

विद्यालय के सामूहिक अभिविन्यास कार्यक्रम (पी.एम.ओ.एस.टी.) के अंतर्गत रा.शै.अ.प्र.प. और राज्य सरकार द्वारा पाँच लाख विद्यालय अध्यापकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित होता रहा है. जिससे अध्यापकों में प्रेरणा और व्यवसायिक कौशल को बढ़ावा मिले ताकि वे स्कूल स्तर पर पुनः अभिविन्यास और प्रक्रिया में प्रमुख भूमिका निभा सकें। वर्ष 1988 के प्राथमिक और माध्यमिक अध्यापकों को प्रशिक्षित करने के लिए 9,113 शिविर लगाये गये। इन शिविरों में 4,39,261 अध्यापकों ने भाग लिया जिसमें 2,97,977 प्राथमिक और 1,41,284 उच्च.. प्राथमिक और माध्यमिक स्तर के अध्यापकों को प्रशिक्षित किया गया। अध्यापक प्रशिक्षण शिविरों को आयोजित करने में 10,300 संदर्भ व्यक्ति शामिल थे।

अभिविन्यास कार्यक्रम की विषयवस्तु की वर्ष 1986 और 87 के दौरान प्राप्त अनुभवों के आधार पर समीक्षा की गई। पश्चय पोषण (फीडबैक) के आधार पर वर्ष 1988 के अभिविन्यास कार्यक्रम की विषय वस्तु की पुनः अभिकल्पना की गई ताकि इससे राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 1986 के प्रमुख बलों के बारे में जानकारी देने वाले घटकों के अतिरिक्त विभिन्न पाठ्यचर्या के क्षेत्रों से संबंधित व्यवसायिक क्षमता को उन्नत करना सम्मिलित किया जा सके। इस प्रयोजन के लिए प्राथमिक विद्यालय अध्यापकों और माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों के लिए अलग–अलग संशोधित प्रशिक्षण पैकेज के खंड तैयार किये गये। अभिविन्यास/प्रशिक्षण शिविरों के पाठ्यक्रमों निदेशकों और संदर्भ व्यक्तियों के लिए मार्ग निर्देशिका तैयार की गई। इसके अतिरिक्त संदर्भ व्यक्तियों द्वारा दूरदर्शन प्रसारण के प्रभावी उपयोग के लिए मार्गनिर्देशिका बनाई गई। अभिविन्यास कार्यक्रम को दूरदर्शन प्रसारण द्वारा मजबूत करने के लिए उभरती हुई पाठ्यचर्या के विषयों से संबंधित कुछ नये कार्यक्रम भी शामिल किये गये।

वर्ष 1988 के आयोजित अभिविन्यास कार्यक्रमों का तीन विश्वविद्यालयों कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, पटना विश्वविद्यालय और पाण्डीचेरी विश्वविद्यालय द्वारा मूल्यांकन करवाया गया। पी.एम.ओ.एस.टी. के कार्यान्वियन समीक्षा के लिए 26 से 28 अक्तूबर 1988 को नई दिल्ली में एक राष्ट्रीय समीक्षा बैठक का आयोजन किया गया। मूल्यांकन की रिपोर्ट दिये गए सुझावों पर आधारित और राष्ट्रीय समीक्षा बैठक में वर्ष 1989 के दौरान प्रस्तावित अभिविन्यास कार्यक्रमों की विषयवस्तु को अध्यापकों की आवश्यकताओं के अनुरूप और संशोधित किया गया।

6 जनवरी से 11 जनवरी, 1989 को रा.शै.अ.प्र.प. हरियाणा में एक कार्यशाला का आयोजन उन कार्यकलापों की पहचान के लिए किया गया जिसे अध्यापक 1989 में पी.एम.ओ.एस.टी. के अतंर्गत होने वाले अभिविन्यास शिविरों में कर सके। इनमें 101 अध्यापकों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त पी.एम.ओ.एस. टी. के मूल्यांकन का डिजाइन बनाने और मूल्यांकन – अध्ययनों के लिए उपकरणों को तैयार करने हेतु मार्ग निर्देशिका तैयार करने के लिए 23 से 28 जनवरी, 1989 को क्षे.शि.म.मैसूर में एक विशेष दल की बैठक हुई। बैठक में विश्वविद्यालयों के शिक्षा विभागों के 13 प्रोफेसरों ने भाग लिया।

डी.आई.ई.टी. की स्थापना

अध्यापक शिक्षा की पुनः रचना और पुनर्गठन पर केंदीय प्रायोजित योजना देश में प्राथमिक शिक्षा और प्राथमिक अध्यापक शिक्षा के गुणात्मक सुधार के लिए 400 डी.आई.ई.टी. का गठन आधार भूत संस्थान के रूप में करने पर विचार कर रही है। प्राथमिक अध्यापकों को सेवा पूर्व और सेवा कालीन शिक्षा प्रदान करने के लिए अतिरिक्त डी. आई.ई.टी. को अनौपचारिक और प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रमों में लगे हुए कार्मिकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित करना है।

परियोजना के प्रतिपादन एवं डी.आई.ई.टी. के स्थापना हेतु

प्रारूप के तौर पर इंडियन एजूकेशनल कन्सल्टेंट लिमिटेड द्वारा मार्ग निर्देशिका तैयार की गई। डी.आई.ई.टी. के स्थापना हेतु परियोजनाओं के प्रतिपादन में राज्यों से प्राप्त पश्चपोषण (फीडबैक) के आधार पर रा.शै.अ.प्र.प. को इंडियन एजूकेशनल कन्सल्टेन्ट लिमिटेड द्वारा तैयार किए गए प्रारूप मार्ग निर्देशिका को संशोधित करने का काम सौंपा गया। डी.आई.ई.टी. की दस्तावेज की समीक्षा एवं संशोधन के लिए 26 और 27 जुलाई, 1988 को एक कार्यकारी दल की बैठक की गई। परियोजना प्रतिपादन और डी.आई.ई.टी. की स्थापना के लिए संशोधित मार्ग निर्देशिका दस्तावेज परिषद् द्वारा तैयार किया गया था। डी.आई.ई.टी. के विभिन्न पहलुओं पर संशोधित मार्ग निर्देशिका तैयार करने के संबंध में कार्य के एक अंश के रूप में, परिषद् ने डी.आई.ई.टी. के लिए संदर्भ समाग्री के रूप में प्राथमिक अध्यापक शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों के लिए अंग्रेजी और हिंदी में पुस्तकों की प्रस्तावित सूची तैयार की है। परिषद् ने डी.आई.ई.टी. की आवश्यकता के अनुसार उपकरण और फर्नीचर की एक प्रस्तावित सूची भी तैयार की है।

परिषद् ने डी.आई.ई.टी. के स्टाफ के लिए आयोजित किये जाने वाले प्रस्तावित प्रेरक पाठ्यक्रम की अभिकल्पना का विकास करने का काम भी हाथ में लिया। डी.आई.ई.टी. संकाय के लिए प्रेरक पाठ्यक्रम की विषयवस्तु तैयार करने के लिए कार्यकारी दल की बैठक 2 और 3 मार्च, 1989 को नई दिल्ली में की गई और पाठ्यक्रम का प्रारूप तैयार किया गया।

अध्यापक शिक्षा कालेज (सी.टी.ई.) का संवर्द्धन करना

केंद्रीय प्रायोजित अध्यापक शिक्षा की पुनः रचना और पुनर्गठन योजना 250 कालेजों के संवर्द्धन और उनमें से कुछ का शिक्षा में उच्च अध्ययन संस्थानों (आई.ए.एस.ई.) में उन्नयन पर विचार कर रही है। इंडियन एजूकेशन कन्सल्टेन्ट लिमिटेड ने योजना के इस घटक से संबंधित प्रारूप मार्ग निर्देशिका तैयार की थी। मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार के अनुरोध पर रा.शै.अ.प्र.प. ने सी.टी.ई./आई.ए.एस.ई. के दस्तावेजों को संशोधित करने और अध्यापक शिक्षा कालेजों के संवर्द्धन तथा उनमें से कुछ को आई.ए.एस.ई. में परिवर्तित करने के लिए विस्तृत मार्ग निर्देशिका तैयार करने का दायित्व लिया। इस अवधि के दौरान परिषद ने सी.टी.ई./आई.ए.एस.ई. पर दस्तावेज के संशोधन करने और अध्यापक शिक्षा महाविद्यालयों के संवर्द्धन तथा उनमें से कुछ को आई.ए.एस.ई. में परिवर्तित करने के लिए विस्तृत मार्ग निर्देशिका तैयार करने का दायित्व लिया। इस अवधि के दौरान परिषद ने सी.टी.ई/आई.ए.एस.ई. पर दस्तावेज के संशोधन से संबंधित कुछ कार्यकलापों को किया।

रा.शै.अ.प्र.प. का संवर्द्धन

रा.शै.अ.प्र.प. को संवर्द्धन देने के लिए मार्ग निर्देशिका तैयार करने से संबंधित कार्य के रूप में परिषद् ने एक एप्रोच पेपर तैयार किया। रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा तैयार एप्रोच पेपर मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार को प्रस्तुत किया गया।

प्रशिक्षण/अभिविन्यास कार्यक्रम

परिषद् ने विद्यालयी अध्यापकों का सामूहिक कार्यक्रम (पी.एम.ओ.एस.टी.) के अतिरिक्त अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए कुछ अभिविन्यास/प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किये। इन कार्यक्रमों का विस्तृत ब्यौरा तालिका 8.1 में दिया है ।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.)

रा.शै.अ.प्र.प. राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.) के लिए एक सचिवालय के रूप में काम कर रही है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् की अपनी साधारण सभा है जिसके अध्यक्ष केंद्रीय मानव संसादन विकास मंत्री हैं, इसकी अपनी एक संचालन समिति है जिसके अध्यक्ष राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद के सदस्य सचिव हैं और तीन शैक्षिक स्थायी समितियाँ हैं जिनके अध्यक्ष संबद्ध क्षेत्रों के विशेषज्ञ हैं। यद्यपि अध्यापक शिक्षा संबंधी विषयों और समस्याओं की चर्चा करने के लिए शैक्षिक समिति की बैठक अकसर होती रहती है, स्थायी समिति की सिफारिशों पर विचार करने पर और नीति के मामलों पर

1988-89

तालिका 8.1

वर्ष 1988-89 के दौरान अध्यापक शिक्षकों के लिए आयोजित अभिविन्यास/प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	तारीख	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या
1.	शिक्षण के माडल पर अभिविन्यास कार्यक्रम	21 से 26 नवंबर, 1988	गोरखपुर	31
2.	प्राथमिक अध्यापक शिक्षकों के लिए सूक्ष्म शिक्षण पर अभिविन्यास कार्यक्रम	26 से 31 दिसंबर, 1988	वास्को दा–गामा	45
3.	विद्यालय आधारित सेवा पूर्व शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए योजना और प्रक्रिया तैयार करने के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	6 से 10 फरवरी, 1989	पाण्डीचेरी	20

व्यापक मार्गनिर्देश और सिफारिश करने के लिए परिषद की बैठक वर्ष में केवल एक बार होती है। कार्यशालाओं, संगोष्ठियों अभिविन्यास कार्यक्रमों, कार्यकारी दलों और विशेषज्ञ दलों की बैठकों आदि की सहायता से शैक्षिक कार्यक्रमों जैसे – पाठ्यचर्या विकास, पाठ्यचर्या सामग्री का निर्माण, प्रवेश नीति और मूल्यांकन आदि को राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा द्वारा की नई सिफारिशों के अनुसार आयोजित किया जाता है।

वर्ष 1988–89 में राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद के तत्वावधान में अनेक कार्यकलाप किये जिसमें कुछ निम्नलिखित हैं।

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद की सांविधिक अवस्थिति के लिए बिल का मसौदा

राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद की सांविधिक अवस्थिति के अनुसार बिल का मसौदा तैयार हो चुका है और वर्ष 1988–89 में कई बैठकों में इसके संबंध में विचार विमर्श किया गया है जिसमें मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग) भारत सरकार के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया।

अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या एक रूपरेखा

वर्ष 1978 में रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा प्रकाशित अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्याएक रूपरेखा के कार्यान्वियन के अनुभव को एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति और प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा पाठ्यचर्या – एक रूपरेखा से उत्पन्न विषयों को प्रतिबिंबित करने के लिए इस दस्तावेज को अद्यतन बनाने के लिए पुनर्विचार करने की आवश्यकता महसूस की गई थी। इस कार्य के लिए बनाये गये कार्यकारी दलों ने मई और जून, 1988 में अपनी बैठकें की थीं। इस दस्तावेज के मसौदे को दिसंबर, 1988 में एक राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत किया गया जिसने इसका अनुमोदन

1988-89

एन.सी.टी.ई. की साधारण सभा के समक्ष रखने के लिए किया।

संशोधित पाठ्यचर्या रूपरेखा अध्यापक शिक्षा के परिवर्तनशील संदर्भों और परिप्रेक्ष्यों, विभिन्न स्तरों पर अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के उद्देश्यों और सेवा पूर्व अध्यापक शिक्षा के लिए बनाई गई पाठ्यचर्या की अभिकल्पना के लिए सुझावों को प्रतिबिंबित करती है। अध्यापक शिक्षा को अधिक कार्य अभिमुख और क्षेत्र आधारित बनाने के लिए प्रत्येक स्तर पर पाठ्यचर्या की अभिकल्पना, आधार भूत पाठ्यक्रम, स्तरानुसार प्रासंगिक अतिरिक्त विशेषताएँ और उचित वेटेज सहित प्रयोगात्मक/क्षेत्रकार के अंतर्गत की गई है। पाठयचर्या को कार्य संपादित करने की प्रणाली का भी उल्लेख किया है। इस दस्तावेज में संशोधित पाठयचर्या में कार्यान्वियन के लिए आवश्यक मुख्य निवेशों और विधियों का सुझाव है।

अध्यापक शिक्षा संस्थानों में प्रवेश प्रक्रिया

देश में प्रायमिक और माध्यमिक अध्यापक शिक्षा संस्थानों द्वारा अपनाई जाने वाली वर्तमान शिक्षा प्रक्रिया पर समीक्षा करने के लिए कार्यकारीदलों की एक बैठक 1 से 4 नवंबर, 1988 को शिक्षा विभाग, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर में हुई। इस दल ने प्रवेश प्रक्रिया का खाका (ब्लयू प्रिंट), बनाया जिसमें विद्यालयी विषयों के ज्ञान के परख से संबंधित घटकों, संप्रेषण योग्यता, भारत की समकालीन समस्याओं की समझ आदि शामिल किया।

अध्यापक शिक्षा एकीकृत कार्यक्रम

एकीकृत कार्यक्रमों हेतु पाठ्यचर्या पर विचार विमर्श करने के लिए 11 से 13 मई, 1989 को क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भोपाल में कार्यकारी दल की एक बैठक हुई। इस समिति में 6 व्यवहारिक एवं वैकल्पिक मॉडलों पर विस्तार से विचार विमर्श किया जिन्हें समेकित कार्यक्रमों विशेषतः माध्यमिक अध्यापकों के लिए चार वर्षीय पाठ्यक्रमों के कार्यान्वियन के लिए परखा जा सकता था और इस समिति ने कार्यक्रम के कार्यान्वियन को सुसाध्य बनाने की प्रणालियों की सिफारिश की।

+2 स्तर पर अध्यापक शिक्षा

+2 स्तर के छात्रों की विशिष्टताएँ आरंभिक स्तरों से भिन्न हैं। अतः +2 स्तर के अध्यापकों के लिए अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम को विकसित करने की आवश्यकता महसूस की गई। +2 स्तर के अध्यापकों के लिए उचित कार्यक्रम तैयार करने के लिए एन.सी.टी.ई. समिति की एक बैठक 18 से 20 जुलाई, 1989 को राज्य शिक्षा संस्थान, श्रीनगर में हुई। समिति ने +2 स्तर के अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए विभिन्न मॉडलों पर विस्तारपूर्वक विचार विमर्श किया

विशेष अध्यापक शिक्षा समिति की बैठक

एन.सी.टी.ई. की विशेष अध्यापक शिक्षा समिति की बैठक ने विशेषअध्यापक/अध्यापक शिक्षकों की शिक्षा के क्षेत्र के मुद्दों और समस्याओं पर विचार विमर्श करने के लिए 27 जनवरी 1989 को नई दिल्ली में एक बैठक की। समिति ने यह सुझाव दिया कि एक से अदिक प्रकार के विकलांगों की शिक्षा के अध्यापकों को तैयार करने के लिए बहुश्रेणी प्रशिक्षणकार्यक्रम बनाना चाहिए, और प्रायोगिक आधार पर परख की जाये। यह सुझाव दिया गया कि कार्यक्रम का मूल्यांकन किया जाये और यदि प्रभावी पाया जाये तभी उसके विस्तार पर विचार किया जाए। समिति ने विशेष शिक्षा में अध्यापक शिक्षकों के सेवा कालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम और विशेष शिक्षा में अध्यापक प्रशिक्षण के लिए संदर्भ सामग्री के विकास पर विचार किया ।

माध्यमिक और कालेज अध्यापक शिक्षा समिति की बैठक

देश के माध्यमिक अध्यापक शिक्षा से संबंधित विभिन्न विषयों पर चर्चा करने के लिए 3 मार्च, 1989 को नई दिल्ली में एन.सी.टी.ई. समिति की माध्यमिक और कालेज अध्यापक शिक्षा पर एक बैठक की गई। इस बैठक में एक विषय पत्राचार द्वारा बी.एड. करने पर गहराई से विचार–विमर्श किया गया। ऐसा

सुझाव दिया गया कि दूरस्थ शिक्षा के विकास की प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए बी.एड. उपाधि के पत्राचार पाठ्यक्रम के विषय पर और व्यापक संदर्भ से समीक्षा की जाये। यद्यपि समिति ने दोहराया कि शिक्षक में पहली व्यवसायिक उपाधि विशेषतया नियमित रूप से आमने–सामने आधार पर होनी चाहिए, परंतु ऐसा अनुभव किया गया कि इस मुद्दे पर पुनः जाँच होनी चाहिए।

1988–89 में एन.सी.टी.ई. बैठकों का विस्तृत ब्यौरा तालिका 8.2 में दिया गया है।

प्रकाशन

1988–89 में रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा अध्यापक शिक्षा से संबंधित निम्नलिखित प्रकाशनों को प्रकाशित किया गया।

1. उभरते भारतीय समाज में अध्यापक और शिक्षा

टीचर एण्ड एजूकेशन इन दी एमर्जिंग इंडियन सोसाइटी (प्राथमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों के अध्यापक प्रशिक्षुओं और अध्यापक शिक्षकों के प्रयोग के लिए पाठ्यपुस्तक)

2. बी.एड. में प्रवेश के लिए उपकरण – उनकी भविष्यसूचक दक्षता

(टूल्स फॉर बी.एड. एडमीशन देयर प्रीडीक्टिव एफिशेन्सी)

तालिका 8.2

1988–89 में आयोजित एन.सी.टी.ई. की बैठकें

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	तारीख और अवधि	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या
1.	एन.सी.टी.ई. अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या की पुनर्विचार समिति की बैठक	2 से 4 मई 1988	एम.एस. विश्वविद्यालय बड़ौदा	6
2.	चार वर्षीय अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के कार्यकारी दलों की बैठक	11 से 13 मई 1988	क्षे.शि.म. भोपाल	14
3.	एन.सी.टी.ई. अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या संरचना के लिए मसौदा समिति की बैठक	16 से 18 जून, 1988	मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर	6
4.	+ 2 स्तर के लिए अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम तैयार करने की समिति के लिए बैठक	18 से 20 जुलाई, 1988	एस.आई.ई. श्रीनगर (ज.और क.)	7
5.	अध्यापक शिक्षा संस्थानों में प्रवेश हेतु चुनने के लिए चुनाव के मापदंड की एन.सी.टी.ई. समिति की बैठक	1 से 4 नवंबर, 1988	देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर	12

1988-89

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	तारीख और अवधि	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या
6.	राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या एक संरचना को अंतिम रूप देना	15 से 16 दिसंबर, 1988	रा.शि.सं. परिसर नई दिल्ली	7
7.	विशेष अध्यापक शिक्षा पर एन.सी.टी.ई. समिति की 10 वीं बैठक	27 जनवरी 1989	रा.शि.सं. परिसर, नई दिल्ली	13
8.	माध्यमिक और कालेज अध्यापक शिक्षा पर एन.सी.टी.ई. समिति की बैठक	3 मार्च, 1989	रा.शि.सं. परिसर, नई दिल्ली	18

1988-89

नौ

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों का एक मुख्य कार्य सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा के नवाचार कार्यक्रमों को विकसित करना है। ये महाविद्यालय, विद्यालय शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के विभिन्न पहलुओं से संबंधित अनुसंधान अध्ययन, अध्यापक शिक्षकों, अध्यापकों और अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों के प्रयोग के लिए अनुदेशी सामग्रियों के विकास और विद्यालय शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के गुणात्मक सुधार के लिए प्रशिक्षण और विस्तार के कार्यकलाप करने में लगे हैं।

प्रत्येक क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय (क्षे.शि.म.) अपने राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों की शिक्षा संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। अजमेर का क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्यों और दिल्ली एवं चंडीगढ़ संघ शासित क्षेत्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। भोपाल का क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय गोवा, गुजरात, मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र राज्यों और दादर और नागर हवेली तथा दमन और दीव संघ शासित क्षेत्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। अरूणाचल प्रदेश, असम, बिहार, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय, नागालैण्ड, उड़ीसा, सिक्किम, त्रिपुरा राज्यों और अण्डमान एवं निकोबार द्वीप संघशासित क्षेत्रों की आवश्यकताओं की पूर्ति क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भुवनेश्वर द्वारा पूरी की जाती है जबकि आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु राज्यों और लक्षद्वीप और पाण्डीचेरी संघ शासित क्षेत्रों की पूर्ति क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय मैसूर द्वारा की जाती है।

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर बी.एस.सी. (आनर्स/पास) बी.एड. डिग्री के लिए विज्ञान शिक्षा में चार वर्षीय समेकित पाठ्यक्रम; विज्ञान/कृषि/वाणिज्य/भाषा (अंग्रेजी, हिंदी, उर्दू) में विशिष्टीकरण के साथ बी.एड. डिग्री के लिए एक वर्षीय पाठ्यक्रम; विज्ञान/वाणिज्य/भाषा में विशिष्टीकरण के साथ एक वर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम और बी.एड. डिग्री के लिए एक पत्राचार पाठ्यक्रम चलाता है। महाविद्यालय में शिक्षा और विज्ञान में पी एच.डी. के विद्यार्थियों को पंजीकृत कराने की भी व्यवस्था है।

नामांकन

वर्ष 1988–89 में विभिन्न पाठ्यक्रमों में छात्रों के नामांकन

1988-89

का विवरण तालिका 9.1 और 9.2 में दिया गया है।

परीक्षा - फल

क्षे.शि.म. अजमेर के विभिन्न पाठ्यक्रमों में विद्यार्थियों के परीक्षा फल तालिका 9.3 में दिये गए हैं।

विस्तार सेवाएँ

महाविद्यालय के विस्तार विभाग ने अपने अंतर्गत आने वाले राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों की आवश्यकताओं और मांगों को ध्यान में रखते हुए विद्यालय शिक्षा और अध्यापक–शिक्षा से संबंधी विभिन्न क्षेत्रों पर कार्यशालाएँ/बैठकें/संगोष्ठियाँ आयोजित कीं। वर्ष 1988–89 में आयोजित किए गए कार्यक्रमों को तालिका 9.4 और 9.5 में दिया गया है।

प्रकाशन

महाविद्यालय अनुसंधान रिपोर्ट, मोनोग्राफ और जरनल प्रकाशित करता है। महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित दो जरनल निम्नलिखित हैं :

1. ''द एजूकेशनल ट्रैण्ड'' एक अनुसंधान जरनल है जो अर्द्ध–वार्षिक है।
2. ''स्कूल साइन्स रिसोर्स लैटर'' – त्रैमासिक प्रकाशित होता है।

रजत जयन्ती

महाविद्यालय ने दिनांक 22 दिसंबर, 1988 को अपना रजत जयन्ती समारोह मनाया। महामहिम श्री सुखदेव प्रसाद, राजस्थान के राज्यपाल ने समारोह की अध्यक्षता की। डा.के.एल. श्रीमाली, भूतपर्व केन्द्रीय शिक्षामंत्री ने मुख्य अभिभाषण दिया। प्रो.आर.बी. उपाध्याय, कुलपति, अजमेर विश्वविद्यालय ने अतिथियों का स्वागत किया और प्रो.पी.एल. मल्होत्रा, निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प. ने धन्यवाद दिया। इस समारोह में राज्य के शिक्षाविद उपस्थित थे।

तालिका 9.1

1988–89 में क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर में सेवा पूर्व पाठ्यक्रमों का राज्यशः नामांकन

क्र.सं.	पाठ्यक्रम	राज.	उ.प्र.	पंजाब	हरि.	हि.प्र.	दिल्ली	ज. और क.	चंडी.	कुल
1	बी.एड. विज्ञान	16	19	10	10	6	6	1	–	69
2.	बी.एड. कृषि	5	15	–	–	–	–	–	–	20
3.	बी.एड. वाणिज्य	8	8	2	3	3	3	1	–	28
4.	बी.एड. हिन्दी	9	10	2	5	3	4	1	1	34
5.	बी.एड. अंग्रेजी	8	8	3	2	3	3	1	1	29
6.	बी.एड. उर्दू	15	5	–	–	–	2	–	–	22
7.	प्रथम वर्ष बी.एस सी. (एच/पी बी.एड.)	20	16	4	3	3	8	–	2	75
8.	द्वितीय वर्ष बी.एस सी. (एच.पी.बी.एड.)	–	–	–	–	–	–	–	–	45
9.	तृतीय वर्ष बी.एस सी. (एच/पी.) बी.एड.	–	–	–	–	–	–	–	–	58

क्र.सं.	पाठ्यक्रम	राज.	उ.प्र.	पंजाब	हरि.	हि.प्र.	दिल्ली	ज. और क.	चंडी.	कुल
10.	चतुर्थ वर्ष बी.एस सी. (एच./पी.) बी.एड.	–	–	–	–	–	–	–	–	38
11.	एम.एड. (प्रवेश राज्यशः नहीं किया गया)	–	–	–	–	–	–	–	–	18
									कुल	436

तालिका 9.2

1988–89 सत्र में क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर में सेवापूर्व पाठ्यक्रमों में अ.जा./अ.ज.जा.का नामांकन

क्र.	कक्षा	विद्यार्थियों की संख्या	अ.जा. के विद्यार्थी	अ.ज.जा. के विद्यार्थी
1.	एम.एड.	18	–	–
2.	बी.एड. विज्ञान	69	3	3
3.	बी.एड. कृषि	20	7	2
4.	बी.एड. वाणिज्य	28	4	–
5.	बी.एड. हिन्दी	34	6	3
6.	बी.एड.अंग्रेजी	29	4	–
7.	बी.एड. उर्दू	22	–	–
8.	प्रथम वर्ष, बी.एस सी. (एच./पी) बी.एड.	75	1	–
9.	द्वितीय वर्ष, बी.एस सी. (एच./पी.) बी.एड.	45	3	–
10.	तृतीय वर्ष, बी.एस सी. (एच./पी.) बी.एड.	58	–	1
11.	चतुर्थ वर्ष, बी.एस. सी. (एच./पी). बी.एड.	38	1	–
	कुल	436	29	9

तालिका 9.3

1988-89 में क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर के विभिन्न पाठ्यक्रमों के परीक्षा फल

क्र.सं.	पाठ्यक्रम	परीक्षा में बैठे विद्यार्थियों की संख्या	उत्तीर्ण विद्यार्थी	उत्तीर्ण प्रतिशत
1.	बी.एड. विज्ञान	59	56	94.91
2.	बी.एड. कृषि	24	23	95.83
3.	बी.एड. वाणिज्य	25	22	88.00
4.	बी.एड. अंग्रेजी	27	24	88.08
5.	बी.एड. हिन्दी	33	31	93.93
6.	बी.एड. उर्दू	09	08	88.88
7.	बी.एड. एस.एस.सी.सी.	98	91	92.85
8.	एम.एड.	18	18	100.00
9.	चतुर्थ वर्ष बी.एस सी. (एच. पी.) बी.एड.	48	48	100.00
10.	तृतीय वर्ष बी.एस सी. (एच./पी.) बी.एड.	40	36	90.00
11.	द्वितीय वर्ष बी.एस सी. (एच.पी.) बी.एड.	67	57	85.07
12.	प्रथम वर्ष बी.एस सी. (एच.पी.) बी.एड.	73	45	61.64

तालिका 9.4

वर्ष 1988–89 में क्षे. शि.म., अजमेर द्वारा आयोजित कार्यशाएँ/बैठकें/संगोष्ठियाँ

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	तारीख	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या
1.	10+2 की नई पाठ्यचर्या पर आधारित कक्षा 10 के रसायन के अधिगम – पैकेज का विकास करने के लिए कार्यशाला	26 सितंबर से अक्तूबर, 1988	क्षे.शि.म., अजमेर	25
2.	मूल्य शिक्षा पर कार्यशाला	3 से 8 अक्तूबर, 1988	उदयपुर	32
3.	+2 स्तर पर रसायन–विज्ञान के लिए शिक्षण सहायक सामग्री और मॉडलों को विकसित करना	12 से 17 अक्तूबर 1988	जयपुर	17
4.	+2 स्तर पर भूगोल में नवाचार सामग्रियों का विकास	29 अक्तूबर से 3 नवंबर, 1988	माउंट आबू	22
5.	सहयोगी विद्यालयों के प्राचार्य/प्रधानाचार्यों का सम्मेलन	28 से 29 नवंबर 1988	अजमेर	21

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	तारीख	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या
6.	ज्ञानात्मक विकास को प्रोत्साहिक करने की प्रणालियाँ	5 से 10 दिसंबर 1988	अजमेर	6
7.	स्थानीय साधनों की सहायता से भूगोल शिक्षण	19 से 24 दिसंबर, 1988	जैसलमेर	20
8.	+2 स्तर के व्यवसायिक अध्यापकों के लिए टंकण शिक्षण पर कार्यशाला	5 से 10 दिसंबर, 1988	अजमेर	16
9.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 86	16 से 21 जनवरी, 1989	बनारस, हि.वि. वाराणसी	26
10.	एकीकृत विद्यालय की पारस्परिक सामाजिक प्रभाव के तरीकों के संबंध में नियमित अध्यापक का अभिविन्यास	16 जनवरी से 18 फरवरी, 1989	अजमेर	11
11.	+2 स्तर के व्यवसायिक अध्यापकों के लिए बही-खाता और लेखा-पद्धति सीखने के लिए कार्यशाला	13 से 18 फरवरी, 1989	अजमेर	9
12.	आई.ई.डी. कार्यक्रम चलाने के लिए उत्तरी राज्य के शिक्षा अधिकारियों का अभिविन्यास	20 और 21 फरवरी, 1989	अजमेर	4
13.	गमलों में फूल लगाने की विधि और सौन्दर्यात्मक बागवानी में अध्यापक गाइड की पांडुलिपि तैयार करने के लिए उत्पाद अभिमुख कार्यशाला	20 से 25 फरवरी, 1989	हिसार	12
14.	आई.ई.डी. अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	6 से 15 मार्च 1989	गुड़गांव	14
15.	जाँच की प्रक्रिया से विज्ञान सीखने के लिए प्रशिक्षण सामग्री बनाने की कार्यशाला	9 से 12 मार्च, 1989	अजमेर	17
16.	ग्राम्य विकास के लिए विज्ञान शिक्षा हेतु अभिविन्यास कार्यक्रम	13 से 17 मार्च, 1989	उदयपुर	21
17.	नियमित विद्यालयों में विद्यमान मंद विकलांगता की पहचान के लिए परामर्शदाता और जीवन वृत्ति मास्टर के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	25 से 27 मार्च, 1989	जोधपुर	18
18.	एस.आई.ई./एस.सी.ई.आर.टी. के कार्मिकों के लिए	14 से 15 अप्रैल 1989	अजमेर	4

तालिका 9.5

क्षे.शि.मं., अजमेर द्वारा अन्य अभिकरणों के कार्यक्रमों का आयोजन

क्र.	कार्यक्रम का शीर्षक	अवधि	प्रायोजिक अभिकरण
1.	शैक्षिक प्रौद्योगिक (जन संचार) में आधुनिक अनुसंधान और नवाचार	4 से 6 अक्तूबर 1988	के.शै.प्रौ.सं. रा.शै.अ.प्र.प.
2.	प्रयोगात्मक परियोजना पर कार्यशाला	1 से 6 अक्तुबर 1988	माध्यमिक शिक्षा बोर्ड अजमेर
3.	भौतिकी और जीवविज्ञान में राजस्थान राज्य के वरिष्ठ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के प्राध्यापकों हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए योजना बनाना	2 और 3 नवंबर, 1988	मा.सं. वि. मंत्रालय रा.शै.अ.प्र.प.

1988-89

क्र.	कार्यक्रम का शीर्षक	अवधि	प्रायोजिक अभिकरण
4.	भौतिकी और जीवविज्ञान में राजस्थान राज्य के वरिष्ठ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के प्राध्यापकों के लिए प्रशिक्षण संस्थान	9 से 28 जनवरी 1989	मा.सं.वि. मंत्रालय रा.शै.अ.प्र.प.
5.	आई.ई.डी. कार्यक्रम	26 सितंबर से 2 नवंबर 1988	एस.सी.ई.आर.टी. राजस्थान
6.	एस.यू.पी. डब्ल्यू, कार्यक्रम	13 मार्च से 20 मार्च, 1989	माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर
7.	अनुसंधान विधि पाठ्यक्रम स्तर –1 पर कार्यशाला	27 मार्च से 5 अप्रैल 1989	रा.शै.अ.प्र.प.
8.	अध्यापक शिक्षकों के लिए "संगोष्ठी पाठमालाएँ" की चौदहवीं और पन्द्रहवीं अखिल भारतीय प्रतियोगिता	31 मार्च से 1 अप्रैल, 1989	रा.शै.अ.प्र.प.
9.	राजस्थान और हरियाणा के शीर्ष संदर्भ व्यक्तियों के लिए कार्यक्रम	3 से 7 अप्रैल, 1989	रा.शै.अ.प्र.प.
10.	उत्तर प्रदेश के शीर्ष संदर्भ व्यक्तियों के लिए कार्यक्रम	10 से 14 अप्रैल 1989	रा.शै.अ.प्र.प.
11.	जम्मू कश्मीर और हिमाचल प्रदेश के शीर्ष संदर्भ व्यक्तियों के लिए कार्यक्रम	24 से 28 अप्रैल 1989	रा.शै.अ.प्र.प.
12.	पंजाब, दिल्ली और चंडीगढ़ के शीर्ष संदर्भ व्यक्तियों के लिए कार्यक्रम	17 से 21 अप्रैल 1989	रा.शै.अ.प्र.प.
13.	रसायन और गणित में राजस्थान राज्य के वरिष्ठ उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के प्राध्यापकों के लिए ग्रीष्मकालीन इंस्टीट्यूट	5 से 24 मई, 1989	मा.सं.वि.सं. रा.शै.अ.प्र.प.
14.	आई.ई.डी. कार्यक्रम	25 मई से 3 जुलाई 1989	एस.आई.ई.आर.टी. राजस्थान
15.	रसायन, गणित, जीवविज्ञान, भौतिकी विषय में राजस्थान राज्य के वरिष्ठ उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के लिए ग्रीष्मकालीन इस्टीट्यूट	7 जून से 5 जुलाई, 1989	मा.सं.वि. मंत्रालय रा.शै.अ.प्र.प.
16.	मा.सं.वि. मंत्रालय की परियोजना ग्रीष्मकालीन इंस्टीट्यूट के लिए उत्तर प्रदेश के शीर्ष संदर्भ व्यक्तियों के लिए प्रशिक्षण.	10 से 12 अप्रैल, 1989	मा.सं.वि. मंत्रालय रा.शै.अ.प्र.प
17.	मा.सं.वि. मंत्रालय परियोजना के अंतर्गत ग्रीष्मकालीन इंस्टीट्यूटों के लिए शीर्ष संदर्भ व्यक्तियों को प्रशिक्षण	25 से 27 अप्रैल 1989	मा.सं.वि.मंत्रायल रा.शै.अ.प्र.प.
18.	पर्यावरण संरक्षण में जिला स्तर के अधिकारियों का प्रशिक्षण	मार्च, 1989	राजस्थान सरकार

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भोपाल

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भोपाल में बी.एस सी.बी.एड. डिग्री के विज्ञान शिक्षा में चार वर्षीय समेकित पाठ्यक्रम, बी.ए.बी.एड. डिग्री के लिए अंग्रेजी में चार वर्षीय समेकित पाठ्यक्रम, विज्ञान/वाणिज्य में विशिष्टीकरण के साथ एक वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम, प्रारंभिक शिक्षा में विशिष्टीकरण के साथ एक वर्षीय, बी.एड. पाठ्यक्रम और विज्ञान शिक्षा, शैक्षिक प्रशासन और मार्गदर्शन में विशिष्टीकरण के साथ एक वर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम।

नामांकन

वर्ष 1988–89 के शैक्षिक सत्र में विभिन्न पाठ्यक्रमों में किए गये नामांकन का विवरण तालिका 9.6 से 9.8 में दिया गया।

1988-89

परीक्षाफल

1988–89 के शैक्षिक सत्र में विभिन्न पाठ्यक्रमों में छात्रों के परीक्षाफल तालिका 9.9. में दिए गए हैं।

प्रशिक्षण/अभिविन्यास कार्यक्रम

1988–89 में महाविद्यालय ने 45 कार्यक्रमों का आयोजन किया। आयोजित कार्यक्रमों की सूची तालिका 9.10 और 9.11 में दी गई है।

तालिका 9.6
क्षे.शि.म., भोपाल में सेवापूर्व पाठ्यक्रमों का नामांकन

			वर्ष के क्रम से नामांकन				
क्र.सं.	पाठ्यक्रम	अवधि	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ	कुल
1.	बी.एस सी.बी.एड.	4 वर्ष	73	44	64	56	237
2.	बी.एस सी.बी.एड.	4 वर्ष	31	27	27	22	107
3.	बी.एड विज्ञान	एक वर्ष	63	–	–	–	63
4.	बी.एड. वाणिज्य	एक वर्ष	44	–	–	–	44
5.	बी.एड. (प्राथमिक शिक्षा)	एक वर्ष	44	–	–	–	44
6.	एम.एड. प्राथमिक	एक वर्ष	12	–	–		12
7.	एम.एड. (प्राथमिक शक्षा)	एक वर्ष	10	–	–	–	10
	कुल						517

तालिका 9.7
क्षे.शि.म., भोपाल में सेवापूर्व पाठ्यक्रमों का राज्यशः नामांकन

				राज्यशः नामांकन			
क्र.सं.	पाठयक्रम	म.प्र.	महा.	गुज.	द.द.	गोआ	कुल
1.	बी.एस सी., बी.एड–1	61	11	–	1	–	73
2.	बी.एस सी. बी.एड.– 2	39	4	–	1	–	44
3.	बी.एस सी. बी.ए.–3	59	2	3	–	–	64

क्र.सं.	पाठ्यक्रम			राज्यशः नामांकन			
		म.प्र.	महा.	गुज.	द.द.	गोआ	कुल
4.	बी.एस सी. बी.एड.–4	55	1	–	–	–	56
5.	बी.ए. बी.एण.–1	19	3	–	1	8	31
6.	बी.ए. बी.एड.–2	20	3	–	–	4	27
7.	बी.ए. बी.एड. – 3	25	–	–	–	2	27
8.	बी.ए. बी.एड.–4	20	–	–	–	2	22
9.	बी.एड. विज्ञान	16	29	18	–	–	63
10.	बी.एड. वाणिज्य	16	18	7	3	–	44
11.	बी.एड. (प्राथमिक शिक्षा)	16	13	10	–	5	44
12.	एम.एड.	11	1	–	–	–	12
13.	एम.एड. (प्राथमिक शिक्षा)	10	–	–	–	–	10
		367	85	38	6	21	517

तालिका 9.8
क्षे.शि.म. भोपाल में सेवा पूर्व पाठ्यक्रमों में अ.जा./अ.ज.जा. का नामांकन

क्र.सं.	पाठ्यक्रम	कुल विद्यार्थी	अ.जा.	अ.ज.जा.
1.	बी.एस सी. बी.एड. –1	73	5	–
2.	बी.एस सी. बी.एड.–2	44	2	–
3.	बी.एस सी. बी.एड.–3	64	1	–
4.	बी.एस सी. बी.एड.–4	56	1	–
5.	बी.ए. बी.एड.–1	31	2	–
6.	बी.ए. बी.एड –2	27	–	–
7.	बी.ए. बी.एड.–3	27	1	–
8.	बी.ए. बी.एड.–4	22	–	–
9.	बी.एड. विज्ञान	63	12	1
10.	बी.एड. वाणिज्य	44	6	3
11.	बी.एड. प्राथमिक शिक्षा	44	7	3
12.	एम.एड.	12	–	–
13.	एम.एड. प्राथमिक शिक्षा	10	–	–
	कुल	517	37	7

तालिका 9.9
परीक्षाफल (क्षे.शि.म. भोपाल)

क्र.सं.	पाठ्यक्रम का नाम	कुल नामांकन	परीक्षा में बैठे कुल विद्यार्थी	कुल उत्तीर्ण	पास प्रतिशत
1.	बी.एस.सी. बी.एड. (पुराना पाठ्यक्रम)	पुराने विद्यार्थी,	13	4 अभ्यर्थियों के परीक्षाफल रुके हुए हैं	
2.	बी.एस.सी. बी.एड. (नया पाठ्यक्रम)	73	70*		
3.	बी.एस.सी. बी.एड.–2	46	46	40	83%
4.	बी.एस.सी. बी.एड–3	65	65	55	84%
5.	बी.एस.सी. बी.एड.–4	57	57	56	99%
6.	बी.ए.बी.एड. (पुराना पाठ्यक्रम)	पुराने विद्यार्थी	2	1	50%
7.	बी.ए.बी.एड. (नया पाठ्यक्रम)	31	31	28	90%
8.	बी.ए.बी.एड–2	27	25	21	84%
9.	बी.ए.बी.एड–3	27	27	23	89%
10.	बी.ए.बी.एड–4	23	23	23	100%
11.	एम.एड.	12	12	12	100%
12.	एम.एड. (प्राथमिक शिक्षा)	10	7	7	100%
13.	बी.एड. वाणिज्य	44	43	43	100%
14.	बी.एड. विज्ञान	63	59	59	100%
15.	बी.एड. प्राथमिक शिक्षा	44	41	41	100%

* परीक्षाफल घोषित नहीं हुआ।

तालिका 9.10
1988–89 में क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भोपाल द्वारा आयोजित सेवाकालीन कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	तारीख	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या
1.	विज्ञान के स्वरूप पर पश्चिमी क्षेत्र के डी.आई.ई.टी. के शीर्ष व्यक्तियों के लिए संगोष्ठी सहकार्यशाला	11 से 16 जुलाई 1988	भोपाल	15
2.	बी.एड. स्तर पर कम्प्यूटर शिक्षा प्रारंभ करने के लिए संगोष्ठी सह कार्यशाला	25 जुलाईसे 4 अगस्त, 1988	भोपाल	44

1988-89

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	तारीख	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या
3.	तीन कार्यशालाओं में तैयार किया गया एन.एफ.ई.आाई. अनुदेशात्मक सामग्री को अंतिम रूप देने की कार्यशाला	17 अगस्त 1988	बीजलपुर	32
4.	म.प्र. के अध्यापकों के लिए आई.ई.वी.एच. में अभिविन्यास कार्यक्रम	18 से 20 अगस्त, 1988	भोपाल	26
5.	पश्चिमी क्षेत्र के रसायन अध्यापकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	16 से 21 अगस्त, 1988	भोपाल	30
6.	आलेख लेखन के लिए अध्यापक शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	5 से 10 सितंबर, 1988	चंद्रपुर	20
7.	क्षेत्र उपागम में एन.एफ.ई. के पदाधिकारियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	8 से 9 सितंबर, 1988	राजनगर	27
8.	गुजरात राज्य के एन.टी.एस. के शीर्ष व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	5 से 10 सितंबर, 1988	भोपाल	22
9.	पश्चिमी क्षेत्र के +2 स्तर के व्यवसायिक अध्यापकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	12 से 17 सितंबर, 1988	भोपाल	34
10.	कक्षा 9 और 10 में जीव विज्ञान के विषयवस्तु और विधि में अध्यापकों और अध्यापक शिक्षकों का अभिविन्यास	19 सितंबर, 1988	भोपाल	22
11.	रसायन विज्ञान में मूल्यांकन तकनीक पर अभिविन्यास कार्यक्रम	19 से 24 सितंबर, 1988	खण्डवा	40
12.	आई.ई.वी.एच. (विकलांगों विशेषतया दृष्टि बाधित की समाकलित शिक्षा योजना अभिविन्यास और जानकारी	26 से 30 सितंबर, 1988	सागर	15
13.	सामाजिक अध्ययन में गुजरात राज्य की एन.टी.एस. योजना के शीर्ष संदर्भ व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	3 से 8 अक्तूबर 1988	अम्बाजी	28
14.	श्रव्य आलेख लेखन पर प्रशिक्षण	3 से 8 अक्तूबर 1988	पेन्ड्रा	16
15.	गुजराती में भाषा सामग्री तैयार करने के लिए कार्यशाला	25 से 30 अक्तूबर 1988	वापी	37
16.	प्राथमिक औ माध्यमिक स्तर के अध्यापक शिक्षकों को प्रशिक्षण	15 से 19 नवंबर, 1988	उज्जैन	21
17.	अ.जा./अ.ज.जा. परियोजना हराई	25 से 30 नवंबर, 1988	हराई	18
18.	खण्डवा के प्राचार्यों की बैठक	18 से 19 नवंबर, 1988	खण्डवा	20
19.	उज्जैन के प्राचार्यों की बैठक	7 दिसंबर, 1988	उज्जैन	20
20.	विकलांगों विशेषतया दृष्टि बाधितों के लिए समाकलित शिक्षा योजना को बढ़ावा देने के लिए आई.ई.डी. के समन्वयकों और महाराष्ट्र राज्य के सामान्य विद्यालयों के प्राचार्यों/प्रधानाचार्यों का अभिविन्यास और जागरुकता कार्यक्रम	19 से 23 दिसंबर, 1988	पुणे	20
21.	राष्ट्रीय शिक्षा के संदर्भ में बाल केंद्रित शिक्षा में महाराष्ट्र/गोवा राज्य के अध्यापक शिक्षकों का अभिविन्यास कार्यक्रम	26 से 31 दिसंबर, 1988	गोवा	18
22.	म.प्र. में आदिवासी कल्याण विभाग (टी.डब्लू.डी.) के आदर्श विद्यालय और कन्या शिक्षा परिसर के विद्यार्थियों के लिए शैक्षिक कार्यकलापों और कार्यक्रमों के विकास के लिए कार्यशाला	26 से 31 दिसंबर, 1988	चित्रकूट	20
23.	महाराष्ट्र राज्य के समन्वयकों मानद निदेशकों की बैठक	9 से 11 जनवरी, 1989	पुणे	41
24.	रसायन विज्ञान में निदानात्मक अनुदेश अभिविन्यास कार्यक्रम	9 से 14 जनवरी 1989	अमरकंटक	

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	तारीख	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या
25.	अनौपचारिक शिक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम	9 से 13 जनवरी, 1989	डाकोर	29
26.	कृषि में व्यवसायिक प्रशिक्षण	16 से 23 जनवरी, 1989	भोपाल	7
27.	वाणिज्य अभ्यास पुस्तक कार्यशाला	23 से 28 जनवरी, 1989	भोपाल	14
28.	+2 स्तर पर जीव विज्ञान के अध्यापकों का अभिविन्यास	30 जनवरी से 4 फरवरी 1989	भोपाल	18
29.	+10 कक्षा के भौतिक विज्ञान के अध्यापकों का अभिविन्यास	13 से 17 फरवरी, 1989	भोपाल	14
30.	आलेख—लेखन में अभिविन्यास	13 से 16 फरवरी, 1989	द्वारका	19
31.	दृष्टि बाधितों की शिक्षा की एकीकृत योजना को बढ़ावा देने के लिए गुजरात के सामान्य विद्यालयों के प्राचार्यों/प्रधानाचार्यों का अभिविन्यास और जागरूकता कार्यक्रम	13 से 18 फरवरी, 1989	पालनपुर	20

तालिका 9.11

1988—89 में क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भोपाल द्वारा अन्य अभिकरणों के कार्यक्रमों का आयोजन

क्र.सं.	कार्यक्रमों का शीर्षक	तारीख	आयोजक अभिकरण
1.	म.प्र. के शीर्ष व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	2 से 6 अप्रैल, 1988	रा.शै.अ.प्र.प.
2.	गुजरात और गोवा के शीर्ष व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	7 अप्रैल, 1988	वही
3.	महाराष्ट्र के शीर्ष व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	12 से 16 अप्रैल, 1988	वही
4.	नवोदय विद्यालय परीक्षण हेतु बैठक	9 और 10 मई 1988	नवोदय समिति
5.	एन.सी.टी.ई. के 4 वर्षीय एकीकृत पाठ्यक्रम की बैठक	11 मई, 1988	रा.शै.अ.प्र.प.
6.	एकलव्य का विज्ञान के सुधार हेतु कार्यक्रम	23 मई से 11 जून 1988	एकलव्य सोसाइटी
7.	कम्प्यूटर साक्षरता और विद्यालय में अध्ययन के लिए अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम	23 मई से 12 जून 1988	क्लास परियोजना
8.	विद्यालय में विज्ञान शिक्षा सुधार भौतिक शास्त्र	14 जून से 3 जुलाई 1988	मा.सं.वि. मंत्रालय
9.	विद्यालय में विज्ञान शिक्षा सुधार गणित	14 जून से 3 जुलाई 1988	वही
10.	विद्यालय में विज्ञान शिक्षा सुधार जीव विज्ञान	14 जून से 3 जुलाई, 1988	वही
11.	शिक्षा के व्यवसायीकरण पर यूनेस्को द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम	22 से 28 फरवरी, 1989	यूनेस्को रा.शै.अ.प्र.प.

1988-89

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय भुवनेश्वर

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भुवनेश्वर में बी.एस.सी. (आनर्स) बी.एड. डिग्री के लिए विज्ञान शिक्षा में चार वर्षीय समेकित पाठ्यक्रम, बी.ए. (आनर्स) बी.एड. डिग्री के लिए अंग्रेजी शिक्षा में चार वर्षीय समेकित पाठ्यक्रम, एक वर्षीय बी.एड. (माध्यमिक) पाठ्यक्रम, एक वर्षीय बी.एड. (प्राथमिक) पाठ्यक्रम, एक वर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम और दो वर्षीय एम.एस सी.एड. (जीव विज्ञान) पाठ्यक्रम की सुविधा उपलब्ध है।

यद्यपि एम.एस सी. (जीव विज्ञान) एड. पाठ्यक्रम पूरे देश के लिए है तथापि महाविद्यालय में अन्य सभी पाठ्यक्रमों में पूर्वीक्षेत्रों के विद्यार्थियों के लिए सुविधा है।

सभी पाठ्यक्रमों में प्रवेश योग्यता राज्यों के अनुसार निर्धारित सीटों व शासनादेश द्वारा अनुसूचित जाति और अनुसूचित जन जाति और विकलांग अभ्यर्थियों के लिए अनिवार्य आरक्षित स्थान के आधार पर होता है।

नामांकन

वर्ष 1988–89 के शैक्षिक सत्र में विभिन्न सेवा पूर्व पाठ्यक्रमों में नामांकन को तालिका 9.12 और 9.13 में दिया गया है।

परीक्षाफल

वर्ष 1988–89 में उत्कल विश्वविद्यालय की परीक्षा में बैठे विद्यार्थियों के परीक्षाफल पाठ्यक्रम के अनुसार तालिका 9.14 और 9.15 में दिये गये हैं।

विस्तार सेवाएँ

क्षे.शि.म. भुवनेश्वर ने अपने विस्तार सेवाओं के एक भाग के रूप में राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 1986 के परिप्रेक्ष्य में सेवाकालीन अध्यापकों के लिए कई प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये हैं। 1988–89 में आयोजित सेवा कालीन कार्यक्रमों का विस्तृत विवरण और पूर्वी क्षेत्रों के राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों के प्रतिभागियों की संख्या तालिका 9.16 में दी गई है।

तालिका 9.12

1988–89 में क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भुवनेश्वर में सेवा पूर्व पाठ्यक्रमों में नामांकन

क्र.सं.	पाठ्यक्रम	कुल नामांकन	अ.जा.	अ.ज.जा.
1.	बी.एस सी.बी.एड.	290	26	2
2.	बी.ए.बी.एड.	236	17	9
3.	बी.एड.	194	20	6
4.	एम.एड.	19	2	2
5.	एम.एस सी. (जीवविज्ञान)	39	3	–
	कुल	778	68	19

तालिका 9.13
1988–89 में क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भुवनेश्वर में सेवा पूर्व पाठ्यक्रमों में राज्यशः नामांकन

क्र.	पाठ्यक्रम	कुल नामांकन	राज्यों के अनुसार नामांकन उड़ीसा	बिहार	प.बंगाल	असम और अन्य राज्य
1.	बी.एससी.बी.एड.	290	85	71	73	61
2.	बी.ए.बी.एड.	236	76	49	56	55
3.	बी.एड.	194	72	62	49	11
4.	एम.एड.	19	10	4	3	2
5.	एम.एससी. (जीव विज्ञान एड)	39				

असम–1, बिहार–3, पश्चिमी बंगाल–2
उड़ीसा–8, पंजाब,–3, दिल्ली–1, कर्नाटक–3, उ.प्र.–1, अ.प्र.–6
केरल–5, राजस्थान–2, तमिलनाडु–2 म.प्र.–1 महाराष्ट्र–1

तालिका 9.14
1988 के विश्वविद्यालय परीक्षा का पाठ्यक्रम के अनुसार परीक्षा फल (क्षे.शि.म. भुवनेश्वर)

क्र.सं.	पाठ्यक्रम का नाम	परीक्षा में बैठे विद्यार्थियों की संख्या	कुल उत्तीर्ण	पास प्रतिशत
1.	बी.एससी.,बी.एड. भाग–1	69	55	79.7%
2.	बी.एससी., बी.एड. भाग – 2	70	68	97.1%
3.	बी.एससी., बी.एड. भाग–3	72	65	90.2%
4.	बी.एससी.बी.एड. भाग–4	81	79	97.5%
5.	बी.ए., बी.एड. भाग–1	59	54	91.5%
6.	बी.ए., बी.एड, भाग–2	59	54	91.5%
7.	बी.ए., बी.एड. भाग–3	56	56	100%
8.	बी.ए., बी.एड. भाग–4	54	54	100%
9.	बी.एड.	204	145	71%
10.	एम.एड.	14	14	100%
11.	एम.एससी. (जीवविज्ञान) भाग–1	22	22	100%
12.	एम.एससी. (जीवविज्ञान) भाग–2	20	20	100%

1988-89

तालिका 9.15

विश्वविद्यालय परीक्षा बी.एड., ग्रीष्मकालीन विद्यालय सह पत्राचार पाठ्यक्रम के परीक्षा फल, क्षे.शि.मं., भुवनेश्वर

क्र.सं.	पाठ्यक्रम का नाम	परीक्षा में बैठे विद्यार्थियों की संख्या	कुल उत्तीर्ण	पास प्रतिशत
	क्षे. शि.म. भुवनेश्वर			
1.	बी.एड. (एस.एस./सी.सी.) माध्यमिक	136	126	92.64%
2.	बी.एड. (एस.एस./सी.सी.) प्रारंभिक	75	64	85.33%
	मणिपुर उप केन्द्र			
1.	बी.एड. (एस.एस./सी.सी.) माध्यमिक	151	94	62.38%
2.	बी.इड. (एस.एस./सी.सी.) प्रारंभिक	137	68	49.63%

तालिका 9.16

वर्ष 1988–89 में क्षे.शि.म. भुवनेश्वर द्वारा आयोजित सेवा कालीन कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	तारीख और अवधि	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या
1.	पी.एम.ओ.एस.टी. के अंतर्गत राज्य स्तर के शीर्ष व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम			
	प्रथम चरण (उड़ीसा)	2 से 6 अप्रैल, 1988	भुवनेश्वर	36
	द्वितीय चरण (प. बंगाल और त्रिपुरा)	7 से 11 अप्रैल, 1988	भुवनेश्वर	36
	तृतीय चरण (अण्डमान एवं निकोबार द्वीप समूह)	12 से 16 अप्रैल, 1988	भुवनेश्वर	44
2.	क्लास परियोजना के अंतर्गत प्रशिक्षण कार्यक्रम	23 मई से 11 जून 1988	भुवनेश्वर	29
3.	जनसंख्या शिक्षा पर राष्ट्रीय कार्यशाला	23 मई से 29 मई 1988	तिरूपति	14
4.	शारीरिक विज्ञान में विषयवस्तु का संवर्द्धन	6 से 15 सितंबर, 1988	पोर्टब्लेयर	28
5.	बी.एड. स्तर में शैक्षिक मनोविज्ञान शिक्षण में अभिविन्यास कार्यक्रम	19 से 23 सितंबर, 1988	भुवनेश्वर	10
6.	असम के प्राथमिक स्तर के अ.जा./अ.ज.जा. अध्यापकों के लिए विज्ञान और गणित के शिक्षण में अभिविन्यास कार्यक्रम	11 से 16 अक्तूबर, 1988	मिर्जापुर	24
7.	मूल्य अभिविन्यासित शिक्षा पर पूर्वी क्षेत्र के शीर्ष व्यक्तियों का अभिविन्यास	12 से 18 नवंबर, 1988	भुवनेश्वर	18
8.	पूर्वी राज्यों के माध्यमिक स्तर के अध्यापकों के लिए गणित में विषय वस्तु का संवर्द्धन	9 से 18 नवंबर, 1988	कलकत्ता	16
9.	प्राथमिक अध्यापक शिक्षकों के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार सामाजिक अध्ययन के शिक्षण में नई दिशाएँ	13 से 19 नवंबर, 1988	जेपुर	14

1988-89

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	तारीख और अवधि	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या
10.	मणिपुर की शिक्षण अधिगम समस्याओं पर अ.जा./अ.ज.जा. प्राथमिक विद्यालय अध्यापकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	22 से 27 नवंबर, 1988	इम्फाल	28
11.	प्राथमिक विद्यालय अध्यापकों के लिए फ्लैश कार्ड और कम लागत के शिक्षण साधनों को बनाने की कार्यशाला	20 से 26 दिसंबर 1988	भुवनेशर	22
12.	फरक्का सुपर थर्मल पावर परियोजना के माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत अध्यापकों का अभिविन्यास	26 दिसंबर से 2 जनवरी 1988	फरक्का	24
13.	त्रिपुरा में माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी शिक्षण पर कार्यशाला	7 से 11 जनवरी, 1989	अगरतला	26
14.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार सामाजिक विज्ञान की विषयवस्तु और विधि का संवर्द्धन	9 से 15 जनवरी 1989	कार निकोबार	31
15.	एकीकृत विद्यालय (प्राथमिक और मिडिल) में कार्यरत अध्यापकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	16 से 30 जनवरी, 1989	भुवनेश्वर	12
16.	विद्यार्थियों में स्वस्थ जीवन की जागरूकता विकसित करने के लिए अ.जा./अ.ज.जा. के आश्रम विद्यालय के अध्यापकों की कार्यशाला	24 फरवरी से 2 मार्च, 1989	भुवनेश्वर	39
17.	माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों के लिए जीवविज्ञान की विषय वस्तु का संवर्धन	3 से 9 मार्च, 1989	शिलांग	15
18.	के.मा.शि.बो. की 7 वीं, 8 वीं 9 वीं, कक्षा के शारीरिक विज्ञान पाठ्यचर्या ज्ञानात्मक मांग के वर्गीकरण के लिए कार्यशाला	6 से 11 मार्च, 1989	भुवनेश्वर	22
19.	मणिपुर के (माध्यमिक स्तर) के शीर्ष व्यक्तियों के लिए गणित में प्रशिक्षण कार्यक्रम	6 से 13 मार्च, 1989	भुवनेश्वर	25
20.	सी.टी.एस.ए. के अध्यापकों के लिए विज्ञान और गणित में विषय वस्तु के संवर्द्धन पर अभिविन्यास कार्यक्रम	13 से 27 मार्च, 1989	भुवनेश्वर	32

रजत जयन्ती समारोह

12 जनवरी, 1989 को महाविद्यालय की स्थापना के 25 वर्ष पूरे होने पर महाविद्यालय ने रजत जयन्ती समारोह मनाया। माननीय श्री जे.बी. पटनायक, मुख्य मंत्री उड़ीसा ने समारोह का उद्घाटन किया और माननीय श्री जे.एन.दास महापात्र, शिक्षा, खेल और युवासेवाएँ मंत्री, उड़ीसा सरकार ने अध्यक्षता की। डा. सदाशिव मिश्र, भूतपूर्व उप कुलपति, उत्कल विश्वविद्यालय ने रजत जयन्ती भाषण दिया जबकि श्री.पी.एस. हबीब मुहम्मद प्रशासक, उत्कल विश्वविद्यालय और अध्यक्ष, महाविद्यालय प्रबंध समिति ने अतिथियों का स्वागत किया। उत्कल विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति और महाविद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष सर्वश्री डा. सदाशिव मिश्र, प्रो. बी. दास, डा.बी. मिश्र, मेजर पी. के दास और डा. आर. सी.दास., बरहमपुर विश्व विद्यालय के भूतपूर्व कुलपति और इस महाविद्यालय के भूतपूर्व प्राचार्य ने इस समारोह के विशेष अतिथि के रूप में भाग लिया और इन सभी को मुख्य मंत्री ने इस संस्थान को विकास के योगदान के लिए सम्मानित किया।

1988-89

डा. जी.बी. कानूनगो इस महाविद्यालय के तत्कालीन प्राचार्य को भी अन्य अतिथियों के साथ सम्मानित किया गया। माननीय श्री अरूण कुमार कर, शिक्षा मंत्री, त्रिपुरा ने भी इस समारोह को संबोधित किया। डा.पी.एल. मल्होत्रा, निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प. ने सभी को धन्यवाद दिया।

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय मैसूर

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर बी.एससी., बी.एड. डिग्री के लिए विज्ञान शिक्षा में चार वर्षीय समेकित पाठ्यक्रम, बी.ए.बी.एड. डिग्री के लिए अंग्रेजी शिक्षा में चार वर्षीय समेकित पाठ्यक्रम, एक वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम, एक वर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम और रसायन, गणित और भौतिकी में दो वर्षीय एम.एससी.एड. पाठ्यक्रम की सुविधा है। इस महाविद्यालय में अभ्यर्थियों को विज्ञान और शिक्षा में पी एच.डी. डिग्री के लिए पंजीकृत करने की सुविधा है।

नामांकन

वर्ष 1988–89 के शैक्षिक सत्र के दौरान विभिन्न सेवा पूर्व पाठ्यक्रमों के नामांकन तालिका 9.17 में दिये गए है।

परीक्षाफल

क्षे.शि.म. मैसूर के द्वारा प्रदान किये गए विभिन्न पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों के परीक्षाफल तालिका 9.18 में दिए गए हैं।

सेवाकालीन और विस्तार कार्यक्रम

वर्ष 1988–89 में क्षे.शि.म. मैसूर ने सेवाकालीन अध्यापकों के लिए विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किये। महाविद्यालय ने छत्तीस सेवाकालीन और विस्तार कार्यक्रमों का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में 1000 से अधिक अध्यापक, अध्यापक शिक्षकों और शिक्षाशास्त्रियों ने भाग लिया। 1988–89 में आयोजित कार्यक्रमों का विस्तृत विवरण तालिका 9.19 में दिया गया है।

तालिका 9.17

1988–89 में विद्यार्थियों के नामांकन (क्षे.शि.म. मैसूर)

क्रम	पाठ्यक्रम	आंध्र प्रदेश		तमिल नाडु		कर्नाटक		केरल		अन्य		कुल		योग	अनु. जाति		अनु. जन जाति	
		छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा		छात्र	छात्रा	छात्र	छात्रा
1.	बी.एड.	17	3	4	15	6	6	4	5	–	–	31	29	60	1	4	–	–
2.	एम.एड.	4	1	2	1	4	5	4	3	1	–	15	10	25	1	1	–	–
3.	बी.ए.एड. प्रथम वर्ष	6	6	2	10	2	6	1	6	–	1	11	29	40	2	3	1	1
	द्वितीय वर्ष	1	3	1	10	2	4	3	3	–	–	7	20	27	1	2	–	–
	तृतीय वर्ष	2	7	2	8	1	4	1	3	–	–	6	22	28	–	–	–	–
	चतुर्थ वर्ष	3	5	–	9	3	2	–	6	–	–	6	22	28	–	–	–	–
4.	बी.एस सी.एड. प्रथम वर्ष	11	12	5	13	1	12	1	9	3	2	21	48	69	2	3	3	2
	द्वितीय वर्ष	10	9	3	22	1	9	3	9	1	–	18	49	67	1	–	–	1
	तृतीय वर्ष	11	10	4	11	1	11	–	8	1	1	17	41	58	1	2	–	–
	चतुर्थ वर्ष	6	9	6	11	2	6	2	8	–	1	16	35	51	–	2	–	–
5	एम.एस सी. एड. भौतिकी																	
	प्रथम वर्ष	9	3	2	4	1	1	2	2	–	1	15	10	25	-	–	–	–
	द्वितीय वर्ष	9	1	3	2	2	–	–	1	–	–	14	4	18	–	–	–	–

रसायन विज्ञान प्रथम वर्ष	2	3	1	7	1	3	1	3	–	4	5	20	25	1	–	–	–
द्वितीय वर्ष	–	1	2	3	1	–	1	–		3	5	7	12	–	–	–	–
गणित प्रथम वर्ष	4	1	1	5	3	2	–	3	–	2	8	13	2	–	–	–	–
द्वितीय वर्ष	5	3	–	1	–	–	1	1	2	2	8	7	15	–	–	–	–
	100	77	38	132	31	71	24	70	9	17	202	367	569	11	17	5	4

तालिका 9.18
मई 1988 विश्वविद्यालय परीक्षा का परीक्षाफल (क्षे.शि.म. मैसूर)

क्र.	पाठ्यक्रम	परीक्षा में बैठे विद्यार्थियों की संख्या	प्रथम श्रेणी	द्वितीय श्रेणी	तृतीय श्रेणी	कुल उत्तीर्ण	कम्पार्टमेंट वाले छात्रों की संख्या	उत्तीर्ण प्रतिशत	परीक्षा में बैठे विद्यार्थियों की संख्या		परीक्षा में उत्तीर्ण विद्यार्थियों की संख्या	
									अ.जा.	अ.ज.जा.	अ.जा.	अ.ज.जा.
1.	बी.एस.सी.एड.	आर 56	26	13	–	39	17	69.64	2	–	1	–
		पी. 8 (64)			1	3	4					
2.	बी.ए.एड.	आर. 26	6	14	2	22	4	84.61	–	–	–	–
3.	बी.एड.	आर. 73	53	15	–	68	5	93.15	3	–	1	–
		पी. 4(77)	–	–	4	–	–	–	–	–	1	–
4.	बी.एड. (एस.एस.सी.सी.)	पी.4	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
5.	एम.एड.	आर.23	10	11	2	23	–	100.00	2	1	2	1
6.	एम.एस.–सी एड.											
	भौतिकी	आर. 11	3	4	–	7	4	63.63	–	–	–	–
		पी. 7(18)	–	–	–	–	4	–	–	–	–	–
	रसायन	आर. 18	12	6	–	18	–	100.00	1	–	1	–
	गणित	आर. 14	9	4	–	13	1	92.85	–	–	–	–
		पी. 2(16)										

नोट :– आर = रेगुलर पी = प्राइवेट

तालिका 9.19
1988–89 में आयोजित सेवाकालीन अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम (क्षे.शि.म. मैसूर)

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	प्रतिभागियों की संख्या	अवधि	स्थान
1.	पी.एम.ओ.एस.टी. के अंतर्गत दक्षिणी क्षेत्र में राज्यों और संघ शासित क्षेत्रों कर्नाटक/केरल/आ.प्र. से शीर्ष व्यक्तियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम (मा.सं.वि. मंत्रालय कार्यक्रम)	आ.प्र. 54 कर्नाटक/केरल 64, तमिलनाडु/पाण्डीचेरी 41	2 से 6 अप्रैल, 1988 7 से 11 अप्रैल, 1988 12 से 16 अप्रैल, 1988	क्षे. शि. म. मैसूर

1988-89

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	प्रतिभागियों की संख्या	अवधि	स्थान
2.	लक्षद्वीप (माध्यमिक विद्यालय अध्यापक) के अंग्रेजी शिक्षण के अध्यापकों के लिए दस दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम (महाविद्यालय कार्यक्रम)	24	23 मई से 1 जून, 1988	क्षे.शि.म. मैसूर
3.	माध्यमिक विद्यालय स्तर पर भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान और गणित की वर्तमान पाठ्यचर्या की विषय वस्तु के संवर्द्धन और पूरक कार्यकलाप हेतु लक्षद्वीप के शीर्ष व्यक्तियों का अभिविन्यास (महाविद्यालय कार्यक्रम)	30	23 मई से 4 जून, 1988	वही
4.	क्लास परियोजना के अंतर्गत अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम (परिषद् कार्यक्रम)	25	11 से 31 मई, 1988	वही
5.	वही	24	6 से 25 जून, 1988	वही
6.	अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या संरचना, 1978 के संशोधन के लिए मसौदा समिति की बेठक (डी.टी.ई, रा.शै.अ.प्र.प. कार्यक्रम)	6	16 से 18 जून 1988	वही
7.	बी.एस सी.एड. और बी.ए.एड. इण्टर्नशिप कार्यक्रमों के लिए सहकारी विद्यालयों के प्रधानाचार्यों और अध्यापकों का प्रीइण्टर्नशिप सम्मेलन	35	5 से 7 जुलाई 1988	वही
8.	कर्नाटक के जूनियर कालेज के गणित के लेक्चररों के लिए ग्रीष्मकालीन इंस्टीट्यूट विद्यालयों में विज्ञान शिक्षा सुधार की केन्द्रीय प्रायोजिक योजना के अंतर्गत (मानव संसाधन विकास मंत्रालय कार्यक्रम)		11 से 30 जुलाई, 1988	वही
9.	कर्नाटक के जूनियर कालेज के जीव विज्ञान के लेक्चररों के लिए ग्रीष्मकालीन इंस्टीट्यूट (विद्यालयों में विज्ञान शिक्षा सुधार की केंद्रीय प्रायोजिक योजना के अंतर्गत) (मा.सं.वि.मं कार्यक्रम)	23	14 जुलाई से 2 अगस्त, 1988	वही
10	अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में नवोदय विद्यालयों के लिए कक्षा 8 की हिंदी की पाठ्यपुस्तक हमारी हिंदी भाग–3 को अंतिम रूप देने के लिए कार्यशाला (परिषद कार्यक्रम)	23	14 जुलाई से 2 अगस्त 1988	वही
11.	प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों को मातृभाषा कन्नड़ सिखाने के लिए श्रव्य सामग्री के विकास हेतु कार्यशाला (महाविद्यालय कार्यक्रम)	18	26 से 30 सितंबर, 1988	वही
12.	राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान मेहरगामा, श्री लंका के संकाय सदस्यों के लिए दस दिवसीय अटैचमेन्ट कार्यक्रम (परिषद कार्यक्रम)	11	3 से 12 अक्तूबर 1988	वही
13.	केरल राज्य के माध्यमिक स्तर के अध्यापकों को रसायन विज्ञान के कुछ क्षेत्रों में संकल्पनात्मक कठिनाइयों का स्पष्टीकरण (महाविद्यालय कार्यक्रम)	20	10 से 15 अक्तूबर 1988	त्रिवेन्द्रम
14.	वर्ष 1988–89 के बी.एड. (विज्ञान) विद्यार्थियों के इंटर्नशिप कार्यक्रम के लिए चयनित सहयोगी विद्यायलों के प्रधानाध्यापकों और अध्यापकों के लिए प्री इंटर्नशिप सम्मेलन	18	25 से 27 अक्तूबर, 1988	क्षे.शि.म. मैसूर

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	प्रतिभागियों की संख्या	अवधि	स्थान
15.	कर्नाटक के माध्यमिक स्तर के उर्दू के अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम (महाविद्यालय कार्यक्रम)	28	31 अक्तूबर से 5 नवंबर, 1988	वही
16.	जनसंख्या शिक्षा परियोजना की परियोजना प्रगति समीक्षा बैठक (परिषद कार्यक्रम)	30	2 से 6 नवंबर 1988	वही
17.	माध्यमिक स्तर पर जीव विज्ञान में सरल निर्देशित प्रयोगशाला अभ्यासों के विकास के लिए कार्यशाला (परिषद कार्यक्रम)	11	14 से 23 नवंबर, 1988	वही
18.	राजभाषा हिंदी के प्रचार के लिए हिंदी सप्ताह का आयोजन (महाविद्यालय कार्यक्रम)	65	15 से 18 नवंबर, 1988	वही
19.	कर्नाटक के जूनियर कालेजों के रसायन विज्ञान के प्रवक्ता के लिए शीतकालीन इंस्टीट्यूट (विद्यालयों में विज्ञान शिक्षा सुधार की केन्द्रीय प्रायोजिक योजना के अंतर्गत मानव संसाधन विकास मंत्रालय कार्यक्रम)	30	11 से 30 नवंबर, 1988	वही
20.	कर्नाटक के जूनियर कालेजों के भौतिकी के लेक्चररों के लिए ग्रीष्मकालीन इंस्टीट्यूट (विद्यालयों में विज्ञान शिक्षा सुधार की केंद्रीय प्रायोजिक योजना के अंतर्गत) मानव संसादन विकास मंत्रालय कार्यक्रम	33	31 नवंबर से 10 दिसबंर 1988	वही
21.	महाविद्यालय द्वारा अभिग्रहित मैसूर नगर में 8 अ.जा./अ.ज.जा. विद्यालयों के गणित विज्ञान के लिए विषय—वस्तु संवर्द्धन कार्यक्रम	36	25 नवंबर से 2 दिसंबर 1988	वही
22.	नवोदय विद्यालय प्रवेश परीक्षण 1989 का अनुवाद पर कार्यशाला	8	1 से 5 दिसंबर 1988	वही
23.	अ.जा./अ.ज.जा. का शैक्षिक विकास : ए.पी.एस.डब्ल्यू .पी. के गणित के अध्यापकों के लिए हैदराबाद में आयोजित विषय वस्तु संवर्द्धन कार्यक्रम	40	12 से 17 दिसंबर, 1988	हैदराबाद
24.	महाविद्यालय द्वारा अभिग्रहित मैसूर नगर के 8 अ.जा./अ.ज.जा प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों के लिए अंग्रेजी और सामाजिक अध्ययन में विषय वस्तु संवर्द्धन कार्यक्रम	28	6 से 8 और 11 से 12 जनवरी 1988	क्षे.शि.म. मैसूर
25.	रा.शै.अ.प्र.प. की विज्ञान किट के प्रयोग के लिए लक्षद्वीप के अध्यापकों का अभिविन्यास (लक्षद्वीप प्रशासन कार्यक्रम)	65 34	8 से 12 और 15 से 19 जनवरी, 1989	कवरत्ती कदमत लक्षद्वीप
26.	आं.प्र. कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु के चुने हुए मुस्लिम संचालित उच्च विद्यालयों के गणित और विज्ञान के अध्यापकों के लिए दस दिवसीय संयोजन कार्यक्रम (सी.डब्ल्यू.सी. कार्यक्रम)	30	16 से 25 जनवरी 1989	क्षे.शि.म. मैसूर
27.	आं.प्र., कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु के माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के लिए कम्प्यूटर द्वारा शिक्षा पर कार्यशाला (महाविद्यालय कार्यक्रम)	24	23 से 28 जनवरी, 1989	वही
28.	मूल्य और शिक्षण व्यवसाय पर संगोष्ठी एवं कार्यशाला (महाविद्यालय कार्यक्रम)	36	6 से 7 फरवरी, 1989	वही
29.	कर्नाटक के माध्यमिक स्तर के अध्यापक शिक्षकों के लिए गणित शिक्षण प्रणाली में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम (महाविद्यालय कार्यक्रम)	16	13 से 18 फरवरी [illegible]	वही

1988-89

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	प्रतिभागियों की संख्या	अवधि	स्थान
30.	पी.एम.ओ.एस.टी. प्रभाव को जानने के लिए राष्ट्रीय मूल्यांकन अध्ययन के लिए डिजाइन और विधियों को विकसित करने की कार्यशाला (परिषद् कार्यक्रम)	15	24 से 28 फरवरी, 1989	वही
31.	दक्षिण भारतीय भाषा : कन्नड़ की डाइस्लेक्सीक्स के लिए उपचारात्मक पठन सामग्री के विकास के लिए कार्यशाला (महाविद्यालय कार्यक्रम)	34	13 से 18 मार्च, 1989	वही
32.	+2 स्तर पर वाणिज्य में व्यवसायिक कार्यक्रम से संबंधित अध्यापकों के लिए छ : दिवसीय प्रशिक्षण पाठ्यक्रम (महाविद्यालय कार्यक्रम)	16	13 से 18 मार्च, 1989	वही
33.	राष्ट्रीय कोर तत्व और दक्षिणी क्षेत्र में उसके कार्यान्वयन पर अभिविन्यास कार्यक्रम एवं कार्यशाला (महाविद्यालय कार्यक्रम)	17	21 से 25 मार्च, 1989	वही
34.	विकलांग बच्चों की शिक्षा में कार्यरत अध्यापकों को पर्यवेक्षी सेवाएँ प्रदान करने के लिए सुविज्ञता का विकास करने हेतु दक्षिणी क्षेत्र के आई.ई.डी. के कार्मिकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम (महाविद्यालय कार्यक्रम)	10	27 से 31 मार्च, 1989	वही
35.	बी.एड. छात्राध्यापकों का मूल्य अभिविन्यास में प्रशिक्षण सह अनुसंधान की कार्यशाला (चरण–2) (परिषद् कार्यक्रम)	35	27 से 31 मार्च, 1989	वही
36.	विद्यालय में विकलांग बच्चों द्वारा सृजनात्मक कला कार्यकलापों के प्रयोग की कार्यशाला (परिषद् कार्यक्रम)	20	28 से 31 मार्च, 1989	वही

निदर्शन बहु उद्देश्य विद्यालय

क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों से जुड़े निदर्शन बहु उद्देश्य विद्यालय, महाविद्यायलों द्वारा चलाए गए विभिन्न अध्यापक शिक्षा में नामांकित अध्यापक, प्रशिक्षार्थियों के व्यवहारिक विद्यालयों के रूप में काम करते हैं। विद्यालय शिक्षा और अध्यापक शिक्षा में नवीन प्रक्रियात्मक व्यवहारों में विद्यालय एक प्रयोगशाला के रूप में कार्य करते हैं।

नामांकन

1988–89 के शैक्षिक सत्र में विभिन्न निदर्शन बहुउद्देश्य विद्यालयों के नामांकन तालिका 9.20 से 9.22 में दिए गए हैं।

परीक्षा फल

मार्च–अप्रैल 1988 के बोर्ड परीक्षाओं के परीक्षा फल तालिका 9.23 से 9.26 में दिए गए हैं।

तालिका 9.20

1988–89 सत्र में अजमेर के निदर्शन विद्यालय में अ.जा./अ.ज.जा. सहित विद्यार्थियों का कक्षावार नामांकन

कक्षा	छात्र	छात्रा	कुल	अ.जा.	अ.ज.जा.
पहली	21	12	33	4	1
दूसरी	29	8	37	5	–
तीसरी	23	12	35	4+2=6	–
चौथी	35	9	44	1	4
पाँचवीं	32	10	42	–	1
छठी	65	13	78	–	–
सातवीं	68	10	78	2	3
आठवीं	96	15	111	–	2
नवीं	99	24	123	4	–
दसवीं	83	19	102	1	–
ग्यारहवीं	71	28	99	1	–
बारहवीं	72	22	94	1	–
कुल	694	182	876	26	11

तालिका 9.21

1988–89 सत्र में भुवनेश्वर के निदर्शन विद्यालय में विद्यार्थियों का कक्षावार नामांकन

कक्षा	कुल नामांकन	अ.जा.	अ.ज.जा.
पहली	70	5	2
दूसरी	76	6	3
तीसरी	87	8	2
चौथी	86	7	3
पाँचवी	114	7	2
छठी	114	9	3
सातवीं	112	3	–
आठवीं	116	6	–
नवीं	112	5	1
दसवीं	107	4	1
ग्यारहवीं	86	2	1
बारहवीं	101	2	1
कुल	1181	64	19

1988-89

तालिका 9.22

1988–89 में मैसूर के निदर्शन विद्यालय में विद्यार्थियों का कक्षावार नामांकन

कक्षा	संख्या	अ.जा.	अ.ज.जा.
पहली	86	15	2
दूसरी	89	15	3
तीसरी	92	7	–
चौथी	90	1	–
पाँचवीं	92	4	–
छठी	87	4	–
सातवीं	88	1	1
आठवीं	82	–	1
नवीं	86	3	–
दसवीं	80	4	1
ग्यारहवीं ओ.एम.एस.पी.	20	–	–
बी.ई.टी.	21	2	–
मानवि.की	9	–	–
विज्ञान	34	–	–
बारहवीं ओ.एम.एस.पी.	19	–	–
बी.ई.टी.	20	1	1
मानवि.की	6	–	–
विज्ञान	20	–	–
कुल	1021	61	9

तालिका 9.23

वर्ष 1987–88 और 1988–89 में परीक्षाफल (नि.ब.वि.अजमेर)

कक्षा	परीक्षा में बैठे कुल छात्र	उत्तीर्ण संख्या	अनुत्तीर्ण	पूरक परीक्षा
1987–88				
दसवीं	102	98	4	–
बारहवीं	92	90	2	–
1988–89				
दसवीं	102	98	1	3
बारहवीं	93	86	1	6

1988-89

तालिका 9.24

1987–88 और 1988–89 में विशिष्टताएँ (नि.ब.वि.अजमेर)

क्र.	विषय	1987–88	1988–89
1.	कृषि	–	1
2.	लेखा पद्धति	12	6
3.	जीवविज्ञान	4	2
4.	रसायन विज्ञान	3	11
5.	वाणिज्य	3	6
6.	अंग्रेजी	–	6
7.	भूगोल	7	–
8.	हिंदी टंकण	6	4
9.	इतिहास	–	1
10.	गणित	6	2
11.	शारीरिक विज्ञान	8	6
12.	राज.शास्त्र	3	–
13.	भौतिकी	8	15
14.	सचिवालय पद्धति	–	2

तालिका 9.25

के.मा.शि.बोर्ड परीक्षा, 1988 (नि.ब.वि. भुवनेश्वर) का परीक्षाफल

क्र.	कक्षा	परीक्षा में बैठे विद्यार्थियों की कुल संख्या	उत्तीर्ण	पास प्रतिशत	पिछले वर्ष में उत्तीर्ण प्रतिशत
1.	दस	112	103	91.9%	94.6%
2.	बारहवीं विज्ञान	33	33	100%	89.%
	कला	19	18	94.7%	62.5%
	वाणिज्य	18	12	66.6%	71.4%
	व्यवसायिक	27	18	66.6%	25%

तालिका 9.26

विज्ञान	33	31	93.9%
कला	27	27	100%
वाणिज्य	16	15	93.7%
व्यवसायिक	25	24	96%

तालिका 9.27
के.मा.शि.बोर्ड, परीक्षा 1988 (नि.ब.वि., मैसूर) का परीक्षा फल

कक्षा	परीक्षा में बैठे विद्यार्थियों की संख्या	कुल उत्तीर्ण	पास प्रतिशत
दसवीं	83	79	95%
बारहवीं विज्ञान	32	29	91%
बारहवीं मानविकी	09	08	89%
बारहवीं बी.ई.टी.	18	02	11%
बारहवीं ओ.एम.एस.पी.	13	05	38%

तालिका 9.28
1988—89 में भोपाल के निदर्शन विद्यालय में विद्यार्थियों का कक्षावार नामांकन

		नामांकन	
कक्षा	संख्या	अ.जा.	अ.ज.जा.
पहली	70	10	6
दूसरी	78	12	5
तीसरी	75	9	5
चौथी	85	14	9
पाँचवीं	81	12	6
छठी	92	17	7

कक्षा	नामांकन		
	संख्या	अ.जा.	अ.ज.जा.
सातवीं	87	15	1
आठवीं	74	7	1
नवीं	80	4	3
दसवीं	62	4	2
ग्यारहवीं	73	2	1
बारहवीं	73	1	0
कुल	930	107	48

तालिका 9.29
बोर्ड परीक्षा, जो मार्च–अप्रैल, 1988 में आयोजित कीगई (नि.ब. वि. भोपाल) का परीक्षाफल

कक्षा	परीक्षा में बैठे विद्यार्थियों की संख्या	कुल उत्तीर्ण	पास प्रतिशत	पिछले वर्ष में उत्तीर्ण प्रतिशत
दसवीं	63	62	98.4	94
बारहवीं	73	69	94.5	69

1988-89

दस

शैक्षिक प्रौद्योगिकी

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् का एक मुख्य कार्य वैकल्पिक शिक्षा पद्धति के सुधार में शैक्षिक प्रौद्योगिकी विशेष रूप से जन संचार के प्रयोग को बढ़ावा देना है। केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के एक घटक के रूप में कार्य करके, शैक्षिक आवश्यकताओं के अनुरूप साफ्टवेयर का विकास करने, शैक्षिक प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में काम करने वाले कार्मिकों को प्रशिक्षण देने और शैक्षिक प्रौद्योगिकी में पद्धतियों के मूल्यांकन और शोध में संलग्न है। देश के शैक्षिक माध्यम और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उपलब्ध हार्डवेयर सामग्री और साफ्टवेयर से संबंधित सूचना को प्रलेखित करता है तथा उसका प्रचार–प्रसार करता है।

के.शै.प्रौ.सं. के अध्यक्ष एक संयुक्त निदेशक हैं और वह संस्थान आठ प्रभागों के माध्यम से कार्य करता है। संस्थान के आठ प्रभाग हैं – शैक्षिक दूरदर्शन आलेख, प्रशिक्षण और एस.आई.ई.टी. समन्वय प्रभाग; शैक्षिक दूरदर्शन और फिल्म प्रभाग; दूरस्थ. शिक्षा योजना, समन्वय और अनुसंधान तथा मूल्यांकन प्रभाग; शैक्षिक रेडियो प्रभाग; आलेखिकी, प्रदर्शनी और मुद्रण प्रभाग सूचना प्रलेखन और केन्द्रीय फिल्म लाईब्रेरी प्रभाग; तकनीकी प्रयोजना, प्रचालन तथा अनुरक्षण प्रभाग और प्रशासन तथा लेखा प्रभाग।

शैक्षिक दूरदर्शन आलेख, प्रशिक्षण और एस.आई.ई.टी. समन्वय प्रभाग का संबध ई.टी.वी. पाठ्यचर्या का नियोजन करना, के.शै.प्रौ.सं. में ई.टी.वी. के निर्माण के लिए आलेख लिखना, अंतःदेशीय अंतर्राष्ट्रीय पाठ्यक्रमों के माध्यम से ई.टी.वी. निर्माण के विभिन्न पहलुओं में केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, रा.शै.प्रौ.सं. और अन्य संस्थानों के कार्मिकों को प्रशिक्षित करना और ई.टी.वी. सेवा की उपयोगिता और निर्माण सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए छः राज्य शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थानों (एस.आई.ई.टी.) के साथ समन्वय करना है।

शैक्षिक दूरदर्शन और फिल्म प्रभाग का कार्य इन्सेट–1 बी के लिए प्राथमिक स्तर के विद्यालय और विद्यालयेतर बच्चों और अध्यापकों के लिए ई.टी.वी. कार्यक्रमों का निर्माण करना और कैप्सूल बनाना है। प्रभाग 1986–1987 और 1988 में ग्रीष्मकाल में आयोजित किए गए विद्यालय–अध्यापकों के सामूहिक अभिविन्यास कार्यक्रम के ई.टी.वी. घटक के समन्वयन और निर्माण करता रहा है। यह संस्थान द्वारा निर्मित वीडियो टैपों का संग्रह रखता है और समेकित कार्यक्रम की अनुसूची तैयार करता

है और उसका प्रचार करता है। यह इन्सेट–1 बी निम्न और उच्च पावर ट्रांसमीटरों के जरिये ई.टी.बी. कार्यक्रमों के संचालित करने के लिए एस.आई.ई.टी. और दूरदर्शन से सम्पर्क बनाये रखता है। प्रभाग की जिम्मेदारी शैक्षिक फिल्मों (35 और 16 मि.मी.) का निर्माण करना, हिन्दी अथवा अंग्रेजी में उनकी डबिंग करना और बिक्री के लिए 16 मि.मी. के प्रिंटों के डुप्लीकेट निकालना है।

दूरस्थ शिक्षा योजना, समन्वय और अनुसंधान तथा मूल्यांकन प्रभाग का संबंध दूरस्थ शिक्षा और शैक्षिक प्रौद्योगिकी में प्रशिक्षण देना, के.शै.प्रौ.सं. के कार्यकलापों का नियोजन तथा समन्वय और शैक्षिक प्रौद्योगिकी में कार्यक्रम व सामग्रियों का मूल्यांकन और अनुसंधान कार्य करने से है।

शैक्षिक रेडियो प्रभाग शैक्षिक प्रयोजन के लिए पूर्व–प्राथमिक से लेकर उच्च माध्यमिक विद्यालय के बच्चों की आवश्यकताओं हेतु साफ्टवेयर का निर्माण और अध्यापकों तथा आलेख लेखन में स्वतंत्र लेखकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करता है एवं आडियो/रिडियो कार्यक्रमों का निर्माण करता है।

आलेखिकी, प्रदर्शनी और मुद्रण प्रभाग का संबंध मुख्यतः चार्ट, कम–लागत के शिक्षण साधन और टैपस्लाइड कार्यक्रमों का निर्माण करने, प्रदर्शनी लगाने और के.शै.प्रौ.सं./रा.शै.अ.प्र.प. के लिए छोटे छोटे मुद्रण के लिए कार्य करना है।

सूचना प्रलेखन और केन्द्रीय फिल्म लाइब्रेरी प्रभाग के केन्द्रीय फिल्म लाइब्रेरी में 8,000 (16 मि.मी.) से अधिक शैक्षिक फिल्मों का भंडार है जिन्हें देश भर में लगभग 4,300 सदस्य संस्थानों को बिना किसी लागत के उधार दिया जाता है। एक बाल पुस्तक लाइब्रेरी (बाल–साहित्य केन्द्र) भी बनाया है जिसका उद्देश्य ऐसे साहित्य का संग्रह करना है जो 5–11 वर्ष के बच्चों को ई.टी.वी. कार्यक्रमों के निर्माण में आलेख लेखन के लिए उपयोगी हो। इसमें 5,500 पुस्तकों का संग्रह है। प्रचार माध्यम के प्रलेखन पर सेवा कालीन प्रशिक्षण/पाठ्यक्रम/संगोष्ठियाँ आयोजित करने और देश के विभिन्न भागों में शैक्षिक फिल्मों के उत्सवों की व्यवस्था करने के अतिरिक्त यह प्रभाग शैक्षिक प्रौद्योगिकी पर सूचना प्रसार केन्द्र का भी काम करता है। यह के.शै.प्रौ.सं. सूचना–पत्र के प्रकाशन का समन्वयन करता है।

तकनीकी प्रयोजना, प्रचालन और अनुरक्षण प्रभाग, के.शै.प्रौ.सं. के विभिन्न प्रभागों को तकनीकी सहायता प्रदान करता है। प्रभाग छः राज्य शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थानों उत्तर–प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, आन्ध्र प्रदेश, बिहार और उड़ीसा, प्रत्येक के स्टूडियो के उपकरणों को लगाने में सहयोग देता है। यह उपकरणों की खरीद और शैक्षिक प्रयोजन के लिए छोटे टी.वी. और ध्वनि स्टूडियो को स्थापित करने हेतु निर्देशनों की सलाह देता है। के.शै.प्रौ.सं. के नये भवन निर्माण और साज सज्जा की मानीटरिंग करता है।

प्रशासन और लेखा प्रभाग, के.शै.प्रौ.सं. के प्रशासनिक और वित्तीय मामलों को देखता है। 1988–89 में के.शै.प्रौ.सं. में अनेक अनुसंधान, विकासात्मक और प्रशिक्षण कार्यकलाप किए गए। इन कार्यकलापों का ब्यौरा निम्नलिखित परिच्छेदों में दिया गया है।

अनुसंधान कार्यकलाप

1988–89 में निम्नलिखित अनुसंधान/मूल्यांकन कार्यकलाप किये गए।

- ई.टी.वी. कार्यक्रमों के संबंध में बच्चों के पश्चपोषण (फीडबैक) प्राप्त करने के लिए अध्ययन। इस प्रयोजन के लिए उत्तर प्रदेश और बिहार के कुछ चुने हुए प्रयोक्ता अध्यापक जो फीडबैक के संकलन की तकनीक और बच्चों की प्रतिक्रिया को एकत्रित करने के लिए विशेष रूप से अभिविन्यासित किये गए थे, उनसे मासिक रिपोर्ट मंगवाई गई।
- ई.टी.वी. कार्यक्रमों के प्रति बच्चों, अध्यापकों और माता–पिता की अभिरुचियों और विचारों की जानकारी लेने के लिए समीक्षकों के पत्रों की विषय–वस्तु का विश्लेषण किया गया।
- उत्तर प्रदेश के इन्सैट जिलों में ई.टी.वी. सेवाओं के उपयोग के अध्ययन के लिए एक प्रतिदर्श सर्वेक्षण।

1988-89

— गुजरात और महाराष्ट्र के चुने हुए इन्सैट जिलों में ई.टी.वी. के उपयोग पर एक केस अध्ययन।
— छः राज्यों में 275 शिविर में विद्यालय–अध्यापकों का सामूहिक अभिविन्यास कार्यक्रम (पी.एम.ओ.एस.टी.) ई.टी.वी. के भाग के उपयोग पर अध्ययन।
— तमिलनाडु के खुला विद्यालय के संघटनात्मक ढाँचों, प्रचालन–प्रक्रिया और भावी योजनाओं पर एक गहन केस अध्ययन।
— श्रव्य कार्यक्रमों का क्षेत्र परीक्षण : रेडियो प्रभाग द्वारा निमित भारत की सामान्य सांस्कृतिक परम्परा की शृंखला में 5 श्रव्य कार्यक्रमों, संस्कृति पर 15 कार्यक्रमों और 27 बाल गीतों का परीक्षण और मूल्यांकन किया गया।

शैक्षिक सामग्री का विकास

केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिक संस्थान ई.टी.वी. कार्यक्रमों, आडियो/वीडियो कार्यक्रमों और शैक्षिक फिल्मों सहित शैक्षिक साफ्टवेयर को विकसित करने में कार्यरत रहा जिसका विवरण नीचे दिया गया है :

प्राथमिक स्तर के अध्यापकों और बच्चों के लिए ई.टी.वी. कार्यक्रमों का निर्माण

उपग्रह इन्सेट – 1 बी के लिए 90 नए ई.टी.वी. कार्यक्रम निर्मित किए गए जिससे कुल कार्यक्रमों की संख्या 418 हो गई और उनके भाषाई कार्यक्रम 744 हो गये। जिनके ब्यौरे तालिका 10.1 में दिए गए हैं :

तालिका 10.1
वर्ष 1988-89 में निर्मित ई.टी.वी. कार्यक्रमों की संख्या

5 से 8 वर्ष	9 से 11 वर्ष	अध्यापक	अन्य	कुल
36	34	16	4	90

इसके अतिरिक्त 65 ई.टी.वी. कार्यक्रमों का उड़िया रूपान्तर निर्मित किया गया। के.शै.प्रौ.सं और रा.शै.प्रौ.सं. द्वारा निर्मित ई.टी.वी. कार्यक्रमों को पाँच विभिन्न भाषाओं में आवंटित समय आधार पर 3 घंटे 45 मिनट सोमवार से शनिवार तक लगभग 220 विद्यालय दिवसों में प्रसारित किया गया। छ : इन्सेट राज्यों (आंध्र प्रदेश, बिहार, गुजरात, उड़ीसा, महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश) के अतिरिक्त कार्यक्रमों का हिन्दी रूपान्तर, म.प्र., राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश और चंडीगढ़ में सभी उच्च पावर ट्रासंमीटरों और निम्न पावर ट्रांसमीटरों द्वारा प्रसारित किया गया। के.शै.प्रौ.सं. द्वारा निर्मित चुने हुए ई.टी.वी. कार्यक्रमों को बच्चों के कार्यक्रम में सप्ताह में दो बार दूरदर्शन केन्द्र, दिल्ली से और 150 अन्य दूरदर्शन केन्द्रों के नेटवर्क द्वारा प्रसारित किया गया।

ओडियो/रेडियो कार्यक्रम

के.शै.प्रौ.सं. में इस वर्ष शैक्षिक आडियो निर्माण का विशेष बल राष्ट्रीय शिक्षा नीति–1986 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या-रूपरेखा में दिए सामान्य कोर घटकों पर आधारित था। इस अवधि में 76 नये आडियो कार्यक्रम बने और शैक्षिक रेडियो कार्यक्रमों की कुल संख्या 900 हो गई। 1988–89 में निर्मित आडियो/वीडियो कार्यक्रमा का विस्तृत ब्यौरा तालिका 10.2 में दिया गया है :

तालिका 10.2
1988–89 में निर्मित आडियो/वीडियो कार्यक्रम

कार्यक्रम	लक्ष्य समूह	कार्यक्रमों की संख्या
भारत की सामान्य सांस्कृतिक परंपरा	प्राथमिक	34
स्वतंत्रता संग्राम	उच्च प्राथमिक	4
पिता के पत्र पुत्री के नाम	उच्च प्राथमिक	3
नर्सरी गीत	पूर्व–प्राथमिक	21
राष्ट्रीय पहचान	प्राथमिक	5
पाठ्यचर्या पर आधारित कार्यक्रम	कक्षा–6 (नवोदय विद्यालय)	9
	कुल	76

शैक्षिक फिल्में

आलोच्य वर्ष में तीन 16 मि.मी. रंगीन फिल्में भूगोल लैंड एण्ड पीपल शृंखला पर मालाबार कोस्ट, दी ग्रेट शोर्स और लैंड मेड बाय ग्रीन फिन्गर्स को अंग्रेजी में पूरा किया गया। सभी फिल्मों को हिन्दी में साथ–साथ डब कर दिया गया।

इसके अतिरिक्त के.शै.प्रौ.सं. ने केन्द्रीय फिल्म लाइब्रेरी के लिए 32 शैक्षिक फिल्में "भारत के स्वतंत्रता संग्राम पर" खरीदीं।

शैक्षिक चार्ट

केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिक संस्थान ने कक्षा 9 और 10 के लिए सीरिज 2 में 18 जीव–विज्ञान चार्टों का विकास किया। सीरिज 1 के 22 जीव विज्ञान के चार्टों का मुद्रण पहले ही हो चुका है और उन्हें राज्यों को स्वीकरण/अनुकूलन के लिए भेजा जा चुका है। इसके अतिरिक्त संस्थान ने कई अन्य विकासात्मक कार्यकलापों को लिया है। यह कार्यकलाप, जीव विज्ञान (सीरिज–2) के चार्टों का विकास, माध्यमिक स्तर पर रसायन विज्ञान पर ई.टी.वी. आलेख, कम लागत के शिक्षण साधन विद्यालय पाठ्यचर्या और पर्यावरणीय शिक्षा में सामान्य कोर घटकों में ई.टी.वी. कार्यक्रमों के विषयों और विषय वस्तु की पहचान पाठ्यचर्या के समर्थन हेतु नवोदय विद्यालय की आवश्यकताओं के अनुरूप आडियो कार्यक्रमों का निर्धारण आदि थे। इन विकासात्मक कार्यकलापों के संबंध में बहुत सी कार्यशालाएँ/बैठकें आयोजित की गई। 1988–89 में आयोजित कार्यशालाओं/बैठकों/सम्मेलनों का विवरण तालिका 10.3 में दिया गया है –

तालिका 10.3
1988–89 में आयोजित कार्यशालाएँ/सम्मेलन/बैठकें/संगोष्ठियाँ

क्र.सं.	कार्यक्रम	अवधि	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या
1.	वैज्ञानिक दृष्टिकोण हेतु विषय और विषय–वस्तु की पहचान की कार्यशाला	22 और 23 अप्रैल, 1988	के.शै.प्रौ.सं.	25
2.	कम लागत के साधनों पर ई.टी.वी. कार्यक्रमों के आलेख बनाने के लिए कार्यशाला	अप्रैल, 1988	के.शै.प्रौ.सं.	4
3.	माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के अध्यापकों के लिए रसायन विज्ञान में ई.टी.वी. आलेख को अंतिम रूप देने के लिए कार्यकारी समूह की पाँच बैठकें	मई–जून 1988	के.शै.प्रौ.सं.	6
4.	खगोल–विज्ञान की सीरियल में विषय और विषयवस्तु की पहचान कराने के लिए कार्यशाला	20 और 21 जून, 1988	के.शै.प्रौ.सं.	4
5.	रा.शै.अ.प्र.प. के स्वायत्त प्रबन्ध ढाँचे के संबंध में चर्चा के लिए कार्यदल–समूह की बैठक	6 जून, 1988	के.शै.प्रौ.सं.	12
6.	रेडियो प्रभाग द्वारा निर्मित आडियो कार्यक्रमों की सम्भावना हेतु प्रमुख रिकार्डिंग कम्पनियों के प्रतिनिधियों की बैठक	5 जून, 1988	वही	5

क्र.सं.	कार्यक्रम	अवधि	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या
7.	रा.शै.अ.प्र.प. के लिए ई.टी.वी. पाठ्यचर्या को विकसित करने के लिए कार्यशाला	27 जून से 6 जुलाई, 1988	वही	25
8.	पर्यावरणीय शिक्षा पर वीडियो कार्यक्रमों के विकास के लिए कार्यशाला	9 और 10 अगस्त, 1988	वही	15
9.	व्यवसायिक शिक्षा के विषयों की पहचान पर कार्यशाला	22 और 23 अगस्त, 1988	वही	25
10.	पर्यावरणीय संरक्षण पर विजुअल्स को विकसित करने के लिए कार्यशाला	23 से 26 अगस्त, 1988	बाल भवन नई दिल्ली	41
11.	जन–संचार संबंधित ई.टी.वी. में आधुनिक अनुसंधानों और नवाचारों पर संगोष्ठी	4 से 6 अक्तूबर 1988	क्षे.शि.म. अजमेर	10
12.	कक्षा 9 और 10 के लिए जीव–विज्ञान चार्ट (सीरियल–2) के मूल्यांकन पर कार्यशाला	4 से 5 अक्तूबर 1988	के.शै.प्रौ.सं.	16
13.	कक्षा 11 और 12 के लिए विज्ञान (जीव–विज्ञान) में चार्टों के विकास के लिए विषय के निर्धारण के लिए कार्यशाला	13 और 14 अक्तूबर 1988	वही	15
14.	जिला शिक्षा संस्थानों जम्मू क्षेत्र के चुने हुए अध्यापकों के लिए कम–लागत के साधनों की कार्यशाला	14 से 18 नवंबर, 1988	राज्य शिक्षा संस्थान, जम्मू	20
15.	नवोदय विद्यालयों की आवश्यकताओं के अनुरूप पाठ्यचर्या का समर्थन देने के लिए आडियो कार्यक्रमों का विकास करने पर चर्चा करने के लिए बैठक	24 नवंबर, 88	के.शै.प्रौ.सं.	17
16.	''पिता के पत्र पुत्री के नाम'' पर आधारित कार्यक्रमों के प्रस्तुतीकरण के रूप पर चर्चा करने के लिए दो बैठकें	19 जुलाई, 19 दिसंबर, 88	वही	6
17.	पूर्वकालीन शिक्षण सहायक साधन विभाग द्वारा फिल्म निर्माण की समीक्षा करने के लिए बैठक	15 से 19 जनवरी, 1989	वही	14
18.	दूरस्थ शिक्षा के पाठों के लिए स्वयं जाँच–अभ्यासों का विकास करने के लिए दो कार्यशालाएँ	21 से 24 फरवरी और 10 और 11 अप्रैल, 1989	वही	12
19.	राज्य ई.टी. प्रकोष्ठों और फिल्म लाइब्रेरियों के अधिकारियों का सम्मेलन	14 से 16 मार्च 1989	वही	29
20.	दूरस्थ शिक्षा के अध्यायों के सम्पादन के लिए मार्ग निर्देशिका बनाने हेतु कार्यशाला	6 से 10 मार्च और 31 मार्च से 5 अप्रैल, 1989	वही	10
21.	कक्षा ग्यारह के लिए जीव विज्ञान के चार्टों का निर्माण करने के लिए कार्यकारी दल की दो बैठकें	5 और 27 मार्च, 1989	वही	8
22.	बाल केन्द्रित शिक्षा उपागम पर बैठक	8 से 10 मार्च, 1989	वही	10

प्रशिक्षण कार्यक्रम

केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिक संस्थान ने लोगों को बड़ी संख्या में प्रशिक्षित करने के लिए विख्यात अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के सहयोग से विभिन्न अंत:देशी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित करना जारी रखा है। इस अवधि में के.शै.प्रौ.सं. द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों के ब्यौरे तालिका 10.4 में दिए गए हैं ।

तालिका 10.4

1988–89 में आयोजित प्रशिक्षण/अभिविन्यास कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्यक्रम	तारीख	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या
1.	वीडियो सम्पादन पर ए.आई.बी.डी. प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	6 जून से 1 जुलाई 1988	कें शै.प्रौ.सं.	20
2.	बी.सी.एन.+51 के अनुरक्षण पर बौश का प्रशिक्षण कार्यक्रम	20 जून से 8 जुलाई, 1988	वही	2
3.	रेडियो नीदरलैंड प्रशिक्षण केंद्र के सहयोग से शैक्षिक रडियो पर प्रशिक्षण–पाठ्यक्रम	26 अक्तूबर से 20 नवम्बर, 88	क्षे.शि.म. मैसूर	15
4.	बेसिक कैमरा, ई.टी.वी. निर्माण और तकनीकी प्रचालन पर सातवां के.शै.प्रौ.सं. - ए.आई. बी.डी. प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	31 अक्तूबर से 9 दिसम्बर 88	रा.शै.प्रौ.सं. लखनऊ	47
5.	स्टूडियो निर्देशन तकनीकी में के.शै.प्रौ.सं. – ए.आई. बी.डी. प्रशिक्षण – पाठ्यक्रम	5 से 23 दिसंबर 88	के.शै.प्रौ.सं.	14
6.	अध्यापक शिक्षकों के लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी में प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	30 जनवरी से 27 फरवरी 89	वही	14
7.	जिला शिक्षा संस्थान के अध्यापक प्रशिक्षकों के प्रयोग और निर्माण के लिए श्रव्य/दृश्य सामग्री का निर्माण और प्रयोग हेतु शैक्षिक प्रौद्योगिकी में प्रशिक्षण कार्यक्रम	27 फरवरी से 10 मार्च 89	वही	21

विस्तार कार्यक्रम

इस वर्ष के.शै.प्रौ.सं. ने निम्नलिखित विस्तार कार्यक्रम आयोजित किए –

1. के.शै.प्रौ.सं. ने प्राथमिक स्तर पर प्रथम भाषा के रूप में हिन्दीका अध्यापन परियोजना के विस्तार के लिए सहायता जारी रखी। होशंगाबाद जिला (म.प्र.) में आडियो टेप का प्रयोग करने वाले 450 विद्यालयों को सहायता दी है। इस वर्ष प्रत्येक विद्यालय में 17 आडियो केसट का एक और सेट दिया गया। इससे पहले विद्यालयों को. टू–इन–वन रिसिविंग सेट प्रदान किए गए थे।
2. के.शै.प्रौ.सं. ने ई.टी. और टी.डी. लिमिटेड के 1/2" वी.एच.एस. के 29 ई.टी.वी. कार्यक्रमों की बिक्री के लिए प्रस्तावित किया। संस्कृति मंत्रालय से 1988–89 तक के सभी निर्मित ई.टी.वी. कार्यक्रमों के सेन्सरशिप से छूट मिल गई है।

3. ''बाल केन्द्रित शिक्षा की राष्ट्रीय विचार–गोष्ठी''के अवसर पर प्राथमिक स्तर पर बच्चों के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 86 में रा.शै.अ.प्र.प. की भूमिका पर एक प्रदर्शनी रा.शि.सं. परिसर में लगाई गई।
4. जम्मू में 5–11 नवंबर, 1988 तक बच्चों के लिए जवाहर लाल नेहरू राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया जिसमें परिषद् द्वारा शिक्षा में बल देने वाले क्षेत्र बताये गए।
5. यूनेस्को के महानिदेशक के आगमन के अवसर पर 13 दिसंबर, 1988 को के.शै.प्रौ.सं. की संगठनात्मक संरचना और कार्यकलापों पर एक प्रदर्शनी रा.शि.सं. में लगाई गई।
6. क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर के रजत जयन्ती के अवसर पर रा.शै.अ.प्र.प. के बल देने वाले क्षेत्रों पर प्रदर्शनी लगाई गई।
7. राज्य शैक्षिक संस्थान के सहयोग से दो शैक्षिक फिल्म उत्सवों का आयोजन किया गया।
8. टी.टी.टी.आई. भोपाल, म.प्र. फिल्म डेवलप्मेंट कारपोरेशन और एकलव्य भोपाल के सहयोग से 4–7 जनवरी, 1989 भोपाल में पर्यावरण पर शैक्षिक फिल्मों का एक उत्सव मनाया गया। इसमें लगभग 100 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिनमें पर्यावरण विशेषज्ञ, वैज्ञानिक सक्रिया कार्यकर्ता शिक्षाविद और फिल्म और वीडियो निर्माता थे।
9. देश और विदेश से आने वाले अध्यापकों और अन्य कार्यकर्ताओं के लाभ के लिए आडियो/वीडियो सामग्रियों के प्रयोग और विकास पर कई प्रसार भाषणों का आयोजन किया गया।
10. राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान के विभिन्न विभागों के अनुरोध पर के.शै.प्रौ.सं ने 55 मुद्रण कार्यों को पूरा किया।

प्रचार–प्रसार

आलोच्य वर्ष में केन्द्रीय फिल्म लाइब्रेरी (सी.एफ.एल.) के लिए 222 शैक्षिक फिल्में अभिग्रहित की गईं और 3,754 फिल्में शैक्षिक संस्थानों को उधार दी गईं, 32 नये सदस्यों को नामांकित किया। केन्द्रीय फिल्म लाइब्रेरी की संख्या बढ़ कर 4,332 हो गई है। के.शै.प्रौ.सं. द्वारा निर्मित 33 फिल्में, 14 टैप स्लाइड कार्यक्रम और 550 जीव विज्ञान चार्टों को बिना लाभ हानि आधार पर देश के विभिन्न शैक्षिक संस्थानों को बेची गई।

शैक्षिक प्रौद्योगिकी के नये क्षेत्र और लोगों में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए के.शै.प्रौ.सं. ने ''एजूकेशनल मीडिया न्यूज लेटर'' नामक त्रैमासिक निकालना प्रारम्भ किया। इस वर्ष इस पत्रिका के दो अंक निकाले गए।

प्रकाशन

वर्ष 1988–89 में केशै.प्रौ.सं. ने 12 प्रकाशन निकाले।इन प्रकाशनों के शीर्ष तालिका 10.5 में दिए गए हैं ।

के.शै.प्रौ.सं. के नये भवन की परियोजना

इस वर्ष के.शै.प्रौ. सं. के नये भवन का निर्माण संबंधी कार्य पूरा हो चुका है। के.शै.प्रौ.सं. ने स्पेस विभाग जिसने भवन का निर्माण किया है से मिलकर सिविल विद्युतीय वातानुकूलन और ध्वनि संबंधी कार्य का समन्वयन किया। यह भवन टेलीविजन कार्यक्रम निर्माण के दो स्टूडियो, दो ध्वनि रिकार्डिंग स्टूडियो, 6 वीडियो सम्पादन/डबिंग कक्ष, तीन ध्वनि सम्पादन/डब्बिंग कक्ष, निर्माण नियंत्रण कक्ष, सेट बनाने के लिए कक्ष, रूप–सज्जा तथा ग्राफिक कक्ष से सुसज्जित है। के.शै.प्रौ.सं. ने नये टी.वी. और रेडियो स्टूडियो के लिए सिस्टम डिजाइन उपकरण ले आउट, नियोजन और विशेष विवरणों का कार्य पूरा किया।

तालिका 10.5
1988–89 में निकाले गए प्रकाशन

क्रमांक	शीर्षक	प्रकाशन मास
1.	प्रकृति - पर्यावरणीय फिल्मों पर कार्यशाला की विवरणिका	जनवरी, 1989
2.	प्रकृति - पर्यावरणीय फिल्मों पर कार्यशाला की रिपोर्ट	मार्च, 1989
3.	बाल साहित्य केन्द्र में बच्चों की पुस्तकों की सूची	वही
4.	देश में विद्यालय स्तर पर शैक्षिक रेडियो प्रसारण की निर्देशिका	वही
5.	राज्य शैक्षिक प्रौद्योगिकी प्रकोष्ठों और फिल्म लाइब्रेरी बैठक की रिपोर्ट	वही
6.	अध्यापक शिक्षकों के लिए ई.टी. में अभिविन्यास पाठ्यक्रम प्रशिक्षण पुस्तिका	जनवरी, 1989
7.	अध्यापक शिक्षकों के लिए ई.टी. में अभिविन्यास पाठ्यक्रम पर रिपोर्ट	मार्च, 1989
8.	ई.टी. में अद्यतन अनुसंधानों और नवाचारों पर सेमिनार की रिपोर्ट (जन–संचार)	वही
9.	पी.एम.ओ.एस.टी. में शैक्षिक दूरदर्शन का प्रयोग (1988) स्थिति रिपोर्ट	वही
10.	1984–89 तक अंग्रेजी रूपांतरण में निर्मित ई.टी.वी. कार्यक्रमों के सारांशों सहित शीर्षक	अप्रैल, 1989
11.	1984–89 तक ई.टी.वी. द्वारा निर्मित कार्यक्रमों की सूची	वही
12.	एजूकेशनल मीडिया न्यूज लैटर	

1988-89

ग्यारह नवोदय विद्यालय को तकनीकी सहायता

1986-87 से रा.शै.अ.प्र.प. का देश में नवोदय विद्यालय में प्रवेश के लिए विद्यार्थियों का चयन करना एक महत्वपूर्ण कार्य रहा है। 1988-89 में चयन परीक्षण को तैयार करना, नवोदय विद्यालय की चयन परीक्षा आयोजित करना, देश में 256 नवोदय विद्यालयों में प्रवेश के लिए विद्यार्थियों का चयन करना, नवोदय विद्यालय के अध्यापकों के प्रयोग के लिए संकल्पनात्मक सामग्री का विकास करना और नवोदय विद्यालयों की स्थापना के लिए योजना के कार्यान्वयन के विभिन्न पहलुओं से संबंधी अनुसंधान कार्यकलाप करना राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के नवोदय विद्यालय प्रकोष्ठ के कुछ मुख्य कार्य रहे हैं।

चयन परीक्षण तैयार करना

नवोदय विद्यालय चयन परीक्षण को तैयार करने और अंतिम रूप देने के लिए कई बैठकें और कार्यशालाएँ आयोजित की गई। परीक्षण के तीन घटक हैं : मानसिक योग्यता परीक्षण, भाषा परीक्षण, और अंक गणित परीक्षण। मानसिक योग्यता परीक्षण, भाषा परीक्षण और अंक गणित परीक्षण के अंक प्रभार क्रमशः 60%, 20% और 20% थे। केवल मानसिक योग्यता परीक्षण में गैर मौखिक मदें थीं। इस परीक्षण में इन बिंदुओं पर विशेष ध्यान दिया गया है ताकि जहाँ तक संभव हो, चयन प्रक्रिया संस्कृति-तटस्थ हो और बाह्य कारणों से भेदभाव न्यूनतम हो।

प्रत्येक परीक्षण की सभी मदें वस्तुनिष्ठ हैं। परीक्षणों को विशेषज्ञों द्वारा क्षेत्रीय भाषा में संतुलित और अनूदित करवाया गया। परीक्षण को 18 भाषाओं; असमिया, बंगला, अंग्रेजी, गारो, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, खासी, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, मिजो, उड़िया, पंजाबी, सिन्धी (अरबी लिपि, देवनागरी लिपि) तमिल, तेलुगु और उर्दू में अंतिम रूप दिया गया।

परीक्षण संचालन

नवोदय विद्यालय प्रवेश-परीक्षण के व्यापक प्रचार के लिए प्रत्येक जिलों के प्रत्येक खण्ड जहाँ नवोदय विद्यालय की स्थापना की जा रही है, रा.शै.अ.प्र.प. के क्षेत्रीय सलाहकारों ने प्रचार अभियान, समाचार पत्रों में विज्ञापनों, रेडियो और दूरदर्शन द्वारा प्रसारणों और पाँचवीं कक्षा वाले विद्यालयों में पोस्टर लगा कर और हस्त प्रचार-पत्र बाँट कर किया। इसके अतिरिक्त रा.शै.अ.प्र.प. ने एक सूचना पत्रक निकाला: जिसमें परीक्षण की प्रकृति का विस्तृत ब्यौरा उदाहरण सहित

परीक्षार्थियों के मार्गदर्शन के लिए प्रकाशित और प्रचालित किया गया।

आवेदन-पत्रों को 18 भाषाओं में मुद्रित करके जिला शिक्षा अधिकारी (डी.ई.ओ.एस.) के माध्यम से वितरित किया। आवेदन - पत्रों की प्राप्ति और निर्गम का कार्य जिला शिक्षा अधिकारियों द्वारा किया गया जो रा.शै.अ.प्र.प. के क्षेत्रीय सलाहकार के पूर्ण रूप से पर्यवेक्षण और निदेशन के अंतर्गत जिला समन्वयक के रूप में कार्य करते हैं। परीक्षण के सही संचालन के पूरे प्रबंध किये गए। प्रत्येक सामुदायिक विकास खण्ड में परीक्षा के केन्द्र बनाये गए। जिला स्तरीय प्रेक्षक (डी.एल.ओ.एस.) और केन्द्र स्तरीय प्रेक्षक (सी.एल.ओ.एस.) की नियुक्ति परीक्षण के संचालन की निगरानी के लिए की गयी। परीक्षण के संचालन की विधियों से अवगत करवाने के लिए जिला स्तरीय प्रेक्षकों, केन्द्र स्तरीय प्रेक्षकों और केन्द्र अधीक्षकों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। परीक्षण संचालन के लिए आवश्यक मार्ग निर्देशिका तैयार की गई और उन्हें परीक्षण से संबंधित कार्मिकों में वितरित की गई।

1988-89 के शैक्षिक सत्र में विद्यार्थियों के लिए नवोदय विद्यालय चयन परीक्षण 15 मई, 1988 को 253 जिलों में आयेजित किया गया। तथापि ये परीक्षण इसी तारीख को तीन जिलों जम्मू और कश्मीर के लेह और कारगिल तथा पश्चिमी त्रिपुरा के लोहित में नहीं करवाये जा सके। 28 अगस्त, 1988 को इन तीन जिलों में पूरक परीक्षा के साथ-साथ अन्य तीन केन्द्रों आन्ध्र प्रदेश में कडप्पा और बिहार के नालन्दा तथा मुंगेर जिला के एक एक केन्द्र में अनुचित साधन का प्रयोग करने या परीक्षण पुस्तिका का अनुचित प्रयोग के कारण हुई। इस प्रकार न.वि.च. परीक्षा 256 जिलों में फैले हुए 2,980 खण्डों में स्थित 3,291 केन्द्रों में संचालित की गई।

विद्यार्थियों का चयन

विद्यार्थियों के चयन की सारी कार्य विधि कम्प्यूटर द्वारा की गई थी, जिसमें परीक्षण-पुस्तिका का मूल्यांकन, परीक्षा-फल तैयार करना, आँकड़ों का विश्लेषण, योग्यता सूची और प्रत्याशी सूची तैयार करना आदि सम्मिलित थे।

1988 में न.वि.च.प. में पंजीकृत अभ्यर्थियों की संख्या, 4,63,960 थी जिसमें 3,70,379 अभ्यर्थी परीक्षण में बैठे। 256 नवोदय विद्यालय में प्रवेश के कुल 14,769 विद्यार्थियों का चयन हुआ। इनमें से 11,059 (75%) विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्रों से थे जबकि 3,710 (25%) शहरी क्षेत्रों से थे । चयनित विद्यार्थियों में 10,001 (68%) लड़के और 4,768 (32%) लड़कियाँ थीं। नवोदय विद्यालय के प्रवेश के लिए कुल चयनित 14,769 विद्यार्थियों में 1,775 (19%) अनुसूचित जाति के थे जबकि 1.638 (11%) अनुसूचित जन जाति के थे । 655 अनुसूचित जाति और 551 अनुसूचित जन जाति से संबंधित अभ्यर्थियों का चयन सामान्य स्थिति में हुआ।

संकल्पनात्मक सामग्री का विकास

विभागाध्यक्ष, नवोदय विद्यालय प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प. की अध्यक्षता में गठित एक उप-समिति ने व्यापक अविरल मूल्यांकन योजना बनाई। उप-समिति द्वारा तैयार की गई योजना को प्रकाशित करके, सभी नवोदय विद्यालयों में वितरित किया गया।

वर्ष 1988–89 में मानसिक योग्यता परीक्षण, भाषा परीक्षण प्राप्त- परीक्षण और अंकगणित परीक्षण की उत्तम परीक्षण मदों (टेस्ट आइटम्ज) को एकत्रित करने के लिए परीक्षणमदों के लेखकों की पाँच कार्यशालाएँ आयोजित की गई थीं। इन कार्यशालाओं का विस्तृत ब्यौरा तालिका 11.1 में दिया गया है।

इन कार्यशालाओं के फलस्वरूप एक गोपनीय मद बैंक के लिए एकत्रित उत्तम मदों का संकलन तैयार किया गया ताकि उसे भविष्य में होने वाली नवोदय विद्यालय चयन परीक्षा में प्रयोग किया जा सके।

अनुसंधान अध्ययन

रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा 1986 में नवोदय विद्यालय के प्रवेश के लिए विद्यार्थियों से संबंधित कुछ पृष्ठभूमि तथ्यों की स्थिति के अध्ययन का काम हाथ में लिया । यह अध्ययन इस वर्ष में पूरा हो गया है और उसकी रिपोर्ट तैयार हो चुकी है।

1988-89

तालिका 11.1
1988-89 में परीक्षण मदें तैयार करने के लिए आयोजित कार्यशालाएँ

क्रसं.	कार्यक्रमों का शीर्षक	तारीख	स्थान
1.	मानसिक योग्यता परीक्षण की मदें तैयार करने के लिए कार्यशाला	31 अक्तूबर, 1988	जयपुर.
2.	भाषा-परीक्षण की मदें तैयार करने के लिए कार्यशाला	5 से 11 दिसंबर, 1988	पणजी
3.	भाषा-परीक्षण की मदें तैयार करने के लिए कार्यशाला	27 फरवरी से 2 मार्च, 1989	दिल्ली
4.	मानसिक योजना परीक्षण तैयार करने के लिए कार्यशाला	13 से 18 मार्च, 1989	बेंगलूर
5.	अंक गणित की मदें तैयार करने के लिए कार्यशाला	28 से 31 मार्च, 1989	चंडीगढ़

बारह

शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन

शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन विद्याशाखाओं के प्रयोग द्वारा विद्यालय शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाना रा.शै.अ.प्र.प. का एक मुख्य कार्य है। परिषद् परामर्श व मार्गदर्शन, प्राथमिक स्तर के बच्चों में सृजनात्मक शक्ति की पहचान और व्यवहार, प्रौद्योगिकी से संबंधित अनुसंधान, विकास और प्रशिक्षण कार्यकलापों में जुटी है। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और विभाग के मुख्य कार्यकलाप हैं–मनोविज्ञान में कक्षा 11 और 12 के लिए अनुदेशी सामग्री का विकास और अध्यापकों तथा अध्यापक-शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण सामग्री को तैयार करना । वर्ष 1988–89 में शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और मार्गदर्शन विभाग द्वारा लिए गए प्रमुख परियोजना-कार्यक्रम निम्न हैं :

व्यवसायिक मार्गदर्शन से संबंधित अनुसंधान और विकासात्मक कार्यकलाप

वर्ष 1988-89 में मेघालय में ''शिलांग और उसके आस पास आदिवासी क्षेत्र में शैक्षिक और व्यवसायिक नियोजन तथा हाई स्कूल छात्रों की चुनी गई शैक्षिक मनोवैज्ञानिक और गृह परिपेक्ष्य अस्थिरताओं का एक अध्ययन'' नामक अनुसंधान परियोजना पूरी की गई। इस परियोजना को हाथ में लेने का मुख्य उद्देश्य यह था कि मेघालय के स्कूलों में मार्गदर्शन सेवाओं का अनुभव सिद्ध आधार उपलब्ध करें ताकि विशेष-समूह के सांस्कृतिक तथा गृह-परिपेक्ष्य और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं के अनुरूप हो। इस अध्ययन की रिपोर्ट तैयार हो चुकी है और यह रा.शै.अ.प्र.प. की शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (एरिक) को भेजी जा चुकी है।

इसके अतिरिक्त एक अन्य परियोजना ''+2 स्तर के छात्रों का व्यवसाय संबंधी व्यवहार और शैक्षिक तथा व्यवसायिक धाराओं में सामंजस्य'' भी पूरी हो चुकी है। इस परियोजना में तीन अलग-अलग अध्ययन हैं जिनका उद्देश्य शैक्षिक और व्यवसायिक नियोजन प्रक्रिया से संबंधित कई अस्थिरों पर अकादमी और व्यवसायिक धाराओं वाले विद्यार्थियों के व्यवहार, जीवन-वृत्ति परिपक्वता और व्यवसायिक पाठ्यक्रमों में प्रवेश करने के उपरान्त व्यवसायिक विद्यार्थियों के समायोजन का पता लगाना था। अध्ययनों की प्रारूप-रिपोर्ट तैयार करने का कार्य आरम्भ हो चुका है।

परिषद् दिल्ली के व्यवसायिक वरिष्ठ माध्यमिक स्कूलों में स्व-रोजगार को प्रोत्साहित करने के लिए निर्देशन-कार्यक्रम के

विकास के लिए कार्यकलाप आरम्भ कर रही है। चुने हुए विद्यार्थियों को छोटे उद्यमों को स्थापित करने से संबंधित विविध सूचना दी गई थी। विद्यार्थियों को वार्ताओं, सामूहिक चर्चाओं, कार्य-स्थल का भ्रमण और सम्मेलन व प्रदर्शनी के माध्यम से स्व-रोजगार के सुअवसरों से अवगत करवाया। स्व-रोजगार हेतु उन्हें प्रेरित करने के लिए व्यक्तिगत रूप से भी परामर्श दिया गया। मार्गदर्शन कार्यक्रम की दक्षता को जाँचने के लिए स्कूल छोड़ने वालों का अनुवर्ती अध्ययन भी प्रारम्भ किया गया था। परिषद् ने वरिष्ठ माध्यमिक स्कूलों की लड़कियों में जीवन-वृत्ति क्षमता का विकास करने के लिए भी कार्रवाई की थी। दिसंबर, 1988 से फरवरी, 1989 दिल्ली के दो राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में एक मार्गदर्शन कार्यदल आयोजित किया गया जिसमें जीवनवृति सूचना, सामूहिक चर्चायें, परामर्श और कला तथा वाणिज्य में महिलाओं की भूमिका पर नमूने प्रस्तुत किये गये। इस कार्यक्रम का मूल्यांकन स्कूल के प्राचार्यों, अध्यापकों, परामर्शदाताओं और विद्यार्थियों द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम से संबंधी रिपोर्ट तैयार की जा रही है।

अनुदेशी /प्रशिक्षण सामग्री का विकास

परिषद् में कक्षा 11 और 12 के लिए मनोविज्ञान में पाठ्य-पुस्तकों के विकास से संबंधित कार्य जारी रहा। कक्षा 11 की मनोविज्ञान की पाठ्यपुस्तक ''मनोविज्ञान : मानव व्यवहार का परिचय भाग–1'' के संशोधित रूपान्तर की पांडुलिपि की समीक्षा हो गई है। समीक्षकों के सुझावों को सम्मिलत करते हुए लेखकों ने पाठ्यपुस्तक की पाण्डुलिपि का संशोधन कर दिया है।

कक्षा 12 की मनोविज्ञान की पाठ्य पुस्तक ''मनोविज्ञान मानव व्यवहार का परिचय भाग–2'' की पाण्डुलिपि की समीक्षा भी विशेषज्ञों द्वारा हो चुकी है। लेखकों द्वारा कक्षा 12 की पाठ्यपुस्तक की पाण्डुलिपि को अंतिम रूप देने से संबंधित कार्य आरम्भ हो चुका है।

कक्षा 11 के मनोविज्ञान के अध्यापकों के लिए हेंडबुक बनाने संबंधित कार्य के एक भाग के रूप में 20 से 23 फरवरी, 1989 को विशेषज्ञों की एक कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में 22 प्रतिभागी थे। एक अन्य कार्यशाला उच्चतर/वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर मनोविज्ञान में परीक्षण मदों के परिमार्जन के लिए आयोजित की गई। यह कार्यशाला 3 से 6 मई, 1988 तक आयोजित की गई और इसमें 16 अध्यापक/अध्यापक शिक्षकों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में पहले से विकसित सचेतन मानसिक प्रक्रिया, मानव विकास और व्यक्तित्व तथा मानसिक स्वास्थ्य-विज्ञान के क्षेत्रों जैसे विषयों से संबंधित 900 परीक्षण मदों का परिमार्जन किया गया।

परिषद् ने व्यवसायिक अध्यापकों के लिए स्वयं शिक्षण माड्यूल विकसित करने के लिए दो कार्यशालाएँ आयोजित की थीं। पहली कार्यशाला गोवा में 1 से 3 मार्च, 1989 को हुई जिसमें 21 प्रतिभागी उपस्थित रहे। इस कार्यशाला में व्यवसायिक अध्यापकों के लिए स्वयं शिक्षण माड्यूलों की पाठ्यचर्या के लिए रूपरेखा और ढाँचा बनाया। दूसरी कार्यशाला 30 मार्च से 3 अप्रैल, 1989 को पुणे में आयोजित की गई जिसमें चुने हुए विषयों में स्वयं शिक्षण माड्यूल का प्रारूप बनाया गया। इस कार्यशाला में 21 प्रतिभागियों ने भाग लिया और 16 माड्यूल विकसित किये गये। इन दोनों कार्यशालाओं में स्कूलों में प्राचार्यों, अध्यापक शिक्षकों सहित राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों दोनों में शिक्षा की व्यवसायीकरण योजना के कार्यान्वयन में जुटे हुए शीर्ष व्यक्तियों ने भाग लिया।

वर्ष 1988-89 में परिषद् ने प्राथमिक अध्यापकों/अध्यापक शिक्षकों के लिए क्लासरूम सेटिंग में व्यवहार संशोधन प्रविधियों पर अनुदेश-मैनुअल, प्राथमिक अध्यापक शिक्षकों के लिए अधिगम मैनुअल और प्रारंभिक विद्यालय बच्चों में सर्जनात्मक शक्ति के विकास पर पुस्तक बनाने से संबंधित कार्यकलाप आरम्भ किये। इन अनुदेशी प्रशिक्षण सामग्रियों के कुछ अध्याय इस वर्ष तैयार किये गये।

परिषद् ने राष्ट्रीय टेस्ट विकास पुस्तकालय (एन.टी.डी.एल.) को स्थापित करने से संबंधित कार्य जारी रखा। एन.टी.डी.एल. एक संदर्भ टेस्ट पुस्तकालय, मनोविज्ञान टेस्टों के लिए सूचनाकेन्द्र, मनोवैज्ञानिक टेस्टों की समीक्षा, और भारत में टेस्ट विकास में अंतरालों की पहचान करने वाली संस्था, सभी प्रकाशित भारतीय

टेस्टों के आलोचनात्मक समीक्षा करने वाला एक अभिकरण और रा.शै.अ.प्र.प. में प्रत्येक वर्ष आयोजित किये जाने वाला शैक्षिक और व्यवसायिक मार्गदर्शन के 9 मास का डिप्लोमा पाठ्यक्रम के प्रशिक्षार्थियों के लिए एक स्रोत केन्द्र के रूप में कार्य करता है। परिषद् ने मार्गदर्शन प्रयोगशाला को सुदृढ़ करने और व्यवसायिक सूचना कक्ष के विकास के लिए कुछ कदम उठाये हैं।

प्रशिक्षण और विस्तार कार्यक्रम

रा.शै.अ.प्र.प. देश में विद्यालयों में मार्गदर्शन सेवाओं के संवर्द्धन और प्रोत्साहन देने के लिए 9 मास का शैक्षिक और व्यवसायिक मार्गदर्शन डिप्लोमा पाठ्यक्रम चलाती है। यह पाठ्यक्रम माध्यमिक विद्यालय में मार्गदर्शन ब्यूरो और मार्गदर्शन में माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्कूल के अध्यापकों, अध्यापक शिक्षा महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के मनोविज्ञान विभागों के कार्मियों को प्रशिक्षण देने के लिए बनाया गया।

27 वाँ शैक्षिक और व्यवसायिक मार्गदर्शन डिप्लोमा पाठ्यक्रम अप्रैल, 1988 में समाप्त हुआ। इस पाठ्यक्रम में 29 प्रशिक्षणार्थी थे जिनमें से तीन अनुसूचित जाति और एक अनुसूचित जन जाति वर्ग से तथा 6 प्रशिक्षणार्थी राज्य/संघ शासित क्षेत्र सरकारों द्वारा प्रतिनियुक्त थे। पाठ्यक्रम में दाखिला लेने वाले इन 29 प्रशिक्षणार्थियों में से 25 प्रशिक्षणार्थी उत्तीर्ण हुए।

1 अगस्त, 1988 को 28 वाँ डिप्लोमा पाठ्यक्रम आरम्भ हुआ। अखिल भारतीय चयन परीक्षण के आधार पर 37 अभ्यर्थियों ने पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया। इनमें से चार पंजाब, और नागालैंड सरकार द्वारा प्रतिनियुक्त किये गये। दो अभ्यर्थी अनुसूचित जाति के थे। इस पाठ्यक्रम के लिए हिन्दी को पहली बार चयन परीक्षण और आंतरिक और बाहरी परीक्षा के लिए अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में आरम्भ किया।

शैक्षिक और व्यवसायिक मार्गदर्शन में डिप्लोमा पाठ्यक्रम के अतिरिक्त परिषद् कुछ अल्पकालीन संवर्द्धन/प्रशिक्षण पाठ्यक्रम भी चलाती है जिनमें दो संवर्द्धन पाठ्यक्रम अध्यापक शिक्षकों के लिए अधिगम और विकास पर, एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम अध्यापक शिक्षकों के लिए प्रारम्भिक विद्यालय में बच्चों में सर्जनात्मक शक्ति की पहचान और प्रोत्साहन पर,दो प्रशिक्षण पाठ्यक्रम कक्षा व्यवस्था में व्यवहार संशोधन प्राविधियाँ लागू करने पर और दो संवर्द्धन पाठ्यक्रम उत्तर-प्रदेश के इंटरमीडिएट कालेजों में मनोविज्ञान का शिक्षण देने वाले अध्यापकों के लिये आयोजित किये। वर्ष 1988-89 में आयोजित कार्यक्रमों का विस्तृत ब्यौरा तालिका 12.1 में दिया गया है।

परिषद् ने 10 से 12 अक्तूबर, 1988 को बाल-केन्द्रित शिक्षा पर एक राष्ट्रीय विचार गोष्ठी, बाल-केन्द्रित शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श करने हेतु विद्यालयों में बाल-केन्द्रित शिक्षा प्रारम्भ करने के लिए कार्यक्रम योजना बनाने के लिए आयोजित की। इस विचार-गोष्ठी में 160 प्रमुख शिक्षा शास्त्रियों, मनोवैज्ञानिकों, शैक्षिक प्रशासकों, समाज सेवकों, शैक्षिक नियोजकों और विश्व-विख्यात शिक्षाविदों ने भाग लिया।

इसके अतिरिक्त परिषद् ने 6 से 8 फरवरी 1989 को बंगलूर में राज्य मार्गदर्शन ब्यूरो के अध्यक्षों का एक अखिल भारतीय सम्मेलन आयोजित किया। इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य विभिन्न राज्यों में मार्गदर्शन सेवाओं की वर्तमान दशा की जानकारी लेना, विचार-विनिमय करना और राज्यों के विद्यालयों में मार्गदर्शन सेवाएँ आयोजित करने के लिए सहायता देना था। इस सम्मेलन में राज्य शैक्षिक और व्यवसायिक मार्गदर्शन ब्यूरो के 13 अध्यक्ष और कुछ स्वयं-सेवी अभिकरणों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

प्रकाशन

परिषद् ने इस वर्ष ''प्रतिभा की खोज और विकास'' (आडेन्टिफिकेशन एण्ड डेवलपमेंट ऑफ टैलेन्ट'' नामक प्रकाशन) भी प्रकाशित किया।

1988-89

तालिका 12.1
वर्ष 1988-89 में आयोजित प्रशिक्षण/संवर्द्धन कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	तारीख	स्थान	प्रतिभागियों की संख्या
1.	उत्तर प्रदेश के इंटरमीडिएट कालेज में मनोविज्ञान शिक्षण देने वाले अध्यापकों के लिए संवर्द्धन पाठ्यक्रम	6 से 10 जून, 1988	वाराणसी	23
2.	अधिगम और विकास पर राज्य शै.सं./रा.शै.अ.प्र.प. के कर्मियों और प्रारम्भिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों के अध्यापक शिक्षकों के लिए संवर्द्धन पाठ्यक्रम	15 से 24 जून, 1988	आईजोल	16
3.	कक्षा/विद्यालय व्यवस्था में व्यवहार संशोधन प्रविधियों को लागू करने पर प्राथमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों के अध्यापकों शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	25 से 31 अक्तूबर, 1988	पणजी गोआ	33
4.	उत्तर प्रदेश के इंटरमीडिएट कालेज में मनोविज्ञान का शिक्षण संवर्द्धन देने वाले अध्यापकों के लिए पाठ्यक्रम	12 से 17 दिसंबर, 1988	इलाहाबाद	40
5.	कक्षा/विद्यालय व्यवस्था में व्यवहार संशोधन प्रविधियों को लागू करने पर प्रारंभिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों के अध्यापक-शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	23 से 29 दिसंबर, 1988	जम्मू	33
6.	अधिगम और विकास पर राज्य शै.सं./रा.शै.अ.प्र.प. के कार्मिकों और प्रारम्भिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों के अध्यापक शिक्षकों के लिए संवर्द्धन पाठ्यक्रम	12 से 17 जनवरी, 1989	पणजी गोवा	32
7.	प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों में सृजनात्मक शक्ति की पहचान और प्रोत्साहन पर अध्यापक शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम	13 से 18 मार्च, 1989	कलकत्ता	33

1988-89

तेरह

प्रतिभा खोज, शैक्षिक सर्वेक्षण और आंकड़ा संसाधन

रा.शै.अ.प्र.प. प्रतिभा की पहचान और पोषण, शैक्षिक नियोजन के लिए आंकड़ों का आधार तैयार करने तथा कम्प्यूटरीकरण और आंकड़ा संसाधन से संबंधित विभिन्न कार्यकलापों में लगी हुई है। 1988–89 में मापन, मूल्यांकन, सर्वेक्षण और आधार सामग्री प्रक्रियन विभाग के कुछ मुख्य कार्यकलाप हैं – राष्ट्रीय खोज परीक्षा का आयोजन, पाँचवा अखिल भारतीय सर्वेक्षण करना और अन्य शोध अध्ययन करना जिससे शैक्षिक कार्यक्रमों के कार्यान्वियन और प्रतिपादन में आधारभूत आँकड़े मिल सकें, शैक्षिक सर्वेक्षण तथा अनुसंधान और मूल्यांकन अध्ययनों से संबंधित आँकड़ों का संसाधन करना है।

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज

रा.शै.अ.प्र.प. का राष्ट्रीय प्रतिभा खोज स्कीम के कार्यान्वियन का मुख्य उद्देश्य कक्षा दस के अन्त में प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की पहचान करना और उन्हें उत्तम शिक्षा प्रदान करने के लिए वित्तीय सहायता देना ताकि उनकी प्रतिभा का विकास हो सके और अपने विषय-विशेष में देश की और सेवा कर सकें। इस योजना के अंतर्गत प्रतिवर्ष 750 छात्रवृत्तियाँ दी जाती हैं जिसमें से 70 छात्रवृत्तियाँ अनुसूचित जाति और अनुसूचित जन-जाति विद्यार्थियों को दी जाती है।

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज स्कीम के अंतर्गत छात्रवृत्तियाँ देने के लिए विद्यार्थियों का चयन दो चरणों में किया जाता है। प्रथम चरण में चयन राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों द्वारा राज्य स्तर पर एक लिखित परीक्षा जो सामान्यतः प्रतिवर्ष अक्तूबर–दिसम्बर में आयोजित की जाती है. विद्यार्थियों का राज्य स्तर परीक्षा में योग्यता-प्रदर्शन के निष्पादन के आधार पर है। दूसरे चरण या राष्ट्रीय स्तर की परीक्षा के लिए अभ्यर्थियों की अपेक्षित संख्या की अनुशंसा परिषद् को की जाती है। प्रथम स्तर की परीक्षा राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों द्वारा अक्तूबर–दिसम्बर 1987 में ली गई थी और विजेताओं के लिए अपेक्षित संख्या में चयन करने के लिए दूसरे स्तर की परीक्षा रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा 8 मई, 1988 को आयोजित की गयी। दूसरे स्तर की परीक्षा देशभर में 31 केन्द्रों में आयोजित की गयी। दूसरे स्तर में कुछ ऐसे भी अभ्यर्थी सम्मिलित हुए जो विदेशों में दसवीं कक्षा में अध्ययन करते हुए

1988-89

भारतीय नागरिक हैं।

1988 में दूसरे स्तर की परीक्षा में 3,104 विद्यार्थी बैठे थे। उनमें कुल 750 विद्यार्थी छात्रवृत्ति के लिए चयनित हुए। इनमें 70 अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन जाति वर्ग के विद्यार्थी थे। तालिका 13.1 में राज्यवार आबंटित छात्रवृत्ति, दूसरे स्तर पर परीक्षा में बैठे विद्यार्थियों की संख्या और दी गई छात्रवृत्ति विजेताओं की संख्या दी गई है।

तालिका 13.1
1988 में प्रदान की गई रा.प्र.खो. छात्रवृत्तियों की संख्या

क्र.सं.	राज्य/संघ शासित क्षेत्र	आवंटित स्थान	दूसरे स्तर पर बैठे विद्यार्थियों की संख्या	दी गई छात्रवृत्तियों की संख्या (सामान्य)	अ.जा./अ.ज.जा. के लिए आरक्षित छात्रवृत्तियाँ
1.	आन्ध्र प्रदेश	215	209	48	9
2.	असम	80	79	10	—
3.	बिहार	195	193	46	7
4.	गुजरात	175	163	10	—
5.	हरियाणा	70	68	19	1
6.	हिमाचल प्रदेश	30	28	2	1
7.	जम्मू और कश्मीर	25	24	—	—
8.	कर्नाटक	155	155	21	3
9.	केरल	250	249	54	1
10.	मध्य प्रदेश	155	152	31	5
11.	महाराष्ट्र	320	318	122	12
12.	मणिपुर	25	23	—	—
13.	मेघालय	25	25	—	1
14.	नागालैंड	25	25	—	—
15.	उड़ीसा	90	90	27	2
16.	पंजाब	90	87	19	1
17.	राजस्थान	125	123	42	4
18.	सिक्किम	25	13	—	—
19.	तमिलनाडु	225	224	55	6
20.	त्रिपुरा	25	25	6	2
21.	उत्तर प्रदेश	500	489	70	3
22.	पं.बंगाल	235	225	44	9
23.	अण्डमान निकोबार द्वीपसमूह	10	7	—	—

क्र.सं.	राज्य/संघ शासित क्षेत्र	आवंटित स्थान	दूसरे स्तर पर बैठे विद्यार्थियों की संख्या	दी गई छात्रवृत्तियों की संखया (सामान्य)	अ.जा./अ.ज.जा. के लिए आरक्षित छात्रवृत्तियाँ
24.	अरूणाचल प्रदेश	10	10	—	2
25.	चंडीगढ़	10	8	6	—
26.	दादरा नगर हवेली	10	4	—	—
27.	दिल्ली	55	55	46	—
28.	गोवा-दमन दीव	10	10	1	—
29.	लक्षद्वीप	10	1	—	—
30.	मिजोरम	10	7	—	1
31.	पाण्डीचेरी	10	10	1	1
32.	भूटान	6	1	—	—
33.	कुवैत	4	1	—	—
34.	काठमान्डू	3	—	—	—
35.	काबुल	1	—	—	—
36.	मसकट	2	1	—	—
	कुल	3,211	3,104	680	70

तालिका 13.2

1988 के छात्रवृत्ति प्राप्त छात्रों सहित वृत्ति प्राप्त छात्रों की कुल संख्या

क्र.स.	पाठ्यक्रम	सामान्य	अनुसूचित जाति/अनु.जन. जाति	कुल जोड़
1.	+2 स्तर	1,362	136	1,498
2.	विज्ञान और सामांजिक विज्ञान में प्रथम डिग्री	344	23	367
3.	विज्ञान और सामाजिक विज्ञान में द्वितीय डिग्री	59	2	61
4.	इंजीनियरिंग में प्रथम डिग्री	1,355	58	1413
5.	इंजीनियरिंग में द्वितीय डिग्री	21	2	23

1988-89

क्र.स.	पाठ्यक्रम	सामान्य	अनुसूचित जाति/अनु.जन. जाति	कुल जोड़
6.	आयुर्विज्ञान में प्रथम डिग्री	727	34	761
7.	आयुर्विज्ञान में द्वितीय डिग्री	187	3	190
8.	एम.बी.ए.	63	1	64
9.	पी एच.डी.	12	–	12
	कुल जोड़	4,130	259	4389

आलोच्य वर्ष में राष्ट्रीय प्रतिभा खोज के पुरस्कार विजेताओं के लिए रूपये 79,99,863/– की राशि छात्रवृत्ति नियुक्त की गई।

शैक्षिक सर्वेक्षण

1988-89 में परिषद् ने पाँचवें अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण के संबंध में विभिन्न कार्यकलाप किये। सर्वेक्षण की संदर्भ तिथि 30 सितम्बर, 1986 रखी गई। पाँचवें अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण का मुख्य उद्देश्य विद्यालयों की स्थिति जानना और नियमित या औपचारिक शिक्षा, ग्रामीण या शहरी क्षेत्रों में अनौपचारिक शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा के लिए उपलब्ध सुविधाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करना था। यह सर्वेक्षण राष्ट्रीय शिक्षा नीति – 1986 में उल्लिखित शिक्षा के गुणात्मक सुधार के लिए विभिन्न कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के लिए और रा.शि. नीति कार्यक्रम कार्रवाई हेतु विशेष रूप से आँकड़ों को उपलब्ध कराने के लिए इंगित है जिसके आधार पर शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों को कार्यान्वित किया जा सके। इस सर्वेक्षण के निर्धारित लक्ष्य इस प्रकार से थे :

— विद्यालय जाने वाली जनसंख्या, घर से विद्यालय की दूरी, सामान्य नामांकन और विशेष रूप से अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जन जाति और बालिकाओं के नामांकन के संबंध में विद्यालय शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर उपलब्ध शैक्षिक सुविधाओं की वर्तमान स्थिति का निर्धारण करना।

— विद्यालय भवन, खेल के मैदान, फर्नीचर, पीने का पानी, चिकित्सा संबंधी जाँच, प्रोत्साहन योजना जैसी भौतिक सुविधाओं और लाभ उठाने वालों की संख्या का निर्धारण करना।

— ब्लैक बोर्ड और चॉक, पुस्तकालय प्रयोगशाला, पाठ्यपुस्तक – बैंक आदि निविष्ठियों की स्थिति का निर्धारण करना।

— अध्यापकों विशेष रूप से विज्ञान और गणित के अध्यापकों की शैक्षिक और व्यवसायिक अर्हताओं को जानना और शिक्षण व्यवसाय में अनुशय दर निर्धारण करना।

— आवासों, वर्तमान शैक्षिक सुविधाओं और नियोजित तरीके से समयबद्ध प्रस्तावित उपलब्धियों को प्रदर्शित करने वाले ब्लॉक मैप तैयार करना।

इन लक्ष्यों को पूरा करने के लिए तीन प्रश्नावलियाँ जैसे ग्राम-सूचना फार्म, शहरी-सूचना फार्म और विद्यालय सूचना फार्म बनाये गये जिससे संबंधित आँकड़े एकत्रित किये जा सकें। इस सर्वेक्षण में इन प्रश्नवालियों के माध्यम से निम्नालिखित मदों को विशेष रूप से पूरा करना है।

— प्रत्येक स्पष्ट वास क्षेत्र की गणना।

— प्रत्येक प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक उच्चतर

माध्यमिक/वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय/ इंटरमीडिएट/प्री–यूनीवर्सिटी/जूनियर कालेज की गणना।

- प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तरों पर शैक्षिक सुविधाएँ उपलब्ध होने और न उपलब्ध होने वाले वास क्षेत्र/वास क्षेत्रों में विभिन्न शैक्षिक स्तरों के सुविधाओं से रहित विद्यालयों की सुविधा उपलब्ध विद्यालयों से दूरी और विभिन्न जनसंख्या स्लैब्स के अंतर्गत वास क्षेत्र।
- अनुसूचित जाति की प्रधानता वाले वास क्षेत्रों में विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर विद्यालय की सुविधा।
- अनुसूचित जन जाति की प्रधानता वाले वास क्षेत्रों में विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर विद्यालय की सुविधाएँ।
- गाँवों में अनुसूचित जाति की जनसंख्या का अनुपात और वहाँ उपलब्ध शैक्षिक सुविधाएँ।
- गाँवों में अ.ज. जाति की जनसंख्या का अनुपात और वहाँ उपलब्ध शैक्षिक सुविधाएँ विभिन्न विद्यालयी स्तरों (कक्षा-वार) में छात्रों का आयुवार नामांकन।
- अनुसूचित जाति और अनुसूचित जन जाति से संबंधित छात्रों का आयुवार नामांकन।
- विद्यालय में कार्यरत अध्यापकों की शैक्षिक योग्यता (राज्य-वार)।
- विद्यालयों में विभिन्न स्तरों पर शिक्षा के लिए संगत उपलब्ध शैक्षिक निवेश।
- निर्धारित अवधि में अध्यापकों का स्थानान्तरण।
- विज्ञान पढ़ाने वाले अध्यापकों की शैक्षिक योग्यता और विज्ञान की शैक्षिक योग्यता वाले अध्यापक।
- व्यवसायिक पाठ्यक्रमों की उपलब्धता और विद्यालयों में +2 स्तर पर उपलब्ध व्यवसायिक पाठ्यक्रम।
- कार्यशाला सुविधाएँ और कार्यरत प्रशिक्षण।
- माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तरों पर गणित सिखाने वाले अध्यापकों की शैक्षिक योग्यताएँ।

यह सर्वेक्षण रा.शै.अ.प्र.प. ने विभिन्न राज्यों और संघ शासित क्षेत्रों के शिक्षा विभागों की सहायता और सहयोग से किया। देश के सभी गाँवों, सभी शहरी क्षेत्रों और सारे मान्यता प्राप्त विद्यालयों से वांछित आँकड़ा एकत्रित किया गया। रा.शै.अ.प्र.प. ने प्रश्नावलियों को विकसित करने, सर्वेक्षण कार्य के लिए राज्यों और संघ शासित क्षेत्रों में नियुक्त किए गए स्टाफ को मार्गदर्शन और प्रशिक्षण देने का दायित्व लिया और उन्हें खण्ड, जिला और राज्य-स्तरों पर आँकड़ों की जाँच करने और तालिकाबद्ध बनाने में सहायता प्रदान की थी। अंत में विभिन्न राज्यों और संघ शासित क्षेत्रों से प्राप्त राज्य सारणियों के सर्वेक्षण को राष्ट्रीय तालिकाओं के लिए प्रयोग में लाया गया।

शैक्षिक योजना के लिए सर्वेक्षण के आँकड़े का प्रयोग न केवल राष्ट्रीय स्तर अपितु राज्य और जिला स्तरों पर भी करने की आशा है। इन आँकड़ों से विशेष रूप से आठवीं पंचवर्षीय योजना की रूपरेखा बनाने ओर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में प्रतिपादित शैक्षिक सुविधाओं के सुधार की परियोजनाओं के नियोजन और कार्यान्वियन एवं ''कार्यक्रम-कार्यान्वियन'' करने में सहायक सिद्ध होने की आशा है। यह सर्वेक्षण-आँकड़े राज्यों को जिला और खण्ड स्तरों पर शैक्षिक योजना के विकेन्द्रीकरण में सहायता देंगे जिसमें स्कूल-मैपिंग भी सम्मिलित है।

इस सर्वेक्षण से प्राप्त मुख्य सांख्यिकी को उपलब्ध करवाने हेतु सर्वेक्षण की एक प्रारम्भिक रिपोर्ट शैक्षिक आयोजकों, प्रशासनिकों और सर्वेक्षण के आँकड़े का प्रयोग करने वाले अन्य व्यक्तियों के लाभ के लिए निकाली गई। ''फ़िफ्थ ऑल इंडिया एजूकेशनल सर्वे'' – सैलेक्टिड स्टैटिस्टिक'' नामक प्रारम्भिक रिपोर्ट फरवरी 1989 में प्रकाशित की गई।

इस रिपोर्ट में राज्य वार जन सांख्यिकीय सूचना ग्रामीण क्षेत्रों में शैक्षिक सुविधाओं; प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर संस्थाओं की संख्या; विद्यालय की विभिन्न कक्षाओं में नामांकित बच्चों की संख्या; विद्यालय भवन की दशा, अध्यापकों की संख्या और विद्यालय में उपलब्ध अन्य सुविधाओं के बारे में जानकारी अलग से दी गई है। अनुसूचित जाति और अनुसूचित जन जाति के छात्रों के संबंध

में जानकारी अलग से दी गई है।अध्यापकों से संबंधित जानकारी में अध्यापिकाओं, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जन जाति अध्यापकों का अनुपात भी बताया गया है। जहाँ सम्भव हुआ चौथे अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण 1978 के आँकड़ों से तुलना भी की गई है। पाँचवें अखिल भारतीय शैक्षिक सर्वेक्षण की अंतिम रिपोर्ट का कार्य भी आरम्भ हो चुका है।

1988–89 में परिषद् ने उड़ीसा के अनुसूचित जन जाति के लिए शैक्षिक सुविधाओं का सर्वेक्षण भी पूरा कर दिया । इस सर्वेक्षण के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार थे :

— गैर-अनुसूचित जन जाति की प्रधानता वाले जिले की तुलना में अनुसूचित जन जाति की प्रधानता वाले जिले में शैक्षिक सुविधाओं की उपलब्धता का अध्ययन करना।

— इन दो जिलों में किस सीमा तक प्रगतिरोधन या विद्यालय छोड़ कर जाने वालों का अध्ययन करना और इस प्रगतिरोधन या विद्यालयों को छोड़ने के कारणों का पता लगाना।

— सामान्य और विशेषकर अनुसूचित जन जाति के विद्यालयों में जाने वाले बच्चों के बेहतर नामांकन और अधिक अवरोधन पर उपायों का पता लगाना।

अध्ययन के लिए उड़ीसा राज्य के दो जिलों को चुना गया। एक जिला वह जहाँ जन जाति की प्रधानता और दूसरा गैर जन जाति जिला। जन जाति और गैर जन जाति जिले क्रमशः क्योंझर सदर और आनन्द पुर थे। इस अध्ययन में इन दोनों जिलों में गाँवों के सभी प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालय सम्मिलित किये गये। गाँवों तथा विद्यालयों से अध्ययन के आँकड़े एकत्रित करने के लिए दो फार्म विकसित किये गए; ग्राम सूचना फार्म और विद्यालय सूचना फार्म।

अध्ययन की रिपोर्ट पूरी कर दी गई है और रा.शै.अ.प्र.प. की शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (एरिक) को दी जा चुकी है।

आँकड़ा संसाधन

1987-88 में केन्द्रीय सुविधा के रूप में एक कम्प्यूटर केन्द्र की स्थापना हुई; जिसका अपयोग रा.शै.अ.प्र.प. के विभिन्न विभागों और एककों ने किया। इस वर्ष निम्नलिखित कार्यकलाप किये गए :

— ऑफ लाइन आँकड़ा प्रविष्टि तंत्र की सहायता से चुम्बकीय टेप/फलॉपी जैसे कम्प्यूटर माध्यमों पर आँकड़ा स्थानांतरित करना।

— आँकड़ों के प्रमाणीकरण और विभिन्न प्रकार की सांख्यिकीय विश्लेषण करने के लिए साफ्टवेयर विकसित करना।

— कम्प्यूटर पर आधार-सामग्री संसाधन।

इस वर्ष में निम्नलिखित विशेष कार्य किए गए :

— रा.शै.अ.प्र.प. के विभिन्न विभागों/एककों द्वारा ली गई अनेक अनुसंधान परियोजनाओं से संबंधी आँकड़ों का कम्प्यूटर संसाधन।

— राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा की उत्तर-शीट पर स्कोरिंग और आगे प्रवीणता सूची तैयार करने आदि सहित परीक्षा-फलों का संसाधन।

— अपनी पीएच.डी. परियोजना के लिए संकाय सदस्यों को कम्प्यूटर सुविधाएँ उपलब्ध कराना।

— कूटलेखन अभिकल्पना के विकास आँकड़ों का निर्माण, सांख्यिकीय तकनीकों का अनुप्रयोग, विश्लेषण योजना के विकास और परिणामों के विवेचन में अनुसंधान कर्ताओं को मार्गदर्शन करना। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय प्रतिभा खोज छात्रवृत्ति की वितरण प्रक्रिया का कम्प्यूटरीकरण किया गया। इससे रा.प्र. खोज छात्रवृत्ति का वितरण कार्य और अधिक शीघ्रता से और व्यवस्थित रूप से होने की आशा है। परिषद् ने प्रकाशित पुस्तकों और अन्य प्रकाशनों का उत्पादन संग्रहण, वितरण और बिक्री का कम्प्यूटरीकरण भी हाथ में लिया ।

चौदह

शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार को प्रोत्साहन

विद्यालयी शिक्षा और अध्यापक शिक्षा की सभी शाखाओं में अनुसंधान को समन्वयन और प्रोत्साहन देना परिषद् की मुख्य गतिविधियों में है। परिषद् के संघटक एककों के अतिरिक्त, परिषद् बाहरी संगठनों को वित्तीय सहायता देकर शैक्षिक अनुसंधान को बढ़ावा देती है। यह कनिष्ठ अनुसंधान शिक्षावृत्ति भी प्रदान करती है और अनुसंधान कार्यप्रणाली पाठ्यक्रम आयोजित करती है, जिससे देश के विभिन्न भागों में अनुसंधान कार्यकर्ताओं का एक दल स्थापित हो सके।

अनुसंधान और नवाचार

1974 में स्थापित शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (एरिक) अनुसंधान कार्य में सहायता प्रदान करने वाली मुख्य इकाई है। इस समिति के सदस्य शिक्षा में श्रेष्ठ अनुसंधान कर्ता, विश्वविद्यालयों तथा अनुसंधान संस्थानों से सम्बद्ध कार्यक्षेत्र, एस.आई.ई./एस.सी.ई.आर.टी के प्रतिनिधि, एन.आई.ई. के सभी विभागों/एककों के अध्यक्ष, सी.आई.ई.टी. तथा रा.शै.अ.प्र.प. के क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों (आर.सी.ई.) हैं। इसके अतिरिक्त एन.आई.ई., सी.आई.ई.टी. और क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों के कुछ चुने हुए प्रोफेसर इस समिति के स्थायी आमंत्रित सदस्य हैं।

शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (एरिक) अनुसंधान के प्राथमिकता वाले क्षेत्रों का पता लगाने में सहायता करती है और शिक्षा एवं सम्बद्ध कार्यक्षेत्र पर अनुसंधान अध्ययन तथा नवाचार परियोजनाओं के लिए वित्तीय सहायता देती है। शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (ई.आर.आई.सी.) रा.शै.अ.प्र.प. संकाय के सह-निर्देशन में डाक्ट्रेट कार्य के लिए शिक्षावृत्ति, डाक्ट्रेट की थीसिस, शोध पत्र और मोनोग्राफ की छपाई के लिए अनुदान देती है । शैक्षिक अनुसंधान पर सूचनाओं और विचारों का समय-समय पर अनुसंधान के तथ्यों का प्रचार-प्रसार भी करती है तथा शैक्षिक अनुसंधान पर सम्मेलन/बैठकें/संगोष्ठियाँ आयोजित करती है।

पूरी की गई अनुसंधान परियोजनाएँ

शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (ई.आर.आई.सी.) द्वारा समर्थित 1988-89 में 49 अनुसंधान परियोजनाएँ पूरी की गईं। इनमें 31 परियोजनाएँ परिषद् के विभिन्न संघटक एककों तथा 18 परियोजनाएँ बाहरी अनुसंधान संस्थानों की सम्मिलित हैं। आलोच्य वर्ष में पूरी की गई अनुसधान परियोजनाएँ तालिका 14.1 में दी गई हैं।

1988-89

तालिका 14.1

1988-89 में पूरी की गई अनुसंधान परियोजनाएँ

विभागीय परियोजनाएँ

क्र.सं.	परियोजना का शीर्षक	अवधि	मुख्य अन्वेषक
1.	ए रिसर्च स्टडी फॉर आईडेन्टिफिकेशन आफ टीचिंग स्किल एंड ट्रेनिंग स्ट्रेटेजी फार एम्पलीमेटिंग एन्वरयेमेन्टल एप्रोच एट प्राइमरी लेवल	3 वर्ष	डा.जे.एस.राजपूत, आर.सी.ई., भोपाल
2.	आईडेन्टिफिकेशन ऑफ वेरियस एप्रोचस ऑफ नान-फार्मल एजुकेशन इन वालेंटरी ओर्गेनाइजेशन	2 वर्ष	डा.एच.एल.शर्मा, डी.ई.पी.एस.ई.डी.ई, एन.सी.ई.आर.टी.
3.	कन्जरवेशन ऑफ एक्वाटिक इकोसिस्टम इन उड़ीसा	3 वर्ष	डा.पी.के.दुरानी एंड ए.एल.एन.शर्मा, आर.सी.ई., भुवनेश्वर
4.	ए रिपोर्ट ऑफ स्टडी ऑफ डेवलपमेंट ऑफ टूल्स फोर सुपरविजन एंड एवैल्यूएशन ऑफ स्टूडेंट टीचिंग एंड अदर प्रेक्टिकल वर्क इन कालेज ऑफ एजुकेशन	1 वर्ष	डा.टी.एन.एस.भटनागर, डी.टी.ई.एस.ई.एंड, ई.एस.एन.सी.ई.आर.टी.
5.	एन एवैल्यूएशन स्टडी ऑफ दी डिफरेन्ट मोडलस ऑफ प्रि-स्कूल ट्रेनिंग प्रोग्राम फ्रोम दी प्वाईंट ऑफ देयर इम्पैक्ट आन चिल्ड्रन	2 वर्ष	डा. (श्रीमती) आर. मुरलीधरन, डा. जी.पी.पंकजम, डी.पी.एस.ई.ई., एन.सी.ई.आर.टी.
6.	सिस्टेमैटिक स्टेडिज ऑफ दी फोना इन एंड अराउंड भुवनेश्वर फॉर डेवलपमेंट ऑफ म्यूजियम	2 वर्ष	डा. एन. खट्टर, आर.सी.ई., भुवनेश्वर
7.	सैम्पल सर्वे ऑफ एजुकेशनल फैसलिटीज फॉर शैड्यूल कास्टमस एंड शैड्यूल ट्राईबस इन राजस्थान	1 वर्ष	डा.एस.एम.भार्गव, डा. एस.सी. मित्तल, डी.एम.ई.एस.डी.पी., एन.सी.ई.आर.टी.
8.	इफैक्ट ऑफ योगा ऑन स्कूल		डा. कुलदीप कुमार, डी.एफ.एस.सी., एन.सी.ई.आर.टी.
9.	नो दी प्लान्ट्स अराउन्ड यू	3 वर्ष	प्रो. सी.आर.घोष, रिटायर्ड अध्यक्ष, डी.ई.एस.एम., एन.सी.ई.आर.टी.
10.	करिकुलम इवेल्यूएटर एट दी 10+2 स्टेज इन दी लाइट ऑफ इन्सट्रकसनल डेवलपमेंट एंड सोशल ऑबजेक्टिवस ऑफ एजुकेशन	8 महीने	प्रोफेसर बाकर मेहदी, अध्यक्ष डी.पी.आर.पी.पी., एन.सी.ई.आर.टी.
11.	एन एक्सपरीमेंटल स्टडी ऑफ दी रिलेटिव इफेक्टिवनेस ऑफ सैलेक्टिड स्ट्रेटजीज ऑफ इन्टीग्रेशन ऑफ टीचिंग स्किलस एकवायरड बाई स्टूडेंट टीचर्स थ्रु दी टैक्नीक्स ऑफ माईक्रोटीचिंग	डेढ़ वर्ष	डा. आर.सी.दास, डा. एन.के .जंगीरा, डा. अजीत सिंह, एण्ड डा. बी.के.पासी, डी.टी.ई.एस.ई.एस., एन.सी.ई.आर.टी.
12.	एवल्यूएशन ऑफ इन्सट्रशनल मेटिरियलस ऑफ नॉन -फोरमल एजुकेशन सेन्टर	1 वर्ष	डा. (श्रीमती) नीरजा शुक्ला, एन.एफ.ई., एन.सी.ई.आर.टी.
13.	सर्वे एंड कल्टीवेशन ऑफ एडिबल मुशरूमस ऑफ उड़ीसा एज ए वर्क एक्सपिरीऐन्स वोकेशनल सबजेक्ट फॉर हाई/हायर सैकेन्ड्री स्कूल	3 वर्ष	डा.एम.पी.सिन्हा, आ.सी.ई.भुवनेश्वर
14.	एन एस्कप्लोरेटरीस्टडी ऑन दी यूज ऑफ टीचिंग ऐड्स फॉर डेबलपिंग कनसेप्टस ऐमंग हैन्डीकेप्ड (डीफ) चिल्ड्रन	2 वर्ष	डा. एम.सी.शर्मा, सी.आई.ई.टी.

1988-89

क्र.सं.	परियोजना का शीर्षक	अवधि	मुख्य अन्वेषक
15.	ए स्टडी ऑफ दी परसेपशन ऑफ सेकेन्ड्री स्कूल लर्निंग एन्वायर्नमेंट बाइ दी स्टूडेन्टस, स्टाफ एंड एडमिनिस्ट्रेटर्स	ढाई वर्ष	डा.जे.एस.ग्रेवाल, आर.सी.ई. भोपाल
16.	डेवलपमेंट ऑफ कराईटीरियन रिफरेन्स टैस्टस इन एन्वायर्न मेन्टल स्टीडीज (साइंस) फोर प्राईमरी स्टेज	2 वर्ष	डा. प्रीतम सिंह, नवोदय विद्यालय सेल, एन.सी.ई.आर.टी.
17.	दी डिटरमिनेशन एंड डवलपमेंट ऑफ स्कीमस आर्फे थोट एन साइंस वर्ष ड्यूरिंग एडोलिसेन्स	3 वर्ष	प्रो. एन.वैद्य, डी.टी.ई.एस.ई.एंड ई.एस., एन.सी.ई.आर.टी.
18.	ए स्टडी ऑफ फ्लोरा ऑफ भोपाल टू प्रडयूस रिसोर्स मेटिरियल फॉर दी बायोलोजी टीचर्स ऑफ एम.पी.	3 वर्ष	डा.पी.के.खन्ना., आर.सी.ई., भोपाल
19.	इम्प्रोविंग दी कनाडा रीडिंग परफोरमेन्स ऑफ एजुकेविल मेंटेली रीटार्डेड चिल्डर्न	14 महीने	डा.एम.ए.खादर, आर.सी.ई., मैसूर
20.	सर्वे ऑफ रिसचिर्स इन स्पेशल एजुकेशन इन इंडिया	15 महीने	डा.एन.के.जंगीरा, डी.टी.ई.एस., ई.एंड.ई.एस.एन.सी.ई.आर.टी.
21.	फ्यूचरोलोजी ऑफ टीचर एजुकेशन पायलट स्टडी	6 महीने	डा.जे.सी.गोयल, डा.एल.सी.सिंह, डी.टी.ई.एस.एंडई.एस. एन.सी.ई.आर.टी.
22.	दी इफैक्ट ऑफ टीचर लेड सैल्फ लर्निंग पियर ग्रुप डिसकशन एंड मास मिडिया एप्रोचिस ऑफ टीचिंग पापुलेशन एजुकेशन टू क्लोसेज 9 इंड 10 ऑन नोलिज, एटीटयूड एंड बीलीफस ऑफ दी स्टूडेन्टस एबाउट पापुलेशन एक्सप्लोशन इन इंडिया	3 वर्ष	प्रो.आर.पी.कथुरिया एफ.ए., भोपाल
23.	ट्रा-आऊट ऑफ इनौविटव इंडिविजुयलाइज्न सिस्टम आर्फे इन्सट्रक्शन इन क्लास 11 मैथेमेटिक्स कोर्स "मास्टर ऐसेमेन्टस"	2 वर्ष	डा.आर.एन.माथुर, डा.आर.पी.गुप्ता, डी.ई.एस.एम., एन.सी.इ.आर.टी.
24.	सर्वे ऑफ एजुकेशनल फेसिलीटीज फॉर वीकर सेक्शनस ऑफ दी सोसाइटी नमेली शेडयूल टाईबस उड़ीसा	1 वर्ष	डा. एस.एल.भार्गव, डी.एम.ई.एस.एंड.डी.पी. एस.सी.ई .आर.टी.
25.	ए स्टडी ऑफ एडमिनिस्ट्रेटिव स्ट्रक्चर ऑफ एन.एच.ई.एंड दी स्कीम ऑफ मोनीटोरिंग एंड सुपरविजन	1 वर्ष	डा. (श्रीमती) एस.आर.अरोड़ा,डी.पी.एस.ई.ई. एन.सी.ई.आर.टी.
26.	ए स्टडी ऑफ दी स्टेटस ऑफ दी टीचर्स इन इंडिया	2 वर्ष	डा. (श्रीमती) आर.के.चोपड़ा, डी.टी.ई.एस.एंड ई.एस.,एन.सी.ई.आर.टी.
27.	कमपेरेटिव स्टडी ऑफ एजुकेशनल एचिवमेंट ऑफ एस.सी./एस.टी.स्टूडैन्टस ऑफ क्लास 10 ऑफ यू.पी.	17 महीने	ड.बी.एस.गुप्ता, डी.पी.एस.ई.ई., एन.सी.ई.आर.टी.
28.	एक्सप्लोरेश्नस इन आपटिमाईजिंग लर्निंग साइन्सीज इन स्कूल	3 वर्ष	डा। (श्रीमती) सरदम्बा राव, एफ.ए. कर्नाटक
29.	एन इनवीजिबिल स्टडी ऑफ दी एकोम्पलशमेन्टस ऑफ नेशनल साइंस टेलेन्ट स्कोलर्स	ढाई वर्ष	प्रोफेसर. एम.के.रैना, डी.पी.आर.पी.पी., एन.सी.ई.आर.टी.
30.	ए स्टडी आफ दी इफेक्ट: ऑफ साइको सोशल फैक्टर्स ऑन दी काम्प्रेहेनसिबिलिटी ऑफ लैंगवेज यूजड् इन टैक्सटबुक्स एट प्राइमरी स्टेज	2 वर्ष	डा.आई.एस.शर्मा, डी.ई.एस.एस.एच., एन.सी.ई.आर.टी.
31.	नो लाइफ बिटवीन टाइड माइन्स	2 वर्ष	डा.पी.के दुर्रानी, आर.सी.ई. भुवनेश्वर

1988-89

बाहरी परियोजनाएँ

क्र.सं.	परियोजना का शीर्षक	अवधि	मुख्य अन्वेषक
1.	कॉनस्ट्रकशन एण्ड स्टैन्डरडिसैशन ऑफ साइलेन्ट रीडिंग काम्प्रेहेनशन टेस्टिड इन गुजराती फोर प्यूपिलस आफ क्लासिज, 5,6, एंड 7	1 1/2 वर्ष	डा.बी.वी.पटेल, गुजरात
2.	सोशिवो लिंग्युस्टिक स्टडी ऑफ सनताली लैंगुएज	10 महीने	डा.डी.पी.मुखर्जी, वेस्ट बंगाल
3.	रूरल एनरिचमेंट एजुकेशन प्रोजेक्ट फीचरिंग डबलपमेंट ऑफ शलटरनैटिंग मोडलस एंड स्ट्रेटेजीज फॉर सेल्फ लर्निंग फॉर दी रूरल यूथ ऑन टोपिक्स रिलेवैन्ट टू देयर लाइफ	2 वर्ष	डा. एन.के.उपासनी, पुणे
4.	एन इनवेसटिगेशन इनटू दी प्रोबलम्स ऑफ एडजस्टमेंट बलाइन्ड स्टूडैन्टस रीडिंग इन सैकेन्ड्री स्कूल ऑफ वेस्ट बंगाल	3 वर्ष	पोफेसर एन.बनर्जी शानितनिकेतन
5.	ए लिंग्युस्टिक स्टडी ऑफ हिन्दी मोरफोफोनं एम,आई.सी.चेनजेस	2 वर्ष	डा.बी.एन. तिवारी, दिल्ली
6.	ए स्टडी ऑफ स्कूल बोर्डकास्टस इन बड़ौदा डिस्ट्रिक्ट	1 वर्ष	डा.जी.आर.सुदामे, बड़ौदा
7.	ए स्टडी ऑफ फैमिली बैकिग्राउण्ड वैरिएमल्स सम मोटिवेशनल वैरीएबल्स कोगतीहिव कैरेक्टरिस्टक्स एण्ड स्कूल परफोरमैन्स ऑफ प्राइमरी स्कूल चिल्ड्रन	18 महीने	ड.एम.बी. बुच बड़ोदा
8.	कम्पैरेटिव प्रोफोईल्स आफि एडोलिसेन्टस विद डिफिरेन्ट टेलेन्टस इन टर्मस ऑफ सम सलैक्टिड वेरीएबल्स	26 महीने	डा.अरूण कुमार गुप्ता, जम्मू
9.	डेवलपिंग एन्ड टेस्टिंग मोडलस ऑफ इनवायरमेन्टल एजुकेशन इन बोटनी रिलेवेन्ट फोर दी सोशली डिसएडवान्टेज चिल्ड्रन इन दी स्कूल ऑफ केरला	3 मीने	प्रोफेसर एन.वेदामनी मैनुल एंड डा.जे.एक्जामिल त्रिवेन्द्रम
10.	ए स्टडी आफ दी प्रोबलम ऑफ फर्स्ट जैनेरेशन लर्नर्स इन स्टैंडर्ड 1 टू 4 इन अहमदाबाद सिटी	4 महीने	डा.लीला पटेल, अहमदाबाद
11.	प्रोजेक्ट रिपोर्ट ऑन ट्राइबल्स एंड एजुकेशन ए क्वेस्ट फॉर इन्टिग्रेशन इन दी रीजनल मेन स्ट्रीम	18 महीने	डा.हेमलता तलेसरा
12.	ए फोलो-अप स्टडी ऑफ क्रियेटीविटी टैलेन्टेड कालेज स्टूडेन्टस	2 वर्ष	डा. ग्रिजेश कुमार मुरादाबाद
13.	डेवलपमेंट ऑफ टूल्स फोर आइडेन्टिफाइंग क्रियेटिव थिंकिग स्वीलीविटीज एमंग प्री-स्कूल चिजर्ल्डन फोर देयर एजुकेशन एंड प्रोपर पर्सन्ल्टी डेवलपमेंट	9 महीने	डा. भूदेव सिंह
14.	एन एवेल्यूएशन ऑफ दी नॉन-डिटेनशन सिस्टम फ्राम डिफरेन्ट एंगलस	1 वर्ष	डा.ए.वेंकटरामी रेड्डी, तिरूपति
15.	डेवलपिंग एंड इम्पलीमेनटिंग ए क्लासरूम इन्सट्रकशनल प्रोग्राम फॉर चिल्ड्रन विद लर्निंग डिफीकलटीज	20 महीने	डा. (श्रीमती) प्रेरणा मोहित बड़ौदा
16.	दी स्टडी ऑफ सेशल फेसिलीटीज इनसेनटिव एंड एजुकेशनल डेवलपमेंट ऑफ सोसायटी टूवडर्स देम	1 वर्ष	डा. अश्वनी कुमार गौड़ उदयपुर
17.	स्टडी ऑफ करन्ट स्टेटस एंड रिलेवेन्स ऑफ कम्यूनिटी न्यूट्रीशन एंड हैल्थ प्रोग्रामस थ्रो-द हैल्थ केयर सिस्टम	2 वर्ष	डा.सी.गोपालन,
18.	ए कमपेरटिव स्टेडी ऑफ दी रिलेटिव इफेक्टिवनेस ऑफ दी टीचिंग मैथडस बेसड ऑन मोटीवेशन ड्यूट कॉम्पीटीशिन एंड मोटीवेशन ड्यू टू इनीशीएटिव, स्प्रिट, इनट्रेसेट एंड टेन्डैन्सी टू कोआपरेट	2 वर्ष	प्रोफेसर एस.बी.मलहैरा महाराष्ट्र

चल रही परियोजनाएँ

आलोच्य वर्ष में परिषद् के संघटक एककों ने छः तथा बाहरी अनुसंधान संस्थाओं ने 4 अनुसंधान परियोजनाओं पर कार्य जारी रखा। ये अनुसंधान परियोजनाएँ तालिका 14.2 में दी गई हैं।

तालिका 14.2
1988-89 में चल रही अनुसंधान परियोजनाएँ

क्र.सं.	परियोजना का शीर्षक	मुख्य अन्वेषक
विभागीय परियोजनाएँ		
1.	ए क्रास-सैक्शनल स्टडी ऑफ लोजीकल रीज़निंग अमंग सोशली डिसएडवान्टेजड ग्रुप ऑफ चिल्डर्न आफि 9 टू 14 इयर्स	डा.वी.डी.भट्ट, डा.वी.के.जैन, डी.टी.ई. एस.एस.ई.एस.
2.	ए स्टडी ऑफ दी मैथड्स अडोपटिड बाई सलैक्टिड सेकेन्ड्री स्कूल्स इन इंडिया फोर डेवलपमेन्ट ऑफ मोरल ऐड एथिकल वैल्यूज एंड मेजरमैंट ऑफ वैल्यू जजमेंट ऑफ स्टूडेन्ट आफ क्लास 10 ऑफ दीज स्कूलस	डा. आर.सी.दास., डा.जी.एस.हटी आर.सी.ई.भुवनेश्वर
3.	स्टूडेन्ट लर्निंग स्टाईल्स : एनेलेसिस ऑफ थ्योरी, रिसर्च एंड इंसटूमेंटेशन	डा.एम.के.रैना, डी.पी.आर.पी.सी.
4.	क्रिटीकल सर्वे ऑफ हिस्ट्री टीचिंग इन राजस्थान	डा.वी. केरैना, डी.एन.एफ.ई. एंड एस.सी./एस.टी.
5.	ए स्टडी ऑफ एन.एफ.ई. करिकुलम एंड इंस्ट्रक्शनल मैटीरियल्स एंड देयर इम्पलीकेशनस फॉर इन्सट्रक्शनल प्रोग्राम	डा. (श्रीमती) पी.दास.गुप्ता, डी.पी.एस.ई.ई.
6.	ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ चाईल्ड रियरिंग प्रेक्टिसेस ऑफ मदरर्स ऑफ हाई एंड लो एचिवर्स इन सोशियो इकोनामिकली डिस एडवान्टेज ग्रुप	डा. (श्रीमती) विनीता कौल, डा. (श्रीमती) चित्रा रामाचन्द्रन
बाहरी परियोजनाएँ		
1.	इफेक्ट ऑफ जूरिसप्रियूडैनियल स्ट्रेटजी टीचिंग ऑन दी डवलपमेंट ऑफ सोशल कान्ससनैस एंड एबीलिटी टू साल्व वैल्यू कन्फलक्टिस	डा.एस.के.पाल, डा.के.इस.मिश्रा, यूनीवर्सिटी आफ इलाहाबाद
2.	एट्रबीयूटनल एनेलेसीस ऑफ टीचर एजुकेशन इन सेकेन्ड्री स्कूल	डा. शिवगणेश भार्गव भोपाल यूनीवर्सिटी
3.	ए स्टडी ऑफ इफेक्टीवीनेशन ऑफ मास्टरी लर्निंग एप्रोच इन टीचिंग मैथमैटिक्स एट दी सेकेन्ड्री लेवल ऑफ एजुकेशन इन वेस्ट बंगाल	प्रो. मदन मोहन चेल एंड प्रो.के.सी. मन्दाल, फकीर चन्द कॉलेज
4.	ए स्टडी ऑफ दी सेशन इनसेन्टिवज इनसैनटिक्स एंड इजुकेशनल डेवलपमैन्ट आफि ट्राइबल स्टूडेन्टस एंड एटीच्यूड ऑफ दी सोसाइटी टूवर्डस देम	डा.ए.के.गौड़, उदयपुर

1988-89

बन्द की गई परियोजनाएँ

1988-89 में परिषद् के संघटक एककों द्वारा 13 अनुसंधान परियोजनाएँ तथा रा.शै.अ.प्र.प. से बाहर के शोधकर्ताओं द्वारा 2 अनुसंधान परियोजनाएँ बंद की गईं। इन परियोजनाओं की सूची तालिका 14.3 में दी जा रही है।

तालिका 14.3
1988-89 में बन्द की गई परियोजनाएँ

क्र.सं.	परियोजनाओं का शीर्षक	समाप्ति की तारीख
विभागीय परियोजनाएँ		
1.	मल्टी कम्यूनिटी फील्ड स्टडी ऑफ चाइल्ड सोशलाइजेशन इन इंडिया क्रास कल्चरल एप्रीसियेशन ऑफ पेरेन्टस एक्सपेटेन्स रिजेशन थ्योरी	5 जुलाई 1988
2.	एन.इन-डेपथ फोलो अप स्टडी आफ दी नेशनल टेलेन्ट सर्च अवेयरेन्स फोर दी ईयर 1971-75 डा.के.एन.सक्सेना, डी.एम.ई., एन.सी.ई.आर.टी.	7 जून, 1988
3.	मेजरमेन्ट, ऑफ एफेक्टिव आउट कम्स ऑफ प्राइमरी स्कूल एजुकेशन डा.पी.एम.पटेल., डी.एम.ई., एन.सी.ई.आर.टी.	16 अगस्त, 1988
4.	ए स्टडी आर्फ पियाजेशियन कन्क्रीट ओपरेशनल स्टेज ए.सी.पचौरी, आर.सी.ई.भोपाल	17 अगस्त 1988
5.	ए लोन्गीट्यूडनल इनवैस्टिगेशन इन टू दी ड्राप आउट प्रोसेस एंड करेक्टरेस्टिक्स ऑफ ड्राप आउटस डा.ए.शर्मा., डी.पी.आर.पी.पी., एन.सी.ई.आर.टी.	12 अगस्त, 1988
6.	डेवलपमेन्ट ऑफ मेजरमेन्ट टूल्स (ओबजर्वेशन शैलडयूल एंड रेटिंग स्केल) फॉर एवेल्यूएटिंग वर्किंग विद कम्यूनिटी डा.बी.के. मिट्टू, एफ.ए. जम्मू और कश्मीर	31 अगस्त 1988
बाहरी परियोजनाएँ		
1.	मेजरिंग डिसपेरिटिज् इन एनरोलमेन्ट एंड स्कूलिंग फेसिलिटज यूजिंग दा डेटा जैनेरेटिड बाई आल इंडिया एजुकेशनल सर्वे ऑफ दी एन.सी.ई.आर.टी. डा.जे.एल. आजाद	25 अगस्त 1988
2.	इवेल्यूशन टूल्स ऐड टीचिंग मेथडस ऑफ हिन्दी शोर्ट स्टोरी एट + टू एंड अन्डर ग्रेजुएट लेवेल डा.आर.सी.शर्मा, नई दिल्ली	16 अगस्त 1988

एन.आई.ई.व्याख्यान माला

शैक्षिक अनुसंधान को प्रोत्साहन देने, प्रसारित करने और शैक्षिक अनुसंधान पर विचारों को आदान-प्रदान करने के प्रयास के रूप में परिषद् शिक्षा और अनुसंधान में रुचि रखने वालों के लाभ के लिए विदेश और भारत के विख्यात शिक्षाविदों और अनुसंधान कर्ताओं की वार्ता/व्याख्यान को एन.आई.ई. व्याख्यान माला के अंतर्गत आयोजित करती रही है। एन.आई.ई. व्याख्यान माला के अतंर्गत विभिन्न विषयों पर वार्ता देने के लिए तीन श्रेष्ठ शिक्षाविदों को आमंत्रित किया गया, जैसा कि तालिका 14.4 में दर्शाया गया है ।

तालिका 14.4

1988-89 में एन.आई.ई. व्याख्यान माला के अंतर्गत दी गई वार्ता

क्र.सं.	वक्ता	विषय	तारीख
1.	श्री टोकियो हैसगावा, निदेशक, मिथिला म्यूजियम, ओइके (जापान)	कोसमोस बनाम मधुवनी चित्रकलाएँ मिथिला लोक कलाएँ	16 मार्च 1989
2.	श्री एम.पी.पंडित, अरविन्द आश्रम पांडिचेरी	श्री अरविन्द दर्शन तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति	5 अप्रैल 1989
3.	श्री एम.एल. मल्होत्रा, लोक शिकायत के निदेशक, मंत्रिमंडल सचिवालय	प्रशासनिक सुधार एवं लोक शिकायत	17 अप्रैल 1989

एरिक उप-समिति की बैठक

अनुसंधान के जो प्रस्ताव परिषद् अपने संघटक एककों और अन्य संस्थानों से प्राप्त करती है, उनका मूल्यांकन और जाँच-परख एरिक की एक उप-समिति, जिसमें श्रेष्ठ शिक्षाविद रहते हैं, द्वारा की जाती है। आलोच्य वर्ष में प्राप्त परियोजनाओं की जाँच-परख के लिए एरिक उप-समिति की तीन बैठकें हुईं।

देश में शैक्षिक अनुसंधान की गुणवत्ता के सुधार हेतु क्षेत्रीय संगोष्ठी

एरिक निर्णय के अनुपालन में, शैक्षिक अनुसंधान की गुणवत्ता के सुधार हेतु दो क्षेत्रीय संगोष्ठियाँ आयोजित की गईं। उत्तरी क्षेत्र के लिए प्रथम क्षेत्रीय संगोष्ठी कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर में 11 से 15 जुलाई, 1988 तक हुई। संगोष्ठी, कई शोध प्रश्नों तथा समस्याओं की पहचान, एम.ए.शिक्षा/ एम.फिल/पी एच.डी. अनुसंधान के लिए की गई। दूसरी क्षेत्रीय संगोष्ठी एस.आर.के मिशन शिक्षा महाविद्यालय, कोयम्बटूर में 28 सितम्बर से 3 अक्तूबर 1988 तक शैक्षिक अनुसंधान की गुणवत्ता के सुधार हेतु आयोजित की गई। विभिन्न विश्वविद्यालयों/संस्थानों से 25 शिक्षाविदों/समाज शास्त्री तथा शोधकर्ताओं ने संगोष्ठी में भाग लिया। संगोष्ठी में सात मुख्य विषयों तथा चार मुख्य क्षेत्रों के विषयों से संबंधित अनुसंधान प्रश्नों/समस्याओं की पहचान की गई। इन दोनों क्षेत्रीय

1988-89

संगोष्ठियों की रिपोर्ट का व्यापक प्रसार किया गया तथा सभी शिक्षा सचिवों, शिक्षा निदेशकों, राज्य शिक्षा संस्थानों/राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के निदेशकों तथा प्रधानाचार्य और देश में शिक्षा/विश्वविद्यालयों के चयनित विभागों को भेजी गई।

अनुसंधान कार्य-प्रणाली पाठ्यक्रम/कार्यशालाएँ

अनुसंधान कार्य प्रणाली-पाठ्यक्रम के विकास की रूपरेखा के लिए एक कार्यशाला 8 से 11 दिसम्बर, 1988 तक अलगप्पा विश्वविद्यालय कराकुडी, तमिलनाडु में आयोजित की गई। कार्यशाला में तीन विभिन्न पाठ्यक्रमों का विकास, अनुसंधान कर्ताओं के विभिन्न स्तरों की आवश्यकता के अनुरूप बनाया गया। स्तर-1 पाठ्यक्रम शिक्षा तथा समवर्गी विषय में स्नातकोत्तर उपाधि रखने वाले व्यक्तियों जो अपनी पी एच.डी. कर रहे हैं। उनके लिए है।

उच्च डाक्ट्रेट स्तर तथा पोस्ट डाक्ट्रेट विद्यार्थियों, अनुसंधान मार्गदर्शकों और अन्य, जिनमें शैक्षिक अनुसंधान करने की कुछ क्षमता पहले से ही विद्यमान हो, उनके लिए स्तर-2 का पाठ्यक्रम है। स्तर-3 पाठ्यक्रम का आयोजन एक संगोष्ठी के रूप में करना चाहिए, जिससे प्रतिभागियों को शिक्षा में शोध के लिए व्यापक परिप्रेक्ष्य बन सके।

स्तर-1 पाठ्यक्रम के संशोधित पाठ्य- विवरण के आधार पर एक कार्य प्रणाली पाठ्यक्रम परिषद् ने 27 मार्च से 5 अप्रैल, 1989 तक अजमेर में आयोजित किया। देश के सभी भागों से 24 प्रतिभागियों ने पाठ्यक्रम में भाग लिया।

कनिष्ठ अनुसंधान फैलो/कनिष्ठ परियोजना फैलो के लिए शिक्षावृत्ति में संशोधन

रा.शै.अ.प्र.प. के पास डाक्ट्रेट हेतु अनुसंधान कार्य करने के लिए कनिष्ठ अनुसंधान शिक्षावृत्ति का कार्यक्रम है। इस समय राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.) नई दिल्ली में दो कनिष्ठ अनुसंधान फैलो पीएच.डी. कार्यक्रम के लिए कार्य कर रहे हैं। आलोच्य वर्ष में रा.शै.अ.प्र.प. ने 1 अप्रैल 1987 से यू.जी.सी. मानदण्ड के अनुसार शिक्षावृत्ति की राशि रू. 1,000 से बढ़ा कर रू. 1,800/- प्रतिमाह कर दी है और प्रांसगिक व्यय की राशि रू. 5,000/7,000/- प्रतिवर्ष की है।

शैक्षिक अनुसंधान पर इन हाउस ग्रुप की बैठक

शैक्षिक अनुसंधान पर इन हाउस ग्रुप समूह की दूसरी बैठक 25 मई, 1988 को आयोजित की गई। इस बैठक में परियोजना प्रतिपादन के नए प्रपत्र और एरिक प्रायोजित परियोजना के लिए सहायता की प्रक्रिया पर विचार-विमर्श हुआ।

अनुसंधान से प्राप्त तथ्यों का प्रचार/प्रसार

अनुसंधान से प्राप्त तथ्यों का प्रचार करना रा.शै.अ.प्र.प. का एक प्रमुख कार्य है। आलोच्य वर्ष में शिक्षा में अनुसंधान के चौथे सर्वेक्षण के प्रकाशन को अंतिम रूप दिया गया। यह सर्वेक्षण, शिक्षा में अनुसंधान के पहले, द्वितीय और तृतीय सर्वेक्षण की तरह भारत में शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में किए गए अनुसंधान कार्य की सूचना देता है।

पीएच.डी. थीसिस/मोनोग्राफ के प्रकाशन

एरिक की सहायता से 1988-89 में निम्नलिखित पीएच.डी.थीसिस/मोनोग्राफ का प्रकाशन किया गया जो तालिका 14.5 में दिया गया है।

1988-89

तालिका 14.5
1988-89 में प्रकाशित पीएच.डी. थीसिस/मोनोग्राफ

क्र.सं.	शीर्षक	लेखक का नाम
1.	हिस्ट्री आफ एजुकेशनल डेवलपमेन्ट	डा.के.बी.चौधरी, श्रीनगर, गढ़वाल
2.	दी सिख गुरूज़ एजुकेशन	डा.डी.एन.खोसला, एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली
3.	बायलोजी टीचिंग : मोडूलर एप्रोच	डा. डब्ल्यू.ए.एफ.हॉपर, मद्रास
4.	लीडरशिप एंड इटस कोरिलेटस	डा.सरोज पाण्डे, इलाहाबाद
5.	डेवलपमेन्ट आर्फ रिप्रीजेंटेशनल कम्पीटेन्स एमंग चिल्ड्रन	डा. आराधना शुक्ला, गोरखपुर
6.	सिक्यूलर मैटर इन ॠगवेद	डा. रमन रानी पाल, गाजियाबाद, यू.पी.
7.	एटीट्यूड्स, सैल्फ कान्सेप्ट, वैल्यूज एंड एचिवमेन्ट ऑफ कालेज स्टूडेन्ट्स	डा.आर.एन.मानव, औरैया, यू.पी.
8.	हाईपोथीसिस मेकिंग एंड टेस्टिंग एबिलिटिज	डा. (श्रीमती) अविनाश ग्रेवल, आर.सी.ई.,भोपाल
9.	फिजिकल एजुकेशन एंड एडजस्टमेंट	डा.यामिनी देवी, इम्फाल,
10.	यूनिवर्सल प्राइमरी एजुकेशन एज इन्नोवेशन : ए स्टडी ऑफ वेस्टेज इन इंडियन विलेज	डा. इन्दू ग्रोवर, हिसार
11.	चिल्ड्रन लिट्रेचर इन इंगिलश विद स्पेशल रेफेरेन्स टू इंडिया	डा.इंदिरा कुलश्रेष्ठ, एन.सी.ई.आर.टी.
12.	टीचिंग लर्निंग स्ट्रेटिजीज एंड थीमेटिकल क्रियेटिविटी	डा. भूदेव सिंह, सुल्तानपुर
13.	स्कूल साइंस एजुकेशन इन इंडिया	डा.एच.एल.शर्मा, एन.सी.ई.आर.टी.
14.	रोल ऑफ होम बैकग्राउन्ड इन एकादमिक एचिवमेंट	डा.ए.ज. वादकर, पुणे
15.	एजुकेटिंग द इंडियन इलिट	डा.आर.पी.सिंह, एन.सी.ई.आर.टी.
16.	वैल्यू-ओरिएन्टेड एजुकेशन (ए वेलीडेशन स्टडी)	डा. स्वदेश मोहन, एन.सी.ई.आर.टी.
17.	मारल डेवेलपमेन्ट इन स्कूल चिल्ड्रन	डा.के.एम गुप्ता, एन.सी.ई.आर.टी.

1988-89 में मंजूर की गई पीएच.डी. थीसिस/मोनोग्राफ के प्रकाशन का अनुमोदन तालिका 14.6 में दिया गया है।

तालिका 14.6
1988–89 में मंजूर की गई पीएच.डी थीसिस मोनोग्राफ की प्रकाशन सहायता का अनुमोदन

क्र.सं.	शीर्षक	लेखक का नाम
1.	चिल्ड्रन लिटरेचर इन इंगिलश विद स्पेशल रेफेरेन्स टू इंडिया	डा.इंदिरा कुलश्रेष्ठ एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली
2.	ए स्टडी ऑफ स्कूल इफेक्टिवेनेस इन रिलेशन टू ओरगेनाइजेशनल क्लाईमेट	डा. रंजना श्रीवास्तव, इलाहाबाद
3.	सम एस्पेक्ट ऑफ एजुकेशन पोलिसी इन इंडिया पास्ट एंड प्रजेन्ट	डा. सुरेश चन्द्र घोष, नई दिल्ली
4.	एफेक्टिवेनेस ऑफ एडवांस आर्गेनाइजर एंड इन्क्वायरी ट्रेनिंग मोडल्स फोर टीचिंग सोशल स्टडीज टू एट्थ क्लास स्टूडेन्टस	श्री निवास पाण्डे, जौनपुर

1988-89

क्र.सं.	शीर्षक	लेखक का नाम
5.	एन इन्वेस्टिगेशन इन टू दी इन्टररिलेशनशिप बिटविन मेजर्स ऑफ सेलेक्टेड गुलफोर्डस एस.डी. फेक्टरस ऐड सैट कन्सेप्ट एचिवमेन्ट ऑफ सैकेन्ड्री लेवल स्टूडेन्टस आर्फ देलही स्टेट	डा.ए.डी. तिवारी, भिवानी, हरियाणा
6.	इफेक्ट आर्फ वेरीयेशन इन एडवांस ओरगनाईजेशन आन दी कोगनिटिव सब सम्पेशन इन लाइफ साइंस	डा. सनत कुमार घोष, हावड़ा
7.	प्रोफोइल आफ दी इफेक्टिव टीचर	डा.एन.ए. नदीम, श्रीनगर
8.	ए स्टडी ऑफ दी इफेक्ट आफ एजुकेशन अपोन सोशिओ - साइकोलोजिकल पेटर्न आर्फ रूरल लाइफ ऑफ कुमायूँ रीजन यू.पी.	डा.जी.सी. उपाध्याय
9.	ए कम्पेरिटिव स्टडी ऑफ दी एडजेसमेन्ट प्रोबलम्स ऑफ हाई क्रियेटिव हाई इन्टेलीजेन्ट एंड हाई क्रिएटव लो इन्टेलीजेन्ट चिल्ड्रन इन सैकेन्ड्री स्कूल्स	डा.उमेश चन्द्र, दिल्ली

शिक्षकों और अध्यापक प्रशिक्षकों में अनुसंधान और नवाचार का विकास

विद्यालयों के अध्यापकों में अनुसंधान, प्रयोग और नवाचारी प्रक्रिया को प्रोत्साहन देने के लिए परिषद् प्रत्येक वर्ष शिक्षण विधि से संबंधित नवाचार और प्रयोग संबंधी विषयों पर संगोष्ठी पाठमाला कार्यक्रम आयोजित करती रही है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत रु. 1000/- प्रति पुरस्कार के 50 नकद पुरस्कार विद्यालयों के अध्यापकों को दिए जाते हैं, जिसमें 25 नकद पुरस्कार ''प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों द्वारा नवाचार'' की प्रतियोगिता में चुनिंदा रिपोर्टों पर तथा 25 नकद पुरस्कार ''माध्यमिक/उच्चतर माध्यमिक विद्यालय अध्यापकों द्वारा नवाचार'' की प्रतियोगिता के अंतर्गत दिए गए। वर्ष 1988-89 के लिए संगोष्ठी पाठमाला प्रतियोगिता के लिए मूल विषय निम्नलिखित थे :

1. विद्यालयों में जनसंख्या शिक्षा का अध्यापन।
2. विद्यालयों में भाषाओं का अध्यापन।
3. विद्यालयों में विज्ञान तथा गणित का अध्यापन।
4. विद्यालयी बच्चों में शिक्षा के माध्यम से वांछित मूल्यों का समावेश।
5. शिक्षा के माध्यम से राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास।
6. विद्यालयी बच्चों में वैज्ञानिक प्रवृति का समावेश।
7. पर्यावरण संबंधी शिक्षा।

प्राथमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों तथा माध्यमिक अध्यापक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के अध्यापक शिक्षकों में अनुसंधान, प्रयोग और नवाचारी प्रक्रिया को प्रोत्साहन देने के लिए रा.शै.अ.प्र.प. प्रत्येक वर्ष शिक्षण विधि से संबंधित नवाचार और प्रयोग संबंधी विषयों पर संगोष्ठी पाठमाला कार्यक्रम भी आयोजित करती रही है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत रु. 1,000/- प्रति पुरस्कार के 30 नकद पुरस्कार राष्ट्रीय स्तर पर चयनित निबंधों को दिए जाते हैं, जिनमें 20 नकद पुरस्कार प्राथमिक अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत तथा 10 नकद पुरस्कार माध्यमिक स्तर के अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में कार्यरत अध्यापक शिक्षकों को दिए गए।

इसके अतिरिक्त राज्यों में स्थित रा.शै.अ.प्र.प. के क्षेत्रीय सलाहकारों के कार्यालय भी, विद्यालय अध्यापकों में नवाचार और प्रयोग को प्रोत्साहन देने के परिषद् के प्रयास के अंग के रूप में शिक्षण-विधि से संबंधित कुछ प्रायोगिक परियोजना हाथ में

लेने के लिए विद्यालय अध्यापकों को वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं। 1988-89 में इस उद्देश्य के लिए रु. 5,000/- प्रत्येक क्षेत्रीय कार्यालय को दिए गए। क्षेत्रीय सलाहकार कार्यालय द्वारा अनुमोदित प्रत्येक परियोजना के लिए रू 500/- से 1,000/- तक वित्तीय सहायता दी गई।

शिक्षा संगठनों को सहायता की योजना

शिक्षा और विशेषकर विद्यालयी शिक्षा के सुधार के लिए स्वैच्छिक प्रयासों को न केवल बरकरार रखना बल्कि उन्हें बढ़ावा भी देने के लिए पिछले कुछ वर्षों से परिषद् व्यवसायिक शिक्षा संगठनों (पी.ई.आर.एस.) को वित्तीय सहायता देने की एक योजना चलाती रही है। 1988-89 में, सात व्यवसायिक शिक्षा संगठनों को पत्रिकाओं के प्रकाशन हेतु और 7 व्यवसायिक शिक्षा संगठनों को सम्मेलनों/संगोष्ठियों/कार्यशालाओं के आयोजन हेतु वित्तीय सहायता दी गई। इन व्यवसायिक शिक्षा संगठनों से संबंधित अनुदान का विवरण तालिका 14.7 तथा 14.8 में दिया जा रहा है :

तालिका 14.7
पत्रिकाओं के प्रकाशन हेतु वर्ष 1988-89 में व्यवसायिक शिक्षा संगठनों को दिया गया अनुदान

क्र.सं.	संगठनों के नाम	पत्रिका का शीर्षक	स्वीकृत राशि
1.	इंगिलश लैंगवेज टीचर्स एसोसिएशन आफ इंडिया, 3 फर्स्ट ट्रस्ट लिंक स्ट्रीट मंदावली पक्कम, मद्रास-28	''जर्नलसआर्फ इंगिलश लैंगवेज टीचिंग''	रु. 3,000/-
2.	एसोसिएशन फोर इम्प्रूवमेन्ट आर्फ मैथमैटिक्स टीचिंग, 25 फेर्न रोड, कलकत्ता-19	''इंडियन जर्नलस आफ मैथमैटिक्स टीचिंग''	रु. 4,000/-
3.	सोसाइटी आफ एजुकेशनल रिसर्च एंड डेवलपमैन्ट 46, हरी नगर, गोटरी रोड, बड़ौदा-390007	''पर्सपैक्टिव इन एजुकेशन''	रु. 5,000/-
4.	एसोसियेशन फॉर दी प्रमोशन आर्फ साइंस एजुकेशन, 3 फर्स्ट ट्रस्ट लिंक स्ट्रीट, मंदावलीपपक्कम, मद्रास-28	''जूनियर साईन्टिस्ट''	रु. 5,000/-
5.	इंडियन फिजिक्स एसोसिएशन द्वारा टाटा इंस्टिट्यूट आर्फ फन्डामेंटल रिसर्च, होमी भाभा रोड, बंबई-5	''फिजिक्स न्यूज''	रु. 5,000/-
6.	एस.आई.टी.यू. काउन्सिल आर्फ एजुकेशनल रिसर्च, 3 फर्स्ट ट्रस्ट लिंक स्ट्रीट, मंदावलीपक्कम, मद्रास-28	''एक्सपैरिमेन्ट्स इन एजुकेशन''	रु. 3,000/-
7.	इंडियन एसोसिएशन आर्फ फिजिक्स टीचर्स, 2-ए/229, आजाद नगर, कानपुर 200002	''फिजिक्स टीचर्स,	रु. 4,000/-

1988-89

तालिका 14.8

1988-89 में सम्मेलन/संगोष्ठियाँ/कार्यशालाएँ आयोजित करने के लिए परिषद् द्वारा व्यवसायी शिक्षा संगठनों को दिया गया अनुदान

क्र.सं.	कार्यक्रमों का नाम	उद्देश्य	स्वीकृत राशि
1.	एकादमी आफँ हास्पिटल एडमिनिस्ट्रेशन डिपार्टमेंट आफँ हास्पिटल, एडमिनिस्ट्रेशन ए.आई.आई.एम.एस.अंसारी नगर, नई दिल्ली-110029	"चिकित्सालय में मानव संसाधन विकास पर राष्ट्रीय कार्यशाला"	रु. 5,000/-
2.	दी फ्रेन्डस एट आरकाइब्स ग्रुप, नेशनल आरकाइव्स आफ इंडिया, जनपथ नई दिल्ली-110001	"भारत में गरीबी हटाने में गाँधी और नेहरू के योगदान" पर संगोष्ठी	रु. 5,000/-
3.	आल इंडिया साइंस टीचर्स एसोसिएशन, भारतीय विद्याभवन, कस्तूरबा गाँधी मार्ग, नई दिल्ली	"एशियन एसोसिएशन फॉर बायलोजी, एजूकेशन का 12 वाँ द्विवर्षीय सम्मेलन"	रु. 20,000/-
4.	इंडियन एकादमी आफँ सोशल साइंस ईश्वरशरण डिग्री कालेज कैम्पस, इलाहाबाद-4	13 वीं सोशल कांग्रेस "विकास का सामाजिक तात्पर्य : एशिया	रु. 10,000/-
5.	आल इंडिया जुविनाइललिटरेरी कान्फ्रेंस सिल्वर जुबली सेलीब्रेशन कमेटी, 79-बी, पाकेट-3 मयूर बिहार, दिल्ली-110091	"बच्चों के साहित्य पर भारतीय संगोष्ठी"	रु. 5,000/-
6.	सेन्टर फारँ रिसर्च इन रूरल इन्डस्ट्रियल डेवलपमेन्ट, 2-ए सैक्टर 19-ए मध्य मार्ग, चंडीगढ़-160019	"राष्ट्र निर्माण, विकास प्रक्रिया तथा सम्प्रेषण पर संगोष्ठी"	रु. 15,000/-
7.	बंगाल लाईब्रेरी एसोसिएशन, पी-134 सी.आई.टी.स्कीम नंबर 52, कलकत्ता-700014	अखिल भारतीय पुस्तकालय सम्मेलन का संयुक्त अधिवेशन	रु. 5,000/-

1988-89

पन्द्रह

प्रकाशन, प्रलेखन और प्रसारण

परिषद् के कुछ मुख्य कार्यकलाप विद्यालय स्तर के लिए पाठ्यपुस्तकों, अभ्यास पुस्तिकाओं, अध्यापक संदर्शिकाओं तथा अध्यापकों के लिए अन्य अध्ययन सामग्री, अनुसंधान रिपोर्टों तथा मोनोग्राफ, व्यवसायिक पत्रिकाओं आदि का प्रकाशन एवं शैक्षिक सूचना का प्रलेखन और प्रसारण करना है। रा.शै.अ.प्र.प. का प्रकाशन विभाग परिषद् के प्रकाशन कार्यक्रमों को देखता है। पुस्तकालय, प्रलेखन और सूचना विभाग सामान्य पुस्तकालय सेवाएँ उपलब्ध कराने के अतिरिक्त प्रलेखन सेवाओं का कार्य भी करता है। परिषद् का पत्रिका प्रकोष्ठ 6 शैक्षिक पत्रिकाओं के माध्यम से शैक्षिक सूचना के प्रसार से संबंधित कार्य देखता है।

प्रकाशन

परिषद् के प्रकाशनों के निम्नलिखित मुख्य वर्ग हैं :

1. विद्यालय पाठ्यपुस्तक, अभ्यास-पुस्तिका तथा निर्धारित पूरक रीडर।
2. अध्यापक संदर्शिका, अध्यापक हैंडबुक और अन्य अनुदेशी सामग्री।
3. अनुसंधान रिपोर्ट और मोनोग्राफ।
4. शैक्षिक सम्मेलनों, संगोष्ठियों की रिपोर्ट, पत्रक/पुस्तिकाएँ, फोल्डर आदि।
5. शैक्षिक पत्रिकाएँ।

आलोच्य वर्ष में विभिन्न वर्ग के कुल 236 प्रकाशन प्रकाशित हुए, जिनका विवरण तालिका 15.1 में दिया गया है ।

तालिका 15.1

1988-89 में प्रकाशित प्रकाशन

प्रकाशन वर्ग	प्रकाशनों की संख्या
पाठ्यपुस्तकों/अभ्यास पुस्तिकाओं/निर्धारित पूरक रीडरों का प्रथम संस्करण	61
पाठ्यपुस्तकों/अभ्यास पुस्तिकाओं/निर्धारित पूरक रीडरों का पुनर्मुद्रण	108
अन्य सरकारी अभिकरणों के लिए पाठ्यपुस्तकें/अभ्यास पुस्तिकाएँ	16
अनुसंधान मोनोग्राफ/रिपोर्ट तथा अन्य प्रकाशन	37
शैक्षिक पत्रिकाएँ/सावधिक प्रकाशन (अंक)	14
योग	236

इन प्रकाशनों की सूची इस अध्याय के अंत में दी गई है।

नई पाठ्यपुस्तकों का प्रकाशन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के कार्यान्वियन कार्यक्रम के अंतर्गत कक्षा 1 से 12 तक की नई पाठ्यपुस्तकों सहित अनुदेशी पैकेज तैयार करने का दायित्व रा.शै.अ.प्र.प. ने लिया है। 1987 में कक्षा 1,3, तथा 6 के लिए नई पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित की गईं तथा केन्द्रीय विद्यालयों एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् (सी.बी.एस.ई.) से सम्बद्ध कुछ अन्य विद्यालयों में शैक्षिक सत्र 1987-88 के दौरान लगाई गईं। 1988-89 में रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा कक्षा 2,4,7,9 तथा 11 के लिए नई पाठ्यपुस्तकें तैयार की गईं तथा प्रकाशित की गईं और इन्हें केन्द्रीय विद्यालयों तथा केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् से सम्बद्ध कुछ अन्य विद्यालयों में 1988-89 में लागू किया गया। परिषद् ने कक्षा 5 तथा 8 के लिए नई पाठ्यपुस्तकें तैयार करने एवं कक्षा 10 तथा 12 के लिए विज्ञान तथा गणित की पाठ्यपुस्तकों से संबंधित गतिविधियाँ प्रारम्भ कीं। रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा बनाई गई कक्षा 5,8,10 तथा 12 की इन नई पाठ्यपुस्तकों के शैक्षिक सत्र '89–90' में केन्द्रीय विद्यालयों में लागू होने की आशा है।

आदर्श अनुदेशी सामग्री

विद्यालयी शिक्षा में कार्यानुभव के प्रमुख क्षेत्रों में आदर्श अनुदेशी सामग्री की 20 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है।

व्यवसायी पाठ्यक्रमों पर पुस्तकें

व्यवसायी पाठ्यक्रमों पर अनुदेशी-सह-प्रयोगात्मक मैनुअल तथा अध्यापक निर्देशिका की 15 पुस्तकें प्रकाशित की गईं।

रीडिंग टू लर्न सीरीज

परिषद् ने ''रीडिंग टू लर्न'' सीरिज के अंतर्गत विद्यालय शिक्षा के विभिन्न स्तरों के लिए अंग्रेजी और हिन्दी में पुस्तकों की एक नई पुस्तक माला जारी की है। इस माला की पुस्तकों का ध्येय पुस्तकों के लिए प्यार पैदा करने और आश्चर्य और सुन्दरता से भरपूर विश्व के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए बच्चों को तैयार करना है। अब तक इस माला में 9 पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं।

पढ़ें और सीखें योजना

रा.शै.अ.प्र.प. रुचिकर और सूचनात्मक विषयों पर विभिन्न आयु वर्ग के बच्चों के लिए हिन्दी में पुस्तकें प्रकाशित करती रही है। कई विख्यात वैज्ञानिकों ने रा.शै.अ.प्र.प. के लिए ये पुस्तकें लिखी हैं। अब तक इस माला के अंतर्गत 19 पुस्तकें प्रकाशित की जा चुकी हैं।

लोटस सीरीज (कमल पुस्तक माला)

रा.शै.अ.प्र.प. ने ''लोटस सीरीज'' (कमल पुस्तक माला) के अंतर्गत लोकप्रिय पुस्तकों की एक नई पुस्तक माला चलाई है। इस माला का उद्देश्य 11-16 आयु वर्ग के किशोर पाठकों को विभिन्न विषयों के ज्ञान जगत से परिचित करा कर कम मूल्य की पुस्तकें उपलब्ध कराना है। संचार माध्यम ने इसे परिषद् का ''एक रुपया पुस्तक क्रान्ति'' कहा है। इस माला के अंतर्गत प्रकाशित की जाने वाली पुस्तकों के दो संस्करण होंगे - पहला एक रुपये वाला पेपर बैक संस्करण और दूसरा अधिक मूल्य का दफ्ती की जिल्दवाला पुस्तकालय संस्करण होगा। इस सीरीज के अंतर्गत निकाली गई पहली पुस्तक ''द हिस्टोरिक ट्रायल आफ महात्मा गाँधी'' काफी लोकप्रिय सिद्ध हुई है। दूसरी पुस्तक ''लिविंग थाट्स आफ जवाहरलाल नेहरू'' और इसका हिन्दी संस्करण भी प्रकाशित हो चुका है। इस पुस्तक के हिन्दी संस्करण का विमोचन पटना के पुस्तक मेले में नवम्बर, 1988 में बिहार के माननीय राज्यपाल श्री जी.एन.सिंह द्वारा किया गया।

पापुलर साइंस सीरीज

रा.शै.अ.प्र.प. ने ''पापुलर साइंस सीरीज'' के नाम से पूरक

रीडरों की एक नई माला प्रारम्भ की है। इसके अतंर्गत प्रसिद्ध वैज्ञानिकों द्वारा पुस्तकें लिखी जाएँगी। ये पुस्तकें 8-10 आयु वर्ग के बच्चों के लिए मुख्य रूप से होंगी। प्रारम्भ में इस सीरीज के अंतर्गत चार पुस्तकें लिखी जा रही हैं। ''एनर्जी'' नामक पहली पुस्तक शीघ्र ही प्रकाशित होगी।

बिक्री

आलोच्य वर्ष में रा.शै.अ.प्र.प. के प्रकाशनों से कुल रु. 6,85,09,026 की शुद्ध प्राप्ति हुई, जो पिछले वर्ष से 13.6% अधिक थी।

कापीराइट की अनुमति

राज्य-स्तर के अनेक अभिकरणों ने रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा प्रकाशित पुस्तकों में अपनी अभिरुचि दिखलाई है। तालिका 15.2 में उन अभिकरणों के नाम दिए गए हैं, जिन्हें आलोच्य वर्ष में परिषद् ने अपनी पाठ्यपुस्तकों और अन्य प्रकाशन/प्रकाशनों को प्रकाशित करने के लिए स्वीकरण/अनुकूलन करने की अनुमति दी है।

तालिका 15.2
1988-89 में दी गई कापीराइट अनुमति

दिल्ली पाठ्यपुस्तक ब्यूरो अलीगंज कर्बला मार्केट, लोदी रोड, नई दिल्ली	कक्षा 1,3, तथा 6 की निम्नलिखित नई पाठ्यपुस्तकों के पुनर्मुद्रण तथा कक्षा 2,4, तथा 7 की नई पाठ्यपुस्तकों के मुद्रण तथा वितरण के लिए कापीराइट अनुमति दी गई। **कक्षा-एक** 1. बाल भारती भाग-एक 2. अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग-एक 3. गणित भाग-एक **कक्षा-दो** 1. बाल भारती भाग-दो 2. अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग–दो 3. गणित भाग-दो **कक्षा-तीन** 1. बाल भारती भाग-तीन 2. अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग-तीन 3. गणित भाग-3 4. हम और हमारा देश 5. परिवेश अन्वेषण भाग-एक (विज्ञान) **कक्षा-चार** 1. बाल भारती भाग-चार 2. अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग-चार 3. गणित भाग-चार

1988-89

4. हमारा देश भारत
5. परिवेश अन्वेषण भाग-दो (विज्ञान)

कक्षा-छः

1. किशोर भारती भाग-एक
2. संक्षिप्त रामायण
3. गणित भाग-एक
4. देश और उनके निवासी भाग-एक
5. प्राचीन भारत
6. हमारा नागरिक जीवन
7. विज्ञान भाग-एक

कक्षा-सात

1. किशोर भारती भाग-दो
2. संक्षिप्त महाभारत
3. गणित पुस्तक - दो (भाग-एक तथा दो)
4. विज्ञान भाग-दो
5. देश और उनके निवासी भाग-दो
6. मध्यकालीन भारत
7. हम अपना शासन कैसे चलाते हैं

सचिव, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, हि.प्र. धर्मशाला जिला कांगड़ा

कक्षा 1,3 तथा 6 की निम्नलिखित पाठ्यपुस्तकों के पुनर्मुद्रण तथा कक्षा 2,4 तथा 7 की नई पाठ्यपुस्तकों के मुद्रण तथा वितरण के लिए कापीराइट अनुमति दी गई।

कक्षा-एक

1. बाल भारती भाग-एक
2. अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग-एक
3. गणित भाग-एक

कक्षा-दो

1. बाल भारती भाग-दो
2. अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग-दो
3. गणित भाग - दो

कक्षा-तीन

1. बाल भारती भाग-तीन
2. अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग-तीन
3. गणित भाग-3
4. हम और हमारा देश
5. परिवेश अन्वेषण भाग-एक (विज्ञान)

कक्षा-चार

1. बाल भारती भाग-चार
2. अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग-चार

1988-89

3. गणित भाग-चार
4. हमारा देश भारत
5. परिवेश अन्वेषण भाग-दो (विज्ञान)

कक्षा-छः

1. किशोर भारती भाग-एक
2. संक्षिप्त रामायण
3. गणित भाग-एक
4. देश और उनके विनासी भाग-एक
5. प्राचीन भारत
6. हमारा नागरिक जीवन
7. विज्ञान भाग-एक

कक्षा-सात

1. किशोर भारती भाग-दो
2. संक्षिप्त महाभारत
3. गणित पुस्तक - दो (भाग-एक तथा दो)
4. विज्ञान भाग-दो
5. देश और उनके निवासी भाग-दो
6. मध्यकालीन भारत
7. हम अपना शासन कैसे चलाते हैं

मुख्य कार्यकारी अधिकारी, राज्य पुस्तक बोर्ड, पश्चिम बंगाल, राजाजी सुबोध मार्केट स्कवायर, कलकत्ता

निम्नलिखित पाठ्य पुस्तकों के बांग्ला में अनुवाद तथा प्रकाशन के लिए कापीराइट अनुमति दी गई।

1. माडर्न इंडिया कक्षा-12
2. मैडीवल इंडिया पार्ट-2 कक्षा-12

विद्यालय शिक्षा निदेशक, पश्चिम बंगाल सरकार, के.एस.राय रोड, कलकत्ता

निम्नलिखित पाठ्यपुस्तकों के मुद्रण एवं वितरण के लिए कापीराइट अनुमति दी गई।

1. बाल भारती भाग-एक
2. बाल भारती भाग-दो

निदेशक, राज्यभाषा संस्थान, केरल, नालन्दा, त्रिवेन्द्रम

निम्नलिखित पुस्तकों के मलयालम में अनुवाद तथा प्रकाशन के लिए कापीराइट अनुमति दी गई।

1. एन इन्ट्रोडक्शन टू इकोनामिक थ्योरी
2. इंडियन डैमोक्रेसी एट वर्क कक्षा-12
3. पोलिटिकल सिस्टम फॉर कक्षा-12
4. फाउन्डेशन ऑफ पोलिटीकल साइंस फॉर कक्षा-11
5. अंडरस्टैन्डिंग सोसाइटी फॉर कक्षा-11
6. मैडीवल इंडिया पार्ट-एक फॉर कक्षा-11
7. मैडीवल इंडिया पार्ट-दो फॉर कक्षा-12
8. एंशिंट इंडिया फॉर कक्षा-11
9. इंडियन कान्स्टीट्यूशन एंड गवर्नमेंट फॉर कक्षा-12

1988-89

10. नेशनल इनकम एकाउन्टिंग फॉर कक्षा-12
11. इवोल्यूशन ऑफ इंडियन इकोनोमी फॉर कक्षा-11
12. फिजिक्स फॉर कक्षा 11-12
13. कैमिस्ट्री भाग-एक फॉर कक्षा-11
14. बाइलोजी भाग-दो वाल्यूम-एक
15. बाइलोजी भाग-दो वाल्यूम-दो
16. बाइलोजी भाग-एक फॉर कक्षा-11
17. इंडियन सोसाइटी
18. इलेक्ट्रीसिटी एट वर्क
19. इन्ट्रोडक्शन टू हाउस-वायरिंग
20. रिपेयर ऐड मैन्टीनेन्स ऑफ हाऊस होल्ड इलेक्ट्रिकल एप्लीएन्सेज

प्रभारी अधिकारी, राज्य भाषा संस्थान केरल, क्षेत्रीय केन्द्र, कालीकट

दो पुस्तकों के प्रकाशन के लिए कापीराइट अनुमति दी गई

1. कैमिस्ट्री भाग-एक फॉर कक्षा-11
2. कैमिस्ट्री भाग-दो फॉर कक्षा-12

सचिव, हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी (हरियाणा)

कक्षा 9-10 की निम्नलिखित पुस्तकों पुनर्मुद्रण के लिए कापीराइट अनुमति दी गई।

1. गणित भाग-एक, खण्ड-एक
2. गणित भाग-एक, खण्ड-दो
3. स्टैप टु इंगलिश -4 इंगलिश रीडर
4. स्टैप टु इंगलिश-4 वर्क बुक टू इंगलिश रीडर
5. स्टैप टु इंगलिश-4 सप्लीमेन्ट्री रीडर
6. मनुष्य और वातावरण
7. स्टैप टु इंगलिश-5 इंगलिश रीडर
8. स्टैप टु इंगलिश-5 वर्कबुक टु इंगलिश रीडर
9. स्टैप टु इंगलिश-5 सप्लीमेन्ट्री रीडर
10. नागरिक और शासन
11. सभ्यता की कहानी

वितरण

परिषद् के प्रकाशन, पिछले वर्षों की भांति परिषद् के राष्ट्रीय वितरक सूचना और प्रसारण मंत्रालय के प्रकाशन विभाग द्वारा जिनके बिक्री केन्द्र नई दिल्ली, कलकत्ता बंबई, मद्रास, त्रिवेन्द्रम, पटना, लखनऊ और हैदराबाद में स्थित हैं, बेचे और वितरित किए जाते रहे। संघ शासित क्षेत्र दिल्ली में परिषद् के प्रकाशन रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा नियुक्त किए गये 14 थोक एजेंटों के माध्यम से बेचे और वितरित किए गए। राज्यों में परिषद् के प्रकाशनों की बिक्री तथा वितरण के विकेन्द्रीकरण के लिए जम्मू (जम्मू व कश्मीर के लिए)बेंगलूर (कर्नाटक के लिए) भोपाल (मध्य प्रदेश के लिए) तथा गुवाहटी (उत्तर पूर्वी क्षेत्र के लिए) में थोक एजेंटों की नियुक्ति करने का प्रस्ताव परिषद् के विचाराधीन है। उर्दू के प्रकाशन, दिल्ली प्रशासन की उर्दू अकादमी के माध्यम से बेचे और वितरित किए गए। रा.शै.अ.प्र.प. के विशेष प्रकाशन ''इंडियाज स्ट्रगल फॉर इंडीपेडेंस विजुअल्स एंड डाक्यूमेंट्स'' के

लिए भी दिल्ली व मद्रास में दो वितरक नियुक्त किए गए।

बिक्री और वितरण की ऊपर बताई गई व्यवस्था के अतिरिक्त, परिषद् की पुस्तकों की आपूर्ति के लिए विद्यालयों व अन्य शैक्षिक संस्थाओं से सीधे आर्डर भी लिए गए। इस वर्ष में केन्द्रीय विद्यालयों के 350, सैनिक विद्यालयों के 35, तिब्बतियों के लिए बने केन्द्रीय विद्यालयों के 85, नवोदय विद्यालयों के 255, अन्य विद्यालयों के 317 तथ अरूणाचल प्रदेश के विद्यालयों व जिला शिक्षा अधिकारियों के 29 आर्डर, कुल मिलकर 1,071 आर्डर सीधे प्राप्त हुए। विदेशों की कई शैक्षिक संस्थाओं से भी अनेक आर्डर प्राप्त हुए, जिनकी आपूर्ति व्यवसायिक निर्यातकों के माध्यम से की गई। 9 तथा 11 कक्षा के लिए पाठ्यपुस्तकें सिक्किम सरकार को सीधे ही दी गईं और कक्षा 9 से 12 तक की चयनित पाठ्यपुस्तकें विद्यालय शिक्षा बोर्ड, हरियाणा को भी दी गईं।

उपरोक्त क्रम में व्यक्तियों तथा संस्थाओं से अधिक मात्रा में प्राप्त आर्डरों पर भी कार्यवाही की गई। हजारों व्यक्तिगत खरीददार भी हमारी किताबों को खरीदने के लिए विभाग के बिक्री केन्द्र पर आए। इस वर्ष के दौरान प्रकाशित अनेक प्रकाशन निःशुल्क वितरण की सूची के अंतर्गत आने वालों को भेजे गए। अनेक शैक्षिक संस्थाओं और शोधकर्ताओं द्वारा परिषद् के निःशुल्क प्रकाशनों की माँग की भी आपूर्ति की गई।

प्रलेखन और पुस्तकालय सेवाएँ

रा.शै.अ.प्र.प. का पुस्तकालय, प्रलेखन और सूचना विभाग, रा.शै.अ.प्र.प. के विभिन्न विभागों तथा एककों के अनुसंधान और विकास से संबंधित कार्यकलापों में सहयोग करता रहा। यह विभाग रा.शै.अ.प्र.प. के संकाय सदस्यों की ही नहीं बल्कि देश भर के शिक्षाविदों तथा अनुसंधानकर्ताओं की अवश्यकताओं की पूर्ति भी करता है। इस विभाग ने विद्यालय पुस्तकालयाध्यक्षों, विद्यालय पुस्तकालयों के प्रभारी अध्यापकों तथा अध्यापक प्रशिक्षण विद्यालयों के पुस्तकालयाध्यक्षों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित करना जारी रखा। शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीय पहलुओं तथा जनसंख्या शिक्षा पर सामग्री एकत्रित कर यह विभाग अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षिक साधन और प्रलेखन केन्द्र को समृद्ध करता है। पुस्तकों के संग्रह और परिचालन के संबंध में ब्यौरा नीचे दिया जा रहा है ।

संग्रह		
क.	31.3.1988 की पुस्तकों की कुल संख्या	=1,22,752
ख.	1988-89 में बढ़ाई गई पुस्तकों की संख्या	
	1. खरीद कर	= 973
	2. उपहार के रूप में प्राप्त	= 425
	3. जिल्द बंद पत्रिकाएँ	= 503
ग.	1988-89 में हटाई गई पुस्तकें	= 496
घ.	31.3.1989 (क+ख+ग) की कुल पुस्तकें	= 1,24,157
ङ.	पुस्तकें - 1988-89 में खर्च	= रु. 2,79,245,29
पत्रिकाएँ		
क.	अभिदत्त, उपहार-स्वरूप या विनिमय आधार पर	= 414
ख.	अभिदत्त समाचार पत्र	= 17

1988-89

अध्यापक शिक्षा-अनुसंधान

क.	प्रलेखन सेवाएँ	
	1. परिग्रहण सूची	= 5 अंक
	2. वर्तमान विषय वस्तु	= 2 अंक
	3. पुस्तकालय, प्रलेखन और सूचना विभाग में आने वाली पत्रिकाओं में छपे लेखों की सूची	= 3 अंक
संदर्भ ग्रंथ सूची		
	1. शैक्षिक प्रौद्योगिकी	= जुलाई, 1988
	2. भारतीय नारी की शिक्षा	= अगस्त, 1988
	3. शिशु	= अक्तूबर, 1988
	4. सुदूर शिक्षा	= फरवरी, 1989
	5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 की वर्ण क्रमानुसार विषयसूची प्रोग्राम ऑफ एक्सन	= फरवरी, 1989
ग.	प्रचलित समाचार-पत्रों से समाचार कतरनें	= 1,435
घ.	दी गई फोटो कापियाँ	= 93,504
परिचालन सेवाएँ		
क.	31.3.1989 को सदस्यों की कुल संख्या	= 3,374
ख.	पुनरीक्षण वर्ष के अंदर बाहरी सदस्यों की संख्या	- 80
ग.	संदर्भ/परामर्श सुविधाएँ प्राप्त करने के लिए बाहरी आगंतुकों की संख्या	= 761
घ.	वर्ष के दौरान जारी की गई पुस्तकों की संख्या	= 17,724
ड़	अंतर-पुस्तकालय उधारी पर जारी की गई पुस्तकों की संख्या	= 46

प्रशिक्षण कार्यक्रम

दिनांक 9 से 18 दिसंबर, 1988 तक परिषद् ने उड़ीसा के विद्यालयों में पुस्तकालय के प्रभारी अध्यापकों हेतु सेवा-कालीन प्रशिक्षण, कार्यक्रम आयोजित करने के लिए माध्यमिक शिक्षा बोर्ड उड़ीसा को तकनीकी सहायता उपलब्ध कराई।

प्रत्रिकाओं का प्रकाशन तथा शैक्षिक सूचनाओं का प्रसार

शैक्षिक सूचनाओं के प्रसार के लिए रा.शै.अ.प्र.प. छः पत्रिकाएँ प्रकाशित करती है। रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा प्रकाशित पत्रिकाएँ नीचे दी गई हैं -

इंडियन एजुकेशनल रिव्यू (त्रैमासिक) में शोध लेख, शिक्षा और संबंधित विषय में डाक्ट्रेट तथा पोस्टडाक्ट्रेट अनुसंधान के संक्षिप्त विवरण, अनुसंधान टिप्पणियाँ और शिक्षा एवं अनुसंधान की पुस्तकों की समीक्षाएँ होती हैं।

जरनल ऑफ इंडियन एजुकेशन

(द्वैमासिक) में नवाचार और बेहतर पढ़ाई की संभावनाओं को बढ़ावा देने के लिए लेख, दस्तावेज, पुस्तक समीक्षाएँ आदि होती हैं। कभी विशेष प्रकरण पर भी अंक निकाले जाते हैं।

स्कूल साइंस (त्रैमासिक) में समुदाय के लाभ के लिए लोकप्रिय विज्ञान पर लेखों के अतिरिक्त विद्यालय विज्ञान के नवाचारों और प्रयोगों का प्रसार भी किया जाता है।

प्राइमरी टीचर (त्रैमासिक) पत्रिका पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों के लिए है, जिससे उन्हें कक्षाओं से सम्बद्ध समस्याओं को हल करने, प्रयोगों को परखने और अध्यापन में सुधार लाने में सहायता मिलती है।

प्राइमरी शिक्षक

हिन्दी में एक त्रैमासिक पत्रिका, विद्वानों और विद्यालय अध्यापकों के लिए है, जिससे उन्हें कक्षा में अध्यापन में सहायता मिलती है। इसमें स्थायी तौर पर शिक्षा में नवाचार दिये जाते हैं। प्रकरण विशेष पर इसके विशेषांक भी निकाले जाते हैं।

आलोच्य वर्ष में इन पत्रिकाओं के निम्नलिखित अंक निकाले गये:

इंडियन एजुकेशनल रिव्यू	एक अंक
जरनल ऑफ इंडियन एजुकेशन	चार अंक
प्राइमरी टीचर	दो अंक
प्राइमरी शिक्षक	दो अंक
स्कूल साइंस	दो अंक
भारतीय आधुनिक शिक्षा	तीन अंक

1988-89 के दौरान परिषद् ने शैक्षिक पत्रकारिता पर इयर बुक (संदर्भ पुस्तक) के लिए लेख लिखने पर 3 कार्यशालाएँ आयोजित कीं। पहली कार्यशाला 14 से 16 जून, 1988 तक अल्मोड़ा, उत्तर प्रदेश, दूसरी 21 से 23 फरवरी, 1989 तक राजगीर, बिहार, तथा तीसरी 17 से 19 मार्च, 1989 तक त्रिची में आयोजित की गई। इनके अतिरिक्त, परिषद् ने बच्चों के साहित्य पर भारतीय आधुनिक शिक्षा के विशेष अंक के पाण्डुलिपि विकास के लिए 16 से 17 मार्च, 1989 तक जयपुर में एक कार्यशाला आयोजित की ।

पुस्तक मेला/प्रदर्शनी में भाग लेना

अपनी प्रचार सेवाओं से सम्बद्ध कार्य के रूप में परिषद् ने निम्नलिखित पुस्तक मेलों/प्रदर्शनियों में अपने प्रकाशन प्रदर्शित किए :-

- शिक्षक दिवस के अवसर पर 5 सितंबर, 1988 को विज्ञान भवन नई दिल्ली में आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी।
- रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा जम्मू में नवंबर, 1988 में आयोजित जवाहर लाल नेहरू राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी।
- नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा रामलीला मैदान, नई दिल्ली में नवंबर, 1988 में आयोजित राष्ट्रीय बाल पुस्तक मेला।
- भारत में शैक्षिक प्रकाशनों के संघ द्वारा नवंबर, 1988 में आयोजित पटना पुस्तक मेला।
- नेशनल बुक ट्रस्ट, द्वारा लखनऊ में दिसंबर 1988 में आयोजित राष्ट्रीय पुस्तक मेला।
- नेशनल बुक ट्रस्ट, दारा बम्बई में दिसंबर 1988 में आयोजित राष्ट्रीय बाल पुस्तक मेला।
- परिषद् के प्रकाशनों की इन प्रदर्शनियों के अलावा रा.शै.अ.प्र.प. ने अपने परिसर में भी अनेक अवसरों पर प्रदर्शनियाँ आयोजित की।

परिषद् ने अपने चुनिंदा प्रकाशन, नेशनल बुक ट्रस्ट के माध्यम से भेजकर निम्नलिखित अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेलों/प्रदर्शनियों में भी भाग लिया।

- बांग्ला देश में अप्रैल–मई 1988 में भारतीय पुस्तकों की प्रदर्शनी।
- गुआना में 4 से 12 मई, 1988 तक भारतीय पुस्तक प्रदर्शनी
- सोफिया (बल्गारिया) में 2 से 7 जून, 1988 तक 18 वाँ अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला।
- कुआलालम्पुर में 29 जुलाई से 7 अगस्त, 1988 तक

1988-89

मलयेशिया पुस्तक मेला

- सिंगापुर में 3 से 11 सितंबर, 1988 तक 20 वाँ अंतर्राष्ट्रीय पुस्तकों का उत्सव तथा पुस्तक मेला, 1988
- 5 से 10 अक्तूबर, 1988 तक 40 वाँ फ्रेंकफर्ट पुस्तक मेला, 1988
- 24 जनवरी से 6 फरवरी, 1989 तक 21 वाँ काहिरा अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मेला।
- रूस में भारत उत्सव के अंग के रूप में भारतीय पुस्तक प्रदर्शनी।

1988-89 में प्रकाशनों की सूची

वर्ष 1988-89 में प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित पुस्तकों तथा पत्रिकाओं की सूची को तालिका 15.3 में दर्शाया गया है।

तालिका 15.3

1988–89 में परिषद् के प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित प्रकाशन

क्र.सं.	शीर्षक	प्रकाशन मास	मुद्रित प्रतियों की संख्या	
पाठ्यपुस्तकें, अभ्यास पुस्तिकाएँ तथा निर्धारित पूरक पाठमाला				
	पहली कक्षा			
1.	वर्क बुक फॉर लैट अस लर्न इंगलिश (एस.एस.)	नवंबर 88	1,80,00	
2.	अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग-1	जनवरी 89	1,70,000	
	दूसरी कक्षा			
3.	बाल भारती भाग-2	अप्रैल 88	3,10,000 नया प्रकाशन	
4.	अभ्यास पुस्तिका बाल-भारती भाग-2	मई 88	3,10,000	नया प्रकाशन
5.	लैट अस लर्न मैथेमेटिक्स बुक-2	जून 1988	3,10,000	नया प्रकाशन
6.	वर्क बुक लैट अस लर्न इंगलिश बुक-2	नवंबर 88	1,50,000	नया प्रकाशन
7.	अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग-2	फरवरी 89	2,50,000	नया प्रकाशन
	तीसरी कक्षा			
8.	भाषा किरण भाग-2	जुलाई 88	10,000	नई पुस्तक
9.	बाल भारती भाग-3	जनवरी 88	70,000	
10.	एक्सप्लोरिंग एन्वायरनमेंट बुक–1	दिसंबर 88	85,000	
11.	अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग-3	जनवरी 89	25,000	
12.	लैट अस लर्न मैथमेटिक्स बुक-3	मार्च 89	2,10,000	

क्र.सं.	शीर्षक	प्रकाशन मास	मुद्रित प्रतियों की संख्या	
13.	लैट अस लर्न इंगलिश बुक-3 (एस.एस.)	मार्च 89	2,00,000	
14.	हम और हमारा देश	जनवरी 89	50,000	
15.	वर्क बुक लैट अस लर्न इंगलिश बुक-3	मार्च 89	1,40,000	
16.	देश और उनके निवासी भाग-3	मार्च 89	10,000	
	चौथी कक्षा			
17.	अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग-4	मई 88	2,50,000	नई पुस्तक
18.	हमारा देश भारत	जून 88	75,000	
19.	एक्सप्लोरिंग इनवायरमेंट बुक-2	जून 88	1,40,000	नई पुस्तक
20.	लैट अस लर्न मैथमेटिक्स बुक-4	जून 88	2,10,000	नई पुस्तक
21.	अवर कन्ट्री इंडिया	जून 88	1,00,000 नई पुस्तक	
22.	इंगलिश रीडर बुक-1 (एस.इस.)	दिसंबर 88	1,55,000	
23.	वर्क बुक इंगलिश रीडर-1 (एस.एस.)	जनवरी 89	80,000	
24.	रीड फॉर प्लेजर बुक - 1	दिसंबर 88	1,10,000	
25.	इन्वायरनमेंटल स्टडीज बुक-2	दिसंबर 88	1,10,000	
26.	बाल भारती भाग-4	मार्च 89	1,30,000	नई पुस्तक
27.	हमारा देश भारत	दिसंबर 88	70,000	
28.	लैट अस लर्न मैथमेटिक्स बुक-4	नवंबर 88	2,10,000	
	पाँचवी कक्षा			
29.	अभ्यास पुस्तिका स्वस्ति भाग - 1	अप्रैल 88	65,000	
30.	वर्क बुक इंगलिश रीडर बुक-2	जनवरी 89	20,000	
31.	इंगलिश रीडर बुक-2 (एस.एस.)	मार्च 89	1,20,000	
32.	अभ्यास पुस्तिका बाल भारती भाग-5	फरवरी 89	2,05,000	नई पुस्तक
33.	स्वस्ति भाग-1	जनवरी 89	60,000	
34.	बाल भारती भाग-5	फरवरी 89	2,05,000	नई पुस्तक
35.	हमारा देश और संसार	मार्च 89	85,000	नई पुस्तक
	छठी कक्षा			
36.	साइंस	अप्रैल 88	1,65,000	
37.	इशिंएंट इंडिया	अप्रैल 88	1,00,000	
38.	रीड फार प्लेजर	दिसंबर 88	70,000	
39.	अवर सिविक लाइफ	दिसंबर 88	60,000	
40.	मैथमेटिक्स	दिसंबर 88	1,30,000	
41.	प्राचीन भारत	दिसंबर 88	55,000	
42.	स्वस्ति भाग-2	दिसंबर 88	60,000	

1988-89

क्र.सं.	शीर्षक	प्रकाशन मास	मुद्रित प्रतियों की संख्या	
43.	वर्क बुक इंगलिश रीडर बुक-3 (एस.एस.)	दिसंबर 88	40,000	
44.	साइंस (एस.एस.)	दिसंबर 88	1,60,000	
45.	इंगलिश रीडर बुक - 3	जनवरी 89	1,25,000	
46.	अभ्यास पुस्तिका स्वस्ति भाग-2	दिसंबर 88	25,000	
47.	लैण्डस एंड पीपुल पार्ट-1	दिसंबर 88	70,000	
48.	रीड फॉर प्लेजर बुक-3	मार्च, 89	70,000	
49.	एंशियंट इंडिया	दिसंबर 88	50,000	
50.	किशोर भारती भाग-1	वही	1,20,000	
51.	देश और उनके निवासी	वही	60,000	
52.	हमारा नागरिक जीवन	वही	50,000	
53.	संक्षिप्त रामायण	वही	80,000	
	सातवीं कक्षा			
54.	इंगलिश रीडर बुक-4 (एस.एस.)	अप्रैल 88	60,000	
55.	संक्षिप्त महाभात	मई 88	80,000	नई पुस्तक
56.	हम अपना शासन कैसे चलाते हैं	मई 88	65,000	नई पुस्तक
57.	मध्यकालीन भारत	जून 88	65,000	नई पुस्तक
58.	हाउ वी गवर्न अवर सेल्ज	मई 88	70,000	नई पुस्तक
59.	मैडीवल इंडिया	जून 88	70,000	नई पुस्तक
60.	मैथेमेटिक्स पार्ट-1	जून 88	1,30,000	नई पुस्तक
61.	साइंस	जून 88	1,30,000	नई पुस्तक
62.	किशोर भारती भाग-2	जून 88	1,25,000	नई पुस्तक
63.	देश और उनके निवासी भाग-2	जून 88	65,000	नई पुस्तक
64.	लैंडस एंड पीपुल्स पार्ट-2	अगस्त 88	75,000	नई पुस्तक
65.	मैथमेटिकस पार्ट-2	अक्तूबर 88	1,30,000	नई पुस्तक
66.	स्वस्ति भाग - 3	दिसंबर 88	40,000	
67.	मध्यकालीन भारत	जनवरी 89	70,000	
68.	अभ्यास पुस्तिका स्वस्ति भाग-3	दिसंबर 88	25,000	
69.	संक्षिप्त महाभारत	दिसंबर 88	85,000	
70.	रीड फार प्लेजर बुक-4	जनवरी, 89	40,000	
71.	मेथमैटिक्स पाटं-2	जनवरी 89	80,000	
72.	मैडीवल इंडिया	मार्च 89	80,000	
73.	साइंस	जनवरी 89	1,50,000	
74.	देश और उनके निवासी पार्ट - 2	मार्च 89	75,000	

क्र.सं.	शीर्षक	प्रकाशन मास	मुद्रित प्रतियों की संख्या	
	आठवीं कक्षा			
75.	रीड फॉर प्लेजर बुक-4	दिसंबर 88.	60,000	
76.	स्वस्ति भाग-4	वही	25,000	
77.	अभ्यास पुस्तिका स्वस्ति भाग-4	वही	20,000	
78.	इंगलिश रीडर बुक-4	जनवरी 89	75,000	नई पुस्तक
79.	लैंड्स एंड पीपुल्स पार्ट-3	मार्च 89	90,000	
80.	अवर कन्ट्री टुडे प्रोबलम एंड चैलेन्ज	मार्च 89	90,000	
81.	किशोर भारती भाग-3	मार्च 89	1,50,000	नई पुस्तक
82.	त्रिविधा	मार्च 89	30,000	
83.	मेथमेटिक्स पार्ट-1	मार्च 89	1,50,000	
	नवीं कक्षा			
84.	स्टेप्स टू इंगलिश-4 वर्क बुक टू इंगलिश रीडर	अप्रैल 88	40,000	
85.	मेथेमेटिक्स पार्ट-1 ए टेक्स्ट बुक फॉर सैकेन्ड्री स्कूल	जुलाई 88	2,00,000	नई पुस्तक
86.	साइंस पार्ट-1	जुलाई 88	2,00,000	नई पुस्तक
87.	साइंस पार्ट-2	अक्तूबर 88	50,000	नई पुस्तक
88.	मेथमेमेटिक्स पार्ट-2	दिसंबर 88	40,000	नई पुस्तक
89.	साइंस पार्ट-1 तथा 2 (कम्बाइंड)	वही	1,90,000	नई पुस्तक
90.	लैंगवेज थ्रू लिटरेचर, सप्लीमेन्ट्री रीडर ''बी'' कोर्स	फरवरी 89	1,50,000	नई पुस्तक
91.	पराग भाग-1	वही	2,00,000	नई पुस्तक
92.	स्वस्ति भाग-1	मार्च 89	2,00,000	नई पुस्तक
93.	चित्रा भाग-1	मार्च 89	35,000	नई पुस्तक
94.	किसलय	फरवरी 89	35,000	नई पुस्तक
95.	अंडर स्टेंडिंग एन्वायरमेंट	मार्च 89	1,10,000	नई पुस्तक
96.	लैंगवेज थ्रु लिटरेचर वर्क बुक टू इंगलिश रडिर ''बी'' कोर्स	मार्च 89	1,50,000	
97.	दा स्टोरी ऑफ सिविलाइजेशन पार्ट-1	मार्च 89	1,10,000	
	नवीं- दसवीं कक्षा			
98.	नागरिक और शासन	जुलाई 88	10,000	
99.	सिटीजन एंड गवर्नमेंट	दिसंबर 88	25,000	
100	इंडिया आन द मूव	फरवरी 89	20,000	नई पुस्तक
101	हमारी अर्थव्यवस्था का परिचय	मार्च 89	60,000	
	दसवीं कक्षा			
102	भारत विकास की ओर	अप्रैल 88	90,000	
103	स्टेप्स टू इंगलिश - 5 सप्लीमेंट्री रीडर	अप्रैल 88	60,000	

1988-89

क्र.सं.	शीर्षक	प्रकाशन मास	मुद्रित प्रतियों की संख्या	
104	इंडिया आन द मूव	अप्रैल 88	1,00,000	
105	स्टेंप्स टूइंगलिश - 5 इंगलिश रीडर	मार्च 89	35,000	
106	मैथेमेटिक्स पार्ट-1	मार्च 89	90,000	नई पुस्तक
107	द स्टोरी आर्फ सिविइजेशन पार्ट-2	फर्वरी 89	35,000	
108	सभ्यता की कहानी भाग-2	मार्च 89	20,000	
	ग्यारहवीं बारहवीं कक्षा			
109	फील्ड वर्क एंड लेबोरेट्री टेक्निक्स इन जोगरफी	अप्रैल 88	4,000	
110	केमिस्ट्री पार्ट-1	जून 88	30,000	
111	फिजिक्स	जुलाई 88	35,000	
112	केमिस्ट्री पार्ट-2 ए टैक्स्टबुक फॉर हायर सैकेन्ड्री स्कूल	जुलाई 88	45,000	
	ग्यारहवीं कक्षा			
113	अभिनव काव्य भारती भाग-1	अप्रैल 88	8,000	
114	पोलिटीकल सिस्टम	अप्रैल 88	5,000	
115	साइकोलोजी एन इन्ट्रोडक्शन टू ह्युमन बिहेवियर	मई 88	2,000	
116	इवोलुशन ऑफ द इंडियन इकोनोमी	मई 88	10,000	
117	फिजिक्स	जून 88	80,000	नई पुस्तक
118	एशिंएट इंडिया	जुलाई 88	15,000	
119	कैमिस्ट्री पार्ट-1	वही	80,000	नई पुस्तक
120	बाइलोजी पार्ट-1	अगस्त 88	80,000	नई पुस्तक
121	मैथेमेटिक्स पार्ट-1	अगस्त 88	80,000	नई पुस्तक
122	फिजिक्स वाल्यूम-1 पार्ट-2	अक्तूबर 88	30,000	नई पुस्तक
123	कैमिस्ट्री पार्ट-2	नवंबर 88	95,000	नई पुस्तक
	कक्षा ग्यारहवीं			
124	बाइलोजी पार्ट-2	दिसंबर 88	80,000	नई पुस्तक
125	मैथमेटिक्स पार्ट-2	वही	90,000	नई पुस्तक
126	मंदाकिनी भाग-1	मार्च 89	65,000	नई पुस्तक
127	नीहारिका भाग-1	मार्च 89	25,000	नई पुस्तक
128	सिक्स वन एक्ट प्लेज	वही	4,000	नई पुस्तक
129	आई द पीपल	फरवरी 89	10,00	नई पुस्तक0
130	एशिंएंट इंडिया	वही	6,000	नई पुस्तक
131	एवोलुशन ऑफ द इंडियन इकोनोमी	वही	6,000	नई पुस्तक
132	सोसाइटी, स्टेट. एंड गवर्नमेंट	मार्च 89	25,000	

क्र.सं.	शीर्षक	प्रकाशन मास	मुद्रित प्रतियों की संख्या	
133	स्टोरीज, प्लेज, टेल्स एंड एडवेंचर इंगलिश सप्लीमेन्ट्री रीडर	वही	37,000	नई पुस्तक
134	प्रवाल भाग-1	फरवरी 89	4,000	नई पुस्तक
135	पल्लव भाग-1	वही	25,000	
136	प्रिंसिपल्स आफॅ जागरफी पार्ट-1	मार्च 89	15,000	
	बारहवीं कक्षा			
137	ए कोर्स इन रिटेन इंगलिश (कोर कोर्स)	अप्रैल 88	35,000	
138	बाइलोजी पार्ट-2 वाल्यूम-1	वही	40,000	
139	अभिनव गद्य भारती भाग-2	जून 88	45,000	
140	भारतीय समाज	मार्च 89	2,500	
141	सोशल चेंज	फरवरी 89	2,000	
142	मेथमेटिक्स बुक-5	मार्च 89	20,000	
143	डीयर टू ऑल द म्यूसेज	फरवरी 89	2,000	
144	आन टॉप आफ द वर्ल्ड	वही	2,000	
145	एलिमेन्ट्री स्टेटिस्टिक्स	वही	5,000	
146	इंडियन सोसाइटी	मार्च 89	2,000	
147	ए कोर्स इन रिटेन इंगलिश	फरवरी 89	15,000	
148	मानव एवं आर्थिक भूगोल	मार्च 89	4,000	
149	फिजिक्स पार्ट-1	मार्च 89	70,000	
150	मैथमेटिक्स बुक-3	फरवरी 89	20,000	
	अरूणाचल प्रदेश के लिए पाठ्यपुस्तकें			
151	अरुण भारती भाग-1	जुलाई 88	30,000	
152	अरुण भारती भाग-2	अगस्त 88	24,000	
153	अरुण भारती भाग-3	अगस्त 88	19,000	
154	अभ्यास पुस्तिका अरूण भारती भाग-3	जुलाई 88	17,000	
155	न्यू डॉन रीडर वर्क बुक-2	जुलाई 88	43,000	
156	सप्लीमेन्ट्री रीडर फॉर न्यू डॉन रीडर-1	जुलाई 88	27,000	
157	अभ्यास पुस्तिका अरुण भारती भाग-1	अगस्त 88	37,000	
158	सप्लीमेन्ट्री रीडर फॉर न्यू डॉन रीडर भाग-2	जुलाई 88	43,000	
159	अभ्यास पुस्तिका अरुण भारती भाग-2	वही	20,000	
160	न्यू डॉन रीडर टेक्स्ट बुक 1	वही	25,000	
161	न्यू डॉन रीडर टेक्स्ट बुक 2	वही	44,000	
162	न्यू डॉन रीडर टेक्स्ट बुक 3	अप्रैल 88	35,000	

1988-89

क्र.सं.	शीर्षक	प्रकाशन मास	मुद्रित प्रतियों की संख्या
	पश्चिमी बंगाल के लिए पाठ्यपुस्तकें		
163	गद्य भारती	दिसंबर 88	10,000
164	काव्य भारती	दिसंबर 88	10,000
	नवोदय विद्यालयों के लिए पाठ्यपुस्तकें		
165	द वर्ल्ड अराउन्ड मी इंगलिश वर्क बुक फॉर नवोदय विद्यालय क्लास-8	अगस्त 88	10,000
166	हमारी हिन्दी भाग-1 क्लास-6	जुलाई 88	14,000
	अध्यापक संदर्शिकाएँ		
167	टीचर्स एंड एजूकेशन इन दा इमर्जिंग इंडियन सोसाइटी	अगस्त 88	3,000
	कार्य अनुभव के लिए निदर्शन अनुदेशी सामग्री		
168	डेयरी फीड्स एंड फीडिंग द डेयरी एनीमल्स वाल्यूम-3	अगस्त 88	5,000
169	क्रोप मैनेजमेंट	फरवरी 89	5,000
170	वेजीटेबुल क्रोप्स	मार्च 89	5,000
171	फन्डामेन्टल्स ऑफ फूड प्रोडक्शन	मार्च 89	5,000
172	फ्लोरीकलचर	अगस्त 88	5,000
173	टैक्सटाइल कोर एंड डिजाइन	मार्च 89	5,000
174	वर्क एक्सपीरियन्स ऑफ बेसिक बुक-कीपिंग क्लासेस 9-10	मार्च 89	10,000
175	मिल्क एंड मिल्क प्रोडक्ट्स	नवंबर 88	5,000
	पूरक पठन माला		
	पढ़ें और सीखें माला		
176	चमत्कार परमाणु ऊर्जा के	दिसंबर 88	10,000
177	साहस के धनी	मई 88	5,000
178	मिट्टी का मोल	अप्रैल 88	10,000
179	पुरुषोत्तम दास टंडन	जनवरी 89	5,000
180	राकेट एक परिचय	अक्तूबर 88	10,000
181	इकबाल्स एजूकेशनल फिलासफी	नवंबर 88	5,000
	कमल पुस्तक माला		
182	जवाहर लाल नेहरू के अमर विचार	नवंबर 88	18,000
	लोटस सीरीज		
183	लिंविग थाट्स ऑफ महात्मा गाँधी	अक्तूबर 88	18,000
	अनुसंधान अध्ययन, मोनोग्राफ तथा अन्य प्रकाशन		

1988-89

क्र.सं.	शीर्षक	प्रकाशन मास	मुद्रित प्रतियों की संख्या
184	नेशनल करिकुलम फॉर एलीमेन्ट्री एंड सैकेण्ड्री एजूकेशन ए फ्रेमवर्क	अप्रैल 88	20,000
185	प्रारंभिक और मध्यकालीन शिक्षा का राष्ट्रीय पाठ्यक्रम	मई 88	10,000
186	हैंडबुक फॉर वोकेशनल सर्वे वर्कर्स	अप्रैल, 88	5,000
187	कम्यूनिकेबल डिसीजेज	सितंबर 88	5,000
188	ए हैंडबुक आफॅ इवोल्यूशन इन इंगलिश	जुलाई 88	5,000
189	जवाहर लाल नेहरू-नेशनल साइंस एग्जीबिशन फोर चिल्ड्रन नवंबर 88 (इंगलिश)	अक्तूबर 88	2,000
190	स्ट्रक्चर एंड वर्किंग ऑफ साइंस मॉडल्स	अक्तूबर 88.	3,000
191	जवाहर लाल नेहरू-नेशनल साइंस एग्जीबिशन फॉर चिल्ड्रन नवंबर 88 (हिन्दी)	अक्तूबर 88	2,000
192	स्कूल एजूकेशन आफटर इंडिपेंडेन्स	अक्तुबर 88	10,000
193	स्वतंत्र भारत में स्कूल शिक्षा	नवंबर 88	10,000
194	ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड एसन्शियल सिलिटीज एट द प्राइमरी स्टेज एंड सेसिफिकेशंस	सिदंबर 88	5,000
195	करिकुलम एंड क्वालिटी इन एजूकेशन	जुलाई 88	1,000
196	एनुअल रिपोर्ट	दिसंबर 88	1,000
197	वार्षिक रिपोर्ट	दिसंबर 88	500
198	फिफ्थ ऑल इंडिया एजूकेशनल सर्वे	फरवरी 89	8,000
199	हिस्टोटैक्नोलोजी मेडिकल लैबोरेटरी टेक्नीक्स वाल्यूम—8	जुलाई 88	5,000
200	लैबोरेटरी सेट-अप एंड प्रोसीजर मेडिकल लैबोरटरी टेकनीक्स फॉर रूटीन डैगोनिस्टिक टैस्टस-वाल्यूम-3	फरवरी 89	5,000
201	आइडेन्टिफिकेशन एंड डेवलपमेंट ऑफ टेलेन्ट	अक्तूबर 88	2,000
202	एलीमेन्ट्स ऑफ इलेक्ट्रिकल टैक्नोलोजी, इन्स्ट्रक्शनल-कम प्रेक्टिकल मैनुअल वाल्यूम-1	जून 88	5,000
203	लाइनमैन प्रैक्टिस इन्सट्रक्शनल-कम प्रेटिकल मैनुअल वाल्यूम-1	अगस्त 88	5,000
	उर्दू की पाठ्यपुस्तकें/अभ्यास पुस्तकें/सप्लीमेन्ट्री रीडर		
	दूसरी कक्षा		
1	रियाजी (मैथेमेटिक्स) बुक-2	अप्रैल 88	3,000
	चौथी कक्षा		
2.	माहौल के जरिए तालीम एन्वायरमेन्टल स्टडीज पार्ट-1	अप्रैल 88	2,000

1988-89

क्र.सं.	शीर्षक	प्रकाशन मास	मुद्रित प्रतियों की संख्या
	पांचवी कक्षा		
3.	भारत और दुनिया (इंडिया एंड द वर्ल्ड)	मई 88	1,500
4.	माहौल के जरिए तालीम (एन्वायरमेन्टल स्टडीज) पार्ट-3	अप्रैल 88	2,000
	छठी कक्षा		
5.	हिसाब मैथमेटिक्स पार्ट-1	जून 88	3,000
6.	साइंस सीखना (लर्निंग साइंस) पार्ट-1	सितम्बर 88	5,000
7.	तारीख और इल्मे शहरियत (इतिहास और नागरिक शास्त्र) पार्ट-1	अप्रैल 88	3,500
8.	मुमालिक और उनके बाशिन्दे (लैन्ड्स एंड पीपुल)	अप्रैल 88	3,500
	सातवीं कक्षा		
9.	साइंस सीखना (लर्निंग साइंस) पार्ट-2	मई 88	3,000
10.	मुमालिक और उनके बाशिन्दे (लैन्ड्स एंड पीपुल) पार्ट-2	अप्रैल 88	2,000
	आठवीं कक्षा		
11.	साइंस सीखना (लर्निंग साइंस) पार्ट-3	मई 88	3,000
12.	तारीख और इल्म शहरियत (इतिहास और नागरिक शास्त्र) पार्ट-3	अगस्त 88	3,000
13.	मुमालिक और उनके बाशिन्दा (लैन्ड्स एंड पुपुल) पार्ट-3	अप्रैल 88	3,000
	नवीं कक्षा		
14.	इंसान और माहौल (मैन एंड एन्वायरनमेंट)	अप्रैल 88	3,000
	नवीं दसवी कक्षा		
15.	**शहरी और हुकुमत (सिटीजन एंड गवर्नमेंट)**	**फरवरी 89**	**2,000**
	दसवीं कक्षा		
16.	तहजीब की कहानी (स्टोरी ऑफ सिविलाइजेशन) पार्ट-2	जून 88	2,000
	ग्यारहवीं कक्षा		
17.	इब्तदाय सुमारियत (एलीमेन्ट्री स्टेटिसटिक्स)	फरवरी 88	2,000
	बारहवीं कक्षा		
18.	उर्दू की नई किताब (सप्लीमेन्ट्री रीडर)	फरवरी 89	2,000
19	बढ़ता बच्चा ज़रूरतें और मिसायल	जनवरी 89	1,000

1988-89

क्र.सं.	शीर्षक	प्रकाशन मास	मुद्रित प्रतियों की संख्या
	पत्रिकाएँ		
1.	प्राइमरी टीचर	जनवरी 88	
2.	भारतीय आधुनिक शिक्षा	वही	
3.	प्राइमरी शिक्षा	वही	
4.	जरनल ऑफ इंडियन एजुकेशन	नवंबर 87	
5.	जरनल ऑफ इंडियन एजुकेशन	जनवरी 88	
6.	स्कूल साइंस	दिसंबर 87	
7.	जरनल ऑफ इंडियन एजुकेशन	मार्च 88	
8.	भारतीय आधुनिक शिक्षा	अप्रैल 88	
9.	इंडियन एजुकेशन रिव्यू	अप्रैल 88	
10.	स्कूल साइंस	जून 88	
11.	जरनल ऑफ इंडियन एजुकेशन	जुलाई 88	
12.	प्राइमरी टीचर	जुलाई 88	
13.	प्राइमरी शिक्षक	जुलाई 88	
14.	भारतीय आधुनिक शिक्षा	अक्तूबर 88	

1988-89

सोलह

अन्तर्राष्ट्रीय संबंध और सहायता

विद्यालयी शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में भारत सरकार द्वारा अन्य देशों के साथ द्विपक्षीय सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के प्रावधानों के कार्यान्वयन के लिए परिषद् एक मुख्य अभिकरण का कार्य करती है। परिषद् यूनेस्को/एपीड, यू.एन.डी.पी. तथा यूनीसेफ प्रवर्तित परियोजनाएँ/कार्यक्रम अपने हाथ में लेती है और विद्यालयी शिक्षा तथा अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में अन्य देशों के प्रतिनिधि-मंडलों/विशेषज्ञों के विचारों/दृष्टिकोणों के विनिमय के लिए बैठकों का आयोजन करती है। विद्यालयी शिक्षा, अध्यापक शिक्षा और शिक्षा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अटैचमेंट कार्यक्रमों के अंतर्गत, विदेश के शिक्षाविदों के लिए परिषद् प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित करती रही है। परिषद् अपने संकाय सदस्यों को अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों/परिसंवादों/संगोष्ठियों/बैठकों/कार्यशालाओं/प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रवर्तित करती रही है।

रा.शै.अ.प्र.प. का अंतर्राष्ट्रीय संबंध एकक परिषद् की उपरोक्त दर्शाई गतिविधियों/कार्यक्रमों के समन्वयन के लिए उत्तरदायी है। यह एकक शैक्षिक नवाचारों के लिए राष्ट्रीय विकास दल के सचिवालय के रूप में तथा भारत में विद्यालय शिक्षा पर विभिन्न देशों और अंतर्राष्ट्रीय अभिकरणों एवं संगठनों को सूचना देने के लिए एक सूचना प्रसार केंद्र के रूप में कार्य भी करता है।

द्विपक्षीय सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम

अन्य मैत्रीपूर्ण देशों के साथ की गई द्विपक्षीय सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम की प्रमुख गतिविधियों में शैक्षिक सामग्रियों का आदान-प्रदान तथा शैक्षिक पद्धति के अध्ययन हेतु शिक्षाविदों का दौरा प्रमुख है। 1988-89 में रा.शै.अ.प्र.प. ने सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रमों के अंतर्गत बेलजियम, चेकोस्लोवाकिया, जापान, नाईजीरिया, जनवादी गणराज्य कोरिया, कोरिया गणराज्य, सीरिया, थाईलैंड, यूगान्डा, संयुक्त अरब अमीरात, अमेरिका तथा रूस को शैक्षिक सामग्री उनके अनुरोध पर भेजी गई। सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत पाकिस्तान तथा थाईलैंड से उनके देशों के दूतावासों द्वारा परिषद् ने शैक्षिक सामग्री प्राप्त की।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् में विदेशी आगन्तुक

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् में, विभिन्न

देशों से नीचे दिए गए विवरण के अनुसार शिक्षाविद् आए :

1. राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, महरगामा श्रीलंका के संकाय सदस्यों के लिए रा.शै.अ.प्र.प ने 15 मार्च से 18 अप्रैल, 1988 तक एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया।
2. इंगलैंड से 25 प्रधानाध्यापकों तथा अध्यापकों का एक दल 5 अप्रैल 1988 को परिषद् के दौरे पर आया और रा.शै.अ.प्र.प. के संयुक्त निदेशक तथा अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा और विस्तार सेवा विभाग, सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षाविभाग तथा केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान के संकाय सदस्यों के साथ परिषद् के अध्यापक शिक्षा, मूल्य शिक्षा तथा शैक्षिक प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में गतिविधियों पर विचार-विमर्श किया।
3. ईरान से चार सदस्यों का प्रतिनिधि-मंडल 21 अप्रैल, 1988 को परिषद् में आया। प्रतिनिधि मंडल ने संयुक्त निदेशक, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान तथा परिषद् के वरिष्ठ संकाय सदस्यों के साथ भारत में शैक्षिक अनुसंधान पर विचार-विमर्श किया।
4. अफगानिस्तान के श्री मोहम्मद इब्राहिम और डा. हफीजुल्लाह खेगन (विश्व स्वास्थ्य संगठन के फैलो) 28 व 29 अप्रैल, 1988 को परिषद् में आए तथा परिषद् संकाय सदस्यों के साथ स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम पर विचार-विमर्श किया।
5. श्री अमानुल एपिया, मानव संसाधन विकास समूह राष्ट्र मंडल सचिवालय, लंदन 13 मई, 1988 को परिषद् में आये तथा भारत में विज्ञान अध्यापकों के प्रशिक्षण की विस्तृत रूपरेखा के संबंध में परिषद् के संकाय सदस्यों के साथ चर्चा की।
6. यूगान्डा से एक प्रतिनिधि-मंडल 12 मई, 1988 को परिषद् में आया। प्रतिनिधि-मंडल संयुक्त निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प., डीन (शैक्षिक) अध्यक्ष, विद्यालय-पूर्व

विद्यालय-पूर्व

और प्रारंभिक शिक्षा विभाग से मिला तथा शिक्षा नीति और उसके कार्यान्वयन पर विचार-विमर्श किया।

7. श्री एफ.सी.वोहरा, वरिष्ठ कार्यक्रम विशेषज्ञ, विज्ञान तकनीकी और पर्यावरणीय शिक्षा प्रभाग, यूनेस्को मुख्यालय पेरिस 20 जून, 1988 को परिषद् में आए तथा निदेशक रा.शै.अ.प्र.प. और परिषद् के वरिष्ठ संकाय सदस्यों के साथ विचार-विमर्श किया।
8. न्यूनतम अधिगम पर आधारित प्राथमिक शिक्षा और पाठ्यचर्या नवीनीकरण कार्यक्रम की विषयवस्तु और प्रक्रिया के अध्ययन के लिए बंगला देश से 12 फैलों के लिए 11 से 20 जुलाई, 1988 तक एक दस-दिवसीय शिक्षावृत्ति प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया।
9. दस अमेरिकन विद्यार्थियों का समूह 5 अगस्त, 1988 को परिषद् में आया। उन्होंने निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प. डीन (शैक्षिक) तथा परिषद् के कुछ संकाय सदस्यों के साथ बैठक की। यह दौरा भारतीय और अमरीकी शैक्षिक विनिमय कार्यक्रम के अंतर्गत था।
10. प्रोफेसर एच.मुकर्जी, राष्ट्र मंडल सचिवालय, 16 अगस्त, 1988 को परिषद् में आये और निदेशक, संयुक्त निदेशक, अध्यक्ष, शिक्षा व्यवसायीकरण विभाग और अध्यक्ष, महिला अध्ययन एकक के साथ भारत में शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श किया।
11. सोमालिया के चार महिला शिक्षा अधिकारियों ने 15 फरवरी 1988 से 14 अगस्त, 1988 तक रा.शै.अ.प्र.प. में छः माह के लिए अनौपचारिक शिक्षा एवं अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन जाति शिक्षा विभाग में आई.टी.ई.सी. कार्यक्रम के अंतर्गत अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

1988-89

12. वियतनाम के पाँच वरिष्ठ राजकीय कर्मचारियों का एक दल 25 अगस्त, 1988 को परिषद् में आया। उन्होंने निदेशक, संयुक्त निदेशक रा.शै.अ.प्र.प., संयुक्त निदेशक, के.शै.प्रौ. तथा विद्यालय पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग के वरिष्ठ संकाय सदस्यों से वार्ता की। उन्होंने भारत में प्राथमिक विद्यालय में स्वास्थ्य शिक्षा तथा पोषण से संबंधित सामग्री पर विचार-विमर्श किया।
13. श्री हेक्टर गर्शिया, मैक्सिकन अनुसंधान कार्यकर्ता, विज्ञान तथा उद्योग का राष्ट्रीय संग्रहालय, पेरिस 16 सितंबर 1988 को रा.शै.अ.प्र.प. में आए। उन्होंने विज्ञान तथा विज्ञान के लोकप्रिय कार्यक्रम पर विद्यार्थियों के मनोवृत्ति संबंधी विषयों पर विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग के संकाय सदस्यों के साथ विचार-विमर्श किया।
14. मिस्र के माननीय शिक्षा मंत्री, डा. अहमद फाथी 19 सितंबर, 1988 को रा.शै.अ.प्र.प. में आए। उन्होंने निदेशक, संयुक्त निदेशक तथा परिषद् के वरिष्ठ संकाय सदस्यों के साथ बातचीत की।
15. अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता वर्ष (आई.एल.वाई.) पर कार्यदल के सदस्य 12 अक्तूबर, 1988 को परिषद् में आये। उन्होंने रा.शै.अ.प्र.प. के निदेशक, संयुक्त निदेशक तथा परिषद् के अनौपचारिक शिक्षा एवं अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन जाति शिक्षा विभाग और विद्यालय-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग के संकाय सदस्यों के साथ बैठक की। उन्होंने अनौपचारिक शिक्षा और प्रारंभिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के विभिन्न पहलुओं पर विचार-विमर्श किया एवं इन क्षेत्रों में परिषद् द्वारा किये गये कार्यों से अवगत कराया।
16. राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, महरगामा, श्रीलंका के 11 संकाय सदस्यों के दूसरे बैच के लिए रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा एक प्रशिक्षण कार्यक्रम 5 सितंबर से 13 अक्तूबर, 1988 तक आयोजित किया गया।
17. अफगानिस्तान के माननीय शिक्षा मंत्री 30 सितंबर, 1988 को रा.शै.अ.प्र.प. में आए। उन्होंने विभिन्न शैक्षिक पहलुओं पर निदेशक, संयुक्त निदेशक तथा संकाय अध्यक्षों के साथ विचार विमर्श किया।
18. श्री जे. रतनाईके, वरिष्ठ विज्ञान कार्यक्रम, विशेषज्ञ , यूनेस्को बैंकांक ने 3 अक्तूबर, 1988 को परिषद् का दौरा किया। उन्होंने 3 अक्तूबर, 1988 को अध्यक्ष, विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग तथा 4 अक्तूबर 1988 को अध्यक्ष, विद्यालय-पूर्व और प्रारंभिक विभाग के साथ क्रमशः भारत में विज्ञान शिक्षा और प्रारंभिक शिक्षा पर विचार विमर्श किया।
19. प्रोफेसर, जॉन क्रोकेट स्मिथ, यूनेस्को, पेरिस 26 सितंबर, 1988 को परिषद् में आए तथा यूनेस्को/यूनेप कार्यक्रम, 1984-88 के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम के मूल्यांकन पर निदेशक, संयुक्त निदेशक (रा.शै.अ.प्र.प.), संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई.टी., अध्यक्ष, विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग तथा अध्यक्ष, शिक्षा व्यवसायीकरण विभाग के साथ विचार-विमर्श किया।
20. विश्व के विभिन्न देशों से उन प्रतिभागियों का एक दल 25 अक्तूबर, 1988 को परिषद् में आया, जो राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान (नीपा) द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षण पा रहे थे। परिषद् के वरिष्ठ संकाय सदस्यों के साथ-साथ संयुक्त निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प. ने दल के साथ परिषद् के कार्यों के विभिन्न पहलुओं तथा देश में शिक्षा के क्षेत्र में इसके योगदान पर विचार-विमर्श किया।
21. एस्केप बैंकाक, मानव संसाधन विकास, सामाजिक विकास प्रभाग के वरिष्ठ विशेषज्ञ डा. कैमी जोर्गस, 8 नवंबर, 1988 को परिषद् में आए तथा मानव संसाधन विकास पर एस्केप योजना के कार्यान्वयन

पर संयुक्त निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प., संयुक्त निदेशक, के.शै.प्रौ.सं. अध्यक्ष, विद्यालय-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग, अध्यक्ष शिक्षा व्यवसायीकरण विभाग और अध्यक्ष, विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग के साथ विचार-विमर्श किया।

22. कॉमनवैल्थ एजुकेशन, कोआपरेशन प्लान के ''वरिष्ठ शिक्षाविदों के अल्पावधि दौरे की योजना'' के अंतर्गत 27 अक्तूबर, 1988 को श्री जोशफ कुथम्बा मवाले, शिक्षा विभाग चांसलर कालेज जोम्बा, मलावी, रा.शै.अ.प्र.प. में आए तथा संयुक्त निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प. और संयुक्त निदेशक के.शै.प्रौ.सं. के साथ विचार-विमर्श किया। उन्होंने परिषद् के विभिन्न विभागों को भी देखा। उन्होंने विभागों के कार्यों तथा शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान के संबंध में विचार-विमर्श किया।

23. प्रोफेसर उत्तम दिशुनदयाल, निदेशक, महात्मा गांधी संस्थान, मारीशस 10 नवंबर, 1988 को परिषद् में आए। उन्होंने निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प. के साथ विभिन्न शैक्षिक पहलुओं पर विचार-विमर्श किया।

24. डा. रोबर्ट बी. स्लिने, एसोसिएट प्रोफेसर सदर्न इलिनायस यूनिवर्सिटी काबोन्डेल (यू.एस.ए.) शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और निर्देशन विभाग रा.शै.अ.प्र.प. में 14 से 19 नवंबर, 1988 तक आए। उन्होंने शैक्षिक और व्यवसायी मार्गदर्शन में डिप्लोमा पाठ्यक्रम के प्रतिभागियों को संबोधित किया।

25. डा. निचुलेसेह्व, कार्यकारी निदेशक, शिक्षा मंत्रालय, यू.एस.एस.आर., की अध्यक्षता में यू.एस.एस.आर. का एक प्रतिनिधि मंडल परिषद् में आया और 16 नवंबर, 1988 को निदेशक के साथ उनसे शैक्षिक मामलों पर विचार-विमर्श किया।

26. डा. तोशियो कनाडा, शैक्षिक सहयोग के निदेशक, एन.आई.ई.आर. जापान 14 नवंबर, 1988 को परिषद् में आए और परिषद् के निदेशक के साथ विचार- विमर्श किया।

27. ''जापान के चित्र'' विषय पर 15 नवंबर, 1988 को रा.शै.अ.प्र.प. के सहयोग से जापान सांस्कृतिक और सूचना केन्द्र, जापानी दूतावास, नई दिल्ली में एक कार्यशाला आयोजित की। जापान में विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्रों तथा नवीनतम प्रवृत्ति तथा विकास पर मुख्य रूप से विचार-विमर्श किया गया। परिषद् के निदेशक, संयुक्त निदेशक सहित संकाय के वरिष्ठ सदस्यों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

28. डा. देवी वेंकरास्वामी, उपनिदेशक तथा मारीशस में नेटवर्क सदस्य (मारीशस शिक्षा संस्थान मारीशस) 28 नवंबर, 1988 को रा.शै.अ.प्र.प. में आई तथा विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग के वरिष्ठ संकाय सदस्यों के साथ विचार-विमर्श किया। विज्ञान और प्रौद्योगिकी शिक्षा में सूचना के लिए अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्क, मारीशस शिक्षा संस्थान, रा.शै.अ.प्र.प., एस.ई.ए.एम.ई.क्यू., आर.ई.सी.एस.ए.एम. के बीच की कड़ी मजबूत करने के लिए और एशिया में भविष्य में होने वाले आई.एन.आई.एस.टी.ई. (इन्फारमेशन इन साइंस एंड टैक्नॉलोजी आफ एजुकेशन) और इस बैठक के लिए स्थान कार्य-सूची रूपरेखा पर विचार-विमर्श किया।

29. श्रीमती रेशमी धनवन्ती रामधनी, महात्मा गाँधी संस्थान मारीशस में शिक्षा अधिकारी और श्रम तथा औद्योगिक संबंध, महिला अधिकार और परिवार कल्याण मंत्री की प्रेस अटैची को भारत मारीशस सांस्कृतिक विनिमय कार्यक्रम वर्ष 1987-89 के अंतर्गत 15 दिसंबर, 1988 से 2-3 महीने के लिए रा.शै.अ.प्र.प. से संबद्ध किया गया। परिषद् को उनकी प्राचीन भारतीय संस्कृति और सभ्यता नामक परियोजना को विकसित करने के लिए अकादमिक सहायता देना है।

30. श्री इयान राय जैफ मेंक इंटायर, विज्ञान के नीति

अधिकारी, शिक्षा मंत्रालय, विक्टोरिया आस्ट्रेलिया 12 दिसंबर, 1988 को रा.शै.अ.प्र.प. में आए। उन्होंने विभिन्न शैक्षिक पहलुओं पर संयुक्त निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प. तथा परिषद् के वरिष्ठ संकाय सदस्यों के साथ विचार-विमर्श किया।

31. यूनेस्को के महानिदेशक, डा. फैडेरिको मेयर 13 दिसंबर, 1988 को परिषद् में आए और उन्होंने शिक्षा से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर परिषद् के निदेशक, सह-निदेशक और अन्य वरिष्ठ संकाय सदस्यों के साथ चर्चा की।
32. मारीशस से भारतीय भाषाओं के छः अध्यापकों का एक प्रतिनिधि मंडल 20 जनवरी, 1989 को रा.शै.अ.प्र.प. में आया और सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प. के वरिष्ठ संकाय सदस्यों के साथ विभिन्न शैक्षिक पहलुओं पर विचार-विमर्श किया।
33. इंग्लैंड से श्री विल्फ्रैड हैलीडे कोकरोफट 24 जनवरी, 1989 को परिषद् में आए तथा निदेशक रा.शै.अ.प्र.प. के साथ विचार-विमर्श किया और परिषद् के वरिष्ठ संकाय सदस्यों के साथ ''मैथमेटिक्स काउन्टस-6 ईयर ऑन'' पर एक वार्ता दी।
34. सुश्री दिरगित्ता विवहामर, यूनेस्को कार्यकारिणी बोर्ड की स्वीडन की सदस्य, कार्लगुजर लिन्डस्ट्राम 7 फरवरी, 1989 को परिषद् में आई तथा परिषद् के निदेशक, संयुक्त निदेशक और परिषद् के वरिष्ठ संकाय सदस्यों के साथ विचार-विमर्श किया।
35. युगान्डा शिक्षा मंत्रालय में योजना और सांख्यिकी एकक के अध्यक्ष श्री पीटर आकेन्गो 9 फरवरी, 1989 को रा.शै.अ.प्र.प. में आए तथा शैक्षिक सर्वेक्षण, स्कुल मैपिंग, पाठ्यचर्या विकास और अध्यापक प्रशिक्षण में पहल पर संयुक्त निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प. के साथ विचार-विमर्श किया।
36. प्रो.जे.प्रासन, डिजाइन और प्रौद्योगिकी विभाग, लाब्रो युनिवर्सिटी आफॅ टैक्नॉलाजी, इंग्लैंड 3 मार्च, 1989 को रा.शै.अ.प्र.प. में आए तथा ''विद्यालयों में समुन्नत टैक्नोलाजी और डिजाइन टैक्नालाजी पर विचार-विमर्श'' से संबंधित सामग्री पर विद्यालय-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग, शिक्षा व्यवसायीकरण विभाग, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा और विस्तार सेवा विभाग तथा कर्मशाला विभाग के विभागाध्यक्षों सहित परिषद् के संयुक्त निदेशक के साथ विचार-विमर्श किया।
37. यूनेस्को के भूतपूर्व सहायक महानिदेशक श्री जी.वी.राव, 4 से 6 मार्च, 1989 तक रा.शै.अ.प्र.प. में आए और उन्होंने ''यूनेस्को के 40 वर्ष'' विषय पर एक वार्ता दी, जिसमें परिषद् के सभी विभागाध्यक्ष तथा वरिष्ठ संकाय सदस्य उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के संकाय सदस्यों की विदेशों में प्रतिनियुक्ति

1988-89 में परिषद् के निम्नलिखित संकाय सदस्यों को विदेशों में आयोजित कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रतिनियुक्त किया गया।

1. प्रोफेसर एन.के.जंगीरा, अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा और विस्तार सेवा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प. ने पेरिस में 2 से 6 मई, 1988 तक विशेष शिक्षा के भावी विकास पर यूनेस्को की परामर्श बैठक में भाग लिया।
2. डा.जी.एल. अरोरा, रीडर, सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प. ने बैंकाक में 9 से 17 मई, 1988 तक माध्यमिक शिक्षा के पुनरभिविन्यास और सुधार पर अध्ययन दल की बैठक में भाग लिया।

3. प्रोफेसर अर्जुन देव, सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प. ने तोक्यो (जापान) में 23 मई से 8 जून, 1988 तक एशिया व प्रशान्त क्षेत्र में माध्यमिक शिक्षा पर सम्पादकीय समिति की बैठक में भाग लिया।
4. डा. (श्रीमती) सविता वर्मा, प्रवक्ता, विद्यालय-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग ने बैंकाक तथा च्यांगमाई, थाईलैंड में 4 से 11 अक्तूबर, 1988 तक प्राथमिक विद्यालयों के शीघ्र छोड़ने वालों के लिए सदस्य शिक्षा तकनीकी कार्यकारी दल की बैठक में भाग लिया।
5. डा.एस.डी. रोका, प्रोफेसर, विद्यालय - पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग ने हिरोशिमा जापान में 14 से 17 सितंबर, 1988 तक व्यापक प्राथमिक शिक्षा को प्रोत्साहित करने की क्षेत्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।
6. प्रोफेसर एम.एम. चौधरी, संयुक्त निदेशक, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान ने बीजिंग, चीन में 19 से 23 सितंबर, 1988 तक उपग्रह संचार पद्धति के प्रयोग और विकास संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।
7. डा. ए.के. जलालुद्दीन, संयुक्त निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प. ने जापान, टोकियो में 3 से 8 अक्तूबर, 1988 तक शिक्षा में कम्प्यूटर की बैठक में भाग लिया।
8. डा.जे.एस.ग्रेवाल, प्रोफेसर क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय भोपाल ने कोरियन राष्ट्रीय शिक्षा विश्वविद्यालय चुंगच्योंग बुक डु, कोरिया गणराज्य में 27 सितंबर, 1988 से 6 अक्तुबर, 1988 तक अध्यापक शिक्षा में सुधार वैकल्पिक संरचना, प्रशिक्षण, कार्यनीति और अनुकरणीय सामग्रियों पर एपीडं क्षेत्रीय अध्ययन दल की बैठक में भाग लिया।
9. प्रोफेसर डी.एस.मुले, सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग ने जर्मन जनवादी गणराज्य द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा और शान्ति नामक यूनेस्को कार्यशाला में इंटरनेशनल शुलबुशफोरशुंग (एराउन्सविज) जोर्गएस्कर्ट संस्थान में 7 से 11 नवंबर, 1988 तक भाग लिया।
10. डा. बी.आर.गोयल, प्रवाचक, अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा और विस्तार सेवा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प. ने जकार्ता में 23 नवंबर से 2 दिसंबर, 1988 तक प्राथमिक विद्यालयों में बहुवर्ग शिक्षण पर उप-क्षेत्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला में भाग लिया।
11. डा.ए.के.धोते, प्रवक्ता, शिक्षा व्यवसायीकरण विभाग, रा.शै.अ.प्र.प. ने चियाँग माई, थाईलैंड में 28 नवंबर से 5 दिसबंर, 1988 तक युवकों को उत्पादक कार्य के लिए तैयार करने हेतु शैक्षिक कार्यक्रम और विधियों की उपक्षेत्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।
12. प्रोफेसर ए.एन.माहेश्वरी, प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर ने यूनेस्को मुख्यालय पेरिस में 14 से 16 नवंबर, 1988 तक विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी शिक्षा में प्रयोगात्मक गतिविधियों तथा मार्गदर्शी परियोजना के पुनरीक्षण की परामर्श बैठक में भाग लिया।
13. डा.आर.पी.गुप्ता, प्रवाचक, विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग रा.शै.अ.प्र.प. ने पी.आर.ओ.पी. यूनेस्को, बैंकाक थाईलैंड में 6 से 10 दिसंबर, 1988 तक शिक्षा में सूचनाओं के प्रयोग में शिक्षकों के प्रशिक्षण पर यूनेस्को-एपीड उप-क्षेत्रीय संगोष्ठी में भाग लिया।
14. डा. जगदीश सिंह, प्रवाचक, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, रा.शै.अ.प्र.प. ने बैंकाक में 5 से 9 दिसंबर, 1988 तक यूनेस्को द्वारा आयोजित व्यापक एशियन दूरस्थ शिक्षा पद्धति के मूल्यांकन पर दूसरी बैठक में भाग लिया।
15. प्रोफेसर पी.एन.दवे, अध्यक्ष विद्यालय-पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग रा.शै.अ.प्र.प. ने टोकियो,

1988-89

जापान में 23 जनवरी 1989 से 10 फरवरी, 1989 तक प्राथमिक विद्यालयों में बच्चों की उपलब्धि की क्षेत्रीय कार्यशाला में संदर्भ व्यक्ति के रूप में भाग लिया।

यूनेस्को/एपीड परियोजनाएँ

यूनेस्को की गतिविधियों में परिषद् एपीड (विकास हेतु शैक्षिक नवाचारों संबंधी एशिया और प्रशान्त कार्यक्रम) और विद्यालयी शिक्षा एवं अध्यापक शिक्षा से संबंधित निम्नलिखित अध्ययन/परियोजना/कार्यक्रम द्वारा भाग लेती रही है। 1988-89 में परिषद् ने निम्नलिखित परियोजना/कार्यक्रम हाथ में लेने के लिए यूनेस्को के साथ अनुबंधों पर हस्ताक्षर किये :

1. प्राथमिक विद्यालयों में बहुवर्ग अध्यापन पर राष्ट्रीय कार्यशाला (अनुबंध संख्या 133.34.11.8/ए.सी./154/88)
2. तकनीकी और व्यवसायिक शिक्षा की विधि, प्रकार तथा संरचना पर राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला (अनुबंध संख्या 816.166.8) 88/277/(280)
3. विकासशील देशों में बायोटैक्नोलॉजी शिक्षण (अनुबंध संख्या 113.098.8)
4. प्राथमिक विद्यालयों में बहुवर्ग शिक्षण पर राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला (अनुबंध संख्या 810.521.9) 89/38 (376)
5. (अ) दक्षिणी एशिया में माध्यमिक विद्यालयों हेतु पाठ्यचर्या में पर्यावरणीय शिक्षा के आयाम (7-12 श्रेणी)
   (ब) दक्षिणी एशिया में माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के सेवापूर्व प्रशिक्षण के लिए पाठ्यचर्या में पर्यावरणीय शिक्षा के आयाम (7-12 श्रेणी) (अनुबंध संख्या 116.082.9)

शैक्षिक नवाचारों हेतु राष्ट्रीय विकास दल के अंतर्गत गतिविधियाँ

यूनेस्को के एपीड (विकास हेतु क्षेत्रीय नवाचारों संबंधी एशिया और प्रशान्त कार्यक्रम) के संदर्भ में भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय विकास दल स्थापित किया गया। रा.शै.अ.प्र.प. के अंतर्राष्ट्रीय संबंध एकक में स्थित राष्ट्रीय विकास दल शैक्षिक नवाचारों को बढ़ावा देने के क्रियाकलाप एवं सूचना प्रसार केन्द्र के समन्वयन का कार्य करता है। रिपोर्टाधीन वर्ष में राष्ट्रीय विकास दल द्वारा निम्नलिखित प्रमुख कार्य किए गए:

राष्ट्रीय विकास दल की बैठक

राष्ट्रीय विकास दल की आम सभा की एक बैठक मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग) के शिक्षा सचिव श्री अनिल बोर्दिया की अध्यक्षता में 29 जून, 1988 को हुई। राष्ट्रीय विकास दल ने शैक्षिक उद्यमों में अंतर-आंचलिक सहयोग को बढ़ावा देने वाले संगठनों/शीर्ष संस्थाओं का देशव्यापी नेटवर्क बनाने के लिए कुछ अनुशंसाएँ की हैं। राष्ट्रीय विकास दल ने सुझाव दिया कि संयुक्त नवाचार अंतर-आंचलिक परियोजना हाथ में ली जाएँ या दूसरों को दी जाएँ।

राज्य विकास दलों की बैठकें

अब तक सात राज्यों तथा दो संघ-शासित क्षेत्रों ने राज्य विकास दल स्थापित कर लिए हैं। राज्य के शिक्षा सचिव राज्य विकास दल के अध्यक्ष होते हैं तथा राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के निदेशक इसके सदस्य सचिव। शैक्षिक नवाचारों की राज्य विकास दलों की प्रथम राष्ट्रीय बैठक पुणे में 23 से 25 जनवरी, 1989 तक आयोजित की। इस बैठक में राज्य विकास दलों के सदस्य सचिवों (राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के निदेशक अथवा उनके प्रतिनिधियों) तथा हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, उड़ीसा, राजस्थान

तमिलनाडु और उ.प्र. से राज्य विकास दल की गतिविधियों के कार्यक्रम समन्वयकों ने भाग लिया।

बैठक में विभिन्न मुद्दों जैसे राज्य विकास दल की भूमिका व कार्य, ढाँचे व वित्तीय प्रावधानों पर विचार किया गया। इस बैठक में शैक्षिक प्रयासों में विभिन्न विकास क्षेत्रों के सामूहिक क्रियाकलाप की आवश्यकता पर बल दिया। राष्ट्रीय विकास दल, राज्य विकास दल तथा शैक्षिक नवाचारी संस्थाओं/संगठनों के बीच निकट संबंधों की आवश्यकता पर बल दिया गया। इस बैठक में सामूहिक अंतर-आंचलिक परियोजनाओं को राष्ट्रीय विकास की गति को बढ़ावा देने के लिए कार्यनीति पर विचार किया। प्रत्येक राज्य विकास दल के लिए एक अंतरिम कार्ययोजना भी बनाई गई।

विकास के लिए शैक्षिक नवाचारों पर क्षेत्रीय संगोष्ठी (दक्षिणी क्षेत्र)

राष्ट्रीय विकास दल ने 27 से 30 मार्च, 1989 तक मद्रास में शैक्षिक नवाचारों के विकास दल पर एक क्षेत्रीय संगोष्ठी आयोजित की। इस संगोष्ठी में दक्षिणी राज्यों, संघ-शासित क्षेत्रों से प्रतिभागी बुलाए गए। आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु राज्यों तथा लक्षद्वीप और पांडिचेरी संघ शासित क्षेत्रों से लगभग 50 प्रतिभागियों ने (विशेष अतिथियों सहित) संगोष्ठी में भाग लिया। अंतर-आंचलिक संगोष्ठी के द्वितीय चक्र में राष्ट्रीय विकास दल द्वारा आयोजित यह पहली क्षेत्रीय संगोष्ठी थी। ये संगोष्ठियाँ शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, ग्राम्य विकास, समाज कल्याण में कार्यरत विकास के विभिन्न क्षेत्रों, शैक्षिक नवाचार कर्ताओं के लिए एक ऐसा मंच उपलब्ध कराना जहां वे मिल बैठकर नवाचारी विचारों और अनुभवों का आदान-प्रदान कर सकें। संगोष्ठी में संयुक्त नवाचारी अंतर-आंचलिक परियोजनाओं की डिजाइनें तैयार की गई।

एन.डी.जी. मुख पत्र ''एजुकेशनल इन्नोवेशन''

समन्वयन और सूचनाओं के प्रसार और विनिमय के एक अंग के रूप में राष्ट्रीय विकास दल सचिवालय ने एन.डी.जी. मुख पत्र के जुलाई-दिसंबर, 1987 तथा जनवरी-जून, 1988 के अंकों की पांडुलिपि को अंतिम रूप दिया। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय विकास दल सचिवालय ने परिषद् के विभागों से महत्वपूर्ण शैक्षिक नवाचारों के बारे में सूचना एकत्रित कर उनका संकलन तैयार किया तथा एपीड मुखपत्र में सम्मिलित करने के लिए यूनेस्को, बैंकाक को प्रेषित किया। भारत में एपीड के सहयोगी केन्द्रों को यह राय दी गई कि वे यूनेस्को कार्यालय को सीधे सूचना भेजें।

राष्ट्रीय विकास दल का पुनर्गठन

राष्ट्रीय विकास दल की 29 जून, 1988 की बैठक में उसकी आम सभा को व्यापक अंतर-आंचलिक संगठन बनाने के लिए उसक पुनर्गठन किया गया। राष्ट्रीय विकास दल के संशोधित विधान में एपीड के सहयोगी केन्द्रों के अध्यक्षों सहित दो राज्य विकास दल के अध्यक्षों तथा विभिन्न मंत्रालयों के प्रतिनिधि मानव संसाधन विकास, ग्रामीण विकास, स्वास्थ्य और परिसर कल्याण, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, श्रम (तथा योजना आयोग के प्रतिनिधि) हैं। अपने कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए राष्ट्रीय विकास दल ने कार्यकारी समिति का गठन भी अनुमोदित किया है।

''इंडिया एंड एपीड'' पुस्तिका का विकास

राष्ट्रीय विकास दल सचिवालय ने ''इंडिया एंड एपीड'' पुस्तिका निकालने की प्रक्रिया प्रारंभ कर दी है। इस पुस्तिका में एपीड, राष्ट्रीय विकास दल, राज्य विकास दल तथा एपीड के सहयोगी केन्द्रों के बारे में सही सूचना देने का प्रस्ताव है।

एपीड पर दक्षिण एशियाई देशों की विशेष क्षेत्रीय बैठक की रिपोर्ट

नई दिल्ली में 22 से 23 जनवरी, 1987 तक आयोजित दक्षिणी एशियाई देशों में एपीड की उप-क्षेत्रीय बैठक की रिपोर्ट राष्ट्रीय विकास दल सचिवालय ने निकाली। उप-क्षेत्रीय बैठक की

1988-89

चक्रांकित रिपोर्ट पहले संबंधित संस्थानों/संगठनों को भेज दी गई थी। राष्ट्रीय शैक्षिक योजनाओं और नीतियों के परिप्रेक्ष्य में समान समस्याओं ओर मामलों पर केंद्रित उप-क्षेत्रीय सहयोग के क्रियाकलाप की पहचान और क्रियान्वयन की नीति तय करने के लिए यूनेस्को प्रायेजित उप-क्षेत्रीय बैठक एपीड की चतुर्थ प्रोगामिंग चक्र (1987-1991) की कार्ययोजना का गहराई से अध्ययन करने के लिए आयोजित की गई।

1988-89

सत्रह

क्षेत्रीय सेवाएँ और समन्वय

राज्यों और संघ शासित क्षेत्रों के शिक्षा विभागों/निदेशालयों तथा अन्य संस्थाओं के साथ सम्पर्क बनाये रखने के लिए परिषद् ने 17 क्षेत्रीय कार्यालय स्थापित किए हैं। ये क्षेत्र कार्यालय राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के विभिन्न संघटक एककों के कार्यकलापों और कार्यक्रमों से संबद्ध आवश्यक सूचनाएँ राज्य के शिक्षा विभागों को देते रहते हैं। ये कार्यालय अपने कार्य-क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले राज्यों/संघ शासित क्षेत्रों की विशिष्ट आवश्यकताओं से संबद्ध सूचनाओं को एकत्रित करके रा.शै.अ.प्र.प. तथा इसके संघटक एकक को भेजते हैं और साथ ही ये कार्यालय प्रशिक्षण एवं विस्तार कार्यक्रमों को आयोजित करने में परिषद् के विभिन्न संघटक एककों की आवश्यक सहायता करते है। ये क्षेत्रीय कार्यालय विद्यालय के अध्यापकों द्वारा हाथ में ली गई लघु क्रिया-अनुसंधान परियोजना के लिए वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने और राज्य शिक्षा विभाग के अनुरोध पर सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित करते हैं।

वर्ष 1988–89 के दौरान क्षेत्रीय कार्यालयों ने राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालयों और केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान को राज्यों और संघ शासित क्षेत्रों में उनके कार्यक्रमों को आयोजित करने में सहायता दी है। ये कार्यालय राज्य/संघ शासित क्षेत्र स्तर पर राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा आयोजित करने में राज्यों के शिक्षा विभागों/बोर्डों की आवश्यक निर्देशन और सहायता करते हैं। एक कार्य जो कि सभी क्षेत्रीय कार्यलयों के लिए समान है वह है कार्यक्रम सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन करना, जिसमें 1986-87 के कार्यक्रम-प्रस्तावों को अन्तिम रूप दिया गया। इन कार्यकलापों के अतिरिक्त क्षेत्रीय कार्यालयों ने, विद्यालय अध्यापकों के सामूहिक अभिविन्यास कार्यक्रम (पी.एम.ओ.एस.टी.) के अंतर्गत प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन, नवोदय विद्यालय में प्रवेश के लिए प्रवेश परीक्षाओं का आयोजन राज्यों और संघ शासित क्षेत्रों में नए नवोदय विद्यालय खोलना, राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षाओं का आयोजन एवं साक्षात्कार और राज्य-स्तर की खिलौने बनाने की प्रतिस्पर्धा आयोजित करना जैसे कार्य भी किए।

उपरोक्त दर्शाये कार्यकलापों के साथ-साथ क्षेत्रीय सलाहकार के कार्यालय रा.शै.अ.प्र.प. के प्राथमिकता के क्षेत्रों से संबंधित कुछ कार्यक्रम भी आयोजित करते हैं। इन कार्यक्रमों के विस्तृत ब्यौरे निम्न प्रकार हैं :

1988-89

अहमदाबाद का क्षेत्रीय कार्यालय

एन.पी.पाटिल विद्या मंदिर, नरौरा में 27 फरवरी 1989 से 4 मार्च, 1989 तक ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड स्कीम को समर्थन देने हेतु शिक्षण साधन सामग्री के निर्माण पर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 40 अध्यापकों तथा अध्यापक-प्रशिक्षकों ने प्राथमिक कक्षाओं के लिए शिक्षण सामग्री तैयार की।

क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद ने नवाचारों और प्रयोगों की प्रवृत्ति को बढ़ाने के उद्देश्य से 14 परियोजनाओं को वित्तीय सहायता प्रदान की।

क्षेत्रीय कार्यालय ने बलसार जिले में कक्षा दसवीं के अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन जाति के विद्यार्थियों को व्यावसायिक मार्गदर्शन देने की एक परियोजना हाथ में ली। इस परियोजना के अंतर्गत 9 विद्यालयों को मार्ग दर्शन प्रदान किया गया।

इलाहाबाद का क्षेत्रीय कार्यालय

अध्यापक प्रशिक्षकों की एक कार्यशाला डी.आई.ई.टी. के लिए अनुसंधान डिजाइनें तथा कार्यक्रम प्रस्तावों को तैयार करने के लिए 17-21 नवंबर, 1988 तक हरिद्वार में आयोजित की गई। कार्यशाला में 22 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

शिक्षा में पिछड़े अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन जाति के विद्यार्थियों के लिए उपचारी शिक्षा के सुझाव हेतु एक अध्ययन कार्यशाला देहरादून में 25 फरवरी, 1989 तक की गई। कार्यशाला 27 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

उत्तर प्रदेश में परीक्षा के सुधार पर एक कार्यशाला 28 मार्च 1989 को की गई। इस कार्यशाला में 15 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

बेंगलूर का क्षेत्रीय कार्यालय

बेंगलूर में प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन में भाषा-उन्मुख उपागम के लिए शिक्षण कौशल विकसित करने पर एक कार्यशाला 4 से 6 जनवरी, 1989 तक आयोजित की गई। कार्यशाला में 40 अध्यापकों ने भाग लिया। इस कार्यशाला की अनुवर्ती कार्यवाही के लिए उप-लोक-शिक्षण निदेशक बेंगलूर (ग्रामीण जिला) के सहयोग से बेंगलूर ग्रामीण जिला के प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों का एक दिवसीय अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में 35 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

भोपाल का क्षेत्रीय कार्यालय

सृजनात्मक लेखन के प्रशिक्षण पर 5 से 14 अक्टूबर 1988 तक पंचमढ़ी में एक 10 दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में 20 प्राध्यापकों तथा 20 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

मध्य प्रदेश में शिक्षण में नवाचार प्रवृत्ति पर आदिवासी विद्यालय अध्यापकों के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम 16 से 24 जनवरी, 1989 तक आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में आदर्श विद्यालय के प्राध्यापकों, कन्या शिक्षा परिसर व गुरुकुल विद्यालय तथा मध्य प्रदेश के बस्तर प्रभाग के अध्यापकों ने भाग लिया।

''इफैक्ट्स ऑफ टीचर लैड, सैल्फ लर्निंग, पिअर ग्रुप डिसकसन एंड मास मीडिया एप्रोचिस ऑफ टीचिंग पापुलेशन एजुकेशन टू स्टूडैन्ट्स इन क्लासिज 9 एंड 10'' नामक अनुसंधान परियोजना पर कार्यशाला पूरी की गई और रिपोर्ट तैयार की गई।

भुवनेश्वर का क्षेत्रीय कार्यालय

उड़ीसा के ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के लिए विज्ञान में जीवन आधारित और प्रक्रिया आधारित प्रयोगों के विकास पर 12 से 17 दिसंबर, 1988 तक गोपालपुर ऑन सी, गंजाम, जिला उड़ीसा में एक 6 दिवसीय कार्यशाला आयेजित की गई। उड़ीसा के माध्यमिक स्तर के 24 विज्ञान अध्यापकों ने कार्यशाला में भाग लिया।

1988-89

प्राथमिक स्तर पर मूल्य परक शिक्षा पर आदिवासी सेवा आश्रम के अध्यापकों के लिए एक छः -दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम बारीपाड़ा मयूरभंज, जिला उड़ीसा में 25 से 30 नवंबर, 1988 तक आयोजित किया गया। अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन जाति समुदाय के 19 अध्याकों ने कार्यशाला में भाग लिया।

कलकत्ता का क्षेत्रीय कार्यशाला

शिक्षा मनोविज्ञान तथा सम्बद्ध विषयों के शोध कर्ताओं के लिए शोध प्रणाली पर एक अभिविन्यास कार्यक्रम 30 जनवरी से 4 फरवरी 1989 तक किया गया। अभिविन्यास कार्यक्रम में 17 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

राष्ट्रीय पुरस्कृत अध्यापकों के लिए वर्तमान शिक्षा में उनकी रुचि जानने के लिए एक कार्यशाला 8 से 10 मार्च, 1989 तक आयोजित की गई। कार्यशाला में 11 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

विद्यालयों के लिए प्रयोगात्मक परियोजना के अंतर्गत 8 प्रस्ताव वित्तीय सहायता के लिए स्वीकृत किए गए।

हैदराबाद का क्षेत्रीय कार्यालय

आंध्र प्रदेश में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति शिक्षा की समस्याओं की जानकारी प्राप्त करने के लिए कोप्परला, जिला विज़ियानगरम, आंध्र प्रदेश में एक कार्यशाला 28 से 30 दिसंबर, 1988 तक आयोजित की गई। 20 प्रधानाचार्यों/मुख्य अध्यापकों तथा वरिष्ठ अध्यापकों ने कार्यशाला में भाग लिया।

प्राथमिक अध्यापकों के लिए पर्यावरणीय अध्ययनों पर अनुदेशी सामग्रियों की तैयारी हेतु हैदराबाद में एक कार्यशाला 27 से 30 मार्च, 1989 तक आयोजित की गई। कार्यशाला में 19 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

जयपुर का क्षेत्रीय कार्यालय

अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं पर नवोदय विद्यालय, बुरवा (जिला बांसवाड़ा) राजस्थान में एक कार्यशाला आयोजित की गई।

जयपुर में विकलांग बच्चों की शैक्षिक समस्याओं के अध्ययन हेतु एक चार-दिवसीय कार्यशाला 31 मार्च से 3 अप्रैल, 1989 तक आयोजित की गई।

मद्रास का क्षेत्रीय कार्यालय

तमिलनाडु में प्रारंभिक विद्यालय अध्यापकों के लाभ के लिए पर्यावरणीय अध्ययन उपागम पर एक 5 दिवसीय कार्यशाला6 से 10 फरवरी, 1989 तक पलानी, में की गई। कार्यशाला में 40 अध्यापकों ने भाग लिया।

आदिवासी कल्याण निदेशालय तमिलनाडु सरकार द्वारा चलाये जा रहे प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के लाभार्थ पर्यावरणीय अध्ययन उपागम पर एक पाँच-दिवसीय कार्यशाला 13 से 17 मार्च, 1988 तक परमुगाई, तमिलनाडु में की गई। कार्यशाला में 40 अध्यापकों ने भाग लिया।

पुणे का क्षेत्रीय कार्यालय

महाराष्ट्र तथा गोवा में शिक्षा महाविद्यालयों के प्रधानाचार्यों के लिए नई प्रबंध कार्य प्रणाली पर 29 से 31 मार्च, 1989 तक एक अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किया गया। शिक्षा महाविद्यालयों के 18 प्रधानाचार्यों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

विद्यालय में लड़कियों के नाम पंजीकरण न कराने और बीच में ही विद्यालय छोड़ देने (विशेषतया महाराष्ट्र के ग्रामीण क्षेत्रों में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन जाति) के कारणों का अध्ययन करने एवं अवरोधन में सुधार लाने के उपाय जानने के लिए एक संगोष्ठी-सह-कार्यशाला 24 से 26 मार्च, 1989 तक आयोजित की गई। इस कार्यशाला में 22 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

श्रीनगर/जम्मू का क्षेत्रीय कार्यालय

माध्यमिक स्तर पर शिक्षा के व्यवसायीकरण के लिए आवश्यकता पर आधारित पाठ्यक्रमों के विकास पर जम्मू में एक तीन-दिवसीय कार्यशाला 4 से 6 अप्रैल, 1988 तक आयोजित

की गई। कार्यशाला में 45 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

माध्यमिक स्तर पर नवाचारी प्रयोगों के प्रोत्साहन हेतु श्रीनगर में एक कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में 35 अध्यापकों ने भाग लिया।

अध्यापक शिक्षा के सुधार हेतु जम्मू और कश्मीर राज्य में एक कार्यशाला 11 से 14 अप्रैल, 1988 तक आयोजित की गई। इस कार्यशाला में 40 अध्यापक-प्रशिक्षकों ने भाग लिया।

माध्यमिक स्तर पर प्रयोगात्मक परियोजनाओं के विकास पर श्रीनगर में एक कार्यशाला 14 से 16 अप्रैल, 1988 तक आयोजित की गई। इस कार्यशाला में 50 माध्यमिक अध्यापकों ने भाग लिया।

अनौपारिक शिक्षा केन्द्रों के अनुदेशकों हेतु जम्मू में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम 19 से 25 दिसंबर, 1988 तक आयोजित किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम में 65 प्राथमिक अध्यापक तथा अध्यापक-प्रशिक्षकों ने भाग लिया।

जम्मू और कश्मीर में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन जाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं पर जम्मू में एक कार्यशाला 22 से 24 दिसंबर, 1988 तक आयोजित हुई। इस कार्यशाला में 60 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

माध्यमिक स्तर पर पाठ्यक्रम के विकास की कार्यनीति तय करने के लिए जम्मू तथा कश्मीर में एक कार्यशाला 9 से 11 जनवरी, 1989 तक आयोजित की गई। इस कार्यशाला में 30 अध्यापकों ने तथा अध्यापक प्रशिक्षकों ने भाग लिया।

अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के अनुदेशकों हेतु जम्मू में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम 16 से 18 फरवरी, 1989 तक आयोजित किया गया। अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों के 30 अनुदेशकों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

माध्यमिक स्तर पर व्यवसायीकरण के लिए आवश्यकता पर आधारित पाठ्यक्रमों के विकास पर जम्मू में एक कार्यशाला 23 से 25 फरवरी, 1989 तक आयोजित की गई। कार्यक्रम में 50 माध्यमिक अध्यापकों तथा अध्यापक-प्रशिक्षकों ने भाग लिया।

त्रिवेन्द्रम का क्षेत्रीय कार्यालय

अध्यापकों के लिए परीक्षण तथा मूल्यांकन पर एक अभिविन्यास कार्यक्रम 21 से 25 नवंबर, 1988 तक आयोजित किया गया। कार्यक्रम में 42 अध्यापकों ने भाग लिया।

अध्यापकों के लिए प्रयोगात्मक परियोजनाओं पर कासरगोद में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम 26 से 29 सितंबर, 1988 तक आयोजित किया। कार्यक्रम में 30 अध्यापकों ने भाग लिया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन जाति के अध्यापकों हेतु कन्नानोर एक प्रशिक्षण कार्यक्रम 11 से 14 अक्तूबर, 1988 तक आयोजित किया गया। कार्यक्रम में 26 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

पटना का क्षेत्रीय कार्यालय

माध्यमिक स्कूलों के अध्यापकों हेतु (अनुसंधान प्रयोगात्मक परियोजनाएँ) पर पटना में एक अभिविन्यास कार्यक्रम 16 से 18 जनवरी, 1989 तक आयोजित किया गया। कार्यक्रम में 19 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

पर्यावरण में विज्ञान शिक्षण पर देवघर में एक अभिविन्यास कार्यक्रम 27 से 29 मार्च, 1989 तक हुआ। कार्यक्रम में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जन जाति के विज्ञान पढ़ाने वाले 24 प्राथमिक अध्यापकों ने भाग लिया।

शिलांग का क्षेत्रीय कार्यालय

विज्ञान अध्यापकों के लिए विज्ञान प्रयोगशाला के प्रबंध पर शिलांग में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम 20 से 25 फरवरी, 1989 तक आयोजित किया गया। मेघालय, मिजोरम और त्रिपुरा से 38 अध्यापकों ने कार्यक्रम में भाग लिया।

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के क्षेत्रीय सेवाएँ एवं समन्वयन विभाग द्वारा क्षेत्र कार्यालय की गतिविधियाँ समन्वित की जाती हैं। यह विभाग सामुदायिक गायन कार्यक्रम जैसे राष्ट्रीय एकीकरण संवर्धन कार्यक्रम भी समन्वित करता है।

राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहन देने वाले कार्यक्रम

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के क्षेत्रीय सेवाएँ, विस्तार और

समन्वयन विभाग द्वारा क्षेत्रीय कार्यालयों के कार्यकलापों को समन्वित किया जाता है। यह विभाग राष्ट्रीय एकता को प्रोत्साहन देने के कार्यक्रम तथा सामुदायिक गायन कार्यक्रम भी समन्वित करता है।

सामुदायिक गान की योजना के अंतर्गत देश की भाषाओं और संस्कृतियों के प्रति प्रेम और आदर एवं देश भक्ति की भावनाओं को प्रोत्साहित करने के लिए परिषद् ने स्कूल अध्यापकों के 22 प्रशिक्षण शिविर राज्य, क्षेत्रीय तथा राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रमों पर आयोजित किये। इन कार्यक्रमों के विवरण तालिका 17.1 में दिए जा रहे हैं।

विभिन्न संस्कृतियों की समझ को विकसित करने के लिए छात्रों में विनिमय कार्यक्रम आयोजित करने की संभावना जानने के लिए एक मार्गदर्शी अध्ययन आयोजित किया गया। इस अध्ययन का आयोजन राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) मिजोरम तथा बड़ौदा की एम.एस. विश्वविद्यालय की शिक्षा तथा मनोविज्ञान की संकाय के सहयोग से किया गया। इस अध्ययन में आइनल और बड़ौदा के विद्यालयों के 12 से 14 आयु वर्ग के 20 मिजो और 20 गुजराती विद्यार्थियों ने भाग लिया। दीपावली के अवसर पर दस दिनों के लिए मिजो छात्र गुजराती छात्रों के परिवारों के साथ रहे, इसी प्रकार क्रिसमस त्यौहार पर दस दिनों के लिए गुजराती छात्र मिजो छात्रों के परिवार के साथ रहे।

तालिका 17.1
1988-89 में संचालित किए गए सामुदायिक गायन कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्यक्रम का स्वरूप	स्थान	तारीख	प्रतिभागियों की संख्या
1.	सामुदायिक गायन शिविर	प्रेसीडैन्सी बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, एगमोर, मद्रास (तमिलनाडु)	20 से 29 मई, 1988	50
2.	सामुदायिक गायन शिविर	राजकीय हाई स्कूल, बल्दयान, जिला शिमला (हिमाचल प्रदेश)	10 से 19 जून, 1988	50
3.	सामुदायिक गायन शिविर	राजकीय हाई-स्कूल चैल, जिला सोलन, (हिमाचल प्रदेश)	21 से 30 जून, 1988	44
4.	सामुदायिक गायन शिविर	राजकीय बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, भागलपुर (बिहार)	11 से 20 जुलाई 1988	20
5.	सामुदायिक गायन शिविर	अध्यापक प्रशिक्षण विद्यालय गढ़ी, जिला बांसवाड़ा (राजस्थान)	11 से 20 जुलाई, 1988	50
6.	सामुदायिक गायन शिविर	प्राथमिक शिक्षा संस्थान रामावर्मा पुरम त्रिचूर, (केरल)	2 से 11 अगस्त, 1988	61

1988-89

क्र.सं.	कार्यक्रम का स्वरूप	स्थान	तारीख	प्रतिभागियों की संख्या
7.	गायक-मंडल के लिए विशेष प्रशिक्षण शिविर	राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, नई दिल्ली	1 से 10 अगस्त, 1988	83
8.	सामुदायिक गायन शिविर	यूथ सर्विसेज होस्टल, ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश	6 से 15 अगस्त, 1988	75
9.	वही	राजकीय सेवा कालीन प्रशिक्षण केंद्र, पटियाला (पंजाब)	16 से 25 अगस्त, 1988	45
10.	वही	राजकीय जुबली इंटरमीडिएट कालेज, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)	22 से 31 अगस्त, 1988	99
11.	वही	वही	2 से 11 सितंबर, 1988	144
12.	विशेष गायक-मंडल के लिए शिविर	रा.शि.सं. परिसर, नई दिल्ली	2 सितंबर से 6 नवंबर, 1988	
13.	अध्यापकों का गायक-मंडल शिविर	अध्यापक प्रशिक्षण केन्द्र,, केन्द्रीय विद्यालय संगठन सेक्टर-2, आर.के.पुरम. नई दिल्ली	29 अक्तूबर: 6 नवंबर, 1988	46
14.	वही	एफ्रो-एशियन जन सम्मेलन के प्रतिनिधियों के स्वागत हेतु संगीतात्क रचना की प्रस्तुति, विज्ञान भवन, नई दिल्ली	15 से 24 नवंबर, 1988	13
15.	सामुदायिक गायन शिविर	रा.शै.अ.प्र.प., एगमोर, मद्रास (तमिलनाडु)	15 से 24 फरवरी 1989	50
16.	वही	रा.शि.सं., इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश)	18 से 27 फरवरी, 1989	44
17.	वही	जे.एस.एस.कम्पोजिट प्री-यूनिवर्सिटी कालेज बेंगलूर	27 फरवरी से 8 मार्च, 1989	48
18.	वही	रा.शि.सं., इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश)	18 मार्च 1989	45
19.	वही	रा.शै.अ.प्र.प., पुणे (महाराष्ट्र)	12 से 21 मार्च 1989	42
20.	वही	राजकीय हाई स्कूल, समस्तीपुर, (बिहार)	25 मार्च 3 अप्रैल, 1989	29
21.	वही	मार्थोमा हाई-स्कूल, पटानामथिटा, केरल	29 मार्च से 7 अप्रैल, 1989	41
22.	वही	प्रैसीडैन्सी बालिका उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एगमोर, मद्रास	30 मार्च से 8 अप्रैल, 1989	50

अट्ठारह

प्रशासन और कल्याण कार्यकलाप तथा वित्त

परिषद् के नियमों, विनियमों और प्रक्रियाओं के अनुसार रा.शै.अ.प्र.प. सचिवालय ने अपना कार्य करना जारी रखा।

प्रशासनिक और कल्याण कार्यकलाप

आलोच्य वर्ष के अंतर्गत 24 टाइप-II, 24 टाइप-III तथा 6 टाइप-V के आवासों का निर्माण कार्य पूरा हुआ। 16 टाइप-I आवासों का निर्माण कार्य लगभग पूरा हो चुका है। 16 टाइप-IV आवासों का निर्माण कार्य भी प्रारंभ हो गया है।

शापिंग काम्प्लैक्स सह-सामुदायिक केंद्र का निर्माण कार्य प्रारंभ हो गया है। स्टाफ कल्याण की कार्यवाही के रूप में परिषद् ने अपने कर्मचारियों को खेल-कूद की सुविधाएँ उपलब्ध कराना जारी रखा।

आठवाँ अंतर्क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, रा.शि.सं. व के.शै.प्रौ.सं. स्टाफ टूर्नामेंट, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर में 26 से 28 दिसंबर, 1988 तक आयोजित किया गया। वालीबाल, फुटबाल, बास्केटबाल, टेबल टेनिस, टेनिस, बैडमिन्टन, क्रिकेट, टेनीकोइट, म्यूजिकल चेयर तथा रस्साकशी (विशेष मद) में प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। इन खेलों में लगभग 180 खिलाड़ियों ने भाग लिया। खिलाड़ियों ने काफी रुचि दिखाई और बंधुत्व की भावना से खेल खेले।

हिन्दी प्रकोष्ठ के कार्यकलाप

वर्ष 1988-89 में रा.शै.अ.प्र.प. के हिन्दी प्रकोष्ठ ने राजभाषा नीति को कार्यान्वित करने एवं कार्यालय के कार्यों में राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने के लिए कई कार्यकलाप किए। आलोच्य वर्ष में रा.शै.अ.प्र.प. की राजभाषा कार्यान्वयन समिति (1980 में गठित) की तीन बैठकें आयोजित की गईं। समिति ने मापन, मूल्यांकन, सर्वेक्षण और आधार सामग्री प्रक्रियन विभाग तथा सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग में हिन्दी के प्रयोग का मूल्यांकन किया और राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने के संबंध में उन्हें आवश्यक दिशा-निर्देश दिया। हिन्दी के प्रोत्साहन हेतु परिषद् में किए गए विभिन्न कार्यों विशेषतः विद्यालयों में हिन्दी शिक्षण के लिए पाठ्यपुस्तकें, अभ्यासपुस्तकें और अन्य पूरक सामग्री तैयार करने संबंधी कार्यों से संसदीय राजभाषा

1988-89

समिति को अवगत कराया गया। हिन्दी प्रकोष्ठ ने राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभिन्न विभागों/एककों के दैनिक अनुवाद कार्य के अतिरिक्त तीन दस्तावेजों का अनुवाद कार्य भी किया। प्रकोष्ठ ने परिषद् के संघटक एककों के प्रयोगार्थ प्रशासनिक/शैक्षिक शब्दों तथा वाक्यांशों की एक लघु पुस्तिका तैयार की। हिन्दी प्रकोष्ठ द्वारा बाल साहित्य की बहुत सारी पुस्तकों का चयन कर उनकी सूची राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के पुस्तकालय, प्रलेखन और सूचना विभाग को क्रय करने हेतु भेजी गई।

हिन्दी सप्ताह का आयोजन 28 नवंबर से 2 दिसंबर, 1988 तक किया गया। इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताएँ जैसे कविता, पाठ, अनुवाद कार्य, निबंध लेखन, प्रारूप व टिप्पणी, टंकण तथा भाषण आदि की प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं तथा विजेताओं को पुरस्कार दिए गए। अपने दिन प्रतिदिन के कार्यों में हिन्दी का अधिकतम प्रयोग करने के लिए परिषद् के तीन संघटकों/एककों को एक-एक चल वैजयंती प्रदान की गईं।

वित्त

1988-89 के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की प्राप्तियाँ और भुगतान का समेकित लेखा

प्राप्तियाँ	राशि (रु.)		भुगतान	राशि (रु.)	
आदि शेष			**बजट खर्च**		
			अधिकारियों के वेतन		
रोकड़ और बैंक में	6,86,90,207		गैर–योजना	3,33,05,331	
संचालन निधि	40,20,000		योजना	5,19,800	3,30,25,131
जी.पी.एफ/सी.पी.एफ. बचत खाते में	1,38,13,333	8,65,23,540			
			स्थापना का वेतन		
बजट खर्चे के लिए मानव संसाधन			गैर योजना	3,47,74,756	
विकास मंत्रालय से प्राप्त			योजना	8,34,213	3,56,08,969
अनुदान					
गैर योजना	11,60,77,000				
योजना	3,51,10,089	15,11,87,089			
विशिष्ट परियोजनाओं से संबंधित		24,96,76,982	भत्ते और मानदेय		
अनुदान तथा वापसी					
			गैर-योजना	3,04,78,085	
			योजना	5,84,082	3,10,62,167
परिषद् की प्राप्तियाँ			**यात्रा भत्ता**		
भवनों का किराया	12,61,017		गैर–योजना	13,60,450	
ऋण एवं अल्पकालिक निवेशों पर ब्याज	7,59,538		योजना	18,832	13,79,282
अधिक भुगतान की वसूली	10,71,657		**अन्य प्रभार**		

1988-89

प्राप्तियाँ	राशि (रु.)		भुगतान	राशि (रु.)	
विज्ञान किटों की बिक्री	2,62,752		गैर-योजना	2,33,70,212	
शुल्क और प्रभार	5,70,998		योजना	5,42,867	2,39,13,079
पुस्तकों और प्रकाशनों की बिक्री	6,85,09,026		छात्रवृत्तियाँ/फैलोशिप		
अवकाश वेतन और पेंशन योगदान	3,40,159		गैर योजना	7,67,280	
			योजना	5,79,510	13,46,790
सी.जी.एच.एस.	1,34,778				
			कार्यक्रम		
जी.पी.एफ. निवेश पर			गैर योजना	5,49;46,409	
ब्याज तथा देय निवेश	1,51,53,226				
रायल्टी	30,341		योजना	1,24,03,580	6,73,49,989
विविध प्राप्तियाँ	50,14,788	9,31,08,280			
			उपस्कर और फर्नीचर		
			गैर-योजना	17,14,958	
			योजना	14,43,591	31,58,549
			भूमि और भवन		
			गैर-योजना	71,22,965	
			योजना	62,73,427	1,33,96,392
			विशिष्ट परियोजनाओं पर भुगतान		17,51,17,551
			कार्यक्रम के लिए पेशगी		50,064
			विविध भुगतान		
			पेंशन और ग्रेच्युटी	75,31,502	
			अवकाश वेतन और पेंशन योगदान (एल.एस.एंड पी.सी.)	2,38,881	
			सी.जी.एच.एस.	6,36,804	
			मकान किराया	8,629	
			लेखा परीक्षा शुल्क	86,750	
			विज्ञापन	1,51,793	
			जमा में जुड़ी बीमा योजना (डी.एल.आई.एस.)	50,000	
			अन्य	2,940	87,07,299
			जी.पी.एफ. और सी.पी.एफ		
			जी.पी.एफ. पर ब्याज	81,97,342	
			सी.पी.एफ. का ब्याज और परिषद् का अंशदान	2,96,987	84,94,249

1988-89

प्राप्तियाँ	राशि (रु.)		भुगतान	राशि (रु.)	
			ऋण और पेशगियों का भुगतान और वसूली		
कार/स्कूटर पेशगी	9,08,048		कार/स्कूटर पेशगी	14,81,105	
साइकिल पेशगी	50,194		साइकिल पेशगी	42,800	
पंखा पेशगी	11,192		पंखा पेशगी	12,400	
त्योहार पेशगी	5,47,610		त्योहार पेशगी	5,50,450	
भवन निर्माण पेशगी	24,99,501		भवन निर्माण पेशगी	37,31,317	
स्थानान्तरण यात्रा-भत्ता/वेतन पेशगी	80,585		स्थानान्तरण यात्रा-भत्ता/वेतन पेशगी	2,13,462	
स्थायी पेशगी	683	40,97,813	स्थायी पेशगी	400	60,31,934
			निधि एवं निवेश		
जी.पी.एफ.	2,63,53,120		जी.पी.एफ. चालू लेखा	82,62,361	
जी.पी.एफ. पर ब्याज	81,97,342		बचत लेखा	82,46,025	1,65,08,386
सी.पी.एफ.	(–) 35,29,673		सी.पी.एफ. चालू लेखा	49,016	
सी.पी.एफ. पर ब्याज	2,96,907		बचत लेखा	1,59,570	2,08,586
चालू खाता से प्राप्ति	1,20,00,000		बचत लेखा को स्थानान्तरित		1,20,00,000
अल्पकालिक निवेश	99,00,000	5,32,17,696	अल्पकालिक निवेश		99,00,000
			जी.पी.एफ./सी.पी.एफ. निवेश		2,60,00,000
					6,46,16,972
			जमा		
बयाना धन और सुरक्षा जमा	3,21,550		बयाना धन और सुरक्षा जमा	3,16,653	
जमानत जमा	69,505		जमानत जमा	1,34,299	
अन्य जमा	6,47,375	10,38,430	अन्य जमा	7,85,683	12,36,635
			विप्रेषण		
जी.पी.एफ./सी.पी.एफ.	2,80,500		जी.पी.एफ./सी.पी.एफ.	3,27,786	
पी.एल.आई/एल.आई.सी.	94,671		पी.एल.आई/एल.आई.सी.	97,325	
प्रधान मंत्री राष्ट्रीय राहत कोष	5,982		प्रधान मंत्री राष्ट्रीय राहत कोष	25,446	
आयकर	18,86,693		आय-कर	18,97,628	
मृत्यु राहत कोष	35,466		मृत्यु राहत कोष	21,884	
टी.सी.समिति	4,43,885		टी.सी. समिति	4,75,330	
जी.एल.आई.एस.	18,38,579		एस.एल.आई.एस.	15,40,131	
उप-कार्यालय विप्रेषण	39,98,202		उप-कार्यालय विप्रेषण	38,37,653	
आवधिक विप्रेषण	15,58,64,811		आवधिक विप्रेषण	15,58,64,811	
विविध	1,23,683	16,45,72,392	विविध	68,220	16,41,56,214

1988-89

प्राप्तियाँ	राशि (रु.)	भुगतान	राशि (रु.)	
		अन्त शेष		
		हाथ बाकी नकद और बैंक में	15,41,77,664	
		संचालन में निधि	40,32,326	
		पी.एफ. बचत खाते में शेष	57,60,966	16,39,70,956
योग	80,34,22,222		योग	80,34,22,222

ह.-/ — मुख्य लेखा अधिकारी

ह./- — सचिव

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

1988-89

परिशिष्ट अ

वर्ष 1988–89 के लिए रा.शै.अ.प्र.प. की समितियाँ

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (सामान्य निकाय) के सदस्य

(परिषद् के नियम 3 के अंतर्गत)

1.	केन्द्रीय शिक्षामंत्री अध्यक्ष–*पदेन*	1.	श्री पी. शिवशंकर केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्री, नई दिल्ली
2.	अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग–*पदेन*	2.	प्रो. यशपाल अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली
3.	सचिव, शिक्षा मंत्रालय–*पदेन*	3.	श्री अनिल बोर्दिया, सचिव मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग) भारत सरकार, शास्त्री भवन, नई दिल्ली
4.	भारत सरकार द्वारा, प्रत्येक क्षेत्र से एक के आधार पर मनोनीत, विश्वविद्यालयों के चार कुलपति	4.	प्रो.वी.जी.भिडे, कुलपति पूना विश्वविद्यालय, पुणे महाराष्ट्र
		5.	डा.एन.एस.बोस, कुलपति, विश्व भारती विश्वविद्यालय,शान्तिनिकेतन, पश्चिम बंगाल
		6.	डा. एस.एस. बाल, कुलपति गुरु नानक विश्वविद्यालय, अमृतसर, पंजाब

5. प्रत्येक राज्य सरकार/संघ शासित प्रदेश का एक–एक प्रतिनिधि विधायक जिसे राज्य/संघ शासित प्रदेश का शिक्षा मंत्री, (या उसका प्रतिनिधि) होना चाहिए और दिल्ली के मामले में मुख्य कार्यकारी पार्षद (या उनका प्रतिनिधि)

7. प्रो.वी.सी. कुलंदैस्वामी, कुलपति, अन्ना विश्वविद्यालय मद्रास, तमिलनाडु
8. शिक्षामंत्री, आंध्र प्रदेश सरकार, सचिवालय भवन, हैदराबाद, आंध्र प्रदेश
9. शिक्षामंत्री, अरुणाचल प्रदेश सरकार, इटानगर अरुणाचल प्रदेश
10. शिक्षामंत्री, असम सरकार, सचिवालय भवन, गुवाहाटी असम
11. शिक्षामंत्री, बिहार सरकार, नया सचिवालय भवन पटना, बिहार
12. शिक्षामंत्री, गोवा सरकार, सचिवालय, पणजी, गोवा
13. शिक्षामंत्री, गुजरात सरकार, ब्लाक नं. –1, सचिवालय,गांधी नगर, गुजरात
14. शिक्षा मंत्री, हरियाणा सरकार, हरियाणा सिविल सचिवालय,56/4, चंडीगढ़, हरियाणा
15. शिक्षा मंत्री, हिमाचल प्रदेश सरकार, शिमला हिमाचल प्रदेश
16. शिक्षा मंत्री, जम्मू और कश्मीर सरकार, श्रीनगर जम्मू और कश्मीर
17. शिक्षा मंत्री, कर्नाटक सरकार, विधान सौध, बंगलौर कर्नाटक
18. शिक्षामंत्री, केरल सरकार, अशोका, नंथेन्कोएड त्रिवेन्द्रम, केरल
19. शिक्षा मंत्री, मध्य प्रदेश सरकार, भोपाल, मध्य प्रदेश
20. शिक्षा मंत्री, महाराष्ट्र सरकार,मुख्य मंत्रालय, बंबई महाराष्ट्र
21. शिक्षा मंत्री, मणिपुर सरकार, सचिवालय, इम्फाल मणिपुर
22. शिक्षा मंत्री, मेघालय सरकार, सचिवालय, शिलांग मेघालय
23. शिक्षा मंत्री, मिजोरम सरकार, ऐजाबल,मिजोरम
24. शिक्षा मंत्री, नागालैण्ड सरकार, कोहिमा, नागालैण्ड
25. शिक्षा मंत्री, उड़ीसा सरकार, सचिवालय, भुवनेश्वर उड़ीसा
26. शिक्षा मंत्री, पंजाब सरकार, चंडीगढ़, पंजाब
27. शिक्षा मंत्री, राजस्थान सरकार, शासकीय सचिवालय जयपुर, राजस्थान

28. शिक्षा मंत्री, सिक्किम सरकार, ताशिलिंग सचिवालय गंगटोक, सिक्किम

29. शिक्षा मंत्री, तमिलनाडु सरकार, पोर्ट सैंट जार्ज, मद्रास, तमिलनाडु

30. शिक्षा मंत्री, त्रिपुरा सरकार, सिविल सचिवालय अगरतला, त्रिपुरा

31. शिक्षा मंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

32. शिक्षा मंत्री, पश्चिम बंगाल सरकार, राइटर्स बिल्डिंग, कलकत्ता, पश्चिम बंगाल

33. श्री जगप्रवेश चन्द्र
मुख्य कार्यकारी पार्षद, दिल्ली प्रशासन, पुराना सचिवालय, दिल्ली

34. शिक्षा मंत्री, पांडिचेरी सरकार, असेम्बली सचिवालय विक्टर साइमोनल स्ट्रीट, पांडिचेरी

6. कार्यकारिणी समिति के वे सभी सदस्य, जो ऊपर सम्मिलित नहीं हैं

35. श्री एल.पी.साही
शिक्षा और संस्कृति राज्य मंत्री, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, शास्त्री भवन, नई दिल्ली

36. डा.पी.एल.मल्होत्रा, निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

37. प्रो.डी.एस.कोठारी, कुलाधिपति, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, न्यू महरौली रोड, नई दिल्ली

38. प्रो. एन.एस.बोस,कुलपति विश्व भारती, शान्ति निकेतन, पश्चिम बंगाल

39. श्री एस.नरसिंहलु, सचिव, नंदिनी पब्लिक स्कूल, चिराग अली लेन, हैदराबाद,आंध्र प्रदेश

40. फादर जॉन पैट्रिक,प्रधानाचार्य, सहोदय स्कूल, सी–1 सफदरजंग डेवलपमेंट एरिया, नई दिल्ली

41. प्रो.ए.के. जलालुद्दीन
संयुक्त निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली

42. प्रो.ओ.एस. देवल, प्रधानाचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
अजमेर, राजस्थान

43. डा.ए.के.शर्मा, अध्यक्ष
अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा और विस्तार सेवा विभाग
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

44. श्रीमती लक्ष्मी आराध्य, रीडर
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर

		45.	श्री वाई.एन.चतुर्वेदी संयुक्त सचिव (स्कूल) मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन, नई दिल्ली
		46.	श्री एल.एस. नारायणन वित्तीय सलाहकार मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन, नई दिल्ली
7.	(क) अध्यक्ष, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड नई दिल्ली–*पदेन*	47	अध्यक्ष, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड 17–बी इन्द्रप्रस्थ इस्टेट, नई दिल्ली
	(ख) आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली–*पदेन*	48	आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन ज.ल.ने.वि., नई दिल्ली
	(ग) निदेशक, केन्द्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो (स्वास्थ्य सेवा महानिदेशालय) नई दिल्ली–*पदेन*	49	निदेशक, केन्द्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो (डी.जी.एच.एस.), स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार कोटला रोड, नई दिल्ली
	(घ) उपमहानिदेशक प्रभारी कृषि शिक्षा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, कृषि मंत्रालय नई दिल्ली–*पदेन*	50	उप महानिदेशक प्रभारी कृषि शिक्षा आई.सी.ए.आर., कृषि मंत्रालय डा.राजेन्द्र प्रसाद रोड, नई दिल्ली
	(च) प्रशिक्षण निदेशक, प्रशिक्षण तथा रोजगार महानिदेशालय श्रम मंत्रालय,नई दिल्ली–*पदेन*	51	प्रशिक्षण निदेशक, प्रशिक्षण तथा रोजगार महानिदेशालय, श्रम मंत्रालय श्रम शक्ति भवन, नई दिल्ली
	(छ) योजना आयोग शिक्षा प्रभाग के प्रतिनिधि, नई दिल्ली–*पदेन*	52	शिक्षा सलाहकार, योजना आयोग योजना भवन, संसद मार्ग, नई दिल्ली
8.	भारत सरकार द्वारा मनोनीत छ : व्यक्ति, जिनमें कम से कम चार विद्यालय अध्यापक होने चाहिए	53.	प्रो.वी.जी. कुलकर्णी निदेशक, होमी भाभा विज्ञान शिक्षा केन्द्र, टाटा आधारभूत अनुसंधान संस्थान होमी भाभा मार्ग, कोलाबा, बम्बई
		54	श्री एस.सी.बेहड़, प्रमुख सचिव शिक्षा विभाग, मध्य प्रदेश सरकार बल्लभ भवन, भोपाल, मध्य प्रदेश
		55.	श्री रजा अल्ला बक्श मुख्याध्यापक, पंचायत समिति प्राथमिक विद्यालय, प्रकाश नगर होल्मसपैट, कुड्डप्पा, आंध्र प्रदेश

		56.	श्री डेविड सैरिंग लेपचा मुख्याध्यापक, नूमपेटैम प्राथमिक विद्यालय डाकघर मायम, उत्तर सिक्किम सिक्किम
		57.	श्रीमती राधिका हर्जबरगर निदेशक, ऋषि वैली स्कूल हार्सेली हिल्स, जिला चित्तूर आंध्र प्रदेश
		58.	श्रीमती रजनी कुमार प्रधानाचार्य, स्प्रिंगडैल्स विद्यालय पूसा रोड, नई दिल्ली
	विशेष आमंत्रित	59.	सचिव, काउंसिल आफ इंडियन स्कूल सर्टिफिकेट एक्ज़ामिनेशन, प्रगति हाउस तीसरा तल, 47—नेहरू प्लेस नई दिल्ली
		60.	श्री ओ.पी.केलकर, सचिव राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् नई दिल्ली

कार्यकारिणी समिति के सदस्य

1.	परिषद् के अध्यक्ष, जो कार्यकारिणी समिति के *पदेन* अध्यक्ष होंगे	1.	श्री पी.वी. नरसिंह राव मानव संसाधन विकास मंत्री भारत सरकार शास्त्री भवन, नई दिल्ली (25.6.88 तक)
		2.	श्री पी. शिवशंकर मानव संसाधन विकास मंत्री, भारत सरकार शास्त्री भवन, नई दिल्ली (26.6.88 से)
2.	(क) शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री, जो कार्यकारिणी समिति के *पदेन* उपाध्यक्ष होंगे		श्री. एल.पी. साही शिक्षा और संस्कृति के राज्य मंत्री भारत सरकार, शास्त्री भवन नई दिल्ली
	(ख) अध्यक्ष द्वारा मनोनीत शिक्षा मंत्रालय में उपमंत्री		
	(ग) परिषद् के निदेशक		डा. पी.एल.मल्होत्रा निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली

	(घ) सचिव, शिक्षा मंत्रालय–*पदेन*		श्री अनिल बोर्दिया सचिव, मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग), शास्त्री भवन नई दिल्ली
3.	अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग–पदेन		प्रो. यशपाल, अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदाम आयोग, बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग नई दिल्ली
4.	अध्यक्ष द्वारा मनोनीत स्कूल शिक्षा में अनुभूत रुचि रखने वाले चार शिक्षाविद् (जिनमें से दो स्कूल अध्यापक हों)	1.	प्रो. डी.एस.कोठारी कुलपति, ज.ल.ने.वि., न्यू महरौली रोड नई दिल्ली
		2.	डा.सी.एल. आनंद शिक्षा शास्त्र के प्रोफेसर उत्तर–पूर्वी पर्वतीय विश्वविद्यालय शिलांग
		3.	श्री एम.एल. बब्बर, प्रधानाचार्य एन.डी.एम.सी., नवयुग स्कूल सरोजिनी नगर, नई दिल्ली
		4.	श्री डी.पी. सिंह सिद्धार्थ स्कूल, डाक रामगढ़ कैंट जि. हज़ारीबाग, बिहार (1.9.1988 से)
		1.	प्रो.डी.एस.कोठारी कुलपति, ज.ला.ने.वि. न्यू महरौली रोड,नई दिल्ली
		2.	प्रो. एन.एस.बोस कुलपति, विश्वभारती शांति निकेतन
		3.	श्री एस.नरसिंहुलु सचिव, नंदिनी पब्लिक स्कूल चिराग अली लेन, हैदराबाद
		4.	फादर जॉन पैट्रिक प्रिंसिपल, सहोदय स्कूल सी–1 सफ़रदरजंग डे.एरिया नई दिल्ली
5.	परिषद् के संयुक्त निदेशक	1.	प्रो. ए.के.जलालुद्दीन संयुक्त निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली

6. अध्यक्ष द्वारा मनोनीत परिषद् की संकाय के तीन सदस्य, जिनमें से कम से कम दो प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्षों के स्तर के हों

1. प्रो.के.एन.सक्सेना
अध्यक्ष, शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और
निर्देशन विभाग, रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली (31.3.1989 तक)

2. डा.ए.के. शर्मा
अध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा और
विस्तार सेवा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली

3. डा.जी.एल. अरोड़ा
रीडर, सामाजिक विज्ञान और मानविकी
शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प
नई दिल्ली
(1.9.1988 से)

1. डा.ए.के.शर्मा
अध्यक्ष, अ.शि.वि.शि.वि.से.वि.
रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली

2. श्रीमती लक्ष्मी आराध्य
रीडर, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
मैसूर

3. प्रो.ओ.एस.देवल
प्रिंसिपल, क्षे.शि.म.
अजमेर

7. शिक्षा मंत्रालय के एक प्रतिनिधि

श्री वाई.एन.चतुर्वेदी, संयुक्त सचिव
(स्कूल), मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(शिक्षा) विभाग, शास्त्री भवन
नई दिल्ली

8. वित्त मंत्रालय से एक प्रतिनिधि जो परिषद् का वित्तीय सलाहकार होगा

श्री एल.एस. नारायणन,
वित्तीय सलाहकार
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
(शिक्षा विभाग), शास्त्री भवन
नई दिल्ली

श्री ओ.पी.केलकर
सचिव
रा.शै.अ.प्र.प
नई दिल्ली

1988-89

वित्त समिति

(परिषद् के नियम 62 के अधीन)

(25.12.1989 तक मान्य)

क्र.	पद	क्र.	नाम
1.	निदेशक रा.शै.अ.प्र.प. *पदेन*	1.	डा.पी.एल.मल्होत्रा निदेशक रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली
2.	वित्तीय सलाहकार *पदेन*	2.	श्री एल.एस.नारायणन, वित्तीय सलाहकार, रा.शै.अ.प्र.प. मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्रीभवन, नई दिल्ली
3.	संयुक्त सचिव (स्कूली शिक्षा) मानव संसाधन विकास मंत्रालय	3.	श्री वाई.एन.चतुर्वेदी, संयुक्त सचिव (स्कूल), मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग), शास्त्री भवन नई दिल्ली
		4.	प्रो.एस.के.खन्ना, सचिव विश्वविद्यालय अनुदान आयोग बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली
		5.	डा.वी.पी.दत्त, अध्यक्ष चीनी और जापानी भाषा अध्ययन विभाग, कला संकाय भवन दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
4.	सचिव, रा.शै.अ.प्र.प. *सदस्य संयोजक*	6.	श्री ओ.पी.केलकर, सचिव रा.शै.अ.प्र.प नई दिल्ली

स्थापना समिति

(परिषद् के विनियम 10 के अधीन)

क्र.	पद	क्र.	नाम
1.	निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प. अध्यक्ष	1	डा.पी.एल.मल्होत्रा निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प. अध्यक्ष
2.	संयुक्त निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प.	2.	डा. ए.के.जलालुद्दीन, संयुक्त निदेशक रा.शै.अ.प्र.प.
3.	अध्यक्ष द्वारा मनोनीत, मानव संसाधन विकास मंत्रालय शिक्षा विभाग, भारत सरकार से नामित व्यक्ति	3	श्री वाई.एन. चतुर्वेदी, संयुक्त सचिव (स्कूली शिक्षा), मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली

1988-89

4	अध्यक्ष द्वारा मनोनीत, चार शिक्षाविद, जिनमें से कम से कम एक वैज्ञानिक हो	4	प्रो.एन.एस. बोस, कुलपति, विश्व भारती, शांति निकेतन, पश्चिम बंगाल
		5	डा. के. वेंकटसुब्रह्मण्यम कुलपति, पांडिचेरी विश्वविद्यालय पांडिचेरी
		6	श्रीमती वी.ए. गांगुली प्रधानाचार्य, खाद्य, शिल्प संस्थान शिवाजी नगर, पुणे
		7	श्री एन. बेहेरा सहायक कार्यक्रम समन्वयक क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भुवनेश्वर
5	अध्यक्ष द्वारा मनोनीत, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय से एक प्रतिनिधि		
6	अध्यक्ष द्वारा मनोनीत दिल्ली के राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान से एक प्रतिनिधि	8	प्रो.के.एन.सक्सेना, अध्यक्ष शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और निर्देशन विभाग, रा.शै.अ.प्र.प.
7	परिषद् के शैक्षिक तथा गैर शैक्षिक नियमित स्टाफ में से, विनियम के परिशिष्ट में बताए अनुसार अपने अपने वर्ग में से एक–एक चुनकर दो प्रतिनिधि	9.	श्री जे.एस.सक्सेना, रीडर क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, अजमेर
		10	श्रीएम.एस.बिष्ट; भंडारपाल ग्रेड–1 रा.शै.अ.प्र.प.,नई दिल्ली
8	वित्तीय सलाहकार, रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली	11	श्री.एल.एस.नारायणन, वित्तीय सलाहकार, रा.शै.अ.प्र.प., मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन नई दिल्ली
9	सचिव,रा.शै.अ.प्र.प.	12	श्री ओ.पी. केलकर, सचिव रा.शै.अ.प्र.प. *सदस्य संयोजक*

भवन एवं निर्माण समिति

(23.12.1989 तक मान्य है)

1	निदेशक रा.शै.अ.प्र.प. पदेन	*अध्यक्ष*	डा.पी.एल.मल्होत्रा, निदेशक रा.शै.अ.प्र.प.
2	संयुक्त निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प. पदेन	*उपाध्यक्ष*	डा.ए.के.जलालुद्दीन, संयुक्त निदेशक रा.शै.अ.प्र.प.
3	मुख्य अभियन्ता, केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग या उनका प्रतिनिधि	*सदस्य*	श्री वी.डी.तिवारी, मुख्य इंजीनियर (निर्माण) केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग रामा कृष्णा पुरम, नई दिल्ली
4	वित्त मंत्रालय (निर्माण) का एक प्रतिनिधि	*सदस्य*	श्री एच.एल. भाटिया, सहा. वित्त सलाहकार (निर्माण), वित्त मंत्रालय (निर्माण), निर्माण भवन, नई दिल्ली
5	रा.शै.अ.प्र.प. के परामर्शदाता वास्तुकार	*सदस्य*	श्री आर.एस.कौशल, वरिष्ठ वास्तुकार केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग (एन.डी. जेड–4) कमरा नं. 426, ''ए'' विंग निर्माण भवन, नई दिल्ली
6	परिषद् के वित्तीय सलाहकार या उनका प्रतिनिधि	*सदस्य*	श्री एल.एस.नारायणन, वित्तीय सलाहकार रा.शै.अ.प्र.प, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शिक्षा विभाग शास्त्री भवन, नई दिल्ली
7	शिक्षा मंत्रालय द्वारा नामित	*सदस्य*	श्री वाई.एन.चतुर्वेदी,संयुक्त सचिव (स्कूल), मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली
8	प्रख्यात सिविल इंजीनियर (अध्यक्ष द्वारा मनोनीत)	*सदस्य*	श्री आर.के.भण्डारी, मुख्य अभियंता दिल्ली विकास प्राधिकरण, विकास मीनार, इन्द्रप्रस्थ स्टेट, नई दिल्ली

9	प्रख्यात विद्युत इंजीनियर (अध्यक्ष द्वारा मनोनीत)	*सदस्य*	श्री आर.डी.जॉन, मुख्य अभियंता अंतरिक्ष विभाग, कावेरी भवन एफ ब्लाक, नवां तल, कैम्पागोडा रोड बंगलौर
10	कार्यकारिणी समिति का एक सदस्य (समिति द्वारा मनोनीत)	*सदस्य*	प्रो.ए.के. शर्मा, *अध्यक्ष*, अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा और विस्तार सेवा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

कार्यक्रम सलाहकार समिति

1. निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प., *अध्यक्ष*
2. संयुक्त निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प., *उपाध्यक्ष*
3. डा. जे.एन.जोशी, प्रोफेसर और डीन, शिक्षा विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़
4. डा. आर.पी.नायर, प्रोफेसर और *अध्यक्ष*, स्नातकोत्तर अध्ययन एवं अनुसंधान शिक्षा विभाग, मैसूर विश्वविद्यालय, मानसगंगोत्री, मैसूर
5. प्रो.आर.पी.पंचमुखी, निदेशक भारतीय शिक्षा संस्थान, 128/2, जे.पी. नायक पथ, कर्वे रोड से लगा हुआ, कोठरूद्र, पुणे
6. प्रो आरती सैन, प्रधानाचार्य, विनय भवन, विश्व भारती, शांति निकेतन
7. प्रो. योगेन्द्र सिंह, सामाजिक तंत्र अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान स्कूल, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, न्यू महरौली रोड, नई दिल्ली
8. निदेशक, राज्य शिक्षा संस्थान, पूजापुरा, त्रिवेन्द्रम (केरल)
9. निदेशक, राज्य शिक्षा संस्थान, रामखण्ड, अहमदाबाद (गुजरात)
10. निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 6 माल एवेन्यू, लखनऊ
11. प्रधानाचार्य, राज्य शिक्षा संस्थान, मौलाना आजाद रोड, श्रीनगर (जम्मू और कश्मीर)
12. प्रधानाचार्य, राज्य शिक्षा संस्थान, अरुनाचल प्रदेश सरकार पो.आ.चागलांग जिला टिरप (अरुणाचल प्रदेश)
13. *अध्यक्ष*, सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.एच.,(रा.शै.अ.प्र.प.),नई दिल्ली
14. डा. (कु) एस.के.राम, प्रोफेसर, (डी.ई.एस.एस.एच.), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
15. *अध्यक्ष* विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
16. डा.के.वी.राव, प्रोफेसर (डी.ई.एस.एम.) रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
17. *अध्यक्ष*, विद्यालय पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.पी.एस.ई.ई.), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
18. डा.सी.जे. दासवानी, प्रोफेसर, (डी.पी.एस.ई.ई.), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
19. *अध्यक्ष*, अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा और विस्तार सेवा विभाग, (डी.टी.ई.एस.ई.ई.एस.), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
20. डा.एन.के.जंगीरा, प्रोफेसर (डी.टी.ई.एस.ई.ई.एस.), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
21. *अध्यक्ष*, शिक्षा व्यवसायीकरण विभाग, (डी.वी.ई.), रा.शै.अ.प्र.प, नई दिल्ली
22. डा. (श्रीमती) एस.पी.पटेल, प्रोफेसर, (डी.वी.ई.), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
23. *अध्यक्ष*, शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और निर्देशन विभाग, (डी.ई.पी.सी.जी.), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
24. डा.जे.एस.गौड़, प्रोफेसर (डी.ई.पी.सी.जी.), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
25. *अध्यक्ष*, मापन, मूल्यांकन सर्वेक्षण और आधार सामग्री प्रक्रियन विभाग (डी.एम.ई.एस.डी.पी.), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
26. डा.ए.बी.एल.श्रीवास्तव, प्रोफेसर (डी.एम.ई.एस.डी.पी.), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
27. *अध्यक्ष*, क्षेत्रीय सेवाएँ, विस्तार और समन्वय विभाग (डी.एफ.एस.ई.सी.), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
28. डा. (कु.) इन्दु सेठ, रीडर, (डी.एफ.एस.ई.सी.), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

29 *अध्यक्ष*, कर्मशाला विभाग (डब्लयू.डी.), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
30. डा.बी.एम.गुप्ता,रीडर, (डब्ल्यू.डी.), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
31 *अध्यक्ष*, प्रकाशन विभाग, रा.शै.अ.प्र.प.,नई दिल्ली
32 *अध्यक्ष*, पुस्तकालय, प्रलेखन एवं सूचना विभाग, रा.शै.अ.प्र.प,, नई दिल्ली
33 *अध्यक्ष*, नीति अनुसंधान नियोजन और कार्यक्रम विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
34 संयुक्त निदेशक, केन्द्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
35 डा.सी.एच.के.मिश्रा, प्रोफेसर के.शै.प्रौ.सं., रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
36 प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर, कर्नाटक
37 डा.सी.शेषाद्रि, प्रोफेसर, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर कर्नाटक
38 प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय,भुवनेश्वर (उड़ीसा)
39 डा.एस.टी.वी.जी. आचायूर्लु प्रोफेसर–शिक्षा, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भुवनेश्वर (उड़ीसा)
40 प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा महादिव्यालय, अजमेर, (राजस्थान)
41 डा. (श्रीमती) अमृत कौर, प्रोफेसर, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय,अजमेर (राजस्थान)
42 प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, भोपाल (म.प्र.)
43. डा.जे.एस.ग्रेवाल, प्रोफेसर, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय,भोपाल (म.प्र.)
44 सचिव, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
45 डा.पी.एम.पटेल, प्रोफेसर प्रभारी कार्यक्रम अनुभाग, रा.शै.अ.प्र.प.,नई *दिल्ली संयोजक*

शैक्षिक अनुसंधान एवं नवाचार समिति

1 निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण
परिषद्, जहांगीराबाद
भोपाल (म.प्र.)

2 निदेशक
राज्य शिक्षा संस्थान
एम.एस.सदाशिव पेठ
कम्टनोकर रोड
पुणे (महाराष्ट्र)

3 डा.एस.एन. सराफ कुलपति,
श्री सत्यसाई उच्च अध्ययन संस्थान,
प्रशांतिनिलयम

4 डा. इकबाल नारायण
–*सदस्य* सचिव
भारतीय सामाजिक विज्ञान
अनुसंधान परिषद्
3, फिरोजशाह रोड,
नई दिल्ली

5 डा. जोसफ पी. जॉन
निदेशक, विज्ञान प्रौद्योगिकी प्रोन्नति
विभाग, न्यू महरौली रोड
नई दिल्ली

6. डा. बी.के. पासी
प्रोफेसर एवं *अध्यक्ष*
शिक्षा विभाग, इंदौर विश्वविद्यालय
इंदौर (म.प्र.)

7 डा.बी.एन.मुखर्जी
प्रोफेसर एवं *अध्यक्ष*, कम्प्यूटर केन्द्र
भारतीय सांख्यिकी संस्थान,
बैरकपुर रोड, कलकत्ता

8 डा. वी.ईश्वर रेड्डी,
निदेशक, सतत एवं प्रौढ़ शिक्षा
विभाग, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद (आं.प्र.)

9 डा.के.पी.पांडे
प्रोफेसर शिक्षा एवं *अध्यक्ष*
काशी विद्यापीठ, वाराणसी

10 डा.वी.पी.चिपलूनकर,
आशीर्वाद, मुकुंद नगर, ए.पी. I
के सामने, जालना रोड,
औरंगाबाद, महाराष्ट्र

11 प्राचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
अजमेर

12 प्राचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
भोपाल

13 प्राचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
भुवनेश्वर

14 प्राचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा महाद्विवयालय
मैसूर

15 डा.एस.एल.भैरप्पा
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
मैसूर

16 डा.एस.सी.चतुर्वेदी
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
भुवनेश्वर

17 श्री आर.के. भरतिया
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
अजमेर

18 डा.पी.के.खन्ना
क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय
भोपाल

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान की अकादमिक समिति

1 निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प., *अध्यक्ष*
2 संयुक्त निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प., *उपाध्यक्ष*
3 संयुक्त निदेशक, के.शै.प्रौ.सं., रा.शै.अ.प्र.प.
4 डीन (अनुसंधान), रा.शै.अ.प्र.प.
5 डीन (समन्वय), रा.शै.अ.प्र.प.
6 *अध्यक्ष*, विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
7 *अध्यक्ष*, सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.एच.), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
8 *अध्यक्ष*, शिक्षा व्यवसायीकरण विभाग (डी.वी.ई.), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
9 *अध्यक्ष*, मापन, मूल्यांकन, सर्वेक्षण और आधार सामग्री प्रक्रियन विभाग (डी.एम.ई.एस.एंड,डी.पी.), रा.शै.अ.प्र.प, नई दिल्ली
10 *अध्यक्ष*, विद्यालय पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग, (डी.ई.पी.एस.ई.ई.), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
11 *अध्यक्ष*, शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और निर्देशन विभाग (डी.ई.पी.सी.एंड.जी.), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
12 *अध्यक्ष*, अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा और विस्तार सेवा विभाग (डी.टी.ई.एस.ई.ई.एस.), रा.शै.अ.प्र.पं., नई दिल्ली
13 *अध्यक्ष*, नीति अनुसंधान, नियोजन और कार्यक्रम विभाग (डी.पी.आर.पी.एंड.पी.), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
14 *अध्यक्ष*, कर्मशाला विभाग, (डब्ल्यू, डी.), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
15 *अध्यक्ष*, प्रकाशन विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
16 *अध्यक्ष*, क्षेत्रीय सेवाएँ, विस्तार और समन्वय विभाग (डी.एफ.एस.ई.एड.सी.), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
17 *अध्यक्ष*, पुस्तकालय, प्रलेखन और सूचना विभाग, (डी.एल.डी.आई.), रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
18 डा. (कु.) एस.के.राम, प्रोफेसर, डी.ई.एस.एस.एच., रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
19 डा.के.वी.राव, प्रोफेसर, डी.ई.एस.एम., रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

20 डा. (श्रीमती) एस.पी.पटेल, प्रोफेसर, डी.वी.ई., रा.शै.अ.प्र.प, नई दिल्ली
21 डा.ए.बी.एल.श्रीवास्तव, प्रोफेसर, डी.एम.ई.एस.एंड.डी.पी., रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
22 डा.सी.जे.दासवानी, प्रोफेसर, डी.पी.एस.ई.ई., रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
23 डा.कुलदीप कुमार, प्रोफेसर, डी.ई.पी.सी.एंड. जी., रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
24 डा.एन.के.जंगीरा, प्रोफेसर, डी.टी.ई.एस.ई.ई.एस., रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
25 प्रोफेसर प्रभारी, कार्यक्रम, रा.शै.अ.प्र.प.,नई दिल्ली
26 डा.जे.एन.जोशी, प्रोफेसर और डीन, शिक्षा विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़
27 प्रो. योगेन्द्र सिंह, सामाजिक तंत्र अध्ययन केन्द्र, सामाजिक विज्ञान स्कूल, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
28 डीन (शैक्षिक) रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
29 *अध्यक्ष*, अंतर्राष्ट्रीय संबंध एकक, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
30 *अध्यक्ष*, महिला अध्ययन एकक, रा.शै.अप्र.प., नई दिल्ली
31 *अध्यक्ष*, पत्रिका प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
32 *अध्यक्ष*, पी.सी.ई.यूनिट, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली
33 *अध्यक्ष*, नवोदय विद्यालय प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प.,नई दिल्ली

विभागीय सलाहकार बोर्ड

शैक्षिक मनोविज्ञान, परामर्श और निर्देशन विभाग (डी.ई.पी.सी.एंड.जी.)

1 *अध्यक्ष*, डी.ई.पी.सी.जी. – *संयोजक*
2 डा. कुलदीप कुमार प्रोफेसर, डी.ई.पी.सी.जी.
3 डा. वी.के.सिंह, प्रोफेसर, डी.ई.पी.सी.जी.
4 *अध्यक्ष*, डी.टी.ई.एस.ई.ई.एस.
5 *अध्यक्ष*, डी.एम.ई.एस.डी.पी.
6 *अध्यक्ष*, डी.वी.ई.
7 डा. मेहरू डी.बंगाली, कुलपति, बंबई विश्वविद्यालय, बंबई
8 प्रो. (श्रीमती) पूर्णिमा माथुर, *अध्यक्ष*, सामाजिक विज्ञान और मानविकी विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, हौजखास, नई दिल्ली

अध्यापक शिक्षा, विशेष शिक्षा और विस्तार सेवा विभाग (डी.टी.ई.एस.ई.ई.एस.)

1 *अध्यक्ष*, डी.टी.ई.एस.ई.ई.एस. *संयोजक*
2 डा.एन.के.जंगीरा प्रोफेसर, डी.टी.ई.एस.ई.ई.एस.
3 डा. एल.आर.एन. श्रीवास्तव, प्रोफेसर, डी.टी.ई.एस.ई.ई.एस.
4 डा.एल.सी.सिंह, प्रोफेसर, डी.टी.ई.एस.ई.ई.एस.
5 *अध्यक्ष*, डी.ई.एस.एस.एच.
6 *अध्यक्ष*, डी.ई.एस.एम.
7 *अध्यक्ष*, डी.ई.पी.सी.जी.
8 *अध्यक्ष*, डी.पी.एस.ई.ई.

9 संयुक्त निदेशक, के.शै.प्रौ.सं. के प्रतिनिधि
10 *अध्यक्ष*, डी.एम.ई.एस.डी.पी.
11 डा.डी.के.मैनन, निदेशक मानसिक रूप से विकलांगों का राष्ट्रीय संस्थान, सिकन्दराबाद, (आंध्र प्रदेश)
12 डा.सी.एल.कुंडू, प्रोफेसर और *अध्यक्ष*, शिक्षा विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र (हरियाणा)

सामाजिक विज्ञान और मानविकी शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.एच.)

1 *अध्यक्ष*, डी.ई.एस.एस.एच. – *संयोजक*
2 डा. (कु.) एस.के. राम, प्रोफेसर, डी.ई.एस.एस.एच.
3 डा.डी.एन. पाणिग्रही, प्रोफेसर, डी.ई.एस.एस.एच.
4 श्री आर.जी.सक्सेना, प्रोफेसर, डी.ई.एस.एस.एच.
5 श्री अर्जुन देव, प्रोफेसर,डी.ई.एस.एस.एच.
6 श्रीमती एस.लूथरा, रीडर, डी.ई.एस.एस.एच.
7 *अध्यक्ष*, डी.पी.एस.ई.ई.
8 *अध्यक्ष*, डी.ई.एस.एम.
9 *अध्यक्ष*, डी.टी.ई.एस.ई.ई.एस.
10 संयुक्त निदेशक, के.शै.प्रौ.सं के प्रतिनिधि
11 प्रो. रशीदुद्दीन खान, 162 न्यू कैम्पस, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
12 डा.एम.जी.चतुर्वेदी प्रोफेसर प्रभारी, दिल्ली शाखा, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, अरविन्द आश्रम, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली

विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.)

1 *अध्यक्ष*, डी.ई.एस.एम. *संयोजक*
2 डा.के.वी.राव, प्रोफेसर, डी.ई.एस.एम.
3 डा. छोटन सिंह, प्रोफेसर,डी.ई.एस.एम.
4 डा.आर.डी.शुक्ल, प्रोफेसर, डी.ई.एस.एम.
5 श्री आर.सी.सक्सैना, प्रोफेसर, डी.ई.एस.एम.
6 *अध्यक्ष*, डी.टी.ई.एस.ई.ई.एस.
7 *अध्यक्ष*, प्रकाशन विभाग
8 *अध्यक्ष*, डी.एफ.एस.ई.सी.
9 प्रो.मोहन राम, वनस्पति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली
10 प्रो.ए.सी.जैन, रसायन विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

मापन, मूल्यांकन, सर्वेक्षण और आधार सामग्री प्रक्रियन विभाग (डी.एम.ई.एस.डी.पी.)

1 *अध्यक्ष*, डी.एम.ई.एस.डी.पी. *संयोजक*
2 श्री वी.एस.श्रीवास्तव, रीडर,डी.एम.ई.एस.डी.पी.
3 श्री पी.एन.अरोड़ा, रीडर, डी.एम.ई.एस.डी.पी.

4 श्री एस.एम.भार्गव, रीडर, डी.एम.ई.एस.डी.पी.
5 *अध्यक्ष*, डी.ई.एस.एम.
6 *अध्यक्ष*, डी.ई.एस.एस.एच.
7 *अध्यक्ष*, डी.वी.ई.
8 डा.आर.जी. मिश्रा, ए–75/2 साकेत, नई दिल्ली–17
9 डा. जैकब थारू, प्रोफेसर, केंद्रीय अंग्रेजी और विदेशी भाषा संस्थान, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश)

शिक्षा व्यवसायीकरण विभाग (डी.वी.ई.)

1 *अध्यक्ष*, डी.वी.ई. – *संयोजक*
2 डा. (श्रीमती) एस.पी.पटेल, प्रोफेसर, डी.वी.ई.
3 डा.ए.पी.वर्मा, रीडर, डी.वी.ई.
4 *अध्यक्ष*, डी.पी.एस.ई.ई.
5 *अध्यक्ष*, डी.एम.ई.एस.डी.पी.
6 *अध्यक्ष*, डी.ई.पी.सी.जी.
7 संयुक्त निदेशक, के.शै.प्रौ.सं. के प्रतिनिधि
8 श्री एस.के.गिरी, निदेशक, प्रशिक्षण, रोजगार और प्रशिक्षण महानिदेशालय, श्रम मंत्रालय, श्रम शक्ति भवन, रफी मार्ग, नई दिल्ली
9 डा.एस.सी.सक्सैना, डीन, कालेज विकास परिषद्, शिवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर, (म.प्र.)

विद्यालय पूर्व और प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.पी.इस.ई.ई.)

1 *अध्यक्ष*, डी.पी.एस.ई.ई., *संयोजक*
2 डा.एम.एस.खापर्डे, प्रोफेसर, डी.पी.एस.ई.ई.
3 डा.वी.पी. गुप्ता, रीडर, डी.पी.एस.ई.ई.
4 श्रीमती एस.भट्टाचार्य, रीडर, डी.पी.एस.ई.ई.
5 *अध्यक्ष*, डी.ई.एस.एम.
6 *अध्यक्ष*, डी.ई.एस.एस.एच.
7 *अध्यक्ष*, डी.वी.ई.
8 *अध्यक्ष*, डी.टी.ई.एस.ई.ई.एस.
9 *अध्यक्ष*, प्रकाशन विभाग
10 संयुक्त निदेशक, के.शै.प्रौ.सं. के प्रतिनिधि
11 श्री पी.एन.रूसिया, संयुक्त निदेशक, अनौपचारिक शिक्षा, भोपाल, म.प्र.
12 डा. अमित वर्मा, प्रोफेसर, बाल विकास विभाग, गृह विज्ञान संकाय, एम.एस. विश्वविद्यालय,बड़ौदा

क्षेत्रीय सेवाएँ विस्तार और समन्वय विभाग (डी.एफ.एस.ई.सी.)

1 अध्यक्ष, डी.एफ.एस.ई.सी. *संयोजक*
2 डा. एस.प्रसाद, रीडर, डी.एफ.एस.ई.सी.

3 *अध्यक्ष*, डी.टी.ई.एस.ई.ई.एस.
4 *अध्यक्ष*, डी.पी.एस.ई.ई.
5 *अध्यक्ष*, डी.ई.एस.एस.एच.
6 *अध्यक्ष*, डी.ई.एस.एम.
7 *अध्यक्ष*, नवोदय विद्यालय प्रकोष्ठ
8 संयुक्त निदेशक, के.शै.प्रौ.सं. के प्रतिनिधि
9 प्रो. विनय बाला मेहता, प्राचार्य,एस.एन.डी.टी. महाविद्यालय, पुणे
10 निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प.,भोपाल म.प्र.

कर्मशाला विभाग (डब्ल्यू.डी.)

1 अध्यक्ष, कर्मशाला विभाग *संयोजक*
2 डा.बी.एम.गुप्ता, रीडर, डब्ल्यू.डी.
3 *अध्यक्ष*, डी.ई.एस.एम.
4 *अध्यक्ष*, डी.पी.एस.ई.ई.
5 प्रो.एन.के.तिवारी, यांत्रिक इंजीनियरिंग विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, नई दिल्ली
6 श्री पी.के.भौमिक, विज्ञान केन्द्र, राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद,खैबर पास,इंस्टीट्यूशनल एरिया, दिल्ली

पुस्तकालय, प्रलेखन और सूचना विभाग

1 निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प.
2 संयुक्त निदेशक, परिषद
3 संयुक्त निदेशक, के.शै.प्रौ.सं.
4 डीन (शैक्षिक)
5 डीन (अनुसंधान)
6 डीन (समन्वय)
7 *अध्यक्ष*, डी.ई.एस.एम.
8 *अध्यक्ष*, डी.ई.एस.एस.एच.
9 *अध्यक्ष*, डी.पी.एस.ई.ई.
10 प्रोफेसर, प्रभारी, कार्यक्रम
11 श्री एस.पी.अग्रवाल निदेशक, प्रलेखन केंद्र(आई.सी.एस.एस.आर.), 35, फिरोजशाह रोड,नई दिल्ली
12 डा. टी.के. दत्ता, वैज्ञानिक प्रभारी, भारतीय राष्ट्रीय वैज्ञानिक प्रलेखन केंद्र 14, सत्संग बिहार,शहीद जीत सिंह सनसनवाल मार्ग, स्पेशल इंस्टीट्यूशन एरिया, नई दिल्ली
13 *अध्यक्ष*, जाकिर हुसैन शिक्षा केंद्र, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, न्यू महरौली रोड, नई दिल्ली
14 पुस्तकालयाध्यक्ष, एन.आई.ई.पी.ए.,रा.शै.अप्र.प. कैम्पस, नई दिल्ली
15 प्रोफशनल सीनियर, डी.एल.डी.आई.
16 *अध्यक्ष*, डी.एल.डी.आई. *संयोजक*

अंतर्राष्ट्रीय संबंध एकक के लिए विभागीय सलाहकार बोर्ड

1 निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प. *अध्यक्ष*
2 प्रोफेसर प्रभारी/*अध्यक्ष*, अंतर्राष्ट्रीय संबंध एकक *संयोजक*
3 अंतर्राष्ट्रीय संबंध एकक का एक संकाय *—सदस्य*
4 डा. सी.शेषाद्री, प्रोफेसर, क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय, मैसूर (कर्नाटक)
5 संयुक्त निदेशक, के.शै.प्रौ.सं., रा.शै.अ.प्र.प. के प्रतिनिधि
6 *अध्यक्ष*, डी.ई.एस.एस.एच., रा.शै.अ.प्र.प.
7 *अध्यक्ष*, डी.ई.एस.एम., रा.शै.अ.प्र.प.
8 *अध्यक्ष*, डी.टी.ई.एस.ई.ई.एम.,रा.शै.अ.प्र.प.
9 प्रो.पी.डी. कुलकर्णी प्रधानाचार्य, टी.टी.टी.आई.,चंडीगढ़
10 डा. (श्रीमती) आर.मट्टू, प्राचार्य, रा.शि.सं.,मौलाना आजाद रोड, श्रीनगर

महिला अध्ययन एकक के लिए विभागीय सलाहकार बोर्ड

1 निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प. *अध्यक्ष*
2 प्रोफेसर प्रभारी/*अध्यक्ष*, महिला अध्ययन एकक *संयोजक*
3 महिला अध्ययन एकक का इक संकाय *—सदस्य*
4 *अध्यक्ष*, डी.ई.एस.एस.एच., रा.शै.अ.प्र.प.
5 *अध्यक्ष*, डी.ई.एस.एम.,रा.शै.अ.प्र.प.
6 *अध्यक्ष*, डी.वी.ई.,रा.शै.अ.प्र.प.
7 *अध्यक्ष*, डी.टी.ई.एस.ई.ई.एस., रा.शै.अ.प्र.प.
8 *अध्यक्ष*, डी.पी.एस.ई.ई., रा.शै.अ.प्र.प.
9 संयुक्त निदेशक, के.शै.प्रौ.सं. के प्रतिनिधि
10 *अध्यक्ष*, डी.एल.डी.आई.,रा.शै.अ.प्र.प.
11 प्रो. (श्रीमती) लौतिका सरकार, एल 1/10 हौजखास, नई दिल्ली
12 प्रो. (श्रीमती) सुशीला कौशिक, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

तकनीकी समिति

1 संयुक्त निदेशक, के.शै.प्रौ.सं., रा.शै.अ.प्र.प., *अध्यक्ष*
2 *अध्यक्ष*, डी.ई.एस.एम., रा.शै.अ.प्र.प., *—सदस्य*
3 इंजीनियर/रीडर (इलैक्ट्रोनिक्स),के.शै.प्रौ.सं., रा.शै.अ.प्र.प. *सदस्य*
4 सी.ए.ओ./आई.एफ.एं., रा.शै.अ.प्र.प. *—सदस्य*
5 उप सचिव (ई.सी.),रा.शै.अ.प्र.प., *—सदस्य*
6 *अध्यक्ष*, कर्मशाला विभाग, रा.शै.अ.प्र.प. *—सदस्य*

1988-89

प्रसारण समिति

1 डा.ए.के. जलालुद्दीन, संयुक्त निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प. *अध्यक्ष*
2. डा.आर.पी. सिंह, *अध्यक्ष*, पत्रिका प्रकोष्ठ, उपाध्यक्ष और *संयोजक*
3 संयुक्त निदेशक,के.शै.प्रौ.सं. *—सदस्य*
4 डीन (शैक्षिक) *—सदस्य*
5 डीन (अनुसंधान) *—सदस्य*
6 डीन (समन्वय) *—सदस्य*
7 *अध्यक्ष*, कर्मशाला विभाग – *—सदस्य*
8 *अध्यक्ष*, प्रकाशन विभाग *—सदस्य*
9 प्रोफेसर प्रभारी, कार्यक्रम *—सदस्य*
10 *अध्यक्ष*, डी.ई.पी.सी.एंड जी. *—सदस्य*
11 *अध्यक्ष*, डी.ई.एस.एस.एच. *—सदस्य*
12 डा.जे.एन.जोशी, प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय,चंडीगढ़ *—सदस्य*
13 प्रो. आर.पी.पंचमुखी, निदेशक, भारतीय शिक्षा संस्थान, पुणे *सदस्य*
14 पुस्तकालयाध्यक्ष, नीपा, रा.शै.अ.प्र.प. परिसर, नई दिल्ली *सदस्य*
15 डा.एस.सी.विश्वास, निदेशक, केंद्रीय सचिवालय पुस्तकालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, शास्त्री भवन, नई दिल्ली *—सदस्य*
16 सी.पी.ओ.प्रकाशन विभाग *—सदस्य*
17 *अध्यक्ष*, डी.इल.डी.आई., रा.शै.अ.प्र.प. *—सदस्य*

शैक्षिक विस्तार और समन्वय समिति

1 डीन (समन्वय) *अध्यक्ष* और *संयोजक*
2 डीन (अनुसंधान) *—सदस्य*
3 डीन (शैक्षिक) *—सदस्य*
4 *अध्यक्ष*, डी.ई.पी.सी.एंड.जी. *—सदस्य*
5 *अध्यक्ष*, डी.पीएस.ई.ई. *—सदस्य*
6 *अध्यक्ष*, डी.टी.ई.एस.ई.ई.एस. *—सदस्य*
7 संयुक्त निदेशक,के.शै.प्रौ.सं. के प्रतिनिधि
8 प्राचार्य, क्षे.शि.म. अजमेर *—सदस्य*
9 प्राचार्य वही
9 प्राचार्य, क्षे.शि.म., भुवनेश्वर *—सदस्य*
10 प्राचार्य,क्षे.शि.म.,मैसूर *—सदस्य*
11 प्राचार्य,क्षे.शि.म.,भोपाल *—सदस्य*
12 डा.के.एस.खिची, क्षेस. (रा.शै.अ.प्र.प.),जयपुर *—सदस्य*
13 डा. डब्ल्यू.ए.एफ.हापर, क्षेस. (रा.शै.अ.प्र.प.),मद्रास *—सदस्य*
14 श्री एस.के.गुप्ता, क्षेस. (रा.शै.अ.प्र.प.), गोवाहाटी *—सदस्य*
15 डा.आर.पी. कथूरिया,क्षेस. (रा.शै.अ.प्र.प.),भोपाल, *—सदस्य*

16 शिक्षा निदेशक, उ.प्र. सरकार, 10 पार्क, रोड लखनऊ—*सदस्य*

17 लोक अनुदेश निदेशक,केरल सरकार,डी.पी.आई. कार्यालय, वाजुथाकोड, त्रिवेन्द्रम—*सदस्य*

18 निदेशक (प्राथमिक शिक्षा), नया सचिवालय,बिहार सरकार,पटना—सदस्य

19 शिक्षा निदेशक (प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा), महाराष्ट्र सरकार, सेन्ट्रल बिल्डिंग, पुणे —*सदस्य*

20 डा.एन. मल्ला रेड्डी, प्रोफेसर शिक्षा, उसमानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद, आंध्र प्रदेश —*सदस्य*

21 डा. सुरेश शुक्ल, प्रोफेसर, शिक्षा,जामिया मिलिया इसलामिया, दिल्ली——*सदस्य*

कला शिक्षा समिति

1 श्री मुल्कराज आनंद, 20 कफ परेड, बंबई—*अध्यक्ष*

2 श्री राजेंद्र नाथ, सी—5, प्रेस एन्क्लेव, नई दिल्ली —*सदस्य*

3 श्री जे. स्वामीनाथन, निदेशक, रूपांकर, ललित कला संग्रहालय, भारत भवन,भोपाल —*सदस्य*

4 प्रो. देबू चौधरी, जे—1852 चित्तरंजन पार्क, नई दिल्ली —*सदस्य*

5 श्री केशव मलिक, डी—5/90, कनाट सर्कस, नई दिल्ली —*सदस्य*

6 श्री एच.ए.गडे, 70—टी, सेन्ट्रल एवेन्यू, चैम्बूर, बंबई —*सदस्य*

7 श्रीमती मृणालिनी साराभाई, निदेशक, दर्पण अकादमी आफ परफॉर्मिंग आर्ट्स, अहमदाबाद —*सदस्य*

8 श्री बी.सन्याल, बी—15, निजामुद्दीन (पूर्वी), नई दिल्ली —*सदस्य*

9 श्रीमती सुमति मुटाटकर, सी—33 छात्र मार्ग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली —*सदस्य*

10 श्रीमती उमा शर्मा, 52, कम्यूनिटी सेंटर, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली —*सदस्य*

11 डा.एल.जी. सुमित्रा, प्रोफेसर और *अध्यक्ष*, रेडियो प्रभाग, के.शै.प्रौ.सं.,रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

परिशिष्ट ब

राज्यों में क्षेत्र सलाहकारों के कार्यालयों की स्थिति

		दूरभाष	
		कार्यालय	*निवास*
1	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अ.प्र.प.) 1-बी चंद्रा कालोनी, 'समर्पण फ्लेटों' के निकट लॉ कालेज के पीछे, अहमदाबाद 380 006	445992	445992
2	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अ.प्र.प.) 555-ई ममफोर्ड गंज इलाहाबाद 211 002	52212	4039
3	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अ.प्र.प्र.) 621, 80 फीट रोड 11 ब्लाक, राजाजी नगर बंगलौर 560 010	350006	
4	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अ.प्र.प.) एम.आई.जी. 161, सरस्वती नगर भोपाल 462 003	64465	76014
5	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अ.प्र.प.) होमी भाभा होस्टल आर.सी.ई.कैम्पस भुवनेश्वर 751 007	50516	52224
6	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अ.प्र.प.) पी-23 सी. आई.टी.रोड (स्कीम-55) कलकत्ता 700 014	245310	361510
7	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अ.प्र.प.) कोठी नं. 23, सेक्टर-8-ए चंडीगढ़ 160 008	26923	26923

8	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अ.प्र.प.) जू नारंगी रोड गुवाहाटी 781 031	87003	
9	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अ.प्र.प.) अवंती नगर, बशीर बाग हैदराबाद 500 029	235878	234895
10	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अ.प्र.प.) बी-55 यशपथ, तिलक नगर जयपुर 302 004	428264	459139
11	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अ.प्र.प.प.) नं. 64, 4 एवन्यू अशोक नगर मद्रास 600 083	428254	459139
12	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अ.प्र.प.) कंकरबाग पत्रकार नगर, पटना 800 016	53243	53243
13	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अ.प्र.प.) 128/2 कोथरुड, करवे रोड पुणे 411 029	447314	447314
14	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अ.प्र.प.) बोयस रोड, लायतुमुखड़ा शिलांग 783 003	26317	
15	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अ.प्र.प.) हिमरस बिल्डिंग, सर्कुलर रोड शिमला 171 001	4548	4548
16	क्षेत्र सलाहकार (रा.शै.अ.प्र.प.) 87, रावलपोरा, श्रीनगर 190 005	31490	31490
17	क्षेत्र सलाहकार, (रा.शै.अ.प्र.प.) एस.आई.ई.केम्पस, पो.आ.पूजापुरा, त्रिवेन्द्रम 695 012	64389	64948

परिशिष्ट स

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् वर्गवार संस्वीकृत स्टाफ की 1.4.89 की स्थिति (सारांश)

सूचना स्रोत	शैक्षिक			गैर-शैक्षिक (अनुसूचिवीय वर्ग)			गैर-शैक्षिक (तकनीकी)				कुल
	ग्रेड 'ए'	ग्रेड 'बी'	ग्रेड 'सी'	ग्रेड 'ए'	ग्रेड 'बी'	ग्रेड 'सी'	ग्रेड 'ए'	ग्रेड 'बी'	ग्रेड सी	ग्रेड डी	
परिषद् मुख्यालय	302	1	3	32	133	610	82	101	268	388	1,920
क्षे.शि.म.अजेमर	66	27	46	1	6	49	4	4	40	95	338
क्षे.शि.म.भोपाल	62	26	47	1	6	44	4	5	35	93	323
क्षे.शि.म.भुवनेश्वर	84	31	61	1	6	41	4	5	45	86	364
क्षे.शि.म. मैसूर	87	22	50	1	6	47	4	8	41	83	349
क्षे.सला. कार्यालय	35	—	—	—	—	52	—	—	18	36	141
योग	636	107	207	36	157	843	98	123	447	781	3,435

So Anastasi puts like this :

> " Essentially, Psychological test norms represent the test performance of the standardization sample. " 3.

Thus Norms are empirically established by determining what a representative group of persons actually do with the test. As the raw scores are meaningless, they are expressed in terms of Norms and these are called derivativesor transformed scores. For comparison,Norms are suitable quantities. For example, it is difficult to compare $\frac{5}{7}$ and $\frac{7}{15}$, but it is easy to compare $\frac{75}{105}$ and $\frac{49}{105}$. So $\frac{75}{105}$ and $\frac{49}{105}$ are derived scores. Such derived scores serve the dual purpose as Anastasi puts :

> " Firstly they indicate the individual's relative standing in the normative sample and thus permit an evaluation of his performance in reference to other persons. Secondly they provide comparable measures which make possible a direct comparison of the individual's performance on different tests ". 4.

So raw scores are numerical description of an individual's performance on that test, but derived scores are standardized or normalized scores are capable of expressing a comprehensive view about a particular testee. The transformed scores are expressed in three types of scales. They are Age norms or Grade norms, Percentile norms and Standard norms or Standard scores.

<u>Age norm</u> :-

The standard of achievement for a particular age is known as Age norm. It indicates a performance, typical of a certain chronological age. This is interpreted as mental age. The mental age means the norm of a particular age. Suppose, a test can be successfully

---

3. A. Anastasi, <u>Psychological Testing</u>, ... P. 72.
4. Ibid. ... ... P. 73.

performed by the students of chronological age seven years, then seven years is the age norm. Age norms are obtained by giving a test to representative groups of pupils at various age levels and computing the central tendencies for the test. There are other age norms such as educational age, reading age etc. The grade norm is the achievement at a particular level or grade.

Percentile norm :-

" A percentile rank is a description of a pupil's position in a typical age or grade group in terms of percentage of pupils who fall below that score ". 5. .... says Ross.

For example, a child is in 25th percentile, which means that the child is in a position below which 25 per cent of the sample group lies. The 50th percentile means the exact median. These percentiles are written as P_x where 'P' is the percentile and 'x' is any rank. Thus P_{10} means the tenth percentile rank. P_{50} is the middle-most score of the distribution. P_{60} and any value more than P_{50} is considered as above average and P_{40} or any value less than P_{50} is considered as below average. So P_{100} is the extremely high and P_0 is the extremely low rank value. Therefore percentiles are transformed scores expressed in terms of percentage of person below that particular score.

Since, it was found out that there was no significant difference between the Basic and Traditional students it was desirable to consider both the groups as one group and unified percentile ranks were computed as shown in Table - 13.

Standard score :-

Since the percentile norms suffer from the unique disadvantage that they inevitably result in unequal units along the scale of

5. C. C. Ross & J. C. Stanley, Measurement in Today's Schools, ... P. 288.

performance on the test, another score, called the standard score is used. Standard scores are scores which determine the relative position of each raw score from the mean with respect to standard deviation. This is known as 'Z' score and is written as $\frac{x}{\sigma}$, where x = X - M, means the deviation of each score from the mean and 'σ' is the S.D.

For the present study the raw scores were first transformed to standard scores according to the above formula and then the standard score were transformed to standard scale according to the Army General Classification Test with M = 500 and σ = 100 for both the groups and the significance of difference according to the standard error method was calculated and was found out that there is no significant difference between the two groups. C.R. for mean = ·44 for σ = ·96.

TABLE - 13.

Class-interval.	f.	Cumulative f.	Percentiles.
46 - 48	1	200	P_{100} = 48.50
43 - 45	3	199	P_{90} = 35.78
40 - 42	3	196	P_{80} = 33.14
37 - 39	8	193	P_{75} = 32.23
34 - 36	21	185	P_{70} = 31.32
31 - 33	33	164	P_{60} = 29.61
28 - 30	37	131	P_{50} = 27.98
25 - 27	25	94	P_{40} = 25.82
22 - 24	24	69	P_{30} = 23.39
19 - 21	21	45	P_{25} = 22.12
16 - 18	18	24	P_{20} = 21.16
13 - 15	3	6	P_{10} = 17.83
10 - 12	2	3	P_0 = 6.5
7 - 9	1	1	
	N = 200		

SMOOTHED FREQUENCY CURVE
N=200 MEAN=27.35.
S.D.= 6.94.
NORMAL CURVE.
SMOOTHED FREQUENCY CURVE.
FREQUENCY
40
36
32
28
24
20
16
12
8
4
6.5
9.5
12.5
15.5
18.5
21.5
24.5
M
30.5
33.5
36.5
39.5
42.5
45.5
48.5
-3σ
-2.5σ
-2σ
-1.5σ
-1σ
-.5σ
+.5σ
+1σ
+1.5σ
+2σ
+2.5σ
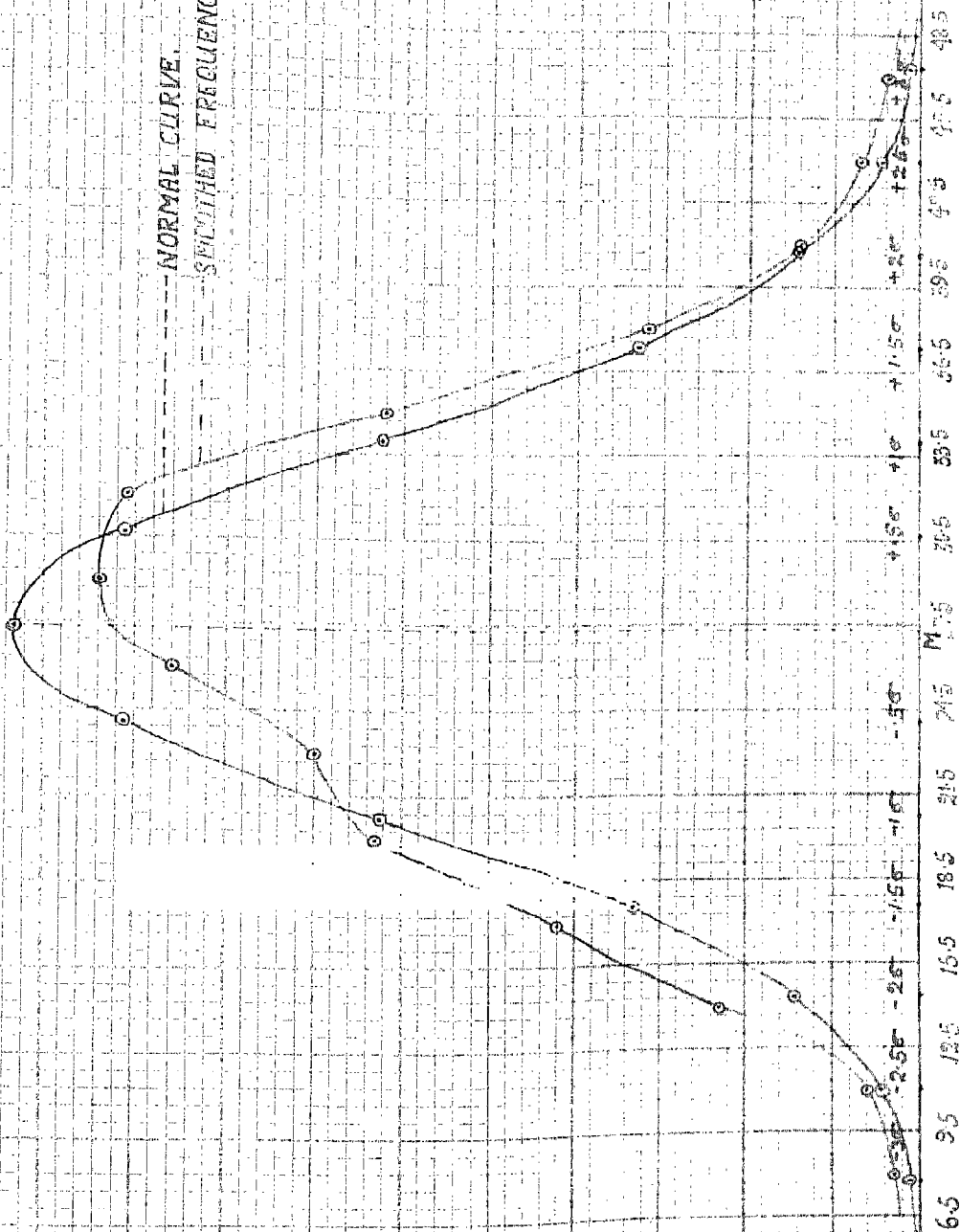
TABLE - 14.

Percentile norms (rounded up to first decimal place).

P_{10}	P_{20}	P_{25}	P_{30}	P_{40}	P_{50}	P_{60}	P_{70}	P_{75}	P_{80}	P_{90}
17.8	21.2	22.1	23.4	25.8	28.0	29.6	31.3	32.2	33.1	35.8

The above 200 students can be categorized into five groups as given below -

Groups.	Percentage.			Nomenclature.
A	Top group	...	10 %	Very superior.
B	Next group	...	20 %	Superior.
C	Middle group	...	40 %	Average.
D	Next group	...	20 %	Inferior.
E	Lowest group	...	10 %	Very inferior.

When the combined group is divided according to the above suggestion the points of demarcation in percentiles run as follows :-

Particulars	A 10 %	B 20 %	C 40 %	D 20 %	E 10 %
Units in percentiles.	P_{90} and above.	P_{70} - P_{90}	P_{30} - P_{70}	P_{10} - P_{30}	P_{10} below

The above division though sound is arbitrary. So this can be divided into groups according to the suggestion given by Garrett. In this case the scores are categorized in Standard Deviation limits.

Particulars.	Very superior or A.	Superior or B.	Average or C.	Inferior or D.	Very inferior or E.
Limits in S. D.	$+ 1.8\sigma$ to $+ 3\sigma$	$+.6\sigma$ to $+1.8\sigma$	$-.6\sigma$ to $+.6\sigma$	-1.8σ to $-.6\sigma$	$- 3\sigma$ to $- 1.8\sigma$
Limits with present score.	36 - 46	31 - 36	23 - 31	18 - 23	8 - 18

To find any percentile rank :-

If we want to find out the position of an individual in the scale of percentile rank who secured 30 or 60 we follow the following procedure.

From the Table - 13 it is observed that $P_{70} = 31.3$ (rounded up to first decimal place) and $P_{60} = 29.6$. Therefore an individual who secured 30 lies between P_{60} and P_{70} . The exact position is found out by adding the increase of value of the particular testee to the 60th percentile. Let the percentile in question be X .

$$\text{Then} \quad X = 60 + \frac{30 - P_{60}}{P_{70} - P_{60}} = 60 + \frac{30 - 29.6}{31.3 - 29.6} = 60.23$$

So the individual who secured 30 is at the 60.23th percentile. Similarly the percentile rank of the individual can be determined who secured 60 or any value.

A smoothed frequency curve along with the theoretical normal curve for the combined sample is drawn on page 87(A).

CHAPTER - VIII.

SUMMARY AND RECOMMENDATIONS.

CHAPTER - VIII.

SUMMARY AND RECOMMENDATIONS.

The present study was concerned with the construction of a test in General Science to compare the ability of the Post-Basic and Traditional High school seniors to apply the facts and principles of science in day-today life. For this purpose the whole test was divided into four sections and each section of the test was designed to measure the behaviour pattern of the pupils indicating the objective as stated before-hand. These separate measures when added together give a total measure of the ability to apply the facts and principles of science in day-today life.

An attempt was made to specify the particular behaviour as related to the objective and the behaviour patterns were specially defined with reference to their significance in the field of specified objective. Statements, expressing the behaviour patterns were checked by the judges and the questionnaire used was designated to one point scale. The questionnaire was administered over a sample population of two hundred students in nine institutions in the State of Orissa of which two were Basic institutions with a strength of thirty.

After analysing the test result by the process of Item-Analysis, retained items were re-scored and statistical techniques were used to determine the reliability and the validity of the test and to compare the both groups on the basis of their total score of the four sections and on the basis of their scores on separate sections of the test. For comparison special care was taken to apply standard-

error method and analysis of variance method. After this,various inter-correlations were computed. The following important findings were derived from the statistical calculations.

1. The difference in mean scores on the basis of the total response for both the groups was not statistically significant. The difference in mean scores on each behavioural aspect were statistically not significant, which shows that both the groups have the similar, though not identically equal, competency in applying the knowledge of science in day-today situations.
2. From the computation of the overlapping effect, it was found out that almost fifty per cent of the Post-Basic students reach or surpass the median value of the Traditional students.
3. The difference in standard deviations on the basis of total score and on the basis of scores on individual behavioural aspect was not significant which advocates that both the groups of testees are equally distributed around the mean and have similar capability of tackling unfamiliar day-today situations.
4. Both the groups compared on the basis of knowledge in responding the questions scientifically or by mere guessing showed that when 17 % of the Traditional students guessed, 27 % of the Basic students guessed.This shows that most of the students from both the groups know the subject matter of General Science.

Since there was no significant difference between the performance of the two groups,the following findings were found out, treating both the groups as one group consisting of two hundred students. The reliability, the validity and the correlations were computed on the basis of the combined sample.

1. The reliability of the test was determined by split-half method and the co-efficient of reliability was found to be +.80 which means that the test is highly inter-consistent. This indicates that the test is dependable one.

2. The validity of the test was determined by comparing the result, obtained by the students with the test, with an external criteria, that is the average mark in General Science of the last Annual and the Pre-test Examinations of the same individuals. The co-efficient of correlation was calculated to be +.71 which is high. This means that the test prepared by the author is highly valid on the assumption that the tests prepared by the class room teachers are to some extent valid. As there is no standardized test for this purpose, it is usual to consider the teacher-made tests to be valid.

3. The co-efficients of correlation between the total score and the scores on the four sections of the test were calculated and found to be +.65, +.68, +.67 and +.76 respectively. This shows that each section of the test measured to a large extent, the same thing as the whole test measures.

4. The inter-correlations between the separate sections of the test, each with the other was computed and the co-efficients of correlation of the first with the second, the third and the fourth sections were respectively +.32, +.29 and +.34 . The coefficients of correlation of the second with the third and the fourth were respectively +.30 and +.35 . The co-efficient of correlation of the third with the fourth was +.41 . This indicates that the questions, prepared for the different behaviour study are

identifiably specified for their peculiar characteristic. This result shows that the ability of the testees are internally related, since the co-rrelation co-efficients were positive.

5. From the separate group population and the combined population, calculation of the percentile norms were made and the samples were compared with the theoretical normal distribution and was found that the skewness and kurtosis were not significant. This shows that the population, chosen for the study was almost normal.

Recommendations :-

On the basis of this study, the following recommendations are made.

1. The test prepared by the author was found to be highly reliable and valid. Therefore it is recommended that the test can be safely used whenever the question of testing the applicability of General Science comes.
2. The test is standardized for the high school seniors and can be used for them.
3. Since there is no significant difference between the ability of the students of both the types of schools to apply the knowledge of General Science in life situations, both the types of schools may be merged into one with an introduction of very essential features of Basic Education in Traditional schools.

Implications for further research :-

In the light of the present study further research may be taken in the following areas.

1. In the light of this study, similar tests may be constructed in all other school subjects to compare the ability of the two groups.

2. Tests may be constructed including all aspects of education to have a comprehensive comparison between the two groups.
3. Tests may be constructed to compare the senior Basic school students and the junior high school students.
4. Comparative investigation can be made for determining the efficacy of the teaching methods in two types of schools on particular subjects.
5. Situations can be prepared to compare the skills in tackling the tools and handling the situations of both the groups of students, which means, comparing the Basic and the Traditional students by performance test.
6. Tests may be constructed to compare the socializing and moral habits of both the Basic and Traditional students.
7. Situational tests may be constructed to compare the verbal practicability of both the groups.

APPENDICES.

ORIGINAL TEST IN ORIYA.

୧୬) ତୁମ ବାପାଙ୍କୁ ଚାଳିଶ ପୂରିଲାଣି । ଆଖିରେ ଭଲ ଦେଖା ଯାଉ ନାହିଁ । କେଉଁ କାଚର ଚଷମା ତାଙ୍କୁ ଉପଯୋ
କ) ସମୋତ୍ତଳ ଅବତଳର ଚଷମା, ଗ) ମଧ୍ୟ ନିମ୍ନ ଦର୍ପଣ କାଚର ଚଷମା,
ଖ) ମଧ୍ୟ ନିମ୍ନ ଅବତଳର ଚଷମା, ଘ) ସମତଳ କାଚ ଚଷମା ।

୧୭) ଜଣେ ଡାକ୍ତର ତୁମ ଘରେ ଜ୍ୱର ଦେଖୁଛନ୍ତି । ସେ ଜ୍ୱରରେ ପାଣି ମିଶାଉଛନ୍ତି କି ନାହିଁ କେଉଁ ଯନ୍ତ୍ର ସାହାଯ୍ୟରେ ବାହାର କରିବ ?
କ) ହାଇଡ୍ରୋମିଟର, ଖ) ଲେକ୍ଟୋମିଟର, ଗ) ସ୍ପେସିଫିକ୍ ଗ୍ରାଭିଟି ବଟଲ, ଘ) ବେଲ୍ୟାନ୍ସ ଚାଆରେଙ୍ଗ

୧୮ ବଡ଼ ଶୁଖିଲା କାଠଗଣ୍ଡି ତୁମେ ଘରକୁ ନେବ । ନେବା ପାଇଁ ଦୁଇ ପ୍ରକାର ଉପାୟ ଅଛି । କେଉଁ ଉପାୟରେ ନେଲେ ସର୍ବ ନିମ୍ନ ପରିଶ୍ରମ ପଡ଼ିବ ?
କ) ନଦୀ ପାଣିରେ ଭସାଇ ନିଆଯାଇ ପାରେ, ଗ) ମାଟି ଉପରେ ଗଡ଼ାଇ ନିଆଯାଇପାରେ ।
ଖ) ସମୁଦ୍ର ପାଣିରେ ଭସାଇ ନିଆଯାଇ ପାରେ, ଘ) କାନ୍ଧରେ ବୋହି ନିଆଯାଇପାରେ ।

୨୦ ତୁମେ ୧୮ ଭରିର ଗୋଟିଏ ସୁନା ହାର ତିଆରି କରାଇଲ । ସୁନା ପ୍ରକୃତି ଓ ଖାଦ ମିଶା ଜାଣିବା ପାଇଁ ତାହାକୁ ପାଣିରେ ଓଜନ କଲାରୁ ୧୮ ଭରି ହେଲା । ତାହା ହେଲେ :-
କ) ହାରରେ କିଛି ଖାଦ ଅଛି, ଗ) ଯେଉଁ ଖାଦ ଅଛି ତାହା ସୁନାଠାରୁ ଭାରୀ,
ଖ) ଯେଉଁ ଖାଦ ଅଛି ତାହା ସୁନାଠାରୁ ହାଲୁକା, ଘ) ହାରଟି ଶୁଦ୍ଧ ସୁନାରେ ତିଆରି ।

୨୧) ତୁମ ଘରେ ଇଲେକ୍ଟ୍ରିକ୍ (B) ମିଟରରେ ପୋର୍ସିଲିନ୍ ତିଆରି କି (key) ଦିଆଯାଇଥାଏ । କାରଣ:-
କ) ତଳେ ପଡ଼ିଗଲେ ତାହା ଭାଙ୍ଗିଯାଏ ନାହିଁ, ଖ)
ଖ) ସେଥିରେ ଆଦୌ କଳଙ୍କି ଲାଗେ ନାହିଁ,
ଗ) ତାର ଦେହରୁ ବୈଦ୍ୟୁତିକ ଶକ୍ତି କି (key) ଭିତରେ ଦେଇ ଯାଇ ନେଇ ପାରେ ନାହିଁ, ନାହିଁ,
ଘ) ସେଗୁଡ଼ିକ ବିଦ୍ୟୁତ ଅପରିବାହୀ, ତେଣୁ ତା ଭିତରେ ଦେଇ ବିଦ୍ୟୁତ ଆସେ ନାହିଁ । ତେଣୁ ବିପଦରୁ ଆମକୁ

୨୨) ପାଣି ଯଦି ଲୁଣିଆ ହୁଏ ସେଥିରେ ଲୁଗା ସଫା ହେବା ପାଇଁ ବହୁତ ବେଶି ସାବୁନ ଲାଗେ । କାରଣ:-
କ) ସମୁଦ୍ରଜଳର ଲବଣାଂଶ ସାବୁନ ସହିତ ମିଶିଲାରୁ ସାବୁନର ପରିଷ୍କାର କରିବା ଶକ୍ତି କମିଯାଏ,
ଖ) ଜଳର ଲବଣ ଓ ଲୁଗାର ମଇଳା ମଧ୍ୟରେ ରାସାୟନିକ କ୍ରିୟା ହୋଇ ମଇଳା ଶକ୍ତ ହୋଇଯାଏ,
ଗ) ବହୁତ ସାବୁନ ଲୁଣି ପାଣିକୁ ମଧୁର କରିପାରେ ଶୁଦ୍ଧ ହୁଏ ଓ ଲୁଗା ପାଇଁ ଅଳ୍ପ ସାବୁନ ହେବ,
ଘ) ସାବୁନ ଓ ମଇଳାର ରାସାୟନିକ କ୍ରିୟାକୁ ଲବଣାଂଶ କମାଇ ଦିଏ ।

୨୩) ଘରେ ବ୍ୟବହୃତ ହେଉଥିବା ପ୍ରେସର କୁକରରେ ଶୀଘ୍ର ଖାଦ୍ୟ ପଦାର୍ଥ ସିଝିଯାଏ । କାରଣ:-
କ) ଏହାର ଦେହଟି ଷ୍ଟିଲ୍‌ରେ ତିଆରି । ତେଣୁ ଶୀଘ୍ର ଗରମ ହୁଏ,
ଖ) ଘୋଡ଼ଣୀ ଜୋରରେ ବନ୍ଦ ଥିବାରୁ ଏହାର ଭିତରେ ଚାପ ବଢ଼ି ଯାଏ । ତେଣୁ ତାପ ବଢ଼ିଯାଏ,
ଗ) ବାହାରର ବାୟୁ କୁକର ଭିତରକୁ ଯାଇ ନ ପାରୁଥିବାରୁ ବାଷ୍ପକୁ ଥଣ୍ଡା କରି ପାରେ ନାହିଁ,
ଘ) କୁକର ମଧ୍ୟରେ ପ୍ରସ୍ତୁତ ଜଳୀୟ ବାଷ୍ପ ଚାପ କମାଇ ଦିଏ, କିନ୍ତୁ ତାପ ବୃଦ୍ଧି କରେ । ତେଣୁ ଶୀଘ୍ର ସିଝିଯା

୨୪ ପାଣି ଟାଙ୍କିକୁ ସବୁବେଳେ କୋଠାଘର ଉପରେ ରଖାଯାଏ, କାରଣ:-
କ) ତଳେ ରଖିଲେ କେତେବେଳେ ବି ପାଣି ଲୋକେ ଚୋରି କରି ନେବେ,
ଖ) ତଳେ ରଖିଲେ ଯିବା ଆସିବାରେ ଅସୁବିଧା ହେବ ଏବଂ ବୁଲାରେ ଅଧିକ ସ୍ଥାନ ଅଧିକାର କରିବ,
ଗ) ସାନ ସାନ ପିଲାମାନେ ଟାଙ୍କି ଭାଙ୍ଗି ଦେବେ, କିମ୍ବା ପାଣି ଭିତରେ ଅପରିଷ୍କାର ପକାଇବେ,
ଘ) ପାଣି ଉପରେ ରଖିଲେ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ଘର ମାନଙ୍କୁ ସହଜରେ ମିଳିପାରିବ ।

୩୩) ଜଣେ ଦୋକାନୀର ତରାଜୁର ଗୋଟିଏ ପାଖ ଦଣ୍ଡ ଅନ୍ୟ ପାଖ ଦଣ୍ଡ ଠାରୁ ବଡ଼ । ତୁମେ ଜିନିଷ କିଣିଲା ବେଳେ ଉଭୟ ପାଖରେ ଥୁଆ ଥୁଆ ବସ୍ତୁ ଓଜନ କରି ଆଣିବ । କାରଣ:-
କ) ତୁମର ଲାଭ ହେବ ଓ ଦୋକାନୀର କ୍ଷତି ହେବ, ଖ) ଦୋକାନୀ ଠକି ନଥିବାରୁ ଓଜନ ଠିକ୍ ପରିମାଣ ହେବ .
ଗ) ତୁମେ ଅନ୍ତତଃ ଯେତିକି ଆଣିବା କଥା ସେତିକି ଆଣିବ, ଘ) ଏହାଦ୍ୱାରା ଦୋକାନୀର କୌଣସି ଲାଭ ବା କ୍ଷତି ହେବନାହିଁ
୩୪) ଚୁଲିରେ ଧୂଆଁ ହେଲେ ନଳୀରେ ଫୁଙ୍କି ଦିଆଯାଏ କାହିଁକି ?
କ) ଚୁଲି ଭିତରୁ ଧୂଆଁ ବାହାରକୁ ବାହାର କରିଦେବା ପାଇଁ,
ଖ) ଅଧାପୋଡ଼ା କାଠରୁ କଳା ଗୁଡ଼ିକ ଫୁଙ୍କି ସଫାକରି ଦେବା ପାଇଁ,
ଗ) ବାୟୁମଣ୍ଡଳରୁ ବାୟୁ ଚୁଲି ଭିତରକୁ ଅଧିକ ପରିମାଣରେ ଦେବା ପାଇଁ,
ଘ) ଜଳିବାରେ ସାହାଯ୍ୟ କରିବା ପାଇଁ ଦେହ ଭିତରୁ କାର୍ବନ ବାୟୁ ଦେବା ପାଇଁ ।
୩୫) ସୂର୍ଯ୍ୟ କିରଣରୁ ଆସି ଘରେ ପ୍ରବେଶ କଲେ ଅନ୍ଧାର ଦେଖାଯାଏ କାହିଁକି ?
କ) ସୂର୍ଯ୍ୟ କିରଣରେ ଆଖି ଦୁର୍ବଳ ହୋଇଯାଇଥାଏ,
ଖ) ଚକ୍ଷୁ ଭିତରେ ଥିବା ଦର୍ଶନ ସ୍ନାୟୁ ଦୁର୍ବଳ ହୋଇ ଯାଇଥାଏ,
ଗ) ଚକ୍ଷୁ ଭିତରେ ଥିବା Rods ଓ Cones ଗୁଡ଼ିକ ନଷ୍ଟ ହୋଇଯାଇଥାଏ,
ଘ) ଆଖି ଭିତରେ କିରଣ ଦ୍ୱାରା ଭର୍ତ୍ତି ହୋଇଥାଏ । ତେଣୁ ବସ୍ତୁରୁ ଆଲୋକ ଯାଇ ରେଟିନାରୁ ପ୍ରତିଫଳିତ ହୋଇପାରେ ନାହିଁ
୩୬) ଯେତେବେଳେ ଦୂରବସ୍ତୁ ଦେଖାଯାଏ, କିନ୍ତୁ ନିକଟ ବସ୍ତୁ ଦେଖାଯାଏ ନାହିଁ, ଉତ୍ତଳ ଯବକାଚ ଚଷମା ପିନ୍ଧାଯାଏ କାହିଁକି ? କ) ଏହି ଦୋଷରେ ଚକ୍ଷୁଗୋଲକ ଛୋଟ ହୁଏ, ଉତ୍ତଳ ଯବକାଚ ଦ୍ୱାରା ରଶ୍ମି ଏକତ୍ରିତ ହୋଇ ରେଟିନାରେ ପଡ଼େ
ଖ) ଯବକାଚ ଆଲୋକକୁ ଚକ୍ଷୁ ଯବକାଚରେ ଏକ ବିନ୍ଦୁରେ ପକାଏ, ତେଣୁ ଦେଖାଯାଏ,
ଗ) ବସ୍ତୁ ପାଖରୁ ଆସୁଥିବା ଆଲୋକ ରଶ୍ମି ଏହି ଯବକାଚରୁ ଭିନ୍ନ ଭିନ୍ନ ବିନ୍ଦୁରେ ପଡ଼େ,
ଘ) ବସ୍ତୁରୁ ଆସୁଥିବା ଆଲୋକ ରଶ୍ମି ଏପରି ସଙ୍କୁଚିତ ହୁଏ ଯେ, ଏହା ଚକ୍ଷୁକାଚ ଦେଇ ଯାଇ ରେଟିନାରେ ପ
୩୭) ଅନ୍ଧାର ଘରେ କୌଣସି ବସ୍ତୁ ଦେଖିହୁଏ ନାହିଁ । କାରଣ:-
କ) ଅନ୍ଧାରରେ Rods ଏବଂ Cones ଗୁଡ଼ିକ ନିଜ ନିଜର କାମ ବନ୍ଦ କରନ୍ତି,
ଖ) ବସ୍ତୁଗୁଡ଼ିକ ଆଲୋକ ହୀନ ହୋଇଥିବାରୁ ବସ୍ତୁମାନଙ୍କରୁ ଆଲୋକ ଆସେ ନାହିଁ,
ଗ) ବସ୍ତୁଗୁଡ଼ିକରୁ ଆଲୋକ ଆସି ଆଖିରେ ପଡ଼େ ନାହିଁ,
ଘ) ଅନ୍ଧାରରେ ଲେନସ୍ ମଧ୍ୟ ଦେଇ ଆଲୋକ ଆଖି ଭିତରକୁ ଯାଇପାରେ ନାହିଁ,
୩୮) ମଣିଷ କାନରେ ପୂଜ ହେଲେ ଆଉ ଶୁଣାଯାଏ ନାହିଁ, କାହିଁକି ?
କ) ମଣିଷ କାନରେ ଥିବା ଶ୍ରୁତି ସ୍ନାୟୁ ନଷ୍ଟ ହୋଇଥାଏ, ଗ) ମଣିଷ କାନରେ ଆଉ ବାୟୁ ରହେ ନାହିଁ,
ଖ) ମଣିଷ କାନର ହାଡ଼ ନଷ୍ଟ ହୋଇଯାଏ, ଘ) ପୂଜରେ ପୂର୍ଣ୍ଣ ଥିବାରୁ ଶବ୍ଦ ତରଙ୍ଗ ଗତି କରିପାରେ ନାହିଁ,
୩୯) ଦେହରେ ହାଡ଼ ଦୁର୍ବଳ ହେଲେ ପ୍ଲାଷ୍ଟର କରି ଦିଆଯାଏ କାହିଁକି ?
କ) ପ୍ଲାଷ୍ଟରର କାଲସିୟମ୍ ଉକ୍ତ ସ୍ଥାନର ହାଡ଼ ଗଠନ କରେ,
ଖ) ଏହା ହାଡ଼ ଦୁଇଟିକୁ ସିଧା କରି ଧରି ରଖେ,
ଗ) ଏହା ହାଡ଼ ଭିତରର ମଜ୍ଜାକୁ ଖାଦ୍ୟ ଯୋଗାଏ,
ଘ) ଏହା ଦୁଇଟି ଭଙ୍ଗା ହାଡ଼କୁ ବନ୍ଧନ କରେ ଓ ରୋଗରେ ଯୋଡ଼ି ହୁଏ,
୪୦) ରୋଷେଇ ଘରର ଚୁଲିମା ଉପରେ ଚିମନୀ କରିବା ଭଲ । କାରଣ:-
କ) ବିଶେଷତଃ କୋଇଲା ଜାଳିଲା ବେଳେ ଚୁଲିରୁ ଧୂଆଁ ବାହାରକୁ ବାହାର କରିବା ପାଇଁ,
ଖ) ଚିମନୀ ଥିଲେ ଚତୁର୍ଦ୍ଦିଗର ବାୟୁ ଚୁଲିକୁ ଯାଇ ପାରେ ନାହିଁ,
ଗ) ଚୁଲି ଭିତରର ଉତ୍ତପ୍ତ ବାୟୁ ବାହାରକୁ ଯାଏ ଓ ବାହାରର ବାୟୁ ଚୁଲି ମୁହଁ ବାଟେ ଆସି ଜଳାଏ,
ଘ) ବାହାରର ବାୟୁ ଚିମନୀ ବାଟେ ଆସି ଚୁଲି ଜଳିବାରେ ସାହାଯ୍ୟ କରେ ।

୫୧) ମାଟି କଳସୀରେ ଗ୍ରୀଷ୍ମ ଦିନରେ ପାଣି ଥଣ୍ଡା ରହେ । ଯଦି ସେହି କଳସୀରେ ପାଣି ରଖି ତା ଉପରେ ଉତ୍ତମ ଭାବରେ ଓଦା ମାଟିର ଲେପ ଦିଆଯାଏ, କଅଣ ହେବ ?

କ) ପାଣି ଅଧିକ ଥଣ୍ଡା ରହିବ, ଗ) ପାଣିର କିଛି ପରିବର୍ତ୍ତନ ହେବ ନାହିଁ.

ଖ) ପାଣି ଝଟକାରେ ବରଫ ହୋଇଯିବ, ଘ) ପାଣି ଗରମ ହେବ ।

୫୨) ସାନ ଓ ବଡ଼ ଦୁଇଟି କାର୍ଡବୋର୍ଡ ବାକ୍ସ ତିଆରି କରି ପ୍ରତ୍ୟେକର ପାର୍ଶ୍ୱରୁ କାଟି ଦେଇକରି । ସାନ ବାକ୍ସ ମଧ୍ୟରେ ଗୋଟିଏ ପାତ୍ରରେ ପାଣି ଓ ଅପର ପାତ୍ରରେ କିଛି ଗଜା ଡିମ୍ବ ରଖ, ଇଲେକ୍‌ଟ୍ରିକ୍ ବଲ୍‌ବ, ବାକି ପଟକୁ ବଡ଼ ବାକ୍ସ ଭିତରେ ରଖ ଓ ଦୁଇ ବାକ୍ସ ମଧ୍ୟ ସ୍ଥାନକୁ ଛିଣ୍ଡା କାଗଜ ଭର୍ତ୍ତି କର । ୨୧ ଦିନ ରଖିଲେ କଅଣ ହେ

କ) ଡିମ୍ବରୁ ଶାବକ ବାହାରିବେ, ଗ) ଡିମ୍ବ ଗୁଡ଼ିକ ଅପରିବର୍ତ୍ତିତ ରହିବ,

ଖ) ଡିମ୍ବ ଗୁଡ଼ିକ ପଚିଯିବ, ଘ) ଡିମ୍ବରୁ ମୃତ ଶାବକ ବାହାରିବେ ।

୫୩) ପୃଥିବୀର ଯଦି ଦୁଇଟି ଚନ୍ଦ୍ର ଥାଆନ୍ତା ଏବଂ ସେମାନେ ସମାନ ବେଗରେ ପରସ୍ପର ସମକୋଣରେ ଏକ କକ୍ଷରେ ବୁଲୁଥାନ୍ତେ, ତେବେହେଲେ ଆମ ତିଥି ଓ ସମୁଦ୍ରରେ କଅଣ ପରିବର୍ତ୍ତନ ଲକ୍ଷ୍ୟ କରନ୍ତୁ ?

କ) ସମୁଦ୍ରରେ ପ୍ରତି ପୂର୍ଣ୍ଣିମାରେ ପ୍ରବଳ ଜୁଆର ହୁଅନ୍ତା, ଗ) ପ୍ରତି ୧୫ ଦିନକୁ ଗୋଟିଏ ଅମାବାସ୍ୟା ପଡ଼ନ୍ତା,

ଖ) " ପ୍ରତି ଅମାବାସ୍ୟାରେ ପ୍ରବଳ ଜୁଆର ହୁଅନ୍ତା, ଘ) ସମୁଦ୍ରର କୌଣସି ସମସ୍ୟା ରହନ୍ତା ନାହିଁ ।

୫୪) ଗୋଟିଏ ନିବୁଜ କାଚଘର ଭିତରେ ଥିଏଟର ହେଉଥିଲେ ତୁମେ ବାହାରେ ଥାଇ କଅଣ ଅନୁଭବ କରିବ ?

କ) କେବଳ ନୃତ୍ୟ ଦେଖିବ କିନ୍ତୁ ଗୀତ ଶୁଣି ପାରିବ ନାହିଁ,

ଖ) ଭଲ ନୃତ୍ୟ ଦେଖିବ ଓ ଭଲ ଗୀତ ଶୁଣିବ, ଗ) ଜଣେ ନାଚିଲେ ତିନିଜଣ ନାଚିବାର ଦେଖିବ

ଘ) ନୃତ୍ୟ ଦେଖି ପାରିବ ନାହିଁ କିନ୍ତୁ ଗୀତ ଶୁଣି ପାରିବ ।

୫୫) ଦୋଳ ପୂର୍ଣ୍ଣିମା ଦିନ ଦେହରେ ଅବିର ବୋଳିବାର କାରଣ ବୈଜ୍ଞାନିକ ଦୃଷ୍ଟିରୁ କଅଣ ହୋଇପାରେ

କ) କେବଳ ଆନନ୍ଦ ପାଇବା ପାଇଁ, ଗ) ବସନ୍ତ ରୋଗରୁ ରକ୍ଷା ପାଇବା ପାଇଁ

ଖ) ଦୀର୍ଘଜୀବୀ ହେବା ପାଇଁ, ଘ) କଲେରାରୁ ରକ୍ଷା ପାଇବା ପାଇଁ ।

୫୬) ପୃଥିବୀ ଯଦି ପଶ୍ଚିମରୁ ପୂର୍ବକୁ ନ ବୁଲି ଉତ୍ତରରୁ ଦକ୍ଷିଣକୁ ବୁଲନ୍ତା ତେବେହେଲେ କଅଣ ହୁଅ

କ) ଭୂଗୋଳରେ ଉତ୍ତର ଓ ଦକ୍ଷିଣ ମେରୁ ନ ପଡ଼ି ପୂର୍ବ ଓ ପଶ୍ଚିମ ମେରୁ ପଡ଼ନ୍ତା,

ଖ) ଯେତିକି ସୂର୍ଯ୍ୟ କିରଣ ପାଉଛୁ ତା ଠାରୁ ଅଧିକ ପାଆନ୍ତୁ,

ଗ) ପୃଥିବୀ ପୃଷ୍ଠରେ ଶୀତ ଓ ଗ୍ରୀଷ୍ମର ପାର୍ଥକ୍ୟ ରହନ୍ତା ନାହିଁ, ଘ) ଦିନ ଓ ରାତିର ପରିମାଣ ୨୨ ଘ: ହୁଅ

୫୭) ପଶୁପକ୍ଷୀରୁ ଗୋଟିଏ ପ୍ରକାର ବାସ୍ନା ବାହାରେ । ସେଥିକୁ ଟିକେ ଓ ଲେମ୍ବୁ ପାଣିରେ ଦୁଇଥର ଧୋଇ କରି ପିଇଲେ କଅଣ ହେବ ?

କ) ଆମେ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟବାନ ହୋଇପାଆନ୍ତୁ, ଗ) ପୀଡ଼ା ପରିଷ୍କାର ହୁଅନ୍ତା,

ଖ) ଭଲ ହଜମ ହୁଅନ୍ତା, ଘ) ଆଦୌ ରୋଗ ହୁଅନ୍ତା ନାହିଁ ।

୫୮) କମାର ଶାଳର ଉପର ବେଲୁନ ପାଟିଆ ଦେଲେ ଦୁଇ ପାଖକୁ ଦୁଇଟି ନଳି, ଗୋଟିଏ ଚୁଲିକୁ ଓ ଅନ୍ୟଟି ବାହ୍ୟକୁ । ଯଦି ଉଭୟ ନଳିର valve ଖୋଲିଆ ଆଡ଼କୁ ରହେ ତେବେହେଲେ କଅଣ ହେବ ?

କ) ଚୁଲି ଭିତରକୁ ବାୟୁ ସହଜରେ ଆସିପାରିବ ଓ ଚୁଲି ଭଲ ଜଳିବ,

ଖ) ଚୁଲି ଭିତରକୁ ବାୟୁ ଆସି ପାରିବ ନାହିଁ ଓ ଚୁଲି ଲିଭିଯିବ,

ଗ) ଜୋରରେ ଚାପ ଦେଲେ ବେଲୁନ ପାଟିଆ ଫାଟିଯିବ,

ଘ) ବାୟୁ, ଚୁଲି ଆଡୁ ଆସି ବାହ୍ୟ ନଳୀ ବାଟେ ବାହାରକୁ ବାହାରିଯିବ ।

୪୯) ଚୁଲି ଭିତରେ କାଠ ଜାଳି ଦେଇ, ହାଣ୍ଡି ବସାଇ, ଚୁଲିର ସବୁ ପାଖ ବନ୍ଦ କଲେ କଅଣ ହେବ?
କ) ଅଧିକ ଉତ୍ତାପ ହେବ, ତେଣୁ ଖାଦ୍ୟ ରନ୍ଧା ହେବ,
ଖ) ଚୁଲି ଭଲ ଜଳିବ,   ଗ) ଚୁଲି ଲିଭିଯିବ,
ଘ) ଚୁଲିରେ ସବୁବେଳେ ... ଧୂଆଁ ହେବ,

୫୦) ଟିକିଏ ବଡ଼ ଆଲୁମିନିୟମ ପାତ୍ରରେ ପତଳା କାଗଜର ଦୁଇ ତିନୋଟି ପିତୁଳା ରଖ। ତାହା ଉପରେ ସମତଳ କାଚଖଣ୍ଡ ଥୋଇ କାଚକୁ ରେଶମ ଦ୍ୱାରା ଘଷ। ପିତୁଳାରେ କଅଣ ହେବ
କ) କିଛି ହେବ ନାହିଁ,
ଖ) ବିଦ୍ୟୁତ ଯୋଗୁଁ ପିତୁଳା ନାଚିବେ,   ଗ) ବିଦ୍ୟୁତ ଯୋଗୁଁ ପିତୁଳା ଯୋଡ଼ି ହୋଇଯିବେ,
ଘ) ସେ ଗୁଡ଼ିକ ... ଉଡ଼ି ଯିବେ,

(D)

୫୧) ତୁମ ଘର କୂଅ ପାଣିରେ ବହୁତ ପୋକ ହୋଇଅଛନ୍ତି। ପାଣି ପିଇବା ଉପଯୋଗୀ କରିବା ପାଇଁ ସେଥିରେ କଅଣ ପକାଇବ?
କ) ଡି.ଡି.ଟି, ଖ) ବ୍ଲିଚିଂ ପାଉଡର, ଗ) କ୍ଲୋରିନ୍ ଟାବଲେଟ, ଘ) ପେଟକିରି,

୫୨) ଜଣେ ଲୋକଙ୍କୁ ହଠାତ୍ ଝାଡ଼ାବାନ୍ତି ହେଲା। ଶୀଘ୍ର ... କରିବା ପାଇଁ କଅଣ କରିବ?
କ) ରୋଗୀକୁ କିଛି ପୋଟାସ୍ ପାଣି ପିଆଇବ ଓ ଝାଡ଼ା ସ୍ଥାନରେ ପୋଟାସ୍ ପାଣି ଢାଳିବ,
ଖ) ରୋଗୀକୁ ବ୍ଲିଚିଂ ପାଉଡର ପାଣି ପିଆଇବ ଓ ଝାଡ଼ା ସ୍ଥାନରେ ବ୍ଲିଚିଂ ପାଉଡର ପାଣି ଢାଳିବ,
ଗ) ରୋଗୀକୁ ପ୍ରଚୁର ଲେମ୍ବୁ ପାଣି ପିଆଇବ, ଘ) ପାଣିରେ କର୍ପୂର ମିଶାଇ ପିଆଇବ,

୫୩) ତୁମ ଘରେ ଜଣଙ୍କୁ କଲେରା ହେଲା। ତାଙ୍କୁ କଅଣ ପିଇବାକୁ ଦେବ?
କ) ପ୍ରଚୁର ଲୁଣ ପାଣି, ଖ) ଗରମ ପାଣି, ଗ) ପ୍ରଚୁର ଲେମ୍ବୁ ପାଣି, ଘ) ନଡ଼ିଆ ପାଣି ସହିତ କର୍ପୂର ମିଶା ପାଣି

୫୪) ଗଛରେ ପୋକ ଲାଗିଛନ୍ତି। କାହାଦ୍ୱାରା ପୋକ ଗୁଡ଼ିକ ମାରିବ?
କ) କିରୋସିନ୍, ଖ) ଡି.ଡି.ଟି, ଗ) ଲୁଣିଆ ପାଣି, ଘ) ଗାମାକ୍ସିନ୍,

୫୫) ଦିନେ ସୂର୍ଯ୍ୟ ଗ୍ରହଣ ହୋଇଛି। ତୁମ ଘରେ ... ନାହିଁ କି ... ନାହିଁ। କାହା ସାହାଯ୍ୟରେ ଦେଖିବ
କ) ସମତଳ ଦର୍ପଣ, ଖ) ଉତ୍ତଳ ପରକଳା, ଗ) ଅବତଳ ପରକଳା, ଘ) ପ୍ରିଜମ୍ କାଚ।

୫୬) ତୁମ ଆଖିରେ ଟିକିଏ ଦୋଷ ଅଛି। ନିକଟର ବସ୍ତୁ ଭଲ ଦେଖୁଛ, କିନ୍ତୁ ଦୂର ବସ୍ତୁ ଭଲ ଦେଖିପାରୁନ। କେଉଁ କାଚକୁ ଚଷମା ରୂପେ ବ୍ୟବହାର କରିବ?
କ) ଉତ୍ତଳ ପରକଳା, ଖ) ସମତଳ ପରକଳା, ଗ) ସମତଳ ଦର୍ପଣ, ଘ) ଅବତଳ ପରକଳା,

୫୭) ଶକ୍ତି ଓ ବଳ ପାଇଁ ତିନି ବର୍ଗର ଖାଦ୍ୟ ତାଲିକା ଦିଆ ଯାଇଛି। କେଉଁ ତାଲିକା ତୁମେ ବାଛିବ
କ) ପ୍ରଥମ ବର୍ଗ, ୨ୟ ବର୍ଗ, ୩ୟ ବର୍ଗ,   ୧ମ ବର୍ଗ, ୨ୟ ବର୍ଗ, ୩ୟ ବର୍ଗ
ଖ) ଆଳୁ, ଧାନ, ମଟର,   ଗ) ମଟର, ମୁଗ, ଆଳୁ
ଧାନ, ଧାନ, ହରଡ଼,   ଘ) ଧାନ, ମଟର, ହରଡ଼;

୫୮) ଜଣେ ଲୋକର ଦାନ୍ତରୁ ରକ୍ତ ପଡୁଛି। ଦେହରେ ରକ୍ତହୀନତା ଘଟିଛି। ତାର ସେହି ରୋଗ ଦୂର କରିବା ପାଇଁ କେଉଁ ଖାଦ୍ୟ ଦେବ?
କ) ଭାତ, ଆଳୁ, କନ୍ଦମୂଳ, ଖ) ମୁଗ, ବିରି, ହରଡ଼, ଗ) କଦଳୀ, ସପୁରୀ, କମଳା, ଘ) ଲହୁଣୀ, ଘିଅ,

୫୯) ଗଛରୁ ତୁମେ ବହୁତ ଗୁଡ଼ିଏ ଟସର ପୋକର ଖୋଳା ଆଣିଲ। କି ଉପାୟରେ ସେଥିରୁ ଟସର ବାହାର କରିବ
କ) ଅନେକ ଦିନ ଖୋଳାକୁ ଖରାରେ ଶୁଖାଇ ସୂତା ବାହାର କରିବ,
ଖ) ଖୋଳାରୁ ପୋକ ବାହାର କରି ସୂତା ବାହାର କରିବ,
ଗ) ଖୋଳାକୁ ଗରମ ପାଣିରେ ସିଝାଇ ସୂତା ବାହାର କରିବ,
ଘ) ଥଣ୍ଡା ପାଣିରେ ... ସୂତା ବାହାର କରିବ।

୨୭) କାଣ୍ଡଗଣ୍ଠି କଟିଂ କରିବା ତୁମର ଇଚ୍ଛା । କିପରି ମାଟିର ଅବସ୍ଥା ଓ ମଞ୍ଜିର ଅବସ୍ଥାନକୁ ବୁଝିଦେବ ।

କ) ମାଟି ଗୁଣ୍ଡ କରି ଶୁଖାଇ ଉପରେ ମଞ୍ଜି ବୁଣିଦେବ, ଗ) ବାଲୁକା ମାଟିରେ ଅଳ୍ପ ପାଣି ଦେଇ ମଞ୍ଜି ପୋତିବ.

ଖ) ମାଟି ଗୁଣ୍ଡ କରି ବହୁତ ପାଣି ଦେଇ ମଞ୍ଜି ପୋତିବ, ଘ) ଚିକ୍କଣ ମାଟିରେ ମଞ୍ଜି ପୋତି ଛାଡ଼ିଦେବ ।

୨୮) ତୁମେ କ୍ଲାସରେ ବୋର୍ଡରେ ଲେଖାଯାଇଥିବା ପାଠ ପଢ଼ି ପାରୁଛ, କିନ୍ତୁ ନିକଟରେ ଥିବା ବହି ପଢ଼ି ପାରୁ ନାହଁ । କେଉଁ କାଚର ଚଷମା ବ୍ୟବହାର କରିବ ?

କ) ମଝି ମୋଟା କାଚ ଚଷମା, ଗ) ନୀଳ କାଚର ଚଷମା,

ଖ) ମଝି ସରୁ କାଚ ଚଷମା, ଘ) କଳା କାଚର ଚଷମା ।

୨୯) ବଜାରକୁ ମାଛ କିଣିବାକୁ ଗଲ । ଦୁଇ ଦିନ ଆଗରୁ ଧରାହୋଇ ଦୂର ଜାଗାରୁ ଆସିଥିବା ମାଛ ଅଛି । କେଉଁ ପ୍ରକାର ମାଛକୁ ଟଟକା ବୋଲି ଚିହ୍ନି ଚୟନ କରିବ ?

କ) ଗୋଟା ମାଛ ଶୁଖୁଆ ରୂପରେ ଆସିଛି, ଗ) ବରଫ ବାକ୍ସ ଭିତରେ ଭର୍ତ୍ତି ହୋଇ ଆସିଛି

ଖ) କଟା ମାଛ ବାକ୍ସରେ ଆସିଛି, ଘ) ଖୋଲା ବାକ୍ସରେ ଆସିଛି ।

୩୦) ଜଣେ ଲୋକ ତୁମକୁ ଟଙ୍କାଟିଏ ଦେଲା । ତାକୁ ପରୀକ୍ଷା କରିବା ପାଇଁ କେଉଁ ଚୁମ୍ବକର ସାହାଯ୍ୟ ନେବ ?

କ) ଘୋଡ଼ାନାଲ ଆକୃତି ଚୁମ୍ବକ, ଖ) ଦଣ୍ଡ ଚୁମ୍ବକ, ଗ) ଚୁମ୍ବକ ଶଳାକା, ଘ) ଗୋଲକ ସମ୍ବଳିତ ଚୁମ୍ବକ ।

୩୧) ଭଲ ଫସଲ ହେବା ଭଳି ବିଲଟିଏ କିଣିବ । ସେ ବିଲଟି କି ପ୍ରକାର ମାଟିର ହେବା ଉଚିତ ?

କ) ମଟାଳ ମାଟି ବିଶିଷ୍ଟ ବିଲ, ଗ) ଚିକ୍କଣ ମାଟି ବିଶିଷ୍ଟ ବିଲ.

ଖ) ବାଲିଆ ମାଟି ବିଶିଷ୍ଟ ବିଲ, ଘ) କଳା ମାଟି ବିଶିଷ୍ଟ ବିଲ ।

୩୨) ତୁମ ଘରେ ଜଣକର ଝାଡ଼ା ବାନ୍ତି ହେଉଛି । ଅଳ୍ପ ଦେହ ଗରମ ହେଉଛି । [illegible] କଅଣ ଖାଇବାକୁ ଦେଲେ ରୋଗ ବଢ଼ିବ ନାହିଁ ?

କ) ପ୍ରଚୁର ପାଚିଲା ଫଳ, ଗ) ଛେଳି ମାଂସ, ଦୁଧ ଓ କଲିଜା,

ଖ) ବିଭିନ୍ନ ପ୍ରକାର ମିଠାଇ, ଘ) ଘିଅ, ଲହୁଣୀ, ତେଲ ।

୩୩) ସରସ୍ୱତୀ ପୂଜାରେ ବ୍ୟବହାର କରିବା ପାଇଁ ବଜାରରୁ ଫୁଲଝରି ପାଇଲ ନାହିଁ । କାହା ସାହାଯ୍ୟରେ ଫୁଲଝରି (ଫଟକା) ତିଆରି କରିବ ?

କ) କାଠ କୋଇଲା, ଲୁହାଗୁଣ୍ଡ, ଗନ୍ଧକ, ଗ) କାଠ କୋଇଲା, ସୋରା, ଲୁହାଗୁଣ୍ଡ,

ଖ) କାଠ କୋଇଲା, ଗନ୍ଧକ, ସୋରା, ଘ) ସୋରା, ଲୁହାଗୁଣ୍ଡ, ଗନ୍ଧକ ।

୩୪) ଦେହକୁ ସୁସ୍ଥ ଓ ପରିଷ୍କାର ରଖିବା ପାଇଁ କଅଣ କରିବ ?

କ) ପ୍ରତିଦିନ ସାବୁନ ଲଗାଇ ବହୁତ ଘଷାଘଷି କରି ଗାଧୋଇବ,

ଖ) ଗାଧୋଇବା ବନ୍ଦ କରି ସବୁବେଳେ ଦେହକୁ ଘୋଡ଼ାଇ ରଖିବ,

ଗ) ବ୍ୟାୟାମ କରିବା ପରେ ପରେ ସାବୁନ ଲଗାଇ ଗାଧୋଇବ,

ଘ) ବଡ଼ି ସକାଳୁ ଉଠି, ବ୍ୟାୟାମ କରି କିଛି ସମୟ ପରେ ଗାଧୋଇବ ।

୩୫) ନିମ୍ନୋକ୍ତ ଦୁଇ ପ୍ରକାର ରେକାବୀ ରନ୍ଧାଯାଉଛି । ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ପାଇଁ କେଉଁଟି ଠିକ୍ ?

କ) ମାଂସ ରେକାବୀରେ କିଛି ଖାଇବା ସୋଡ଼ା ମିଶାଇ ରନ୍ଧାଯାଉଛି,

ଖ) ମାଂସ ରେକାବୀରେ ବହୁତ ମସଲା ଦିଆଯାଇ ରନ୍ଧାଯାଉଛି,

ଗ) ମାଂସକୁ ଅଧିକ ସିଝାଇ ରନ୍ଧାଯାଉଛି, ଘ) ମାଂସକୁ ଅଳ୍ପ ସିଝାଇ ରନ୍ଧାଯାଉଛି ।

୩୬) ବଗିଚାରେ ବୋଇତାଳୁ ଗଛରୁ ବୋଇତାଳୁ ପଡ଼ି ଯାଉଛି । କଅଣ କଲେ ପଡ଼ିବ ନାହିଁ ?

କ) ସ୍ତ୍ରୀ ଫୁଲରୁ କଢ଼ି ଗୁଡ଼ିକ ରଖି ଫୁଲ ଛିଣ୍ଡାଇ ଦେବ, ଖ) ସବୁ ଅଣ୍ଡିରା ଫୁଲ ତୋଳିନେବ,

ଗ) ଅଣ୍ଡିରା ଫୁଲରୁ ପୁଂକେଶରକୁ ଛିଣ୍ଡାଇ ନେଇ ସ୍ତ୍ରୀ ଫୁଲର ଗର୍ଭକେଶରରେ ଲଗାଇବ,

ଘ) ଲଟାରେ ଥିବା ଅବସ୍ଥାରେ ଅଣ୍ଡିରା ଫୁଲର ପୁଂକେଶର ଓ ସ୍ତ୍ରୀ ଫୁଲର ଗର୍ଭକେଶରକୁ ଯୋଡ଼ି ବାନ୍ଧିଦେବ ।

୩୭) ତୁମ ଗୋହାଳ ଘରେ ବହୁତ ଉଡ଼ଣା ଅଛନ୍ତି, କଅଣ ପକାଇଲେ ସେ ଗୁଡ଼ିକ ଶୀଘ୍ର ମରିଯିବେ ?

କ) ଗାମାକ୍ସିନ, ଖ) କେରୋସିନ, ଗ) ଡି.ଡି.ଟି, ଘ) ନଡ଼ିଆ ତେଲ ।

SCORING KEY.

ଉତ୍ତର କାଗଜ

୧- କ ଖ ଗ ଘ
୨- କ ଖ ଗ ଘ
୩- କ ଖ ଗ ଘ
୪- କ ଖ ଗ ଘ
୫- କ ଖ ଗ ଘ
୬- କ ଖ ଗ ଘ
୭- କ ଖ ଗ ଘ
୮- କ ଖ ଗ ଘ
୯- କ ଖ ଗ ଘ
୧୦- କ ଖ ଗ ଘ
୧୧- କ ଖ ଗ ଘ
୧୨- କ ଖ ଗ ଘ
୧୩- କ ଖ ଗ ଘ
୧୪- କ ଖ ଗ ଘ
୧୫- କ ଖ ଗ ଘ
୧୬- କ ଖ ଗ ଘ
୧୭- କ ଖ ଗ ଘ
୧୮- କ ଖ ଗ ଘ
୧୯- କ ଖ ଗ ଘ
୨୦- କ ଖ ଗ ଘ
୨୧- କ ଖ ଗ ଘ
୨୨- କ ଖ ଗ ଘ
୨୩- କ ଖ ଗ ଘ
୨୪- କ ଖ ଗ ଘ
୨୫- କ ଖ ଗ ଘ
୨୬- କ ଖ ଗ ଘ
୨୭- କ ଖ ଗ ଘ
୨୮- କ ଖ ଗ ଘ
୨୯- କ ଖ ଗ ଘ
୩୦- କ ଖ ଗ ଘ

୩୧- କ ଖ ଗ ଘ
୩୨- କ ଖ ଗ ଘ
୩୩- କ ଖ ଗ ଘ
୩୪- କ ଖ ଗ ଘ
୩୫- କ ଖ ଗ ଘ
୩୬- କ ଖ ଗ ଘ
୩୭- କ ଖ ଗ ଘ
୩୮- କ ଖ ଗ ଘ
୩୯- କ ଖ ଗ ଘ
୪୦- କ ଖ ଗ ଘ
୪୧- କ ଖ ଗ ଘ
୪୨- କ ଖ ଗ ଘ
୪୩- କ ଖ ଗ ଘ
୪୪- କ ଖ ଗ ଘ
୪୫- କ ଖ ଗ ଘ
୪୬- କ ଖ ଗ ଘ
୪୭- କ ଖ ଗ ଘ
୪୮- କ ଖ ଗ ଘ
୪୯- କ ଖ ଗ ଘ
୫୦- କ ଖ ଗ ଘ
୫୧- କ ଖ ଗ ଘ
୫୨- କ ଖ ଗ ଘ
୫୩- କ ଖ ଗ ଘ
୫୪- କ ଖ ଗ ଘ
୫୫- କ ଖ ଗ ଘ
୫୬- କ ଖ ଗ ଘ
୫୭- କ ଖ ଗ ଘ
୫୮- କ ଖ ଗ ଘ
୫୯- କ ଖ ଗ ଘ
୬୦- କ ଖ ଗ ଘ

୬୧- କ ଖ ଗ ଘ
୬୨- କ ଖ ଗ ଘ
୬୩- କ ଖ ଗ ଘ
୬୪- କ ଖ ଗ ଘ
୬୫- କ ଖ ଗ ଘ
୬୬- କ ଖ ଗ ଘ
୬୭- କ ଖ ଗ ଘ
୬୮- କ ଖ ଗ ଘ
୬୯- କ ଖ ଗ ଘ
୭୦- କ ଖ ଗ ଘ

FINAL TEST IN ENGLISH VERSION.

SUBJECT - **GENERAL SCIENCE.**

PURPOSE - The questions are asked to know how far you are capable of applying the knowledge of science, gained in schools, in day-today life.

TIME - 60 minutes.

FULL MARKS - 80 .

GENERAL RULES :-

1. Write your name, school and class in the scheduled plade in the answer sheet.
2. Don't turn over the page until the bell is not rung.
3. Read the questions carefully when the bell is rung and choose the most correct answer.
4. Solve as quickly as possible. Don't spend much time with one question.
5. Without asking any body, try to solve the questions according to your own merit.
6. Stop writing when the time is over and submit the questions and answer sheet.
7. Don't write anything outside or inside the question paper.

READ ATTENTIVELY.

There are some questions written below. For each question four expected answers are given indentified by a, b, c, d. In the answer sheet a, b, c, d are written against each number corresponding to the answers of each question written here. Select out the best of the four answers, scientifically justified and cross the corresponding letter in the answer sheet. For example, if 'a' is correct in the first question, cross 'a' of one in answer sheet. One example is given below, try to follow it and mark in the same way. Don't write any-thing in the question paper.

Example :- What sort of pot will you require in summer, to keep drinking water cool ?

a) Tin pot, b) Earthern pot, c) Brass pot, d) Rubber pot.

In this case 'b' is correct. So I have given a cross(X) on 'b' as shown below.

Answer sheet :- a X c d.

SECTION 'A'.

1. A person drowned and fainted. What will be your mode of approach to get back his senses ?

   a) You will make him stand on his head,
   b) You will make him sleep on his back and will press the belly,
   c) You will make him lie on his belly with a pillow below his abdomen and will press the belly,
   d) You will make him lie on his chest with a pillow below his breast and will press the back.

2. How will you adjust two big looking glasses on the walls of a room so that, when you enter into the room you will be able to see your front and the back side at a time ?

   a) They will be parallel to each other,
   b) One will be at right angles to the other,
   c) Both will be at an acute angle to each other,
   d) Both will be at an obtuse angle to each other.

3. A milk-man is supplying milk to you. Which of the instruments will be helpful to you to determine the purity of milk ?

a) Hydroemeter, b) Lectometer, c) Specific gravity bottle, d) Hares apparatus.

4. Your father is above forty. He is defective in vision. What will you choose for him for adequate sight ?

a) Spectacles of convex lens, b) Spectacles of concave lens, c) Spectacles of concave mirror, d) Spectacles of plane mirror.

5. You are given some milk. How can you prepare good curd ?

a) You will keep milk for some days in a closed vessel,
b) You will add a little curd and will keep it closed after boilin
c) You will add a little curd and will keep it in darkness for a day,
d) You will add a little curd and will keep it under a refregerato

6. You are supplied with an inverted glass full of water and covered tightly with a piece of paper. How will you drink water from the glass ?

a) You will suddenly over-turn the glass,
b) You will over-turn the glass along with the plate on which it is kept inverted,
c) Gradually lifting the glass with the right hand and covering its mouth with the left hand palm,you will turn it over,
d) Gradually lifting the glass to a certain height, you will drink water when glass is inverted.

7. There is a fish lying under transparent water. You are standing by the side of the fish at the back of it. Where will you strike with a knife to cut the fish at the middle ?

a) At the fan, b) Just at the middle,
c) At the head, d) Beyond the head.

8. You have been to a shop to buy a wall clock. What kind of pendulum bar of the clock should be so that, there will be no variance of time either in summer or in winter ?

a) A clock of wooden pendulum bar,
b) A clock of brass pendulum bar,
c) A clock of iron pendulum bar,
d) A clock of rubber pendulum bar.

9. Your labourers dug a tank of 20 ft.cube. If one cube ft.of soil weighs 1 maund, what amount will you give them if one thousand maunds costs you ten rupees ?

a) 70 rupees, b) 40 rupees, c) 80 rupees, d) 50 rupees.

10. Rain drops are falling perpendicularly at the speed at which you are cycling. How will you hold your umbrella so that you will not be drenched ?

a) At an angle of 45 degree with your front surface of the earth,
b) At an angle of 45 degree with your back surface of the earth,
c) Just over and above your head,
d) Towards the front and parallel to the earth's surface.

11. An electric fan of 100 watt. is running at an average of eight hours daily in your house. What will it cost for a month of 30 days if one unit of electricity costs 25 naye paise. ?

a) 8 rupees, b) 6 rupees, c) 4.8 rupees, d) 2 rupees.

SECTION 'B'.

1. We vaccinate in order to be protected from small-pox, because :-

a) Pox germs are killed due to the vaccination,
b) If vaccinated, the pox germs cannot multiply within the body,
c) The germs die due to the growth of immunity in blood,
d) The blood is purified, so the germs die due to the increase of oxygen in blood.

2. We cannot hear anything if there is puss in the middle ear because -

a) The auditory nerves in the middle ear are destroyed,
b) The bones of the middle ear are destroyed,
c) There is left no space for air, in the middle ear,
d) Since it is full of puss, no sound wave is communicated.

3. Porcelin keys are used in house hold electric meters, because -

a) They donot break when fall,
b) They are not subjected to rusting,
c) Electric current is not lost by leaking through them,
d) As they are non conductor of electricity there is no danger of shock.

4. Why do you blow when smoke is produced in a hearth or fire place ?

a) To drive away smoke from the hearth,
b) To clear up black stains from the fire wood,
c) To add much fresh air from outside for burning,
d) To add some expirated air from the body for burning.

5. Why does a diseased senseless person get back his senses when oxygeneted ?

a) Oxygen revitalizes the dormant lungs,
b) Oxygen goes to each and every cell through the blood flow and supply energy to them to work,
c) It expells all carbondioxide out of the body,
d) It produces acid within the body which poke for sensation.

6. No object is seen in a dark room, because -

a) The'rods'and'cons'lose their power in the darkness,
b) As the objects are devoid of light, light cannot come from them,
c) Light from the objects do not fall on the eye,
d) Light can-not pass through the eye lens in darkness.

7. Much soda is required to wash dirty clothes when water is saline, because -

a) The cleaning capacity of soda deteriorates when mixed with saline water,
b) The dirt hardens due to the chemical reaction that goes between water and dirt,
c) Much soda is wasted to soften saline water, so little soda is left for clothes,
d) The salinity hampers the chemical reaction between soda and dirt.

8. Food is boiled quickly in a pressure cooker, because -

a) It is heated quickly as its body is made up of steel,
b) The cover is tight, so heat is produced due to the increase of pressure,
c) No external air can enter into the cooker and cool the air inside,
d) The water vapour produced within the cooker lessens heat but increases pressure, so food is boiled quickly.

9. Why do you plaster when there is a fructure with the bone ?

a) The calcium present in plaster prepares the bone in fructure,
b) It helps two bones to remain straight and tight,
c) It regenerates the marrow of the fructured bone,
d) It helps the bones to grow and ultimately unite them.

10. Why do you wear the spectacles of convex lens when near objects are not visible and the far ones are visible ?

a) The eye-ball elongates due to this defect and light is focused to the retina by the convex lens,
b) The convex lens concentrates light to the eye lens and light is focused to the retina,

c) The convex lens helps the light to pass directly through it and focus at the yellow spot,
d) The light from the object is so concentrated by the lens that it is just focused at the retina of the shrinked eye-ball.

11. It is better to build a chimney over the fire place,because -

a) To have an out-let for smoke specially when coal is burnt,
b) The surrounded air cannot extinguish fire if there is chimney,
c) The hot air goes out through the chimney, so the surrounded fresh air helps burning,
d) The outside air comes through the chimney and helps burning.

12. While preparing a cake, the cover is covered over the things of cake and a piece of drenched rag is surrounded round the cover, because -

a) Water is added through the piece of rag for proper boiling of cake,
b) The cover is not quickly heated if there si a wet piece of rag
c) All the passages are closed by the wet piece of rag for quick boiling of cake,
d) The cake is not burnt if there is a piece of wet rag.

13. Some salt is added at the neck of the burning wick, kept in an oilful burning pot, because -

a) It checks the quick flow of oil causing durable burning,
b) If salt is there, the wick as well as oil are not burnt at a time altogether,
c) Salt absorps oil and helps burning when oil is exhausted from the pot,
d) Salt checks the flow of oil to the outside of the pot.

14. The projected film is called the negative photo after immersing it in developer, because -

a) The impression produced on the film within the camera is inverted,
b) The reel is black in colour,
c) The photo exposed on the reel is not distinct,
d) The various colours of the different parts of the body is oppositely coloured on the reel.

SECTION ' C '.

1. What will happen if every passage to a burning fire place is closed after putting a pot with rice and water over it ?

a) More heat will be produced and rice will be boiled quickly,
b) Fire will burn vigorously,
c) Fire will extinguish,
d) Huge amount of smoke will be produced.

2. What will you feel when a silver rupee and a copper pice are put on either side of your tongue and both of them touch each other at the tip of the tongue ?

a) Gradually the tongue becomes worm,
b) The silver will change its colour to copper,
c) The pice will change to the colour of rupee,
d) You will feel your tongue eching.

3. Generally an iron bar is over the roof of the buildings and the Earth and the bar are connected with an iron wire. What will happen during the lightening if the Earth and the bar are not connected ?

a) The lightening would come and stick to the bar,
b) The lightening would fall over the roof,
c) There would be no possibility of lightening to fall over the roof,
d) No lightening would be formed in the cloud over the roof of the house.

4. What may be the scientific cause of smearing Pogu in Dola Purnami ?

a) Only to derive pleasure,
b) To lengthen longivity,
c) To be saved from small pox,
d) To be saved from cholera.

5. A theatrical performance is done in a closed glass cabin. What will you feel from the outside ?

a) You will see the dance but will not hear the songs,
b) Dancing will be visible and the songs will be audible,
c) You will see three persons dancing when one dances,
d) The songs will be audible but the dance will not be visible.

6. If the Earth would not have the gravitational power what would you feel ?

a) The Earth would not have proper shape,
b) We would fly in bare bodies if we want,
c) The Earthe would have been flattened in stead of it being spherical,
d) The Earth would neither move nor the days and the nights would occur.

7. A child after birth is refrained from sucking his mother for 4 to 6 months and is always supplied with sugar water. What Vitamins will be in deficit with the child ?

a) Vitamins A ,
b) Vitamins B ,
c) Vitamins D ,
d) Vitamins A,B,C.

8. What would happen if the Earth would revolve from the North to the South in stead of revolving from the West to the East ?

a) You would read the East and the West poles in stead of the North and the South,
b) More sun's rays would be available to you than at present,
c) There would be no occurance of the Summer and the Winter,
d) The duration of the day and the night would be of 22 hours.

9. What may be expected to happen if the height of the murcurry in Barometers fall suddenly ?

a) There may be occurance of scorching heat,
b) It may rain excessively,
c) It may rain excessively with hard gale,
d) It may be an indication of onsetting of a new season.

10. Two card-board boxes, one small and the other is big with side holes are there. A pot of water, a pot of fresh eggs are kept within the smaller box and an electric bulb is kept burning always. The smaller box is then kept within the bigger one and the spared space in between is packed up with loose papers. What will happen if it is kept for twenty-one days in the same way ?

a) Chickens will come out of eggs,
b) The eggs will rot,
c) The eggs will remain unchanged,
d) Dead chickens will be found from the eggs.

11. What happens when hot water vapour is administered to a boil on any part of the body ?

a) The pain is removed from the spot,
b) The germs are killed due to heat,
c) No external germ can come and injure the spot,
d) Adequate blood flows for which W.B.C. come and kill the germs.

12. Some small paper idols are kept in an alluminium pot. The pot is tightly covered with a piece of glass plate and the glass is rubbed strongly with silk. What will happen to the idols ?

a) Nothing will happen,
b) The idols will dance due to the production of electric currents
c) The idols will burn due to electric current,
d) The idols will stick to the pot.

13. There are two pipes, one to the fire and the other to the air from the rubber bellows in the furnace of the black smiths. What will happen if the vulves of both the pipes open towards the rubber bellows ?

a) Air will easily come to the fire causing it to burn vigorously,
b) No air will come to the fire and the furnace will extinguish,
c) The bellows will burst, if strongly pressed,
d) Air comming from the furnace will go out through the air pipe.

SECTION ' D '.

1. There are germs in your well water. What will you pour to get water suitable for drinking ?

a) D.D.T. , b) Bleeching powder, c) Chlorine water, d) Allum.

2. You have plucked a number of silk cocooms. How can you get silk out of them ?

a) You will make them dry in sun and then extract thread,
b) Firstly, you will bring the insect out of the cocoom and then extract thread,
c) You will boil the cocooms in hot water and then extract thread,
d) You will soak them in water and then extract thread.

3. You are given a rupee. Which of the magnets will be helpful for you to examine the purity of the rupee ?

a) Horse-shoe magnet,
b) Bar magnet,
c) Magnetic needle,
d) Ball ended magnet.

4. On a sunny day you have neither fire nor match box. Which of the things will be helpful to get fire ?

a) Convex lens,
b) Plano convex lens,
c) Concave lens,
d) Prism.

5. Suddenly a snake bit a man. What will you do to destroy poison ?

a) You will ask him to drink some potash water and to pour the same on the damage,
b) You will ask him to drink bleeching powder water and to pour the same on the damage,
c) You will instruct him to drink much lemon water,
d) You will suggest him to drink water, mixed with camphor.

6. The insects happen to destroy your plants. Which will you choose to kill them ?

a) Kerosene, b) D.D.T., c) Copper sulphate water, d) Gamahexene.

7. One person is affected with pain in chest. At times the body remains worm. Blood comes with mucous. Which of the foods will you prescribe for him to check the growth of the disease ?

a) Much ripe fruits,
b) Verious sweets,
c) Mutton, milk and liver of goat,
d) Ghee, butter and cheese.

8. You are required to raise a brinjal nursery. To what condition of the soil and the position of the seed you should look for better nursery plants ?

a) Dry and dusty soil and seeds sown over it,

b) Dusty and excessively watery soil and seeds sown over it,
c) Dusty, light and moderately wet soil and seeds under the soil,
d) Clay soil and seeds under it.

9. You had been to the bazzar to buy fish. Fishes caught four days before are brought in four ways. Which of the fish would you consider to be the best to purchase ?

a) Uncut dry fish in box,
b) Fish cut into pieces brought in a closed box,
c) Uncut fish kept in closed ice box,
d) Fish brought in open box.

10. You are required to buy a piece of fertile land. What should be the type of soil of the land for better crops ?

a) Land of Alluvial soil,
b) Land of Clay soil,
c) Land of Sandy soil,
d) Land of Black soil.

11. There is occasional bleeding from one's teeth. He is shortage of blood. What will you prescribe for him to eat to cure him ?

a) Rice, potato and sweet potato,
b) White and black grams and arhar,
c) Plantain,Orange, Papaya etc.
d) Butter and ghee.

12. One of your family members is attacked from cholera. What will you prescribe for him to drink ?

a) Much salt water,
b) Much hot water,
c) Lemon water,
d) Cocanut water mixed with camphor.

13. You can read letters written on the black board but not the letters written in books. Which of the spectacles you will require to see conveniently ?

a) Spectacles of bi-convex lens,
b) Spectacles of blue glass,
c) Spectacles of bi-concave lens,
d) Spectacles of dard glass.

14. There are bugs in your cot. What will you spray to kill the bugs quickly ?

a) Gamahexene, b) Kerosene, c) D.D.T., d) Coconut oil.

15. You can distinctly see the near objects but not the far ones. Which of the glasses will you require for your spectacles to remedy the defect ?

a) Convex lens,
b) Plano convex lens,
c) Plane mirror,
d) Concave lens.

16. A tabulated scheme of crops for three alternate years is given below. Which will you choose for your land. ?

	First year.	Second year.	Third year.
a)	Patato	Paddy	Bean,
b)	Paddy	Paddy	Arhar,
c)	Bean	Black gram	Patato,
d)	Paddy	Bean	Arhar.

17. What will you do when the gourd ovaries are rotten ?

a) You will pluck up the corollas from the female flowers,
b) You will take away all the male flowers from the garden,
c) Taking away the androeciums from the male flowers you will keep them with the gynoecium of the female flowers,
d) You will tie each male flower with the female flower when they are with the creeper, so that the androecium and the gynoecium unite together.

ITEM - ANALYSIS.

APPENDIX - 1.

ITEM ANALYSIS OF THE TEST. *

SECTION (A).

Item No.	S_1	S_2	S_3	S_4	S_5	S_6	Total	I.D. in %	E_{13}	Remarks.
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1.	27	22	25	18	16	15	123	61.5	.285	Retained.
2.	20	18	16	15	10	12	91	45.5	.24	Retained.
3.	10	14	5	10	7	6	52	26.0	.165	Rejected.
4.	32	32	33	31	32	25	185	92.5	.105	Rejected.
5.	4	9	5	6	10	7	41	20.5	-.06	Rejected.
6.	20	20	17	11	13	11	92	46.0	.24	Retained.
7.	17	15	8	7	8	4	59	29.5	.30	Retained.
8.	16	17	9	15	6	6	69	34.5	.315	Retained.
9.	10	11	10	10	12	9	62	31.0	0	Rejected.
10.	13	13	3	4	4	2	39	19.5	.309	Rejected.
11.	19	15	13	16	9	5	77	38.5	.309	Retained.
12.	19	18	18	16	12	8	91	45.5	.255	Retained.
13.	25	19	22	21	15	18	120	60.0	.165	Rejected.
14.	31	28	27	29	17	17	149	74.5	.34	Retained.
15.	22	14	15	12	8	10	81	40.5	.275	Retained.
16.	8	11	13	14	7	8	61	30.5	.06	Rejected.
17.	22	23	20	20	14	14	113	56.5	.255	Retained.
18.	25	21	24	24	12	13	119	59.5	.315	Retained.
19.	4	2	3	0	2	2	13	6.5	.03	Rejected.
20.	12	11	19	9	14	8	73	36.5	.015	Rejected.

Items Retained - 11.

Items Rejected - 9.

* L. P. Mehrotra, Mental Testing and Standardization of Tests ; P. 89.

ITEM ANALYSIS OF THE TEST.

SECTION (B).

Item No.	S_1	S_2	S_3	S_4	S_5	S_6	Total	I.D. in %	R_{13}	Remarks.
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
21.	28	25	24	26	16	14	133	66.5	.345	Retained.
22.	21	18	20	18	10	11	98	49.0	.27	Retained.
23.	21	16	15	19	8	11	90	45.0	.27	Retained.
24.	33	30	30	32	24	27	176	88.0	.18	Rejected.
25.	18	16	10	5	5	9	63	31.5	.300	Retained.
26.	7	14	10	8	9	13	61	30.5	-.015	Rejected.
27.	31	27	29	28	16	19	150	75.0	.345	Retained.
28.	6	7	10	7	5	8	43	21.5	0	Rejected.
29.	15	19	12	13	9	5	73	36.5	.30	Retained.
30.	19	10	11	9	7	5	61	30.5	.255	Retained.
31.	27	23	27	17	22	16	132	66.0	.180	Rejected.
32.	24	21	21	23	13	14	116	58.0	.27	Retained.
33.	7	5	4	2	4	2	24	12.0	.09	Rejected.
34.	24	26	26	23	12	14	125	62.5	.360	Retained.
35.	24	26	23	27	21	19	140	70.0	.15	Rejected.
36.	17	17	18	8	10	6	76	38.0	.27	Retained.
37.	25	21	18	16	14	13	107	53.5	.285	Retained.
38.	31	26	24	20	19	19	139	69.5	.285	Retained.
39.	18	17	16	12	10	8	81	40.5	.255	Retained.
40.	20	13	15	11	9	6	74	37.0	.27	Retained.

Items Retained - 14.

Items Rejected - 6.

ITEM ANALYSIS OF THE TEST.

SECTION (C).

Item No.	S_1	S_2	S_3	S_4	S_5	S_6	Total	I.D. in %	E_{13}	Remarks.
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
41.	13	12	13	15	15	11	79	39.5	-.015	Rejected.
42.	22	21	17	17	14	10	101	50.5	.285	Retained.
43.	27	24	24	27	20	14	136	68.0	.255	Retained.
44.	16	14	11	8	7	6	62	31.0	.255	Retained.
45.	18	17	17	16	10	9	87	43.5	.240	Retained.
46.	20	20	13	14	14	9	90	45.0	.255	Retained.
47.	8	9	8	7	10	9	51	25.5	-.03	Rejected.
48.	28	20	15	18	19	9	109	54.5	.30	Retained.
49.	14	9	7	5	6	4	45	22.5	.195	Rejected.
50.	12	9	5	4	7	5	42	21.0	.135	Rejected.
51.	7	10	11	7	10	7	52	26.0	0	Rejected.
52.	15	15	14	14	8	5	71	35.5	.255	Retained.
53.	8	5	6	9	5	3	36	18.0	.075	Rejected.
54.	24	23	14	12	18	10	101	50.5	.285	Retained.
55.	24	18	17	22	14	11	106	53.0	.255	Retained.
56.	17	19	10	16	14	3	79	39.5	.285	Retained.
57.	15	12	10	12	19	9	77	38.5	-.015	Rejected.
58.	16	16	5	4	9	4	54	27.0	.285	Retained.
59.	30	26	30	24	22	10	142	71.0	.360	Retained.
60.	16	14	14	6	5	7	62	31.0	.270	Retained.

Items Retained - 13.

Items Rejected - 7.

ITEM ANALYSIS OF THE TEST.

SECTION (D).

Item No.	S_1	S_2	S_3	S_4	S_5	S_6	Total	I.D. in %	R_{13}	Remarks.
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
61.	32	30	31	31	20	15	159	79.5	.405	Retained.
62.	26	22	22	21	15	13	119	59.5	.30	Retained.
63.	20	18	13	15	10	11	87	43.5	.255	Retained.
64.	23	24	20	22	19	10	118	59.0	.270	Retained.
65.	29	27	21	17	12	13	119	59.5	.465	Retained.
66.	25	14	14	8	8	8	77	38.5	.345	Retained.
67.	18	13	16	15	6	6	74	37.0	.285	Retained.
68.	22	18	16	12	13	8	89	44.5	.285	Retained.
69.	31	28	27	25	18	16	145	72.5	.375	Retained.
70.	24	18	22	22	13	10	109	54.5	.285	Retained.
71.	22	14	13	15	7	10	81	40.5	.285	Retained.
72.	24	22	16	16	15	13	106	53.0	.270	Retained.
73.	28	27	28	20	15	14	132	66.0	.390	Retained.
74.	20	18	20	17	13	9	97	48.5	.240	Retained.
75.	24	23	22	19	13	15	116	58.0	.285	Retained.
76.	14	12	16	6	6	4	58	29.0	.240	Rejected.
77.	28	27	32	20	13	10	130	65.0	.480	Rejected.
78.	12	4	6	11	8	5	46	23.0	.045	Rejected.
79.	17	15	13	11	6	9	71	35.5	.255	Retained.
80.	18	15	16	12	8	8	77	38.5	.255	Retained.

Items Retained - 17.

Items Rejected - 3.

SCATTER DIAGRAMS.

APPENDIX - 3(A).

RELIABILITY OF THE TEST BY SPLIT-HALF METHOD.

Scores on the odd items(y).

Scores on the even items (x).

	2-4	5-7	8-10	11-13	14-16	17-19	20-22	23-25	f	x'	fx'	fx'^{2}	x'y'
24-26							1		1	3	3	9	6
21-23					1		2	2	5	2	10	20	20
18-20				2	11	5	3		21	1	21	21	9
15-17		1	2	12	30	13	7		65	0	0	0	0
12-14		1	5	15	22	2	2		47	-1	-47	47	20
9-11	1		13	18	7	1			40	-2	-80	160	94
6-8		2	7	8					17	-3	-51	153	84
3-5		2	1	1					4	-4	-16	64	36
f	1	6	28	56	71	21	15	2	200		-160	474	269
y'	-4	-3	-2	-1	0	1	2	3					
fy'	-4	-18	-56	-56	0	21	30	6	-77				
fy'^{2}	16	54	112	56	0	21	60	18	337				
x'y'	8	45	112	77	0	-1	16	12	269				

$Cx' = \frac{-160}{200} = -.8$, $Cx'^2 = .64$.

$Cy' = \frac{-77}{200} = -.38$, $Cy'^2 = .14$.

$6x' = \sqrt{\frac{474}{200} - .64} = \sqrt{1.73} = 1.31.$

$6y' = \sqrt{\frac{337}{200} - .14} = \sqrt{1.54} = 1.20.$

Therefore co-efficient of correlation between the Odd and Even items is ;

$$r = \frac{\frac{269}{200} - (-.8)(-.38)}{1.31 \times 1.20} = \frac{1.04}{1.57} = +.66.$$

Therefore the reliability of the whole test is :-

$$r_t = \frac{2r}{1+r} = \frac{1.32}{1.66} = + .80.$$

Index of reliability

$= \sqrt{.80} = .89.$

$P.Er = \frac{.6745(1-.80^2)}{\sqrt{200}} = .01$

APPENDIX - 3(B).

VALIDITY OF THE TEST AGAINST EXTERNAL CRITERIA.

Average school marks (y).

Marks on the test (x)

	20-24	25-29	30-34	35-39	40-44	45-49	50-54	55-59	60-64	65-69	f	x'	fx'	fx'2	x'y'
44-47									1	1	2	+4	+8	32	44
40-43								1	2		3	+3	+9	27	42
36-39				1	1	1	3	7	1		16	+2	+32	64	86
32-35				1	7	14	12	2	2		38	+1	+38	38	89
28-31		2	1	11	26	5	1	2			48	0	0	0	0
24-27		3	7	19	2	1	1				33	-1	-33	33	6
20-23	1		17	7	3	4	1				33	-2	-66	132	12
16-19	1	7	4	6	3						21	-3	-63	189	54
12-15	2	2									4	-4	-16	64	40
8-11	1	1									2	-5	-10	50	25
f	5	15	31	45	42	25	18	12	6	1	200		-101	629	398
y'	-3	-2	-1	0	+1	+2	+3	+4	+5	+6					
fy'	-15	-30	-31	0	42	50	54	48	30	6	154				
fy'2	45	60	31	0	42	100	162	192	150	36	838				
x'y'	54	74	49	0	-8	14	45	76	70	24	398				

$$C_{x'} = \frac{-101}{200} = -.50 \quad , \qquad C_{x'}^2 = .25$$

$$C_{y'} = \frac{+154}{200} = +.77 \quad , \qquad C_{y'}^2 = .59$$

$$\sigma_{x'} = \sqrt{\frac{629}{200} - .25} = 1.7$$

$$\sigma_{y'} = \sqrt{\frac{838}{200} - .59} = 1.9$$

$$r_{xy} = \frac{\frac{398}{200} - (-.50)(+.77)}{1.7 \times 1.9} = 2.37 \quad \frac{2.37}{3.23} = +.71$$

$$P.E_r = \frac{.6745(1-.71^2)}{\sqrt{200}} = .02$$

APPENDIX - 4(A).

CORRELATION BETWEEN TOTAL SCORE AND THE SCORES ON 'TO DISCOVER RELATIONSHIP.'

Total score (x).

Scores on 'to discover relationship' (y).

	5-12	13-20	21-28	29-36	37-44	45-52	f	y'	fy'	fy'^2	x'y'
10-11					2		2	2	4	8	4
8-9			1	17	6	1	25	1	25	25	7
6-7		5	19	43	6		73	0	0	0	0
4-5	1	13	33	20			67	-1	-67	67	62
2-3	1	13	13	3			30	-2	-60	120	84
0-1	1	2					3	-3	-9	27	21
f	3	33	66	83	14	1	200		-107	247	178
x'	-3	-2	-1	0	1	2					
fx'	-9	-66	-66	0	14	2	-125				
fx'^2	27	132	66	0	14	4	243				
x'y'	18	90	58	0	10	2	178				

$$Cx' = \frac{-125}{200} = -.625, \quad Cx'^2 = .39.$$

$$Cy' = \frac{-107}{200} = -.503, \quad Cy'^2 = .25.$$

$$\sigma x' = \sqrt{\frac{243}{200} - .39} = \sqrt{.82} = .905.$$

$$\sigma y' = \sqrt{\frac{247}{200} - .25} = \sqrt{.98} = .99.$$

$$r_{xy} = \frac{\frac{178}{200} - (-.625)(-.503)}{.905 \times .99} = \frac{.58}{.89} = +.65.$$

$$P.E_r = \frac{.6745(1-.65^2)}{\sqrt{200}} = \frac{.39}{14.14} = .02.$$

APPENDIX - 4(B).

CORRELATION BETWEEN THE TOTAL SCORE AND THE SCORES ON ' TO EXPLAIN CAUSE '.

Total score (x).

Scores on ' to explain cause ' (y).

	5-10	11-16	17-22	23-28	29-34	35-40	41-46	f	y'	fy'	fy'2	x'y'
13-14							1	1	+3	+3	9	6
11-12				1	4	4	4	13	+2	+26	52	22
9-10			2	7	17	11		37	+1	+37	37	0
7-8			7	18	32	8	1	66	0	0	0	0
5-6		1	18	18	15	1		53	-1	-53	53	56
3-4	1	1	15	5	1			23	-2	-46	92	84
1-2		4	3					7	-3	-21	63	54
f	1	6	45	49	69	24	6	200		-54	306	222
x'	-4	-3	-2	-1	0	+1	+2					
fx'	-4	-18	-90	-49	0	24	12	-125				
fx'2	16	54	180	49	0	24	24	347				
x'y'	8	45	110	19	0	18	22	222				

$$C_{x'} = \frac{-125}{200} = -.625 \quad , \quad C_{x'}^2 = .39$$

$$C_{y'} = \frac{-54}{200} = -.27 \quad , \quad C_{y'}^2 = .07$$

$$\sigma_{x'} = \sqrt{\frac{347}{200} - .39} = \sqrt{1.34} = 1.15$$

$$\sigma_{y'} = \sqrt{\frac{306}{200} - .07} = \sqrt{1.46} = 1.21$$

$$r_{xy} = \frac{\frac{222}{200} - (-.625)(-.27)}{1.15 \times 1.21} = \frac{.95}{1.39} = +.68$$

$$P.E_r = .02$$

APPENDIX - 4 (C).

CORRELATION BETWEEN TOTAL SCORE AND THE SCORES ON ' TO PREDICT EFFECT'

Total score (x).

Scores on ' to predict effect ' (y)

	5-12	13-20	21-28	29-36	37-44	45-52	f	y'	fy'	fy'^2	x' y'
10-11				6	5	1	12	+2	+24	48	14
8-9		1	7	29	7		44	+1	+44	44	-2
6-7		6	22	36	2		66	0	0	0	0
4-5		12	29	11			52	-1	-52	52	53
2-3		11	6	2			19	-2	-38	76	56
0-1	3	3	1				7	-3	-21	63	48
f	3	33	65	84	14	1	200		-43	283	169
x'	-3	-2	-1	0	+1	+2					
fx'	-9	-66	-65	0	14	2	-126				
fx'^2	27	132	65	0	14	4	242				
x' y'	27	84	37	0	17	4	169				

$$C_{x'} = \frac{-126}{200} = -.63 \quad , \quad C_{x'}^2 = .39$$

$$C_{y'} = \frac{-43}{200} = -.215 \quad , \quad C_{y'}^2 = .046$$

$$\sigma_{x'} = \sqrt{\frac{242}{200} - .39} = \sqrt{.82} = .91$$

$$\sigma_{y'} = \sqrt{\frac{283}{200} - .046} = \sqrt{1.369} = 1.17$$

$$r_{xy} = \frac{\frac{169}{200} - (-.63)(-.215)}{.91 \times 1.17} = \frac{.710}{1.064} = .669 = +.67$$

$$P.E_r = \frac{.6745(1-.67^2)}{\sqrt{200}} = \frac{.37}{14.14} = .02 .$$

APPENDIX - 4(D).

CORRELATION BETWEEN THE TOTAL SCORE AND THE SCORES ON 'TO SELECT APPROPRIATE SOLUTION'.

Total score (x).

Scores on 'to select appropriate solution' (y).

	7-11	12-16	17-21	22-26	27-31	32-36	37-41	42-46	f	y'	fy'	fy'^{2}	x' y'
15-16						2		2	4	+3	+12	36	24
13-14						12	4	2	18	+2	+36	72	52
11-12			1	1	18	17	5	1	43	+1	+43	43	27
9-10			3	15	25	8	1		52	0	0	0	0
7-8		1	12	15	14	2			44	-1	-44	44	40
5-6	1	3	9	4	1	1			19	-2	-38	76	68
3-4	1	1	11	4	1				18	-3	-54	162	99
1-2			2						2	-4	-8	32	16
f	2	5	38	39	59	42	10	5	200		-53	465	326
x'	-4	-3	-2	-1	0	+1	+2	+3					
fx'	-8	-15	-76	-39	0	42	20	15	-61				
fx'^{2}	32	45	152	39	0	42	40	45	395				
x' y'	20	30	140	34	0	43	26	33	326				

$$C_{x'} = \frac{-61}{200} = -.305 \quad , \quad C_{x'}^2 = .093$$

$$C_{y'} = \frac{-53}{200} = -.265 \quad , \quad C_{y'}^2 = .06$$

$$\sigma_{x'} = \sqrt{\frac{395}{200} - .093} = \sqrt{1.882} = 1.37$$

$$\sigma_{y'} = \sqrt{\frac{465}{200} - .06} = \sqrt{2.26} = 1.50$$

$$r_{xy} = \frac{\frac{326}{200} - (-.305)(-.265)}{1.37 \times 1.50} = \frac{1.55}{2.05} = +.76$$

$$P.E_r = .019$$

APPENDIX - 4(E).

INTER-CORRELATION BETWEEN ' TO DISCOVER RELATIONSHIP ' AND ' TO EXPLAIN CAUSE.'

Scores on ' to explain cause ' (x)

Scores on ' to discover relationship' (y).

	1-2	3-4	5-6	7-8	9-10	11-12	13-14	f	y'	fy'	fy'2	x'y'
10-11			1			1		2	+2	+4	8	2
8-9			7	8	6	4		25	+1	+25	25	6
6-7	1	5	12	28	21	5	1	73	0	0	0	0
4-5	3	12	17	26	7	2		67	-1	-67	67	31
2-3	3	5	14	4	3	1		30	-2	-60	120	56
0-1		1	2					3	-3	-9	27	12
f	7	23	53	66	37	13	1	200		-107	247	107
x'	-3	-2	-1	0	+1	+2	+3					
fx'	-21	-46	-53	0	37	26	3	-54				
fx'2	63	92	53	0	37	52	9	306				
x'y'	27	42	42	0	-8	4	0	107				

$$C_{x'} = \frac{-54}{200} = -.27 \quad , \quad C_{x'}^2 = .07$$

$$C_{y'} = \frac{-107}{200} = -.503 \quad , \quad C_{y'}^2 = .25$$

$$\sigma_{x'} = \sqrt{\frac{306}{200} - .07} = \sqrt{1.45} = 1.21$$

$$\sigma_{y'} = \sqrt{\frac{247}{200} - .25} = \sqrt{.98} = .99$$

$$r_{xy} = \frac{\frac{107}{200} - (-.27)(-.503)}{1.21 \times .99} = \frac{.368}{1.19} = .31$$

$$P.E_r = \frac{.6745\ (1-.31^2)}{\sqrt{200}} = .04$$

APPENDIX - 4.(F).

INTER-CORRELATION BETWEEN ' TO DISCOVER RELATIONSHIP ' AND ' TO PREDICT EFFECT.'

Scores on ' to predict effect '(x)

Scores on ' to discover relationship' (y).

	0-1	2-3	4-5	6-7	8-9	10-11	f	y'	fy'	fy'	x'y'
10-11				1	1		2	+2	+4	8	2
8-9			3	12	6	4	25	+1	+25	25	11
6-7	1	5	19	26	18	4	73	0	0	0	0
4-5	3	8	22	17	13	4	67	-1	-67	67	26
2-3	2	6	7	10	5		30	-2	-60	120	40
0-1	1		1		1		3	-3	-9	27	9
f	7	19	52	66	44	12	200		-107	247	88
x'	-3	-2	-1	0	+1	+2					
fx'	-21	-38	-52	0	44	24	-43				
fx'	63	76	52	0	44	48	283				
x'y'	30	40	36	0	-18	0	88				

$$C_{x'} = \frac{-43}{200} = -.21 \quad , \quad C_{x'}^2 = .044$$

$$C_{y'} = \frac{-107}{200} = -.503 \quad , \quad C_{y'}^2 = .25$$

$$\sigma_{x'} = \sqrt{\frac{283}{200} - .044} = \sqrt{1.37} = 1.17$$

$$\sigma_{y'} = \sqrt{\frac{247}{200} - .25} = \sqrt{.98} = .99$$

$$r_{xy} = \frac{\frac{88}{200} - (-.21)(-.503)}{1.17 \times .99} = \frac{.34}{1.15} = .29$$

$$P.E_r = .04$$

APPENDIX - 4(G).

INTER-CORRELATION BETWEEN ' TO DISCOVER RELATIONSHIP' AND ' TO SELECT APPROPRIATE SOLUTION '.

Scores on 'to select appropriate solution'(x).

Scores on 'to discover relationship'(y).

	1-2	3-4	5-6	7-8	9-10	11-12	13-14	15-16	f	y'	fy'	fy'^2	x'y'
10-11						1	1		2	+2	+4	8	6
8-9		1	1	1	8	8	5	1	25	+1	25	25	15
6-7	2	5	2	16	17	20	8	3	73	0	0	0	0
4-5		9	9	17	18	11	3		67	-1	-67	67	45
2-3		2	6	9	9	3	1		30	-2	-60	120	44
0-1		1	1	1					3	-3	-9	27	18
f	2	18	19	44	52	43	18	4	200		-107	247	128
x'	-4	-3	-2	-1	0	+1	+2	+3					
fx'	-8	-54	-38	-44	0	43	36	12	-53				
fx'^2	32	162	76	44	0	43	72	36	465				
x'y'	0	45	46	37	0	-7	4	3	128				

$C_{x'} = \frac{-53}{200} = -.26$, $C_{x'}2 = .07$

$Cy' = \frac{-107}{200} = -.503$, $Cy'2 = .25$

$$\sigma_{x'} = \sqrt{\frac{465}{200} - .07} = \sqrt{2.26} = 1.5$$

$$\sigma_{y'} = \sqrt{\frac{247}{200} - .25} = \sqrt{.98} = .99$$

$$r_{xy} = \frac{\frac{128}{200} - (-.26)(-.503)}{1.5 \times .99} = \frac{.51}{1.48} = .34$$

$P.E_r = .04$

APPENDIX - 4.

INTER-CORRELATION BETWEEN ' TO EXPLAIN CAUSE ' AND ' TO PREDICT EFFECT'

Scores on ' to predict effect' (x).

Scores on ' to explain cause' (y).

	0-1	2-3	4-5	6-7	8-9	10-11	f	y'	fy'	fy'^{2}	x'y'
13-14					1		1	+3	+3	9	3
11-12		1	2	4	4	2	13	+2	+26	52	8
9-10	1	6	4	14	8	4	37	+1	+37	37	-3
7-8		4	18	23	15	6	66	0	0	0	0
5-6	2	4	16	18	13		53	-1	-53	53	17
3-4	1	3	10	6	3		23	-2	-46	92	32
1-2	3	1	2	1			7	-3	-21	63	39
f	7	19	52	66	44	12	200		-54	306	96
x'	-3	-2	-1	0	+1	+2					
fx'	-21	-38	-52	0	44	24	-43				
fx'^{2}	63	76	52	0	44	48	283				
x'y'	36	10	34	0	0	16	96				

$$C_{x'} = \frac{-43}{200} = -.21 \quad , \quad C_{x'}^2 = .044$$

$$C_{y'} = \frac{-54}{200} = -.27 \quad , \quad C_{y'}^2 = .07$$

$$\sigma_{x'} = \sqrt{\frac{283}{200} - .044} = \sqrt{1.37} = 1.17$$

$$\sigma_{y'} = \sqrt{\frac{306}{200} - .07} = \sqrt{1.44} = 1.2$$

$$r_{xy} = \frac{\frac{96}{200} - (-.21)(-.27)}{1.17 \times 1.2} = \frac{.424}{1.404} = +.30$$

$$P.E_r = .04$$

APPENDIX - 4.(I)

INTER-CORRELATION BETWEEN ' TO EXPLAIN CAUSE ' AND ' TO SELECT APPROPRIATE SOLUTION'.

Scores on' to select appropriate solution '(x).

Scores on ' to explain cause' (y).

	1-2	3-4	5-6	7-8	9-10	11-12	13-14	15-16	f	y'	fy'	fy'^{2}	x' y'
13-14						1			1	+3	+3	9	3
11-12		1			3	5	3	1	13	+2	+26	52	22
9-10		3	3	8	8	11	4		37	+1	+37	37	-4
7-8		4	4	11	20	14	10	3	66	0	0	0	0
5-6	2	5	5	17	13	10	1		53	-1	-53	53	38
3-4		3	4	7	7	2			23	-2	-46	92	44
1-2		2	3	1	1				7	-3	-21	63	39
f	2	18	19	44	52	43	18	4	200		-54	306	142
x'	-4	-3	-2	-1	0	+1	+2	+3					
fx'	-8	-54	-38	-44	0	43	36	12	-53				
fx'^{2}	32	162	76	44	0	43	72	36	465				
x' y'	8	36	38	26	0	10	18	6	142				

$C_{x'} = \frac{-53}{200} = -.26$, $C_{x'}^2 = .07$

$C_{y'} = \frac{-54}{200} = -.27$, $C_{y'}^2 = .07$

$\sigma_{x'} = \sqrt{\frac{465}{200} - .07} = \sqrt{2.26} = 1.50$

$\sigma_{y'} = \sqrt{\frac{306}{200} - .07} = \sqrt{1.44} = 1.2$

$r_{xy} = \frac{\frac{142}{200} - (-.26)(-.27)}{1.5 \times 1.2} = \frac{.64}{1.80} = .35$

$P.E_r = .04$

APPENDIX - 4(J).

INTER-CORRELATION BETWEEN ' TO PREDICT EFFECT ' AND ' TO SELECT APPROPRIATE SOLUTION'.

Scores on ' to select appropriate solution '(x).

Scores on ' to predict effect' (y).

	1-2	3-4	5-6	7-8	9-10	11-12	13-14	15-16	f	y'	fy'	fy'2	x'y'
10-11				2	1	4	4	1	12	+2	+24	48	26
8-9		1	2	8	12	15	6		44	+1	+44	44	12
6-7		5	7	15	20	9	7	3	66	0	0	0	0
4-5	2	6	5	10	15	13	1		52	-1	-52	52	31
2-3		4	3	6	4	2			19	-2	-38	76	44
0-1		2	2	3					7	-3	-21	63	39
f	2	18	19	44	52	43	18	4	200		-43	283	152
x'	-4	-3	-2	-1	0	+1	+2	+3					
fx'	-8	-54	-38	-44	0	43	36	12	-53				
fx'2	32	162	76	44	0	43	72	36	465				
x'y'	8	57	30	19	0	6	26	6	152				

$C_{x'} = \frac{-53}{200} = -.26$, $C_{x'}{}^2 = .07$

$C_{y'} = \frac{-43}{200} = -.21$, $C_{y'}{}^2 = .044$

$$\sigma_{x'} = \sqrt{\frac{465}{200} - .07} = \sqrt{2.26} = 1.50$$

$$\sigma_{y'} = \sqrt{\frac{283}{200} - .044} = \sqrt{1.37} = 1.17$$

$$r_{xy} = \frac{\frac{152}{200} - (-.26)(-.21)}{1.50 \times 1.17} = \frac{.755}{1.755} = .43$$

$P.E_r = .039$

SCIENCE :-

17. Armstrong, H. E., " The Teaching of Scientific Method and Other Papers in Education, "

18. Curtis, F.D. & Mallison, G.G., " Science in Everyday Life ", Chicago, Ginn & Co., 1953, 570 pp.

19. Heiss, E.D., et al, " Modern Science Teaching ", New-York, The Macmillan Co., 1955, 462 pp.

20. Lantoon, A. D. & Powers, S.R., " New Direction in Science Teaching ", New-York, McGraw - Hill Book Co., 1949, 164 pp.

21. Hoff, A. G., " Science Teaching ", Philadelphia, the Blakiston Co., 1950, 303 pp.

22. Paul, F.Brandwein, et al., " You and Science ", New-York, Harcourt, Brace & Co., 1955, 624 pp.

23. Sumner, W.L., " The Teaching of Science ", Oxford, Basil Black well, 1950, 215 pp.

24. United Nations, Educational, Scientific and Cultural Organisation., " UNESCO Source Book for Science Teaching ", UNESCO, Nether land, 1956, 221 pp.

EDUCATION :-

25. Aggarwal, J.C. & Sharma, K.R., " Basic School Organisation ", Delhi, Doaba House, 1960, 312 pp.

26. Lancelot, W.H., " Permanent Learning " New-York, John Willy and Sons, 1949, 221 pp.

27. Raymont, T., " The Principles of Education ", Bombay, Orient Longmans, 1957, 359 pp.

28. Patel, M. S., " The Educational Philosophy of Mahatma Gandhi ", Ahmedabad, Navajiban Publishing House, 1953, 282 pp.

29. Saiyidian, K. G., " Problems of Educational Reconstruction ", Delhi, Asia Publishing House, 1957, 279 pp.

30. Varkey, C. J., " The Wardha Scheme of Education ", London, Oxford, 1937, pp.

31. Hindusthani Talim Sang., " Report of the Fifth All-India Basic Education Conference, 1950 ", 146 pp.

BIBLIOGRAPHY.

BIBLIOGRAPHY.

MEASUREMENT :-

1. Anastasi, Anne., " Psychological Testing ", New-York, The Macmillan Co., 1954, 682 pp.

2. Bean, Kenneth L., " Construction of Educational and Personal Tests", New-York, McGraw - Hill, 1953, 231 pp.

3. Cronbach, Lee J., " Essentials of Psychological Testing ", New-York, Harper and Bros., 1949, 475 pp.

4. Greene, H.A. et al., " Measurement and Evaluation in the Secondary Schools ", New-York, Longmans, 1955, 690 pp.

5. Guilford, J.P., " Educational Statistics in Psychology and Education ", New-York, McGraw-Hill, 1950, 633 pp.

6. Guilford, J.P., " Psychometric Methods ", New-York, McGraw - Hill, 1954, 597 pp.

7. Garrett, Henery E., " Statistics in Psychology and Education ", New-York, Longmans, 1954, 460 pp.

8. Jordan, A. M., " Measurement in Education", New-York, McGraw - Hill, 1953, 533 pp.

9. Lindquist, E. F., " Educational Measurement ", Washington, American Council of Education, 1949, 819 pp.

10. Mehrotra, L.P. & Mrs.Mehrotra, K. " Mental Testing and Standardization of Tests ", Allahbad, National Press, 195 , 162 pp.

11. Micheel, William J & Karnes, M.Ray., " Measuring Educational Achievement ", New-York, McGraw - Hill, 1950 , 496 pp.

12. Rugg, Harold O., " Statistical Methods Applied in Education ", New-York, Houghton Mifflin Co., 1917, 410 pp.

13. Remmers, H.H. & Gage, N.L., " Educational Measurement and Evaluation ", New-York, Harper and Bros., 1955, 650 pp.

14. Ross, C.C. & Stanley, J. C. " Measurement in Today's Schools ", New-York, Prentice-Hall, 1955, 485 pp.

15. Travers, R.M.W., " Educational Measurement ", New-York, Macmillan, 1955, 420 pp.

16. Vernon, P. E., " The Measurement of Abilities ", London, University of London Press, 1956, 276 pp.

RESEARCH WORK, JOURNALS AND MAGAZINES :-

32. Ministry of Education, Govt. of India., " Secondary Education ", January, 1960, Vol. IV, No. 4, 77 pp.

33. Jena, D. P., " A test in Science" Research work, Patna University, 1957,

34. Editor, Wanchoo, V. N., " Vigyan Shikshak ", All India Science Teachers' Association, Delhi, Jan-March, 1958, Vol. II, No. 1, 60 pp.

35. Editor, Wanchoo, V. N., " Vigyan Shikshak ", All India Science Teachers Association, Delhi, July-Sept., 1957, Vol. I, No. 3, 34 pp.

36. Editor, Wanchoo, V. N., " Vigyan Shikshak ", All India Science Teachers Association, Delhi, July-Sept., 1958, Vol. II, No. 3, 32 pp.

37. Editor, Wanchoo, V. N., " Vigyan Shikshak ", All India Science Teachers Association, Delhi, Jan-March, 1959, Vol. III, No. 1, 57 pp.

38. Editor, Wanchoo, V. N., " Vigyan Shikshak ", All India Science Teachers Association, Delhi, January, 1957, Vol. I, No. 1, 37 pp.

39. Editor, Wanchoo, V. N., " Vigyan Shikshak ", All India Science Teachers Association, Delhi, Oct-Dec., 1958, Vol. II, No. 4, 40 pp.

40. National Association for Research in Science Teaching, Journals., " Science Education ", Teachers College, Columbia University, March, 1956, Vol. 40, No. 2, 164 pp.

*
***
*

* *** * ++++ THE END ++++ * *** *

*
***
*